शिव उपासना

ॐ ॐ

सम्पूर्ण शिव उपासना

प्रकाशक

9417021269

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

मूल्य : 120/-

ॐ ॐ

Writer :

पंडित वाई०एन० झा "तूफान"

(ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक)

टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,

मकान न० 61, जालन्धर सिटी

पिन-144 004 (पंजाब)

Typesetting by : *Sunshine Computers*

Mahamaya Printers
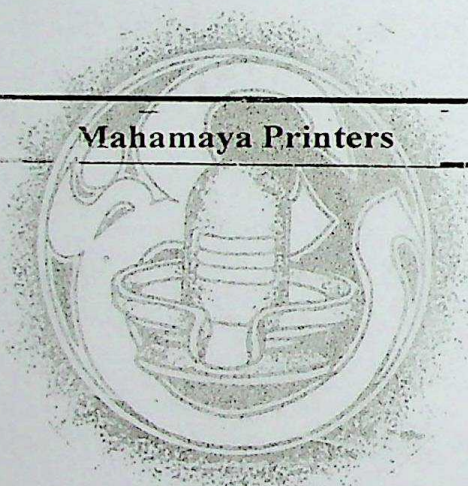
प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा,

जालन्धर शहर-144008

फोन : 0181-2212696, 3251696

विषय सूची

प्रथम भाग
भगवान शिव गूढ़ ज्ञान खण्ड

द्वितीय भाग
उपासना आरम्भ से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

तृतीय भाग
उपासना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड

चतुर्थ भाग
शिव पूजन में कुछ अति आवश्यक वस्तुओं का निर्णय खण्ड

पंचम भाग
भगवान शिव की विविध प्रकार की उपासनाएं

छठा भाग
भगवान शिव का "वृहद वैदिक" महामृत्युञ्जय अनुष्ठान एवं पार्थिव लिंग पूजन खण्ड

सातवां भाग
पार्थिव लिंग अनुष्ठान एवं महामृत्युञ्जय अनुष्ठान के वैदिक विस्तृत पूजन खण्ड

आठवां भाग
वैदिक हवन विधि खण्ड

नौंवा भाग
समस्त ऋद्धि-सिद्धि अनायाश ही प्राप्ति कराने वाला - भगवान शिव का प्रदोष व्रत विधि खण्ड

दसवां भाग
भगवान शिव गूढ़ ज्ञान खण्ड

ग्याहरवां भाग
भगवान शिव यंत्र-मंत्र खण्ड

बारहवां भाग
भगवान शिव भजन खण्ड

भूमिका

भगवान शिव के दीवाने भक्तो। ''आदिदेव'' भगवान शिव पूर्ण परब्रह्म परमात्मा–सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। वे ही समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त होकर इस जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार आदि करते हैं। अतः भगवान शिव की ''उपासना'' की प्राचीनता एवं प्रचुरता सर्वमान्य है। शिव देव–देवेश्वर ''महेश्वर'' हैं। कल्याण कर्ता होने से उन्हें ''शंकर'' कहा जाता है। आशुतोष औघड़दानी परम प्रभु के दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता, वे ''उपासकों'' के समस्त अभाव दूर कर देते हैं, कामना पूर्ण कर देते हैं और भक्तों को अपना ''शिव पद'' तक भी प्रदान कर देते हैं।

शिव जी देवताओं ऋषियों, मुनियों, सिद्धों तथा योगियों और मानवों के उपास्य तो है ही किन्तु असुरों आदि के भी परम उपास्य वे ही हैं। शिवोपासना–देवराज इन्द्र, भगवान विष्णु, विधाता श्री ब्रह्मा, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण तथा ऋषि–मुनियों द्वारा अनादि काल से होती आयी है, यहाँ तक कि दैवी संस्कृति के विरोधी आसुरी प्रकृति वाले भौतिकता के साधक रावण, हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, लवणासुर, भस्मासुर, गजासुर, वाणासुर आदि राक्षसों तथा दानवों ने भी शिव जी की अराधना कर अभीष्ट वरदानों से अपना अभ्युदय किया।

अति शीघ्र ही प्रसन्न हो जाने वाले तथा दर्शन देकर कृतार्थ करने वाले भोले भाले कल्याण स्वरूप भगवान उमापति की अराधना उपासना से उनके सेवकों, भक्तों का परम कल्याण हुआ है। भगवान शिव की दयालुता पर व्यंग्य करते हुए एक बार ब्रह्मा जी ने भवानी पार्वती से कहे हैं–''हे महादेवी ! आपके बाबरे पति उन कंगालों को भी धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य सुख दे देते हैं, जिनके मस्तक में सुख–सम्पत्ति का नामो निशान तक हमने नहीं लिखा है, उन रंकों को भी वह ''इन्द्र पद'' दे देते हैं जिससे मुझे स्वर्गों की रचना कर उन्हें इन्द्र पद पर प्रतिष्ठित करना पड़ता है। इतने बड़े औघड़ दानी हैं कि स्वयं तो बाघम्बर पहन कर नंग–धड़ंग रहते हैं, परन्तु अपने भक्तों को कहते हैं कि–''मुझसे थोड़ा न मांगना अधिक से अधिक इच्छित वस्तु मांग लो।''

(विनय पत्रिका ५)

भक्तगणों ! उपरोक्त पसंगों से स्पष्ट हो जाता है कि शिव की कृपा प्राप्ति से मानव कुछ भी प्राप्त कर सकता है। इसके लिए आवश्यकता है सही उपासना विधि की जिसकी आम बाजारू उपासना सम्बन्धी

पुस्तकों में अभाव है, जिससे उपासकों को सही विधि से उपासना करने में अत्यन्त कठिनाईयों का अनुभव होता आ रहा है।

उपासना सम्बन्धी कठिनाईयों को देखते हुए मैंने समस्त देवि देवताओं पर आधारित–''उपासना पद्धति'' की रचना की है, जो अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित है, उन्हीं उपासना पद्धती में से यह–''शिवोपासना''–भी है।

जो भक्तगण संस्कृत भाषा की मूल उपासना वेद, मंत्र, स्तोत्र, स्तुति, वन्दना, पूजन आदि नहीं कर सकते हैं, उनके लिए ''मूल मंत्र स्तोत्रों'' का ''हिन्दी अनुवाद'' भी किया गया है। उपासक हिन्दी अनुवाद मंत्र स्तुति द्वारा पूजन कर सम्पूर्ण लाभ व कामना प्राप्त कर सकते हैं।

इस उपासना पद्धति में–भगवान शिव के नित्य पूजन, पाठ, अनेकानेक वैदिक मूल मंत्र, स्तोत्र, यंत्र, मंत्र, पंचोपचार पूजन विधि, दशोपचार एवं षोड़शोपचार पूजन विधि, महामृत्युञ्जय वैदिक अनुष्ठान, कलश पूजन, मातृका पूजन, हवन कर्म आदि का मूल वैदिक विधान वर्णित है। इसके अलावा उपासना की सम्पूर्ण सरल विधि, भजन, कीर्तन–''द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा एवं भगवान शिव की महिमा पर आधारिक अनेकों रोचक कथावों का भी वर्णन वर्णित है।''
पाठको !

इस ''उपासना पद्धति'' को अपने जीवन में अपना कर आप पूर्ण लाभान्वित होंगे, ''शिव भक्तों के लिए यह अमोध प्रसाद'' है। इसके अलावा ज्योतिष लाल किताब सम्बन्धी ज्ञान की अनेकों सरल पुस्तकें, यंत्र–मंत्र साधना, रत्नों के ज्ञान पर आधारिक पुस्तकें भी हमारी लिखी हुई ''अमित पाकेट बुक्स'' से प्रकाशित हैं जिसे पढ़कर विश्व का कोना–कोना लाभान्वित हो रहा है। तांत्रिक नवग्रह निवारक सिद्ध यंत्र, समस्त कामनापूर्ति हेतु सिद्ध यंत्र, ''जन्म पत्रिका'' बनवाने हेतु, जीवन भर का ''सम्पूर्ण भाग्यफल'' प्राप्त करने हेतु आप हमारे कार्यालय से पत्राचार कर सकते हैं। आपके समस्त पत्रों का उत्तर देने हेतु मैं कृत संकल्पित हूँ। ''भगवान शिव आपकी कामना पूर्ण करें''।

कार्यालय का पता (लेखक)
पंडित वाई० एन० झा ''तूफान''
(ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक)
टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,
H.No. 61, जालंधर सिटी
पिन–144004 (पंजाब)

(प्रथम भाग)

भगवान शिव गूढ़ ज्ञान खण्ड

सम्पूर्ण सृष्टि के आदि और अंतकर्त्ता भगवान शिव

पाठको! भगवान शिव का परिचय लिखना, उनकी स्तुति को शब्दों की सीमा में बांधने का सामर्थ्य किसी भी लेख्यकार में नहीं, क्योंकि शिव जी की स्तुति करने में सहस्त्र फणधारी शेषनाग भी हार गये हैं। जिस समय सृष्टि का कहीं चिन्ह भी न था, उस समय भगवान सदा शिव ही निर्गुण रूप से सर्वव्याप्त सच्चिदानन्द स्वरूप एकमात्र परब्रह्म थे। वे भगवान सदा शिव सत्य एवं परमानन्द रूप हैं। वे मन तथा वचन के स्वामी हैं और नाम रूप से हीन हैं। वे किसी के वशीभूत न तो देखने में आते हैं और न कोई उनका आदि अंत ही जानता है।

परमात्मा शिव मात्र पौराणिक देवता ही नहीं, अपितु वे पंचदेवों में प्रधान, अनादि सिद्ध परमेश्वर एवं निगमागम आदि सभी शास्त्रों में महिमा–मण्डित–महादेव हैं। वेदों में इस परम तत्व को अव्यक्त, अजन्मा, सबका कारण, विश्व प्रपञ्च का सृष्टा, पालक एवं संहारक कहकर उनका गुणगान किया है। श्रुतियों ने सदा शिव को स्वयं भू, शान्त, प्रंपचातीत, परात्पर, परम तत्व ईश्वरों के भी परम महेश्वर कहकर स्तुति की है।

''शिव'' का अर्थ ही है–''कल्याण स्वरूप और कल्याण प्रदाता''।

महाशिवपुराण के चौथे अध्याय में पितामह ब्रह्मा जी ने भगवान शिव के निर्गुण स्वरूप का वर्णन करते हुए कहे हैं कि हे नारद ! शिव जी की स्तुति करने में सहस्त्र फणधारी शेषनाग भी हार गये हैं। योगी लोग उनका भजन करते हैं परन्तु उनके आदि और अन्त को नहीं जान पाते। वे निर्गुन स्वरूप वाले प्रभु बिना कान के ही सब कुछ सुन सकते हैं, बिना आँख के ही सब कुछ देख सकते हैं, बिना नाक के सम्पूर्ण सुगन्धियों को सूंघ लेते हैं, बिना मुख के ही सम्पूर्ण पदार्थों का भोजन करते हैं, बिना जिह्वा के सम्पूर्ण विद्या को पढ़ते हैं, जिन स्वामी की ऐसी

विचित्र महिमा है, उनकी स्तुति भला किस प्रकार की जा सकती है।

हे नारद ! ऐसे निर्गुण स्वरूप भगवान सदा शिव ने जब अपने मन में यह इच्छा की कि हम एक से अनेक हो जाएँ, उस समय वे ''सगुण रूप'' हो गये। उनके निर्गुण एवं सगुण रूप में कोई अन्तर नहीं है। उन्होंने विष्णु और ब्रह्मा को उत्पन्न किया है एवं वे ही सम्पूर्ण प्राणियों में प्रतिष्ठित विराट स्वरूप हैं। उनके सहस्त्रों नाम हैं, जिनमें–शंकर, हर, नाथ, महेश, परम देव, वाम देव, जगदीश्वर, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्मा, गिरीश, शम्भु, सदाशिव, अनीश, विवधु, पार्वती पति, वक्री, त्रिशूलपाणी, ईश्वर, सुखदाता, अनादि अनन्त सर्व आदि संसार में अधिक प्रसिद्ध हैं। वे ही सम्पूर्ण जीवों के कर्मों के साक्षी हैं तथा सर्वव्यापक होते हुए भी, सबसे भिन्न रहते हैं। वे भगवान सदाशिव ब्रह्मा एवं विष्णु द्वारा मान प्राप्त करते हैं और सम्पूर्ण देवताओं के देवता हैं तथा सबके उत्पन्न कर्त्ता हैं।

हे नारद ! अब तुम उन त्रिशूलपाणि भगवान शिव के उस सगुण स्वरूप का वर्णन सुनो जिसका स्मरण करने से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। अपने सगुण स्वरूप में वे मस्तक पर जटाजूट एवं गंगा जी को धारण किए हैं। उनके भाल पर चन्द्रमा की कला एवं धनुषाकार त्रिपुण्ड विराजमान है। वे कानों में कुण्डल पहने हैं और सूर्य, चन्द्रमा तथा अग्नि के समान तीन लाल नेत्रों को धारण किए हैं तथा उनका प्रभात कालीन सूर्य के समान पहला मुख पूर्व दिशा की ओर रहता है और उनका दूसरा मुख दक्षिण दिशा की ओर तीसरा मुख उत्तर दिशा की और रहता है। उनके कंठ में तीन लकीरें हैं। उनके कंठ में विराजित हलाहल की श्यामलता भक्तों के मन को अनायास ही हर लेती है। वे अपने गले में मुण्डों की माला धारण किए रहते हैं और हाथ में त्रिशूल लिए रहते हैं। उन्हें कोई चतुर्भुज और कोई ''पंचमुख'' कहता है। कई ने उन्हें दश भुजाधारी भी कहा है। वे अपने उन हाथों में भिन्न–भिन्न प्रकार के शस्त्र लिये रहते हैं। उँगलियाँ भी सुकोमल एवं अरूण प्रभायुक्त हैं। ऐसे सम्पूर्ण कलाधारी भगवान सदाशिव के पवित्र स्वरूप का स्मरण बड़े–बड़े तपस्वी तथा मुनिजन निश्छल भाव से किया करते हैं।

भगवान शिव को महाशक्ति भवानी उमा का अवतरण

पुराणों में वर्णित है कि ''शक्ति के बिना शिव शव के समान हो जाते हैं'' अतः सृष्टि रचना के प्रथम चरण में सृष्टि के कार्य आरम्भ करने हेतु महादेव जी ने ''शक्ति'' को प्रकट किए।

महाशिव पुराण के चौथे अध्याय में श्री ब्रह्मा नारद संवाद के मध्य पितामह ब्रह्मा जी ने कहे हैं कि हे नारद ! भगवान त्रिशूलपाणि के तेज द्वारा ही महाशक्ति भगवती उमा का जन्म हुआ है। उस महाशक्ति का जो स्वरूप है वह मैं तुम्हें बताता हूँ। वे देवी सोलह श्रृंगार किए हुए हैं। उनका शरीर श्याम कमल के समान कोमल है। उनके केश घुँघराले तथा कृष्ण वर्ण के हैं। उन शक्ति स्वरूपा देवी के ऐसे अनुपम स्वरूप का ध्यान धरकर भक्तों को अत्यन्त प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

हे नारद ! भगवान सदा शिव ने उस परम शक्ति को श्याम रूप में उत्पन्न किया, परन्तु अनेक भक्त उन्हें गौरवर्ण अथवा सोने के समान रंग वाली कहकर उनका स्मरण एवं ध्यान करते हैं। इस संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है और जहाँ तक वचन तथा मन की गति है, उन सबको इन आदि शक्ति की कृपा से ही उत्पन्न समझना चाहिए। हे नारद ! भगवान शिव को परब्रह्म एवं भगवती उमा को परमशक्ति परमेश्वरि समझना चाहिए।

परब्रह्म आदिदेव महादेव द्वारा ब्रह्मा एवं विष्णु की उत्पत्ति

पाठको! भगवान शिव ही सर्वोपरि देव एवं शिवा भवानी भगवती उमा ही सर्वोपरि देवी हैं। इन दोनों की उपासना करने से समस्त देवि-देवताओं की उपासना हो जाती है।

भगवान शिव ने ही ब्रह्मा एवं विष्णु को उत्पन्न किए हैं। शिवपुराण के अन्तर्गत पितामह ब्रह्मा जी ने देवर्षि नारद जी से कहे हैं, हे नारद ! सर्व प्रथम भगवान सदा शिव ने उमा नाम धारिणी उस परम शक्ति के साथ विहार करने के निमित्त एक लोक की रचना की। जिसमें दुःख, चिन्ता शोक तथा दारिद्रय का कोई स्थान नहीं है। वह लोक अत्यन्त रमणीय परम विचित्र एवं मनोहर है जिसे "काशी" कहते हैं। उस नगरी में भगवान सदा शिव भगवती उमा के साथ विहार करने लगे। जब उनके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि हम कोई रचनात्मक कार्य करें, उस समय उन्होंने भगवती उमा से इस प्रकार कहा-"हे प्रिये ! अब हम कोई ऐसा काम करना चाहते हैं कि जिससे हम दोनों को प्रसन्नता की प्राप्ति हो।" हमें एक ऐसा स्वरूप वान तेजवान देवता उत्पन्न करना चाहिए, जो सब विद्याओं में पारंगत हो और जिसके ऊपर हम सम्पूर्ण सांसारिक भार को छोड़कर, आनन्दपूर्वक विहार कर सकें।

भगवान शूलपाणि के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर

भगवती जगदम्बा ने अपने बायीं ओर देखा तो उनकी इच्छा से तुरन्त ही एक मनुष्य रूप देवता की उत्पत्ति हुई। वह अत्यन्त स्वरूप वान, कलावान, बुद्धिमान तथा शीलवान था। उसका सम्पूर्ण शरीर श्याम वर्ण चन्द्रमा जैसा था। वह अपने भाल पर त्रिपुण्ड धारण किए हुए था। वह पति वस्त्र धारण किए हुए था। उसका प्रत्येक अंग सुडौल एवं परम सुन्दर था। वह सम्पूर्ण विद्याओं का निधान, महाप्रतापी, सिद्धरूप तथा पवित्र था। वह उत्पन्न होते ही बारंबार दण्डवत करता हुआ भगवान सदा शिव एवं भगवती उमा के सम्मुख आ, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उस सुन्दर मनुष्य को देखकर उमा सहित उमापति शिव जी अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए। वह भी इन दोनों को देखकर बहुत हर्षित हुआ। तदुपरान्त उसने हाथ जोड़कर इन दोनों की स्तुति तथा प्रशंसा करते हुए प्रार्थना की–''हे पिता एवं हे मातेश्वरी! आप मेरा नाम रखकर, मेरे योग्य कार्य बतावें।''

यह सुनकर श्री शिव जी बोले–''तुम्हारा नाम विष्णु होगा।'' सम्पूर्ण सृष्टि में तुम्हारे समान तेजस्वी तथा प्रतापी अन्य कोई भी प्राणी प्रकट न होगा। तुम्हारा यश सम्पूर्ण संसार में निरन्तर फैला रहेगा। संसारी मनुष्य तुम्हें हरि, चतुर्भुज, भगवान, अच्युत आदि अनेक नाम से पुकारेंगे। तुम भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिए उत्पन्न किए गये हो। अब तुम्हें यह उचित है कि तुम तपस्या करो, जिससे तुम्हें अधिक तेज एवं सामर्थ्य की प्राप्ति हो। इतना कहकर भगवान सदाशिव ने विष्णु को योग विद्या का उपदेश दिया। तब विष्णु एक स्थान पर बैठकर तपस्या करने में लीन हो गए।

हे नारद! वे द्वादश दिव्य सहस्त्र वर्ष पर्यन्त एक ही आसन पर बैठे हुए योग साधन द्वारा भगवान सदाशिव का ध्यान करते रहे, परन्तु जब उन्हें तपस्या का कुछ भी फल प्राप्त नहीं हुआ तो उनके हृदय में अत्यन्त शोक हुआ। उसी समय, जिस प्रकार वर्षा में बादल गरजते हैं, ठीक उसी प्रकार यह आकाशवाणी हुई–''हे विष्णु ! तुम मन लगाकर फिर से तप करो, क्योंकि हम सुगमता से किसी को दिखाई नहीं देते हैं।''–इस आकाशवाणी को सुनकर उन्होंने पुनः कठिन तप करना आरम्भ कर दिया। उस कठिन तपस्या के कारण विष्णु के पवित्र शरीर से इतना पसीना निकला कि उससे एक नदी बह चली। उस अवस्था में बैठे हुए विष्णु जब मूर्च्छित हो गये, तब उनका नाम तीनों लोकों में–''हरनारायण'' प्रसिद्ध हुआ। वे इस प्रकार मूर्च्छित हो गये जैसे कोई निद्रा में शयन कर रहा हो। उसी दशा में भगवान सदा शिव की इच्छा से उन विष्णु की नाभि से एक कमल की उत्पत्ति हुई

उस कमल में बहुत सी पंखुड़ियां थी। वह देखने में बहुत ऊँचा, अत्यन्त मनोहर तथा लम्बा था।

ब्रह्मा जी बोले ! हे नारद ! विष्णु को उत्पन्न करने के पश्चात् भगवान सदाशिव ने मुझे अपनी दाहिनी भुजा से उत्पन्न किया और उसी कमल में बैठा दिया। मेरा रंग लाल था। मेरे चार मस्तक थे, जो चारों दिशाओं की ओर खुल रहे थे। मेरे अन्य सभी अंग विष्णु के समान ही थे। मैं भी अत्यन्त सामर्थ्यवान एवं तेजस्वी था। उसी समय मैंने यह आकाशवाणी सुनी–''हे पुत्र ! भगवान सदाशिव की माया तीनों भुवनों को घेरे हुए हैं। वे जो चाहते हैं, वही होता है।

प्रिय पाठकों ! उपरोक्त वर्णित संक्षिप्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि भगवान शिव ही सर्वश्रेष्ठ सभी देवों के हैं, अतः इनकी उपासना से सभी देवी–देवता स्वयं ही प्रसन्न हो जाते हैं। यह पवित्र ग्रन्थ ''शिव उपासना'' पर आधारित है, अतः उपासना से सम्बन्धित तथ्यों का आगे वर्णन करने जा रहा हूँ।

समस्त वेदों, पुराणों, उपनिषदों, ग्रन्थों देवी-देवताओं एवं ऋषि-मुनियों द्वारा भगवान शिव का-महादेव की मान्यता

पाठको ! भगवान शिव की महानता का वर्णन करना मुझ सरीखे साधारण व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं, क्योंकि समस्त वेदों, पुराणों, उपनिषदों, ग्रन्थों, देवि–देवताओं एवं ऋषि मुनियों द्वारा भी इनकी सम्पूर्ण महानता का वर्णन करने में असमर्थता का आभास प्रतीत होता है। भगवान शिव महादेव हैं, अतः देवों के देव महादेव की माया का सम्पूर्ण ज्ञान किसी में नहीं, फिर मैं किस खेत की मूली हूँ।

फिर भी अपनी अल्पबुद्धि से–वैदिक ग्रन्थों से जो कुछ भी–''शिव जी को महादेव की उपाधि का वर्णन'' एकत्र किया हूँ, वह अपनी लेखनी द्वारा समर्पित कर रहा हूँ–

स्कन्द पुराण के प्रम्होत्तर खण्ड में महर्षि सूत जी ने कहे हैं–

शिवो गुरः शिवो देवः, शिवो वन्धुः शरीरिणाम।
शिव आत्मा शिव जिवः, शिवाद्यन्न किंचन।।
शिव मुद्दिश्य यत्किंञ्चिद दत्तं जप्तं हुतं कृतम्।
तदन्त फलं प्रोक्तं सर्वागम विनिश्चितम्।।
सा जिह्वा या शिवं स्तौति तन्मयो ध्यायते शिवम।

तौ कर्णौ तत्कथा लोलौ तौ हस्तौ तस्य पूजकौ।।
ते नेत्रे पश्यतः पूजां तच्छिरः प्रणतं शिवे।
तौ पादौ यौ शिवक्षेत्रं भक्त्या पर्यटतः सदा।।
यस्येन्द्रियानि सर्वाणि वर्तन्ते शिव कर्मसु।
निस्तरति संसारं भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।
भक्तिलेश युतः शम्भोः स वन्द्यः सर्वदेहिनाम्।।

हिन्दी अनुवाद–(सूत जी ने कहे हैं)–भगवान शिव गुरु हैं, शिव के देव हैं, शिव ही प्राणियों के बन्धु हैं, शिव ही आत्मा और शिव ही जीव हैं। शिव से भिन्न दूसरा कुछ नहीं है। भगवान शिव के उद्येश्य से जो कुछ भी दान, जप और होम किया जाता है, उसका फल अनन्त बताया गया है। यह समस्त शास्त्रों का निर्णय है। वही जिह्वा सफल है, जो भगवान शिव की स्तुति करती है। वही मन सार्थक है, जो शिव के ध्यान में संलग्न होता है। वे ही कान सफल हैं, जो उनकी कथा सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं, और वे ही दोनों हाथ सार्थक हैं, जो शिव जी की पूजा करते हैं। वे नेत्र धन्य हैं, जो भक्ति पूर्वक शिव के क्षेत्रों में सदा भ्रमण करते हैं। जिसकी सम्पूर्ण इन्द्रियाँ भगवान शिव के कार्यों में लगी रहती हैं, वह संसार सागर से पार हो जाता है और भोग तथा मोक्ष प्राप्त कर लेता है। जिसके हृदय में भगवान शिव की लेशमात्र भी भक्ति है, वह समस्त देह धारियों के लिए वन्दनीय हैं।

(स्कन्ध पुराण, ब्रम्होत्तर खण्ड अ० 4)

भगवान शिव को देवाधिदेव की संज्ञा से सुशोभित करते हुए ''ऋग्वेद'' ने कहे हैं–

// स्वध्या च शम्भुः //

हिन्दी अनुवाद–अपनी शक्ति के सहित एक रूद्र (महादेव) ही हैं। (ऋग्वेद–3–17–5)

इसी प्रकार ऋक् संहिता में कहा गया है–

न मृत्यु रासीदमृतं न तर्हि
न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं
तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।।

हिन्दी अनुवाद–उस समय मृत्यु और जीवन नहीं था, रात्रि दिवस का विभाग करने वाला सूर्य भी नहीं था। तब उस प्रलय में क्या था ? उस समय समष्टि स्वरूप सूत्रात्मा, श्वास–प्रश्वास रूप कल्पसृष्टि

और प्रलय आदि व्यवहार से रहित, शान्त समुद्र के समान रूद्र ही (भगवान शिव) था। उस रूद्र (महादेव) की अनन्त शक्ति के एक भाग में माया बीजरूप से थी। जैसे वह वृक्ष की शक्ति अपनी उत्पत्ति के पहले वटबीज में रहती है, वैसे ही अव्यक्त शक्ति ''उमा'' में रहती है। (ऋक संहिता–10–129–2)

तैत्तिरीयारष्यक उपनिषद में भगवान शिव को सर्वोपरि देव (महादेव) की संज्ञा से सुशोभित करते हुए कहा गया है–

सर्वो वै रूद्रस्तस्मै रूद्रय नमोस्तु।
पुरुषो वै रूद्रः सन्महो नमो नमः।।
विश्वं भूतं भुवनं चित्र बहुधा जातं जायमानं च यत्।
सर्वोह्येष रूद्रस्तस्मै रूद्राय नमोअस्तु।।

हिन्दी अनुवाद–जो रूद्र उमापति हैं वही सब शरीरों में जीवरूप से प्रविष्ट हैं, उनके निमित्त हमारा प्रणाम हो। प्रसिद्ध एक अद्वितीय रूद्र ही पुरुष है, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप से, प्रजापति लोक में प्रजापति रूप से, सूर्यमण्डल में वैराट रूप से तथा देह में जीव रूप से स्थित हुआ है। उस महान सच्चिदानन्द स्वरूप महादेव को बारंबार प्रणाम है। समस्त चराचरात्मक जगत जो विद्यमान है, हो गया है तथा होगा वह सब प्रपंच महादेव की सत्ता से भिन्न नहीं हो सकता, वह सब कुछ रूद्र ही हैं, अतः महादेव को कोटि–कोटि प्रणाम है।

(तैत्तिरीयारण्यक०–10/16)

यजुर्वेद में महादेव की स्तुति इस प्रकार की गई है–

नमः सम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
भयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

हिन्दी अनुवाद–''शम्भु–कल्याणकारी सुख प्रदान करने वाले महादेव शिव को नमस्कार है।''

इस मन्त्र में स्पष्ट ही शम्भु शिव शंकर आदि नामों से शिव की स्तुति की गई है। ऐसी स्थिति में शिव जी ब्रह्मा से सर्वथा अभिन्न सिद्ध होते हैं, इसमें किंचित मात्र संदेह नहीं है।

(के० उ० 1–8)–के अनुसार

स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्।
स एव विष्णुः स प्राणः स कालोग्निः स चन्द्रमाः।।

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव ही परब्रह्म परमात्मा ब्रह्मा हैं, वह

इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवरूप हैं, वह अविनाशी सर्वोत्कृष्ट और स्वयं प्रकाश है। वही विष्णु हैं, वह हिरण्यगर्भ रूप प्राण हैं, वह काल, अग्नि और वही चन्द्रमा हैं।

पाठको! विज्ञानान्दधन परमात्मा के वेदों में दो स्वरूप माने गये हैं। प्रकृति रहित ब्रह्म को ''निर्गुण'' ब्रह्म कहा गया है और जिस अंश में प्रकृति या त्रिगुणमयी माया है, उस प्रकृति सहित ब्रह्म के अंश को ''सगुण'' कहते हैं।

सगुण ब्रह्म के भी दो भेद माने गये हैं–एक ''निराकार'', दूसरा ''साकार''। उस निराकार, सगुण ब्रह्म को ही महेश्वर, परमेश्वर, महादेव आदि नामों से पुकारा जाता है। वह सर्वव्यापी, निराकार, सृष्टि कर्त्ता परमेश्वर (महादेव) स्वयं ब्रह्मा, विष्णु महेश–इन तीनों रूपों में प्रकट होकर सृष्टि की उत्पत्ति पालन और संहार किया करते हैं। इसकी प्रमाणिकता सिद्ध करते हुए भगवान विष्णु के प्रति भगवान महेश्वर कहते हैं–

त्रिधा भिन्नो ह्यंह विष्णो ब्रह्मा विष्णु हराख्या।
सर्गरक्षा लय गुणैर्निष्कलोऽपि सदा हरे।।
यथा च ज्योतिषः सङ्गज्जलादेः स्पर्शता न वै।
तथा ममागुणस्यापि संयोगाद्बन्धनं न हि।।
यथैकस्या मृदो भेदो नाम्नि पात्रे न वस्तुतः।
यथैकस्य समुद्रस्य विकारौ नैव वस्तुतः।।
एवं ज्ञात्वा भवद्भ्यां च न दृश्य भेदकारणाम्।
वस्तुतः सर्वदृश्यं च शिव रूपं मतं मम।।
अहं भवानयं चैव रूद्रोऽयं चो भविष्यति।
एवं रूपं न भेदोऽस्ति भेदे च बन्दन भवेत्।।
तथापीह मदीयं वै शिवरूपं सनातनम्।
मूल भूतं सदा प्रोक्तं सत्यं ज्ञान मनन्तकम्।।

(शिव० ज्ञान० 4–41–44–48–51)

हिन्दी अनुवाद–हे विष्णो ! हे हरे ! मैं स्वभाव से निर्गुण होता हुआ भी संसार की रचना, स्थिति एवं प्रलय के लिए क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र–इन तीनों रूपों में विभक्त हुआ हूँ। जिस प्रकार जलादि के संसर्ग से अर्थात् उसमें प्रतिबिम्ब पड़ने से सूर्य आदि ज्योतियों में कोई स्पर्शता नहीं आती, उसी प्रकार मुझ निर्गुण का भी गुणों के संयोग से बन्धन नहीं होता। मिट्टी के नाना प्रकार के पात्रों में केवल

नाम और आकार का ही भेद है, वास्तविक भेद नहीं है–एक मिट्टी ही है। समुद्र के भी फेन बुदबुदे तरंगादि विकार लक्षित होते हैं, वस्तुतः समुद्र एक ही है। यह समझकर आप लोगों को भेद का कोई कारण नहीं देखना चाहिए। वस्तुतः सम्पूर्ण सृष्टि शिवरूप ही है। मैं ही सत्य ज्ञान एवं अनन्त रूप गुणातीत पर ब्रह्म हैं।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है–कि भगवान शिव ही देवाधिदेव ''महादेव'' हैं। अतः इनकी पूजा–उपासना करने से समस्त देवि–देवताओं की अराधना हो जाती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिन प्राणियों को मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा हो, वे भगवान शिव की ही पूजा अर्चना करें। महादेव की पूजन करने से समस्त विपदावों का नाश और समस्त ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं।

शिव - तत्व विचार

पाठकों ! जगतसृष्टा परमात्मा का नाम ''शिव'' है, इसका अर्थ कल्याण करने वाला है। जब कल्याण करने वाले दो पदार्थों का विचार करते हैं, तब वही शिवतर हो जाता है। सारे ब्रह्माण्ड में वही सबसे अधिक सुख–शान्ति देने वाले हैं।

''महेश्वर'' का एक नाम ''रूद्र''–भी है, क्योंकि दीन–दुखियों के दुःख पर वे आंसू बहाते हैं तथा पापियों को रूलाते हैं। उक्त शब्द में रूद्र धातु है, जिसका अर्थ रोना है। वे मुक्ति के स्वामी है।

अमृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति रोहति।
ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः
क्षीणैः क्लेशै जंन्मृत्यु प्रहाणि।।

(श्वेताश्वतर०–1–11)

हिन्दी अनुवाद–कोई शिव की इच्छा में विघ्न नहीं उपस्थित कर सकता। वही उत्पन्न करता है, पालन करता है तथा संहार में प्रवृत्त होता है।

पाठको ! ''शैव सिद्धान्त सार'' में शिव तत्व का वर्णन निम्न प्रकार किया है–

कल्पान्त काले प्रलुढत्कपाले,
समग्र लोके विपुलश्मशाने।
त्वमेक देवोऽसि तदावशिष्ट-
श्चिवाश्रयो भूतिधरः कपाली।।

हिन्दी अनुवाद—महादेव भूत–भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को जानते हैं। प्रलय काल में उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं रहता, ब्रह्माण्ड श्मशान हो जाता है, उनकी भस्म और रूण्ड–मुण्ड में वही व्यापक होता है, अतएव ''चिता भस्मालेपी'' और ''रूण्डमुण्ड धारी''—कहलाते हैं न कि वह अघोरियों के समान चिता निवासी हैं।

कल्याण और दया के सागर भोलेनाथ महादेव

महा–महेश्वर भोलेनाथ कल्याण व दया के सागर हैं। वे इतने दयालु एवं औघड़दानी हैं कि जिस दोष एवं अपवित्रता से साधारणतया घृणा की जाती है, वे उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते हैं और भक्त की थोड़ी सी सेवा भाव से ही रीझकर–''धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–'' सभी के सभी प्रदान कर देते हैं। वे स्वयं इतने विरक्त हैं कि समस्त दृश्यमान वस्तुओं को तुच्छ समझते हैं। इसी स्वभाव के कारण उन्होंने समुद्र मंथन के समय निकले हुए हलाहल (विष) का पान किया एवं अन्य रत्नों में से किसी की प्राप्ति की अभिलाषा नहीं की। इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने रावण तथा भस्मासुर आदि को भी बिना बिचारे अनेक वरदान दे दिए।

उनके भोलेपन के बारे में एक कथा इस प्रकार है–

एक चोर था। वह किसी शिव मंदिर में घण्टा–चुराने गया। घण्टे पर हाथ न पहुंच पाने के कारण वह शिवलिंग पर ही चढ़ गया। भोलेनाथ शंकर जी ने माना कि और लोग तो हमपर थोड़ी–थोड़ी वस्तुएँ ही चढ़ाते हैं, परन्तु इसने तो स्वयं को ही चढ़ा दिया। अतः प्रकट हो गये और चोर का कल्याण किया। अपनी ऐसी ही महानता के कारण शंकर जी ''महादेव'' कहलाते हैं, जबकि अन्य देवता केवल ''देव'' कहलाते हैं।

भगवान शंकर जी ज्ञान, योग, वैराग्य, भक्ति के भंडार ही नहीं, अपितु आगम, तंत्र–मंत्र–यंत्र–नृत्य–वाद्य, संगीत, व्याकरण आदि समस्त कलाओं और विद्याओं के आचार्य भी हैं, उनका वास्तविक स्वरूप अत्यन्त सौम्य एवं शान्ति दायक है।

उनके क्रोध की लीला जगत के कल्याण के लिए ही समय–समय पर प्रकट होती है। जैसे–कामदेव का संहार एवं प्रलय और महाप्रलय। इसीलिए शंकर जी का रूप भी विरूद्ध धर्माश्रय है। एक ओर जहाँ सिर पर पतित पावनी गंगा जी, एवं शीतल चन्द्रमा हैं, वहीं दूसरी ओर

उनके गले में भयंकर सर्प एवं हाथों में त्रिशूल तथा ब्रह्मरूपी डमरू भी है। पार्वती जी के विवाह के अवसर पर बारात में शंकर जी के भयानक एवं सौम्य दोनों ही रूपों के दर्शन हुए हैं।

शास्त्रों में जहाँ कहीं भी ''ईश्वर'' अथवा ''ईश'' शब्द बिना किसी विशेषता के आया है, उसका अर्थ ''महादेव'' ही लगाया जाता है। कहा जाता है कि जब शंकर जी एवं पार्वती का पाणिग्रहण संस्कार हुआ, तब शाखा उच्चारण के समय नाम पूछे जाने पर वर का नाम ''शिव'' बताया गया, पर इनके पिता का नाम पूछने पर सब चुप हो गए। कुछ समय सोचने के पश्चात् ब्रह्मा जी ने कहा कि इनका पिता मैं ''ब्रह्मा'' हूँ, और पितामह का नाम पूछने पर ब्रह्मा जी ने ''विष्णु'' बताया। तदनन्तर, पितामह का नाम पूछा गया। उत्तर देने में सारी सभा अत्यन्त मौन रही। अन्त में मौन भंग करते हुए शंकर जी स्वयं बोले कि–सबके ''प्रपितामह'' तो हम ही हैं।

रूद्र हृदय–उपनिषद में लिखा है कि विष्णु कार्य ब्रह्मा क्रिया एवं महेश्वर कारण हैं, वास्तव में तीनों एक ही हैं।

कार्य विष्णुः क्रिया ब्रह्मा कारणं तु महेश्वरः।
प्रयोजनार्थ रूद्रेण मुर्तिरेका त्रिधा कृता।।

अर्थात्–(हिन्दी अनुवाद) विष्णु कार्य हैं, ब्रह्मा क्रिया हैं, महेश्वर कारण हैं। प्रयोजन के अर्थ के लिए रूद्र ने एक मूर्ति तीन प्रकार की कर ली है।

इस प्रसंग में यह स्मरणीय है कि भगवान राम ने लंका की यात्रा से पूर्व एक शिवलिंग की स्थापना की, जिसका नाम ''रामेश्वर'' रखा गया और उसका पूजन किया। उस समय प्रश्न हुआ कि–''रामेश्वर'' पद में क्या समास है ? भगवान राम ने कहा–''षष्ठीतत्पुरूष''–जिसका अर्थ है–''राम के ईश्वर''। शंकर जी बोले कि नहीं–''षष्ठी बहुव्रीहि'' है–अर्थात्– ''राम है ईश्वर जिसके''। तदनन्तर ब्रह्मा जी ने दोनों से भिन्न अपना मत प्रकट किया और कहा कि ये दोनों ही नहीं है, केवल ''कर्मधारय समास'' है, –अर्थात् दोनों बराबर हैं।

भगवान भोलेनाथ के भोलेपन का एक प्रसंग इस प्रकार है–

एक समय दक्षिण में मीनाक्षी पुरम् के राजा के दरबार में सोमदत्त नामक एक निपुण गायक था, जिसे राजा बड़े सम्मान तथा विपुल वैभव से रखते थे। इससे अन्य गायकों को इर्ष्या होती थी। किसी अन्य प्रदेश का एक प्रसिद्ध गायक इस उद्देश्य से मीनाक्षी पुरम् आया कि सोमदत्त को प्रतियोगिता में पराजित करके स्वयं राजदरबारी बन जाँय, अतः वह राजा से मिला। राजा ने अगले दिन का समय प्रतियोगिता के लिए निश्चित किया और घोषणा की कि योग्यता में विजयी गायकों

को "राजदरबार" पद और दूसरे को दण्ड प्रदान किया जायेगा। आगन्तुक गायक की कला की निपुणता की अधिक प्रसिद्धि थी। अतः सोमदत्त ने "भगवान सोमेश्वर" के मंदिर में जाकर सारी रात जागरण एवं अनशन किया तथा कातर स्वर से प्रार्थना की कि "हे प्रभो ! मेरी लाज और मेरा जीवन आपही के हाथ है, दया कर इस विपत्ति से दास को बचाइये।

अगले दिन प्रातः ही भगवान शंकर फटे–पुराने कपड़ों में एक भिखारी का रूप धारण कर आगन्तुक गायक के शिविर में पहुंचे। गायक ने भिखारी के पास सारंगी देखकर पूछा–"क्या तुम कुछ गाना–बजाना जानते हो ? भिखारी का "हाँ" में उत्तर पाने पर उसने कहा–"अच्छा कुछ सुनाओ"। भिखारी बने भगवान शिव ने ऐसा दिव्य गान सुनाया और अनुपम वाद्य बजाया जैसा उसने कभी सुना नहीं था। अतएव मंत्रमुग्ध भाव से उसने भिखारी से पूछा–तुम कौन हो ? शंकर जी बोले–मैं राजदरबारी सोमदत्त गायक का शिष्य हूँ। यह सुनकर आगन्तुक गायक चकित हो गया। उसने अपने मन में सोचा कि जिसका शिष्य इतना निपुण है, उसका गुरु स्वयं कैसा होगा। अतः सोमदत्त को परास्त करना असम्भव समझकर वह समय से पूर्व ही तुरन्त अपने देश को भाग गया और सोमदत्त की रक्षा हो गयी।

भोले–भंडारी भगवान शंकर इतने दयालु हैं कि अपने भक्त के भले की रक्षा के लिए अभक्त के सम्मुख भी भिखारी का वेश धारण करके नाचने गाने का कार्य बिना संकोच किया।

भगवान शंकर का श्रीराम के प्रति अगाध स्नेह

भगवान शंकर का मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के प्रति केवल भक्ति भावना ही नहीं, बल्कि "राम के नाम" से भी अगाध स्नेह है। एक बार कुछ लोग एक मुरदे को श्मशान ले जा रहे थे और –"राम नाम सत् है"–ऐसा बोल रहे थे। शंकर जी ने राम–नाम सुना तो वे भी उनके साथ हो गये। जैसे पैरों की बात सुनकर लोभी आदमी उधर खिंच जाता है, ऐसे ही राम–नाम सुनकर, शंकर जी का मन भी उन लोगों की ओर खिंच गया। अब लोगों ने मुरदे को श्मशान में ले जाकर जला दिया और वहाँ से लौटने लगे। शंकर जी ने देखा तो विचार किया कि क्या बात है ? अब कोई आदमी राम–नाम ले ही नहीं रहा है। उनके मन में आया कि उस मुरदे में ही कोई करामात थी, जिसके कारण ये सब लोग राम–नाम ले रहे थे। अतः उसी के पास जाना चाहिए।

शंकर जी ने श्मशान में जाकर देखा कि वह तो जलकर राख हो गया है। अतः शंकर जी ने उस मुरदे की राख अपने शरीर में लगा ली, और वहीं रहने लगे। ''राख और मसान''—दोनों के पहले अक्षर लेने से ''राम'' हो जाता है। एक कवि ने कहा है—

रुचिर रकार बिन तज दी, सती सी नार,
कीनी नाहि रति रुद्र, पायके कलेश को।
गिरिजा भई है पुनि तप से अर्पणा तबे,
कीनी अर्धंगा प्यारी लागी गिरिजेश को।।
विष्णु पदी गंगा तऊ धूर्जटी धरि न शीश,
भागीरथी भई तब धारी है अशेष को।
बार-बार करत रकार व मकार ध्वनि,
पूरण है प्यार राम-नाम पे महेश को।।

पाठको ! सती के नाम में—''र'' कार अथवा ''म'' कार नहीं है, इसलिए—शंकर जी ने सती का त्याग कर दिया। जब सती ने हिमाचल के यहाँ जन्म लिया, तब उनका नाम—गिरिजा (पार्वती) हो गया। ''इतने पर भी शंकर जी हमें स्वीकार करेंगे या नहीं''—ऐसा सोचकर पार्वती जी तपस्या करने लगी। जब उन्होंने सूखे पत्ते भी खाना छोड़ दिए, तब उनका नाम—''अपर्णा''— हो गया।

गिरिजा और अपर्णा—दोनों नामों में—''र'' कार आ गया तो शंकर जी इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने पार्वती जी को अपनी अर्द्धांगिनी बना लिया।

इसी तरह शंकर जी ने पहले गंगा को स्वीकार नहीं किया। परन्तु जब गंगा का नाम—''भागीरथी'' पड़ गया, तब शंकर जी ने उनको अपनी जटा में धारण कर लिया। अतः भगवान शंकर का राम—नाम में विशेष प्रेम है। वे दिन—रात राम नाम का जप करते रहते हैं। केवल दुनिया के कल्याण के लिए ही वे राम—नाम का जप करते हैं, अपने लिए नहीं।

शंकर के हृदय में विष्णु (श्री राम) का और विष्णु के हृदय में शंकर का बहुत अधिक स्नेह है। दोनों एक दूसरे की पूजा—ध्यान करते हैं। शिवतामस मूर्ति हैं और विष्णु सत्वमूर्ति हैं, पर एक दूसरे का ध्यान करने से शिव श्वेतवर्ण के और विष्णु श्याम वर्ण के हो गये। अतः शिव और विष्णु में कोई भेद नहीं समझना चाहिए।

उपरोक्त प्रसंग के सम्बन्ध में (मानस ६—2) कहा गया है कि—

शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहि कल्प भरि, घोर नरक महुँ वास।।

शास्त्रों में वर्णित है–

**उभयोः प्रकृति स्तवेका प्रत्यय भेदेन भिन्नवद् भांति।
कलयति कश्चिन मूढो हरिहर भेदं विनाशास्त्रम्।।**

अर्थात्–

''हरि और हर''–दोनों की प्रकृति एक ही–है, पर निश्चय के भेद से दोनों भिन्न की तरह दिखते हैं। कुछ मूर्ख लोग ''हरि और हर को'' अर्थात् विष्णु, राम और शंकर को भिन्न–भिन्न बताते हैं, जो शास्त्र से विरुद्ध हैं। जब श्री राम और भगवान शिव में भिन्नता नहीं है, फिर एक दूसरे रूप से अगाध प्यार होना तो स्वभाविक ही है।

''हरि'' और ''हर'' एक ही परब्रह्म परमात्मा के दो स्वरूप दोनों स्वरूप का परस्पर अगाध प्रेम

एक बार भगवान नारायण अपने वैकुण्ठ लोक में सोये हुए थे। स्वप्न में वे क्या देखते हैं कि करोड़ों चन्द्रमावों की कान्ति वाले त्रिशूल–डमरूधारी, स्वर्णाभरण–भूषित, सुरेन्द्रवन्दित, अणिमादी त्रिलोचन भगवान शिव प्रेम और आनंद से उन्मत्त होकर उनके सामने नृत्य कर रहे हैं। उन्हें देखकर भगवान विष्णु हर्ष गदगद हो सहसा शय्या पर उठकर बैठ गये और कुछ देर तक ध्यानस्थ बैठे रहे।

उन्हें इस प्रकार बैठे देखकर श्री लक्ष्मी जी उनसे पूछने लगीं कि भगवन ! आपके इस प्रकार उठ बैठने का क्या कारण है ? भगवान ने कुछ देर तक उनके इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया और आनन्द में निमग्न हुए चुपचाप बैठे रहे। अन्त में कुछ स्वस्थ होने पर वे गद्–गद् कंठ से इस प्रकार बोले–हे देवि ! मैंने अभी स्वप्न में भगवान श्री महेश्वर का दर्शन किया है, उनकी छवि ऐसी अपूर्व आनन्द मय एवं मनोरथ थी कि देखते ही बनती थी। मालूम होता है, शंकर जी ने मुझे स्मरण किया है। अहोभाग्य ! चलो, कैलाश में चलकर हमलोग महादेव के दर्शन करें।

यह कहकर दोनों कैलाश की ओर चल दिए। मुश्किल से आधी दूर गये होंगे कि देखते हैं भगवान शंकर स्वयं गिरिजा के साथ उनकी ओर चले आ रहे हैं। अब भगवान के आनन्द का क्या ठिकाना ? मानो घर बैठे निधि मिल गयी। पास आते ही दोनों परस्पर बड़े प्रेम से मिले। मानो प्रेम और आनंद का समुद्र उमड़ पड़ा। एक दूसरे को देखकर

दोनों के नेत्रों से आनन्दाश्रु बहने लगे और शरीर पुलकायमान हो गया। दोनों ही एक दूसरे से लिपटे हुए कुछ देर मूकवत खड़े रहे। प्रश्नोत्तर होने पर मालूम हुआ कि शंकर जी को भी रात्रि में इसी प्रकार का स्वप्न हुआ कि मानो विष्णु भगवान को वे उसी रूप में देख रहे हैं, जिस रूप में वे अब उनके सामने खड़े थे।

दोनों के स्वप्न का वृत्तान्त अवगत होने पर दोनों ही लगे एक दूसरे से अपने यहाँ लिवा ले जाने का आग्रह करने। नारायण कहते बैकुण्ठ चलें, और शम्भु कहते कैलाश की ओर प्रस्थान कीजिए। दोनों के आग्रह में इतना अलौकिक प्रेम था कि यह निर्णय करना कठिन हो गया कि कहाँ–चला जाय ? इतने में ही क्या देखते हैं कि वीणा बजाते, हरिगुण गाते नारद जी कहीं से आ निकले। बस, फिर क्या था ? लगे दोनों ही उनसे निर्णय कराने कि कहाँ चला जाय ? बेचारे नारद जी तो स्वयं परेशान थे उस अलौकिक मिलन को देखकर, वे दो स्वयं अपनी सुध–बुध भूल गये और लगे मस्त होकर दोनों का गुणगान करने। अब निर्णय कौन करे ? अन्त में यह तै हुआ कि भगवती उमा जो कह दें, वही ठीक है। भगवती उमा पहले तो कुछ देर चुप रही। अन्त में वे दोनों को लक्ष्य करके बोली–हे नाथ ! हे नारायण !! आप लोगों के निश्चल, अनन्य एवं अलौकिक प्रेम को देखकर तो यही समझ में आता है कि आपके निवास स्थान अलग–अलग नहीं हैं, जो कैलाश है वही वैकुण्ठ है और जो वैकुण्ठ है वही कैलाश है, केवल नामों में ही भेद है। यही नहीं, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी आत्मा भी एक ही हैं, केवल शरीर देखने में दो हैं। और तो और मुझे तो अब यह स्पष्ट दिखने लगा है कि भार्याएँ भी एक ही हैं, दो नहीं। जो मैं हूँ वही लक्ष्मी हैं और जो श्री लक्ष्मी है वही मैं हूँ। केवल इतना ही नहीं, मेरी तो अब यह दृढ़ धारणा हो गयी है कि आप लोगों में से एक के प्रति जो द्वेष करता है, वह मानो दूसरे के प्रति ही करता है। एक की जो पूजा करता है, स्वभाविक ही दूसरे की भी करता है और जो एक को अपूज्य मानता है, वह दूसरे की भी पूजा नहीं करता। मैं तो यह समझाती हूँ कि आप दोनों में जो भेद मानता है, उसका चिरकाल तक घोर पतन होता है।

मैं देखती हूँ कि आप मुझे इस प्रसंग में अपना मध्यस्थ बनाकर मानो मेरी प्रवञ्चना कर रहे हैं, मुझे चक्कर में डाल रहे हैं, मुझे भुला रहे हैं। अब मेरी यह प्रार्थना है कि आप लोग दोनों ही, अपने–अपने लोक को पधारिये। श्री विष्णु यह समझें कि हम शिवरूप से बैकुण्ठ जा रहे हैं और महेश्वर यह मानें कि हम विष्णु रूप से कैलाश गमन कर रहे हैं।

इस उत्तर को सुनकर दोनों परम प्रसन्न हुए और भगवती उमा

की प्रशंसा करते हुए दोनों प्रणामालिंगन के अनन्तर हर्षित हो अपने—अपने लोक को चले गये।

लौटकर जब श्री विष्णु वैकुण्ठ पहुंचे तो श्री लक्ष्मी जी उनसे पूछने लगीं कि—प्रभो ! सबसे अधिक प्रिय आपको कौन है ? इस पर भगवान बोले—प्रिये ! मेरे प्रियतम केवल श्री शंकर हैं। देहधारियों को अपने देह की भांति वे मुझे अकारण ही प्रिय हैं, क्योंकि वास्तव में मैं ही जनार्दन हूँ—और मैं ही महादेव हूँ। अलग—अलग दो घड़ों में रखे हुए जल की भांति मुझमें और उनमें कोई अन्तर नहीं है। शंकर जी के अतिरिक्त शिव की आराधना करने वाला शिव भक्त भी मुझे अत्यन्त प्रिय है। इसके विपरीत जो शिव की पूजा नहीं करते, वे मुझे कदापि प्रिय नहीं हो सकते।

पाठको ! ''वृहद्धर्मपुराण के पूर्व खण्ड में वर्णित''—उपरोक्त प्रसंग से स्पष्ट हो जाता है कि ''भगवान शिव की उपासना'' करने से समस्त देवि—देवताओं की उपासना हो जाती है। अतः मानव प्राणी को भगवान शिव की उपासना कर सर्वोत्तम लाभ, समस्त कामनावों की पूर्ति एवं मोक्ष का मार्ग प्रशस्थ करना चाहिए।

देवों के देव भोले महादेव
(लिङ्ग पुराण से प्राप्त)

''लिङ्ग पुराण'' के ''शिव'' अविनाशी, परब्रह्म, निर्दोष, सर्व सृष्टि के स्वामी, निर्गुण, अलख, ईश्वरों के ईश्वर, सर्वश्रेष्ठ विश्वम्भर और संहारकर्त्ता हैं। वे परब्रह्म पर तत्व, परमात्मा और परज्योति हैं। विष्णु और ब्रह्मा उनसे उत्पन्न हुए हैं। समस्त सृष्टि के आदि कारण सदाशिव ही हैं।

शिव जी की सर्वज्ञता, व्यापकता अथवा ईश्वर को सिद्ध करने के लिए लिंग पुराण के अन्तर्गत उनकी मनोहर कथाएँ हैं। विष्णु और ब्रह्मा पर शिव का आधिपत्य कितनी ही मनोंरजक कथावों में सिद्ध किया गया है। शिव महत्व का विशद वर्णन करने के लिए उनमें से कुछ ललित कथावों के आवश्यक अंशों का सूक्ष्मोल्लेख अनिवार्यतः आवश्यक एवं वाञ्छनीय है।

एक बार ब्रह्मा जी का समाधान—करते हुए विष्णु ने कहा—''हे ब्रह्मा जी ! आप ऐसा न कहें। महादेव जी जगत के हेतु हैं और सब बीज इनके हैं। ये बीजवान् हैं। ''पुराण पुरुष परमेश्वर'' इन्हीं को कहते हैं। यह जगत इनका खिलौना है। बीजवान् ये हैं, आप बीज हैं और हम योनि हैं।''

श्री विष्णु के उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि शिव ही पूर्ण पुरुष हैं।

शिवलिंग की उत्पत्ति—एक बार विष्णु और ब्रह्मा में इस विषय पर कि ''परमेश्वर''—कौन है, विवाद चल पड़ा। दोनों ही अलग-अलग अपने को ईश्वर सिद्ध कर रहे थे। ब्रह्मा और विष्णु में परस्पर कलह हो ही रहा था कि एक अति प्रकाशमान—''ज्योर्तिलिङ्ग'' उत्पन्न हुआ। उस लिंग के प्रार्दुभाव को देखकर दोनों ने उसे अपनी कलह निवृति का साधन समझ यह निश्चय किया कि जो कोई इस लिंग के अन्तिम भाग को स्पर्श करे—वही ''परमेश्वर''— है। वह लिंग नीचे और ऊपर दोनों ओर था। ब्रह्मा जी तो हंश बनकर लिंग का अग्रभाग ढूँढने को ऊपर उड़े और विष्णु ने अति विशाल एवं सुदृढ़ वराह बनकर लिंग के नीचे की ओर प्रवेश किया। इस भांति दोनों हजारों वर्ष तक चलते रहे, परन्तु लिंग का अंत न पाया। तब दोनों अति व्याकुल हो लौट आये और बार-बार उस परमेश्वर को प्रणाम कर उसकी माया से मोहित हो विचार करने लगे कि यह क्या है कि जिसका कहीं न अन्त है न आदि। विचार करते-करते एक ओर प्लुतस्वर से ''ओम्-ओम्''—यह शब्द सुनायी पड़ा। शब्द का अनुसंधान करके लिंग की दक्षिण ओर देखा तो ''ॐकार स्वरूप'' स्वयं शिव दिख पड़े। भगवान विष्णु ने शिव की स्तुति की। स्तुति को सुनकर महादेव जी प्रसन्न हो कहने लगे—''हम तुमसे प्रसन्न हैं, तुम भय छोड़कर हमारा दर्शन करो। तुम दोनों ही हमारी देह से उत्पन्न हुए हो। सब सृष्टि के उत्पन्न करने वाला ब्रह्मा हमारे दक्षिण अंग से और विष्णु वाम अंग से उत्पन्न हुए हैं। हम तुमसे प्रसन्न हैं, वर मांगो।''

विष्णु और ब्रह्मा ने शिव जी के चरणों में दृढ़ भक्ति मांगी।

पार्वती स्वयंवर—जिस समय हिमालय ने पार्वती का स्वयंवर किया था, उस समय उनके निमंत्रण से अनेकों देव, नाग, किन्नर आदि इकट्ठे हुए। शिव भी एक बालक के रूप में आए और पार्वती के उत्सङ्ग (साथ में) में जाकर बैठ गये। बालक के इस उद्धत व्यवहार को देख कर सब देवगण बहुत क्रुद्ध हुए और एक-एक करके उस बालक पर प्रहार करने को अग्रसर हुए। परन्तु वह बालक कोई साधारण बालक नहीं था। वह तो स्वयं सदाशिव थे। सदाशिव ने अपने ओज द्वारा देवताओं के अंगों को स्तम्भित एवं अस्त्रों को कुंठित कर दिया। देवताओं के इस पराभव को देखकर ब्रह्मा ने ध्यानपूर्वक विचार किया तो ज्ञात हुआ कि यह बालक स्वयं शिव है। तब तो वे महादेव जी के चरणों में लोट गए और उनकी स्तुति करने लगे।

ब्रह्मा जी की स्तुति से प्रसन्न होकर शिव जी ने कृपा करके देवताओं को पूर्ववत् पुष्ट कर दिया।

उपर्युक्त प्रसंग से ज्ञात होता है कि भगवान शिव की ब्रह्मा जी ने पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर के रूप में ही अराधना की है।

''शिव विवाह''—के समय विष्णु के प्रति ब्रह्मा जी के निम्नलिखित वाक्य उल्लेखनीय है—

''हे विष्णु ! आप और भगवती पार्वती शिव जी के वाम अंग से उत्पन्न हुए हैं।— शिव जी की माया ही से भगवती ''हिमाचल'' की कन्या हुईं। सब जगत की, आपकी और हमारी यह पार्वती माता हैं और शिव जी पिता हैं। शिव जी की मूर्तियों से ही जगत उत्पन्न हुआ है। भूमि, जल, अग्नि, आकाश, पवन, सूर्य, चन्द्र, समस्त देवगण—ये सब शिवजी की मूर्तियाँ हैं। यह पार्वती शुक्ल, कृष्ण, लोहित वर्णों से युक्त अजा अर्थात् ''माया'' हैं और आप भी प्रकृति रूप हैं। अब हमारे और हिमालय के वचन से शिव जी के प्रति पार्वती जी को देना उचित है।''

इस पर परम शिवभक्त विष्णु भगवान ने उठकर शिव जी को प्रणाम किया और उनके चरणों को धोकर उस चरणोदक को अपने, ब्रह्मा जी के और हिमालय के मस्तक पर छिड़का और पार्वती को शिव जी के अर्पण किया।

शरभावतार—''लिंग पुराण के ९६वें अध्याय में'' शरभरूप शिव का नृसिंह रूप विष्णु को परास्त करने की कथा बड़ी विचित्र है।

''हिरण्यकशिपु''— का वध करके विष्णु रूप नृसिंह भयंकर गर्जना करने लगे। उनकी भयंकर गर्जना के घोर शब्द से ब्रह्मलोक पर्यन्त सब लोक काँप उठे। सब सिद्ध, साध्य, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवता भी अपने—अपने प्राण बचाने के लिये भयभीत हो भागे। वे लोकालोक पर्वत के शिखर पर से अति विनम्र भाव से नृसिंह जी की स्तुति करने लगे। परन्तु नृसिंह जी इस पर भी शान्त न हुए। तब तो सब देवता अपनी रक्षा के लिए मन्दराचल पर शिव जी के समीप गये। देवताओं की दीन दशा देखकर शिव जी ने प्रसन्न वदन होकर कहा कि—''हम शीघ्र ही नृसिंह रूप अग्नि को शान्त करेंगे।''

देवताओं की स्तुति सुनकर नृसिंह रूप तेज को शान्त करने के लिए महादेव जी ने भैरवरूप अपने अंश ''वीरभद्र'' का स्मरण किया। वीरभद्र उसी क्षण उपस्थित हुए। महादेव जी ने वीरभद्र से कहा—''वत्स ! इस समय देवताओं को बड़ा भय हो रहा है। इस कारण नृसिंह रूप अग्नि को शीघ्र जाकर शान्त करो। पहले तो मीठे वचनों से समझाओ, यदि न समझे तो भैरव रूप दिखलाओ।''

शिव जी की यह आज्ञा पाकर शान्त स्वरूप से वीरभद्र नृसिंह के समीप जाकर उनको समझाने लगे। इस समय का ''वीरभद्र—विष्णु—संवाद'' बड़ा मार्मिक है। इसमें भगवान विष्णु के ऊपर शिव का महत्व भली भाँति प्रदर्शित होता है।

वीरभद्र ने कहा ''हे नृसिंह जी ! आपने जगत के कल्याण के लिए

अवतार लिया है और परमेश्वर ने भी जगत की रक्षा का अधिकार आपको दे रखा है। मत्स्य रूप धरकर आपने इस जगत की रक्षा की। कूर्म और वाराह रूप से पृथ्वी को धारण किया, इस नृसिंह रूप से हिरण्यकशिपु का संहार किया, वामन रूप धरकर राजा बलि को बाँधा। इस प्रकार जब–जब लोकों में दुःख उत्पन्न होता है, तब–तब आप अवतार लेकर सब दुःख दूर करते हैं। आप सब जीवों के उत्पन्न करने वाले और प्रभु हैं। आपसे अधिक कोई शिव भक्त नहीं।''

वीरभद्र जी के शान्तिमय वचनों से नृसिंह जी की क्रोधाग्नि शान्त न हुई। उन्होंने उत्तर दिया–''वीरभद्र ! तू जहाँ से आया है वहीं चला जा।'' इस पर नृसिंह जी से वीरभद्र का बहुत विवाद हुआ। अन्त में शिव कृपा से वीरभद्र का दुर्घर्ष, आकाश तक व्यापक, बड़ा विस्तृत एवं भयंकर रूप हो गया। उस समय शिव जी के उस भयंकर स्वरूप में सब तेज विलीन हो गये। इस रूप का आधा शरीर मृग का और आधा शरभ पक्षी का था। शरभरूप शिव अपनी पुच्छ में नृसिंह को लपेटकर छाती में चोंच का प्रहार करते हुए जैसे सर्प को गरूड़ ले उड़े, ऐसे ले उड़े। फिर तो नृसिंह जी ने शिव जी से क्षमा याचना की और अति विनम्र भाव से स्तुति की।

सुदर्शन चक्र की कथा–एक बार शिव को प्रसन्न करने के हेतु विष्णु ने बड़ा उग्र तप किया। उस समय उन्होंने–''शिव सहस्त्र नाम स्तोत्र''–के लिए शिव जी को अर्पित करने हेतु एक सहस्त्र कमल एकत्रित किये। शिव जी ने कौतुकवश एक कमल उन कमलों में से लुप्त कर दिया। जब सहस्त्र नाम उच्चारण समाप्त करने को हुए तो विष्णु को ज्ञात हुआ कि एक कमल कम है। बस उन्होंने उसके स्थान पर अपना नेत्र निकालकर शिव जी को समर्पित कर दिया। फिर तो देवादिदेव ने प्रसन्न हो विष्णु जी को दर्शन दिया और उनको उन नेत्रों की जगह कमल सरीखे नेत्र प्रदान किये। तभी से विष्णु का नाम ''पुण्डरीकाक्ष''–पड़ा। सुदर्शन चक्र भी उसी समय शिव जी ने विष्णु को दिया।

इसी प्रकार और कई कथाएँ लिंग पुराण में ऐसी हैं, जिनमें देवताओं में श्रेष्ठ विष्णु और ब्रह्मा से शिव का उत्कर्ष दिखाया गया है।

वस्तुतः एकेश्वरवाद पर–हिन्दू सिद्धान्त बहुत ही स्पष्ट है। लिंग पुराण में जिस प्रकार शिव को परब्रह्म परमात्मा स्वरूप माना है, उसी प्रकार अन्य पुराणों ने विष्णु, देवी आदि को सर्वशक्तिमान माना है। परन्तु सर्वशक्तिमान परब्रह्म, परमेश्वर स्वरूप है एक ही व्यक्ति। किसी भी पुराण में परमेश्वर की शक्ति का भागीदार नहीं मिलता। पूर्ण पुरुष की ही भिन्न–भिन्न नामों से उपासना की गई है। कहीं उसको विष्णु कहते हैं, कहीं ब्रह्म, कहीं शिव और कहीं गणेश। जैसे जिसकी

रूचि हुई–उपास्यदेव का नाम रख लिया और लगा उसका गुणगान करके अपना जन्म सफल करने। हिन्दू विचारों का अद्भुत ऐक्य ही हिन्दू धर्म की महान विशेषता है।

महादेव का नित्य धाम महाकैलाश

शिव भक्तों ! ''कैलाश'' दो हैं–एक महाकैलाश और दूसरा भूकैलाश। वर्तमान में जिसको कैलाश माना जाता है, अनुभवी शिवभक्तगण कहते हैं कि वह तो असली भू–कैलाश भी नहीं है। भू–कैलाश पर शिवगण और शिव भक्तों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जा सकता।

''काशी–केदार–माहात्म्य''–नामक ग्रन्थ के चतुर्थ अध्याय में महाकैलाश का वर्णन इस प्रकार आता है–

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के आधार भूत में लाख योजन विस्तृत स्वर्णभूमि है, वहाँ लाख योजन ऊँचा परमेश्वर का स्थान है, उसी को वेद्‌वितपुरुष ''महाकैलाश'' कहते हैं। उसके चारों ओर पचास हजार योजन विस्तृत और बीस हजार योजन ऊँची राजत (चांदी की) भूमि का घेरा है। उसके आठों दिशावों में मणियों के आठ फाटक हैं। पूर्व द्वार के मालिक भगवान विघ्नेश (गणेश जी) हैं, अग्नि कोण के फाटक के मालिक महागण भृङ्गिरिटि हैं और दक्षिण द्वार के पालक गणों के सरदार महाकाल हैं। नैर्ऋदत्य के द्वारपाल साक्षात् शंकर के अंग से उत्पन्न वीरभद्र हैं, और पश्चिम द्वार की पालिका शिवदुहिता महाशास्ता हैं। वायव्य कोण की द्वारपालिका संकट मोचिनी दुर्गा हैं। वायव्य कोण की द्वारपालिका संकट मोचिनी दुर्गा हैं, उत्तर दिशा के द्वारपाल सुब्रह्मण्य नामक पर–शिव हैं तथा ईशान कोण के द्वार रक्षक शैलादि गणनायक हैं।

इन लोकों के जो अनुचर हैं–उनकी तो गिनती ही नहीं है। पचास हजार योजन विस्तार की वह नगरी है। उसमें दस हजार योजन ऊँचे एक खरब शिखर (गुंबज) हैं, जो मूंगे के बने हुए हैं और चारो तरफ से घिरे हुए हैं। उसके भीतर बीस हजार योजन ऊँचे दस अरब गुंबज और हैं जो सबके सब पद्मराग मणि के बने हुए हैं और चारों ओर से घिरे हुए खड़े हैं। उनके भीतर बीस हजार योजन के ऊँचे एक करोड़ एक विशाल वैदूर्यमय शिखर हैं,जो चारों ओर से घिरे हुए हैं। फाटक के बाहर की भूमि दस हजार योजन विस्तृत है तथा फाटक के भीतर की भूमि चालीस हजार योजन परिमाण की है। इस भूमि में तथा श्रृङ्गों पर तारतम्य क्रम से सालोक्य मुक्तिवाले रहते हैं। उनके मनोनुकूल उसमें घर, बाग, बाबड़ी, कुँआं और नदियां हैं। वह भोग्य भूमि दिव्य

अप्सारओं, दिव्य पान और दिव्य भक्ष्य से पूर्ण है। वहाँ अगणित शिव के गण और सुन्दर प्रभावशाली रूद्र की कन्याएँ रहती हैं। कल्पवृक्ष के वहाँ वन हैं और कामधेनुवों की टोली है तथा चिन्ता मणियों के ढेर लगे हुए हैं। वहाँ पुण्य के तारतम्य से शिवधर्म परायण, शिव के आराधक एवं शिव भक्तों के पूजने वाले, जो सालोक्य मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं, बसते हैं। वहाँ जिसको जो वस्तु चाहिए वही उसके सामने मौजूद रहती है।

यही नहीं, यही लोग मुक्ति प्राप्त करते हैं। शिखरों के भीतर प्रभा से दिशाओं को प्रकाशित करने वाले तथा चालीस हजार योजन ऊँचे दस करोड़ पुष्पराग मणि से बने महल हैं। उनमें शिव पूजक गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, गरूड़, नाग आदि सब भोगों से युक्त होकर रहते हैं। उनके भीतर पचास हजार योजन ऊँचे एक करोड़ एक गोमेदक मणि के गुंबदों का घेरा है। यहाँ पर अपने पद से च्युत हुए इन्द्रगण शंकर की अराधना करते हुए रहते हैं। इसके बाद साठ हजार योजन ऊँचे दस लाख नीलमणि के शिखरों का घेरा है। यहाँ चार मुख वाले अनेकों ब्रह्मा, जिनका हृदय और मन शिव के ज्ञान से शान्त हो गया है, भक्ति से शिव के ध्यान में रत होकर रहते हैं।

उसके बाद गारूत्मत (नीलम) मणि के एक लाख एक चमकते हुए विराट शिखर महल हैं। इनमें अनेकों विष्णु निरन्तर शिव जी का ध्यान करते हुए रहते हैं। अपना अधिकार समाप्त होने पर मुक्ति की इच्छा से शिव जी के ध्यान द्वारा हृदय के समस्त मल को दूर कर इन सत्तर हजार योजन ऊँचे शिखरों में ये लोग रहते हैं। इन लोगों को तारतम्य से सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है। इसके बाद अस्सी हजार योजन ऊँचे दस हजार एक मुक्तामय ऊँचे महलों का घेरा है। इसमें महात्मा रुद्रगण पशुपाश के ज्ञान तथा गुरु सेवा के माहात्म्य द्वारा सारूप्य मुक्ति प्राप्त कर हृदय कमल में शिव का ध्यान किया करते हैं। लोगों पर अनुग्रह करने वाले ये अगणित महात्मा नित्य मुक्त हैं। शिव जी की आज्ञा से नित्य कैलाश में निवास करते हुए ये अपने तेज से देदीप्यमान रहते हैं। इनके भतीर नब्बे हजार योजन ऊँचे एक हजार एक दिव्य स्फटिक के शिखरों का घेरा है। इनमें नन्दी, भृङ्गी, महाकाल, वीरभद्र आदि रहते हैं।

जो परमात्मा शिव की अपरमूर्ति हैं एवं सच्चिदानन्द स्वरूप मुक्ति को प्राप्त हैं। ये शंकर जी की आज्ञा से करोड़ों ब्रह्माण्डों को बनाने, बिगाड़ने तथा उलट–पुलट करने में समर्थ हैं। ये लोग अपनी इच्छा से कैलाश की रक्षा करते हुए बसते हैं। इस घेरे के भीतर एक सौ एक योजन ऊँचे, हीरे के एक सौ एक शिखर हैं, जो अपने प्रकाश से अखिल धाम को प्रकाशित किया करते हैं। ये शंकर के निज धाम को

घेरे खड़े हैं। श्री परमेश्वर की और देवी की शक्तियाँ तथा स्वामिकार्तिकेय, विघ्नराजादि इनमें रहते हैं। ये अन्तःपुर निवासी नित्यानन्दमय हैं और सदा महेश्वर तथा जगदम्बा की सेवा करते हैं। यह स्थान ज्योर्तिमय और लाख योजन ऊँचा है। यह शंकर का धाम साधारण देवताओं के लिए अगम्य (नहीं जाने योग्य) है। शिव ज्ञान में परिनिष्ठित पुरुष इस धाम को अन्तःपुरी कहते हैं।

इसके बाद शंकर का निज धाम है। जिसके ज्योर्तिमय ग्यारह श्रृंग (विशालकाय ऊँचे शिखरों वाला महल) हैं और ये साम्ब शुद्ध सदाशिव को घेरे खड़े हैं। अलौकिक विशाल महल के दिव्य सिंहासन पर वे अपनी पराशक्ति के साथ विराजमान हैं। बाहरी दसों घेरों के निवासी सदा इनका ध्यान किया करते हैं और शिव जी की आज्ञा से भोग के अन्त में मुक्ति प्राप्त करते हैं।

शिवालय में नन्दी, कूर्म, गणेश, हनुमान, जलधारा और नाग जैसे प्रतीक का रहस्य

प्रायः प्रत्येक शिवालय में नन्दी, कूर्म, (कच्छप) गणेश, हनुमान, जलधारा, नाग जैसे रहस्यमय प्रतीक देखे जाते हैं। देव–देवियों की आकृतियों में उनके आसन–वाहन प्रतीक लक्षणों में सूक्ष्म भाव एवं गूढ़ ज्ञान गम्य सांकेतिक सूत्र सन्निहित रहते हैं।

प्रत्येक शिवालय में ''नन्दी'' के दर्शन सर्वप्रथम होते हैं। यह महादेव का वाहन है। यह सामान्य बैल नहीं हैं। यह ब्रह्मचर्य का प्रतीक हैं। शिव का वाहन जैसे नन्दी है वैसे ही हमारे आत्मा का वाहन शरीर–काया है। अतः शिव को आत्मा का एवं नन्दी को शरीर का प्रतीक समझा जा सकता है। जैसे नन्दी की दृष्टि सदा शिव की ओर ही है, वैसे ही हमारा शरीर आत्माभिमुख बने, शरीर का लक्ष्य आत्मा बने, यह संकेत समझना चाहिए।

''शिव का अर्थ है कल्याण'' ! सभी के कल्याण का भाव आत्मसात् करे। सभी के मंगल की कामना करे तो जीव शिवमय बन जाता है। अपने आत्मा में ऐसे शिवत्व को प्रकट करने की साधना को ही शिव पूजा या शिव दर्शन कह सकते हैं। और इसके लिए सर्वप्रथम आत्मा के वाहन शरीर को उपयुक्त बनाना होगा। शरीर नन्दी की तरह आत्माभिमुख बने, शिव भाव से ओत–प्रोत बने। इसके लिए तप एवं ब्रह्मचर्य की साधना करें, स्थिर एवं दृढ़ रहे, यही महत्वपूर्ण शिक्षा इस नन्दी के माध्यम से दी गई है।

नन्दी के बाद शिव की ओर आगे बढ़ने से कछुआ आता है। नन्दी

यदि हमारे स्थूल शरीर के लिए प्रेरक मार्ग दर्शक हैं तो कछुआ सूक्ष्म शरीर का अर्थात् मन का मार्ग दर्शन करता है। हमारा मन कछुए जैसा कवचधारी सुदृढ़, बनना चाहिए। जैसे कच्छप शिव की ओर गतिशील है, वैसे भी हमारा मन भी शिवमय बने, कल्याण का ही चिन्तन करें, आत्मा के श्रेय हेतु, यत्नशील रहे एवं संयमी तथा स्थिर रहे।

अर्थात् मन की गति, विचारों का प्रवाह, इन्द्रियों के काम शिवभाव युक्त आत्मा के ही लिए हुआ करे, यही शिक्षा देने के लिए कच्छप शिव की ओर सरकता बताया जाता है। कछुआ कभी नन्दी की ओर नहीं जाता, शिव की ही ओर जाता है। हमारा मन भी देहाभिमुख नहीं आत्माभिमुख ही बना रहे। भौतिक नहीं आध्यात्मिक ही बना रहे। शिव तत्व का ही चिन्तन करे।

नन्दी एवं कच्छप दोनों जब शिव की ओर बढ़ रहे हैं, अर्थात् शारीरिक कर्म एवं मानसिक चिन्तन दोनों जब आत्मा की ओर बढ़ रहे हैं, तब इन दोनों की शिव रूप आत्मा को पाने की योगयता है या नहीं, इसकी कसौटी करने के लिए शिव मंदिर के द्वार पर दो द्वारपाल खड़े हैं—गणेश और हनुमान गणेश एवं हनुमान के दिव्य आदर्श यदि जीवन में नहीं आये तो शिव का या कल्याण मय आत्मा का साक्षात्कार भला कैसे होगा ?

गणेश का आदर्श क्या है ? बुद्धि एवं समृद्धि का सदुपयोग करना, यही इनका सिद्धान्त है। इसीलिए आवश्यक गुण गणेश के हाथों में स्थित प्रतीकों द्वारा बताये जाते हैं। अंकुश—संयम = आत्म नियंत्रण का, कमल, पवित्रता—र्निलेपता का, पुस्तक—उच्च विचार धारा का एवं मोदक मधुर स्वभाव का प्रतीक है। वे मूषक जैसे तुच्छ रंग को भी चाहते—अपनाते हैं। ऐसे गुण रखने से ही आत्मदर्शन—शिव दर्शन की पात्रता प्रमाणित होती है।

हनुमान का आर्दश क्या है ? विश्वहित के लिए तत्परता युक्त सेवा और संयम। ब्रह्मचर्य मय जीवन ही इनका मूल सिद्धान्त है। यही कारण है कि हनुमान सदैव राम जी के कार्यों में सहयोगी रहे हैं, अर्जुन के रथ पर विराजित रहे हैं। ऐसी तत्परता बरतने से ही विश्व कल्याण मय शिवत्व याआत्म दर्शन की पात्रता को प्राप्त कर सकता है।

गणेश—हनुमान जी परीक्षावों में उर्त्तीण होने से साधक को शिवरूप आत्मा की प्राप्ति हो सकती है, किन्तु इतनी महान विजय जिसे प्राप्त होती है, उसमें अहंकार आ सकता है। मैं बड़ा हूँ, श्रेष्ठ हूँ ऐसा अहंकार ही तो पग—पग परआत्मा और परमात्मा के मिलन में बाधक बन जाता है। इसी बात का स्मरण देने के लिए मानो शिवालय के मंदिर का प्रवेश द्वार सोपान—भूमि से कुछ ऊँचा ही रखा जाता है। अतः प्रकोष्ट को पार करके निज मंदिर के ऊँचे सोपान पर चरण रखते समय एवं

अन्तिम शिव द्वार में प्रवेश करते हुए अत्यन्त विनम्रता, सावधानी बरतनी पड़ती है, सिर भी झुकाना पड़ता है। साधक के अहंकार का तिमिर जब नष्ट हो जाता है, तब भीतर–बाहर सर्वत्र शिवत्व के दर्शन होने लगते हैं। सभी कुछ मंगलमय लगने लगता है। आत्मज्ञान के सदृश पवित्र और प्रकाशमय और क्या हो सकता है।

भीतर में जब प्रवेश किया जाय, तब कर्ममय स्थूल जगत एवं विचारमय सूक्ष्म जगत तो बाहर ही छूट जाता है। निज में जो कारण जगत की आत्म स्वरूप की प्रतीत होती है, वह अवर्णनीय है, शिवत्व भाव में ओत–प्रोत कर देने वाली है।

शिवालय के निज मंदिर में जो शिवलिंग है, उसे आत्मलिंग, ब्रह्मलिंग कहते हैं। यहाँ विश्व कल्याण निमग्न ब्रह्माकार–विश्वाकार परम आत्मा ही स्थित है। हिमाचल सा शान्त महान, श्मशान सा सनसान शिवरूपा आत्मा ही भयंकर शत्रुवों के बीच रह सकता है। कालरूप सर्प को गले लगा सकता है। मृत्यु को भी मित्र बना सकता है। कालतीत महाकाल कहला सकता है। ज्ञान–वैराग्य को धारण कर सकता है।

भगवान शिव द्वारा धारण किये जाने वाले कपाल, कमण्डलु आदि पदार्थ संतोषी, तपस्वी जीवन साधना के प्रतीक हैं। भस्म–चिता भस्मा लेपन, ज्ञान वैराग्य और विनाशशील, विश्व में अविनाशी के वरण के सूत्र–संकेत हैं। डमरू–निनाद, आत्मानन्द–निजानन्द की आनन्दानुभूति का प्रतीक है। काला नाग कालातीत चिर समाधिभाव का प्रतीक है।

त्रिदल–बिल्वपत्र, तीन नेत्र, त्रिपुण्ड्र, त्रिशूल आदि–सत्वगुण–रजोगुण–तमोगुण–इन तीनों को सम करने का संकेत देते हैं। त्रिकाय, त्रिलोक और त्रिकाल से पर होने का निर्देश देते हैं। भीतरी भावावेशों को शान्त करने के लिए साधक भ्रुकुटि में ध्यान केन्द्रित किया करते हैं। इसी स्थान में त्रिकुटी, सहस्त्रचक्र, सहस्त्रदल कमल, अमृतकुम्भ, ब्रह्म कलश, आज्ञा चक्र, शिव–पार्वती योग जैसे वर्णनों द्वारा सिद्धि सामर्थ्य की प्राप्ति को क्षमता होने की चर्चा योग शास्त्रों में की गई है। विवेक बुद्धिरूपी तृतीय नेत्र भविष्य दर्शन, अतीन्द्रिय शक्ति एवं काम दहन जैसी क्षमताओं का केन्द्र माना गया है। शिव के रूद्र तो भीतरी आवेश–आवेग ही है, इनको सम करना, यही तो शंकर का काम है। त्रिदेव यानि ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी इन्हीं सभी त्रिपरिमाण प्रतीकों से सूचित हैं। ''अ–ऊ–म''–इन तीनों अक्षरों के समन्वित एकाकार ''ॐ''– में भी यही भाव समायोजित है।

विश्व कल्याण हित हलाहल को भी पी लेना एवं विश्व के तमाम कोलाहल से परे रहकर मृदंग, शृङ्ग, घण्टा, डमरू शंख के निनाद में

मग्न रहना अर्थात् आत्मस्था रहना, ब्रह्म में रत रहना यही शिव संदेश इनके कई छोटे–मोटे प्रतीकों द्वारा भी घोषित हुआ है। शंख, डमरू आदि योगसाधना में भीतरी अनाहत नाद के भी संकेत हैं, जिसे ''नाद ब्रह्म'' कहते हैं।

शिव पर अविरत टपकने वाली जलधारा जटा में स्थित गंगा का प्रतीक है। वह ज्ञान गंगा है। स्वर्ग की ऋतम्भरा प्रज्ञा–दिव्य बुद्धि–गायत्री अथवा त्रिकाल संध्या, जिसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उपासते रहते हैं, यही ज्ञान गंगा है।

शिवलिंग यदि शिवमय आत्मा है, तो उनके सथ छाया की तरह अवस्थित पार्वती उस आत्मा की शक्ति है। इसमें संकेत यह है कि ऐसे कल्याणमय आत्मा की आत्म शक्ति भी छाया की तरह उसका अनुसरण करती है, प्रेरणा सहयोगिनी बनती है।

शिवालय की जल धारा उत्तर दिशा की ओर बहती है। उत्तर में स्थित ध्रुव तारक उच्च स्थिर लक्ष्य का प्रतीक है। शिवमय–कल्याणकामी आत्मा का ज्ञान प्रवाह, चिन्तन प्रवाह सदैव उच्च स्थिर लक्ष्य की ओर ही गति करता है। उनका लक्ष्य ध्रुव अविचल रहता है। कई पुरातन शिव मंदिरों में उत्तरी दिवारों में गंगा जी की प्रतिमा भी रहती है। उसे स्वर्गीय दिव्य बुद्धि ऋतम्भरा प्रज्ञा–गायत्री ही समझना चाहिए, जो ब्रह्माण्ड से अवतरित चेतना है।

शिव पर अविरत टपकने वाली जलध।रा की तरह ही साधक पर भी ब्रह्माण्डीय चेतना की अमृतधारा–प्रभुकृपा अविरत बरसती रहती है। ऐसा विश्वास करना चाहिए।

इस प्रकार शिवालय स्थित इन प्रतीकों चिन्हों के तत्व चिन्तन कर भावना से ओत–प्रोत बने व्यक्तियों को शिवमय बनाया जा सके, तो इसी में हमारे दर्शन–पूजन–उपासना आदि की यर्थाथ सार्थकता है।

।।ॐ नमः शिवाय।।

पाठको ! यह पतित पावन शिवग्रन्थ का लेखन–''शिव जी की उपासना'' पर आधारित है, अतः आगे के पृष्ठों में उपासना सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान ज्योति वर्णित करने जा रहा हूँ, जिसके अभाव में साधकों की उपासना अधूरी रह जाती है। उपासना आरम्भ करने से पूर्व उपासना सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान प्रकरण को पहले हृदय में समाहित करें, तो आप शिवोपासना में अवश्य सफलता हासिल कर सकेंगे।

(द्वितीय भाग)

उपासना आरम्भ से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

उपासना का शाब्दिक अर्थ

प्रिय शिव भक्तों ! ''उपासना''—का शाब्दिक अर्थ है—समीप बैठने का प्रयास।

''सन्धिविच्छेद''— के मुताबिक— उप + आसना = उपासना। उप = समीपे, आसन = स्थिति—इति उपासना, अर्थात् अपने भगवान से इष्टदेव से तल्लीनता का प्रयास।

''शिवोपासना''—शब्द का अर्थ है, शिव के समीप बैठना। ''उपसमीपे आसनम् उपासनम्'' स्त्रीलिंग में—उपासना। अर्थात् अपने आप को शिव में समर्पित कर देना उपासक का चरम स्वरूप है।

''कुलार्णव तंत्र'' में उपासना की परिभाषा इस प्रकार दी गई है—

कर्मणा मनशा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
समीप सेवा विधिना उपस्तिरिति कथ्यते।।

हिन्दी अनुवाद—सब प्रकार के समीप रहकर सेवा करना ही— ''उपासना'' है।

''श्रीमद् भागवत'' के अनुसार—

''उपसितो यत्पुरुषः पुराणः''

हिन्दी अनुवाद—पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही ''उपासना'' है।

इसी प्रकार ''भागवत'' में अन्य स्थानों पर—

त्वतापावार विग्वं भर्वासन्धुषोत्तम।
उपासते कामलवाय तेषा।।

हिन्दी अनुवाद—उपासना शब्द को –"पूजा–भक्ति में लीन रहना"–कहा गया है।

इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें–

"उपासते योगरथेन धीराः"

इसमें भी उपासना का अर्थ "ध्यान" ही है।

अर्थात् इष्ट देव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, दास्य सुख्य, सामीप्य, सेवा शुश्रुषा, परिचर्या, आराधना, चिन्तन मनन आदि सभी क्रियावों को हम "उपासना" कहते हैं।

इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं–

जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में–देवों के देव "महादेव" को प्रसन्न करने हेतु पूजन, स्तुति, वन्दना, जप, यंत्र, मंत्र, वैदिक व लौकिक विधि वर्णित की गई है, उसे हम–"शिव उपासना"–शास्त्र कहते हैं।

पूजा "परमात्मा" की होती है। चूंकि परमात्मा सर्वव्यापक, अखण्ड एवं निराकार हैं, तब उनके समीप कैसे बैठा जाय ?

इस शंका का समाधान शास्त्रों ने यह कहकर किया है कि–"परमात्मा के प्रतीक प्रतिनिधि, मूर्ति, अथवा उनके स्वरूप को हृदय में बसाकर–"उपासना"–की जा सकती है।

उपासना के प्रारम्भ में भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्याग, बहिर्याग, न्यास, ध्यान, आदि करने का तात्पर्य यह है कि–"अपने को भगवान की उपासना के योग्य बनाना। स्थूल–सूक्ष्म–कारण शरीर का लयकर दिव्य देह उत्पन्न करके ही उपासना की जा सकती है। पञ्चोपचार, षोड़षोपचार, राजोपचार, पूजा–यह भगवान की "मध्यम कोटि की उपासना" है। अपने मन को मन्त्रमय वृत्ति के द्वारा उपास्य के साथ–अभेद बुद्धि करना,–यह "परा उपासना" है, और समस्त संसार अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड को उपास्य तत्व में लीन कर केवल तदरूप ही सर्वत्र देखना यह परा–परा अर्थात् "सर्वोत्तम उपासना" है। वैसे जैसे शिवतत्व अनन्त हैं, वैसे ही उनकी उपासना भी अनन्त है।

उपासना क्यों करें?

संसार के सारे धर्म ग्रन्थ अध्यात्म का निष्कर्ष यह है कि उन्हें ढूंढने, पाने और मनन करने का उद्देश्य यह है कि–"मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है। परन्तु सम्पूर्ण सुख–साधन प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे–"शान्ति"–

नहीं मिलती है तो वह देवि–देवताओं से इसे प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु उसे प्राप्त करना तो आसान नहीं। फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूंढता है, तब उसे उनकी उपासना–पूजा–अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वही ''उपासना रहस्य'' इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में छुपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से नमन–मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

यही है उपासना का रहस्य और यही है उनकी मनोवृत्ति।

उपासना की आवश्यकता

''ईश्वर'' और जीव के बीच में जगत के आ जाने से जीवात्मा को बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गयी है तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विविध रमणीय वस्तुएँ जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जिसके कारण जीवात्मा को बुद्धि, विषय प्रबल मन की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।

उपासना से ज्ञान का विकास होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञानशक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है–उसी को ''उपासना'' कहते हैं। उपासना से भगवत् सानिन्ध्य की प्राप्ति होती है और उसी के फलस्वरूप जीव मुक्त हो जाता है।

जीवात्मा को उचित है कि वह सम्पूर्ण जगत के कारण, रक्षक अन्तर्यामी तथा अंशी परमात्मा को प्राप्त करे। उपासना के द्वारा जीवात्मा में अन्तः करण की शुद्धि रक्षा का सम्पूर्ण भार परमात्मा पर डाल देता है, जिसके कारण वह परमात्मा का कृपा पात्र बन जाता है। उपासना से उपासक के चित्त को स्थिरता, सांसारिक विषयों से विमुखता और उसके फलस्वरूप परमात्मा का सामीप्य एवं ''मुक्ति'' की प्राप्ति होती है। इसीलिए उपासना करना मानव प्राणी के लिए परम आवश्यक कहा गया है।

उपासना में भावना का महत्व

पाठको ! किसी भी देवि–देवताओं की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए आराधना

की जाये अथवा केवल मन्त्रोच्चार करते हुए मानसिक उपासना, महत्व उपादानों (पूजन सामग्री) का नहीं, "आपकी भावना" की होती है।

सृष्टि के आदि और अन्तकर्त्ता देवों के– देव "महादेव" को किसी वस्तु की कमी नहीं, जो हम उन्हें दे सकते हैं। पूजा–आराधना जो वस्तुएँ देवताओं को अर्पित की जाती है, जबकि उपासना में हम केवल भावों का ही पुष्प चढ़ाते हैं।

महादेव की उपासना की जाय अथवा किसी अन्य देवि–देवताओं की आराधना, जप किया जाय अथवा मूर्ति पूजन, अपने अराध्य की सेवा–पूजा और अर्चना आराधना का यह क्षेत्र है, जहां हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भोलेनाथ महादेव अत्यन्त दयालु हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना ही होगा।

उपासकों में भावना का प्रभाव और कामना

जो व्यक्ति निष्कपट भाव से प्रभु का स्मरण करते हुए शिव चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य भगवान के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

भगवान शिव की उपासना समस्त मनोकामनावों की प्राप्ति के लिए ही की जाती है। अतः हम ये तो नहीं कह सकते कि आप उनसे यही मांगिये कि आप में सद्गुणों का विकास हो, किसी–की बुराई हानि अथवा स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की मांग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए। उपासना का क्षेत्र तो पूरी तरह कर्मों का फल उसकी भावनावों के अनुरूप ही मिलता है। एक सीधे–सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी।

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक (डॉक्टर) भी शरीर पर छुरी चलाता है और एक क्रुर हत्यारा भी, परन्तु डॉक्टर को यश, सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को "प्राण दण्ड"। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छूरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्तरंजित हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान–सम्मान दूसरे को अपमान एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों ?

क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर, रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुंचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था श्री महादेव जी की उपासना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्तवत्सल भोलेनाथ हम पर अनुकम्पा तो क्या करेंगे, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही ना मिले। यही कारण है कि हृद्य की निर्मलता उपासना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराईयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं,—प्रभु की आराधना अथवा उपासना।

जो व्यक्ति लोभ—मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनावों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं—उनका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है।

परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं—जहाँ उपासना आराधना प्रारम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गए हों—ऐसा तो हो ही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भोलेनाथ से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार—बार मांगते रहे।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य, संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान—सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन—दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना मन में रखकर भजन, जप, पूजा—पाठ या आराधना उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं भगवान से की जाने वाली ''सौदेबाजी'' है। प्रभु से मांगिए अवश्य मांगिए, उनसे निरन्तर सद्भावों, ज्ञान, और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए—

हे प्रभु ! हे भोलेनाथ ! हे महादेव !!! मैं कभी आपको भूलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यही मांगते रहने से भी सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है, क्योंकि परमात्मा स्वयं जानते हैं कि आपको किस वस्तुओं की आवश्यकता है, वे स्वतः पूर्ण कर देते हैं।

उपासना में सहायक

उपासना के प्रारम्भिक चरण ''ज्ञान'' और इसमें सहायक ''गुरु'' स्वाध्याय के अतिरिक्त कुछ यम–नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं। संक्षिप्त में शरीर की भीतरी बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख–भोग में संयम उपासक को–आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है–विश्वास लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्व प्रथम सृष्टि की संचालक शक्ति और उसके अनुरूप (अपने इष्ट देव) पर दृढ़ विश्वास फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

दृढ़ निश्चल संकल्प से प्रेरित होती है, लगन अर्थात् अथक प्रयास और अन्ततः अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि जो मनुष्य और समाज के परम आनंद से ओत–प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और इस्लामी, यहूदी, पारसी, ईशाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध स्वर्ग की परिकल्पना अथवा उपनिषदों और उनसे प्रेरित जैन, बौद्ध आदि संप्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष–कैवल्य निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्वत निर्विकल्प, आत्मिक आनन्द जो सृष्टि के प्रारम्भ से मनुष्य की आदम खोज है और जिसका सहज मार्ग है–''उपासना''।

उपासना में दृढ़ निश्चय एवं श्रद्धा का महत्व

उपासना की शक्ति ही मानव को सर्वस्व विजय प्रदान करती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि–उपासना की नींव केवल श्रद्धा है, और ''जहाँ पर श्रद्धा है वहीं पर सिद्धि है।''

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से सिद्धि को प्राप्त करने का आरम्भ करने जा रहा है, उस पर पूर्ण विश्वास रखे, उस पर पूरी आस्था होनी चाहिए जो उपासना का ''मेरूदंड'' है।

जिस उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परीक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों में लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है।

साधना मार्ग का ''प्रथम सोपान'' प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता, कैसी सिद्धि, कैसा विजय? पराजय, असफलता व असिद्धि मात्र ही आवश्यमभावी है।

वास्तव में ही आप अपने कार्यों में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या और उपासना का दूसरा नाम ही सफलता है।

यदि आप सफल होना चाहते हैं,

यदि आप महादेव जी का कृपा पात्र बनना चाहते हैं तो ''तप'' करना होगा, त्याग करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए अपने दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप देवों के देव महादेव की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

''उपासना'' जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी

आनंद की लालशा और सम्पत्ति अर्जन की अन्धी दौड़ ने आज मानव को पशुवत बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाईचारा आज बीते युग की बात बनकर रह गयी है और इसका एकमात्र कारण है–''भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीम आकांक्षा।''

तन–मन में सभी क्लेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार तथा व्यक्तिगत विद्वेश एवं असंतोष का मूल कारण धन के प्रति–यह अन्धी दौड़ ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा है, विनाश की ओर जा रहा है, बुद्धिहीन हो गया है।

अतः इससे बचने के लिए इन सभी समस्याओं का समाधान है–परब्रह्म परमेश्वर के किसी भी रूप–स्वरूप अवतार अथवा देवि–देवता की–''उपासना''।

''उपासना'' से ज्ञान का विकास होता है।

उपासना से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत की माया तिरोहित हो जाती है। तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है।

उपासना से–भगवत् सानिन्ध्य की प्राप्ति होती है और इस कलिकाल में उपासना को ही सर्वदुख भंजक एवं अराधना का सर्वश्रेष्ठ और आसान माध्यम कहा गया है, क्योंकि उपासना के द्वारा जीवात्मा के

अन्तः करण की शुद्धि एवं उपास्यदेव के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की वृद्धि होती है।

उपासना के द्वारा–उपासक अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार अपने आराध्यदेव और उसके माध्यम से–''परमात्मा'' पर डाल देता है, जिससे वह परमात्मा का कृपापात्र तो बन ही जाता है, जीवन के अधिकांश तनावों और चिन्ताओं से भी छुटकारा मिल जाता है और इस प्रकार एक अलौकिक शान्ति और मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है–उपासक को।

जहाँ तक देवों के देव महादेव जी की उपासना का प्रश्न है, वे तो हैं दया के सागर, ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय रटने पर तुरन्त प्रसन्न होकर सर्वस्व भौतिक और अलौकिक वस्तुएँ प्रदान करने वाले, जिसे पाकर मानव प्राणी सर्वस्व प्राप्त कर लेता है और अन्त समय में मोक्ष प्राप्त करता है। जरूरत है नित्य स्तुति, वन्दना, पूजन और उपासना द्वारा–भोलेनाथ को रिझाने की।

एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

खेल–तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है, परन्तु उपासना–भजन–कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन ही रहती है।

शुरू–शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधु को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में तथा नववधु को ससुराल में न केवल मन लगने लगता है, बल्कि उन्हें वहां पूर्ण आनन्द भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना, उपासना और भगवत् भक्ति की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही आराधना उपासना में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बाद ही उपासना में भी समान ही सच्चाआनन्द आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भक्त और भगवान के रक्षक देवों के देव महादेव जी की आकृति अथवा शिवलिंग के समक्ष सच्चे हृदय से रोईये–गिड़गिड़ाईये और प्रार्थना कीजिए–

''हे प्रभु ! मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ, परन्तु मैं क्या करूँ ? हे भोलेनाथ ! हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।''

दयालु महादेव को भक्त की इस पुकार को सुनना ही पड़ेगा,

क्योंकि वे हमारे ही नहीं–सम्पूर्ण जीवों के पिता तुल्य हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं, परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकते। पिता के समक्ष पुत्र कुछ भी मांग सकता है। फिर हम तो पिता श्री से उनके प्रेम की भिक्षा ही मांग रहे हैं, अतः शर्म या झिझक कैसी ? जितना अधिकांश मांग सकते हैं, मांगिये प्रभु से दया और भक्ति भाव की भिक्षा।

उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाले, समस्त कामना प्रदान करने वाले भगवान शिव की कृपा प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से महादेव की आराधना उपासना करें।

आराधना–उपासना, पूजा–पाठ, जप–तप अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाय, यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है, बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

आराधना–उपासना न तो विक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझने का झूठे गर्व तो दिला सकता है, परन्तु दयालु, परम पिता परमेश्वर का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं।

प्रभु हमारे हैं और हम उनके पुत्र, फिर पिता–पुत्र के बीच में अन्यों का क्या काम ? इसलिए जहाँ तक हो सके एकान्त में महादेव की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

भक्ति का प्रदर्शन किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवान्त उदारण धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं।

भक्तराज प्रहलाद और भक्त ध्रुव को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएँ करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता लग गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई भक्त विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्दक्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरन करता था, परन्तु रावण तो क्या उसकी पत्नी तक से छुपी हुई थी–''उसकी भक्ति''। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रहलाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक आराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सानिन्ध्य प्राप्त हुआ परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए त्रिशूलधारी–भोले भंडारी की दया पाने के लिए, कामनाओं की प्राप्ति के लिए, धन–जन–सुख–सम्पदा, शान्ति व प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए–''उपासना''–नियमित रूप से अवश्य कीजिए परन्तु उपासना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप जो भी चाहेंगे प्राप्त कर लेंगे।

उपासक की योग्यता

''उपासकों के लिए लक्षण'' निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि–

''उपासकों को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ कार्यसक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय संयमी और कुल प्रतिष्ठा का–पोषक होना चाहिए।''

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा, विधान पूर्वक स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है, न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता है। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि–विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ–उपासना पूरी कर सके।

उपासना का स्थान

उपासना आरम्भ करने से पूर्व उपासना का स्थान कैसा है, उसे भली–भांति समझ लेना चाहिए। जहाँ भी पायें बैठकर उपासना करते समय उपासक बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्छल–निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि उपासना पूर्ण रूपेण मानसिक क्रिया है। कोई भी–मानसिक क्रिया–ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने तन–मन–सुध तक भूल जाये–भीड़–भाड़ में हो ही नहीं सकती। चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो–या आध्यात्मिक चिन्तन मनन। अतः उपासना विशिष्ठ स्थान पर ही किया जाय–तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों मे उपासना ग्रन्थ का निर्देश है कि–काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों अथवा गंगा तट पर, या कोई वाटिका, पार्क और खेत–खलिहानों में बताया गया है। अंततः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा को भी माना गया है, जहाँ मानव एकान्त में बैठकर उपासना कर सकता है।

उपासना के दस कर्म

भगवान विष्णु के अंशावतार महर्षि वेद्व्यास जी ने उपासना के अन्तर्गत–''दस कर्म''–बतलाए हैं। इनमें से किसी भी एक कर्म द्वारा आप उपासना कर सकते हैं। इन दस कर्मों में से समस्त कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं, मात्र एक कर्म करने से भी आप अपनी उपासना सफल बना सकते हैं। ये कर्म हैं–

''मूर्ति पूजा, इष्टदेव नाम का जप, स्त्रोतों का पाठ, शतनाम पाठ, सहस्त्रनाम पाठ, स्त्रोतों एवं भजनों का गायन, इष्ट देव के विधि चरित्रों व कार्य कलापों का–पठन–पाठन, और श्रवण–मनन, आराध्य देव से सम्बन्धित यन्त्रों–मन्त्रों का विधि–विधान से पूजन, आराधना देवि या देवता के प्रति आत्मसमर्पण,–आराध्य को प्रणाम एवं वन्दना, परिक्रमा करना तथा विशेष अवसरों पर–उत्सव भिषेक करना।

नित्य नियम उपासना का फल

कोई भी कर्म हो, नियम पूर्वक निरन्तर करने से ही उसमें सफलता प्राप्त होती है। वर्ष भर नियम पूर्वक बिना क्रम तोड़ पढ़ने वाला विद्यार्थी ही ''प्रथम श्रेणी''–प्राप्त करता है।

ठीक यही दशा पूजा, आराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपासना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है। जबकि प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर ही देता है, बार–बार का यह प्रमाद उपासना को खंडित भी कर देता है, और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा–पाठ में भी नहीं लगता है।

जहाँ तक उपासना में लगाए जाने वाले समय का प्रश्न है, जितना नियम है उतना समय मत दीजिए, परन्तु आराधना–उपासना प्रतिदिन कमसे कम भी निश्चित समय पर कीजिए ही, जितना अधिक हो जाय उतना ही अच्छा है। नियम कम से कम के लिए होता है, अधिकतम की कोई सीमा नहीं।

क्या धन से किसी का मन भरा है ? पांच वाला पचास के लिए, हजार वाला लाख के लिए और लाख वाला करोड़ के लिए सतत् चेष्टा करता रहता है, कभी उसे संतोष नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं, तब ''प्रभु रूपी असीम धन'' को ही सीमा में कैसे बांध सकते हैं।

जितने अधिक समय तक परमात्मा का चिन्तन, मनन, ध्यान, जप–तप–आराधना व उपासना हो जाये उतना ही कम है, परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

यह सत्य है कि परम कृपालु भगवान शिव हमारे दोषों को क्षमा कर देते हैं, वे उपासना में की गयी लापरवाही और प्रमाद के लिए हमें दंडित नहीं करते, परन्तु उससे भी बड़ा सत्य यह है कि परमेश्वर कभी भी अपने भक्तों का बुरा सोचते ही नहीं।

कामना की पूर्ति हेतु किए जाने वाले प्रयास

किसी भी कामना की पूर्ति हेतु किये जाने वाले प्रयास में देवी माध्यम के इन तीन रूपों में से एक को अवश्य अपनाना होता है। ''मंत्र–यंत्र– और तंत्र–ये तीनों ही परम प्रभावशाली है और विधि पूर्वक अनुष्ठान करने, साधना पूर्ण हो जाने पर चमत्कारिक परिणाम दिखाते हैं।

साधना व उपासना पद्धति में–पर्याप्त माध्यम होने पर भी ये तीनों माध्यम एक दूसरे से सम्बद्ध है। कभी–कभी विधि–विधान की पूर्ति हेतु तीनों अथवा दो की उपासना एक साथ ही करनी पड़ती है।

यद्यपि आज के व्यस्त और अनास्था प्रधान युग में दैविक साधनों का लोप जैसा प्रतीत हो रहा है, तो भी इसके विश्वासी आराधकों की संख्या बहुत बढ़ी है और उपासना आराधना, यंत्र–मंत्र–तंत्र, पूजा–पाठ, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि से अभिष्ठ लाभ उठाते रहे हैं।

उपासना, तपस्या अथवा अनुष्ठान जो भी हो, इन तीनों का भाव एक ही है और मंत्र जप की अनिवार्यता–तीनों विधान से स्वीकृत है।

''जप''–को वैदिक धर्म के समस्त धर्म काण्ड (आध्यात्मिक क्षेत्र) में ''रीढ़ की हड्डी'' माना गया है।

''मनुस्मृति'' में कहा गया है कि–

''और कुछ करे या न करे, ब्राह्मणों को केवल जप करने से ही उपासना में सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है।''

महाभारत में एक स्थान पर कहा गया हैकि–

''वैदिक कर्म काण्ड की व्यवस्था के अनुसार आहुति देकर सिद्धि प्राप्त करने वाला–यज्ञ श्रेष्ठ होता है।''

श्री कृष्ण ने ''जप की महत्ता''–बताते हुए कहा है कि–

''मैं यज्ञों में जप और जप में यज्ञ हूँ।''

पातांजलि के ''योग दर्शन'' में कहा गया है–

''मंत्र जप से उपासना में सिद्धियाँ प्राप्त होती है।''

उपासक के लिए आवश्यक कर्तव्य

किसी भी देवता की "उपासना"–एवं पूजा करने से पूर्व उपासक के लिए आवश्यक है कि वह प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर, शौच–स्नान आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर, स्वच्छ एवं पवित्र वस्त्र धारण करे। तदुपरान्त ध्यान पूजनादि उपासना की क्रियाओं में प्रवृत्त हो।

देव पूजा–उपासना काल में साधक को तन–मन की पवित्रता का ध्यान रखना आवश्यक है। असत्य भाषण, मात्सर्य, हिंसा, क्रोध, राग–द्वेश आदि से दूर रहकर पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए तथा उपासना विधि में वर्णित सभी क्रियाओं को यथा विधि सम्पन्न करना चाहिए।

"वैदिक वृहद् पूजन" के उपरान्त तथा स्त्रोतादि पूजन–विसर्जन के बाद ब्राह्मण पंडित को दक्षिणा एवं मधुर भोजन से संतुष्ट करवाकर विदाई देना चाहिए।

उपासना में दृढ़ इच्छा शक्ति और आस्था का महत्व

मानव जीवन में सजीवता का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है–गतिशीलता। जहाँ गतिशीलता में विराम आया, जीवन में भी विराम लग जाता है।

गतिशीलता का एक पर्याय है–"सक्रियता"। निष्क्रिय व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, जबकि सक्रियता के माध्यम से चींटी जैसा लघु प्राणी ऊँची से ऊँची दीवार को सरलता से पार कर लेता है।

व्यवहारिक जीवन में भी जब तक शरीर सक्रिय है, तभी एक सार्थक माना जाता है। निष्क्रियता का दूसरा नाम–"मृत्यु"– है।

"मृत्यु"–दो प्रकार की होती है–"वैचारिक" और "शारीरिक"।

वैचारिक मृत्यु से व्यक्ति का शरीर तो स्वेन्दनशील तो रहता है, पर वह कोई कार्य, वार्त विचार नहीं कर पाता। अतः उसकी स्थिति जीवित रहते हुए भी–मृततुल्य हो जाती है, शरीर निष्पन्द हो जाता है। श्वास, श्रवण, दृष्टि आदि के समस्त यंत्र जड़ हो जाते हैं। उनकी क्रियाएँ, चेतना और संवेदनशीलता–समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में वह शरीर "शव" हो जाता है। उसकी कोई उपादेयता नहीं रहती है। उसे तुरन्त अग्नि, जल अथवा धरती में सदा के लिए विसर्जित कर दिया जाता है।

सक्रियता को (वह चाहे वैचारिक हो या शारीरिक) अक्षुन्न और स्फूर्ति बनाए रखने के लिए–''इच्छाशक्ति''–की आवश्यकता होती है। ''इच्छा'' अदृश्य होते हुए भी एक ऐसा सफल माध्यम हैं, जिसके द्वारा हमारे कठिन से कठिन कार्य की सरलता में इच्छा शक्ति अवश्य निहित रहती है।

कुछ लोग भ्रमवश इच्छा शक्ति की प्रवलता को ''अंहकार''–कहने लगते हैं। यह उनकी संकीर्णता है। इच्छा शक्ति की गणना अहंकार में नहीं, आत्म बल में होती है। अहंकार और आत्मबल में बहुत अन्तर है। आत्म बल की प्रेरणा सात्विक और राजसिक वृत्तियों द्वारा होती है।

इच्छा शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति अपने सौभाग्य के निर्माता होते हैं, जबकि इसके अभाव से उन्हें दुर्भाग्य से आक्रान्त होना पड़ता है। पौराणिक मान्यता अनुसार संसार में 84 लाख योनियाँ मानी गई हैं। मानव शरीर उनमें श्रेष्ठ कहा गया है। वस्तुतः है भी ऐसा ही, क्योंकि मनुष्य के पास तर्क और विवेक शक्ति विशेष रूप से होती है। जबकि अन्य प्राणी केवल शारीरिक शक्ति युक्त होते हैं। मनुष्य अपने विवेक बल से समस्त प्राणियों को वशीभूत, पद दलित करने की क्षमता रखता है।

तब ऐसी दुर्लभ मानव देह को पाकर क्यों न हम शिव संकल्प और दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा–''कर्मक्षेत्र''–में अग्रसर हों और क्यों न इस सर्व कल्याणमयी भावना को प्रेरित करें।

मानव जीवन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए एक विद्वान ने कितने मार्मिक उद्गार पेश किए हैं–''मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृत्ति है। उसमें आत्मा नाम का जो तत्व है, वह वस्तुतः उसी ब्रह्माण्ड नियन्ता परमात्मा का एक अंश है। इस प्रकार आत्मा मनुष्य में अपने पिता परमात्मा के समान है, उसमें ईश्वर सम्पूर्ण रूप में व्याप्त है। करोड़ों यक्षपतियों (कुवेरों) और ऋषि–सिद्धों के अगणित भण्डार उसके रोम–रोम में समाहित है। मनुष्य एक साधारण प्राणी नहीं वरन वह ''साक्षात पारस पत्थर'' है, चिंतामणि है, कल्पवृक्ष है और देवताओं का देवता है।''

''अरे! जब मानव देह इतना महत्त्वपूर्ण है, तब क्यों न उसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाये ?''

पूजा–पाठ, मन्त्र साधना, आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। पूजा–पाठ, साधना द्वारा, उपासना द्वारा हम लोक कल्याण कोई भी कार्य कर सकता है।

''व्यक्ति वादी भावना''– से ऊँचे उठकर यदि हम ''सर्ववाद'' की मान्यता दें, ''सर्वजन सुखाय'' के उद्देश्य से कुछ करें, तो वह विशेष रूप से श्रेयस्कर होगा। परोक्ष रूप से हम भी उससे लाभान्वित

होंगे। न भी हो तो क्या हानि है ? विश्व हित के मार्ग पर चलना और कुछ कर दिखाना ही ''देवत्व'' है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि मानव देह दुर्लभ है, अमूल्य है, अद्‌भुत शक्ति-सम्पन्न है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शक्ति सामर्थ्य को समझे, लोक हित की कामना से आध्यात्मिक साधना के माध्यम द्वारा लाभ अर्जित करे।

उपासना में-''आस्था'' का स्थान भी बहुत महत्वपूर्ण है। कहना चाहिए कि-उपासना प्रक्रिया की आधारशिला ही-''आस्था'' है।

आस्था का आशय है विश्वास।

और यही विश्वास जब अन्दर भावना से युक्त हो जाता है, तब उसे-''श्रद्धा''-कहते हैं। श्रद्धा ही उपासना सफलता का सोपान है। श्रद्धा का अभाव साधक को शंकालु, कुतर्की, समय ग्रस्त और अविश्वासी बना देता है। ये दुर्वृत्तियां मानव में उभरी तो समस्त साधना खंडित हो जाती है।

इसलिए उपासना में श्रद्धा भाव सदैव अक्षुणा रहना चाहिए।

श्रद्धा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए प्राचीन महर्षियों ने साधकों को या उपासकों को उसके प्रति सतत् जागरूक रहने का निर्देश दिया है।

''ऋग्वेद''-में लिखा है-

''श्रद्धा सम्मति के मस्तक पे निवास करती है। बिना श्रद्धा के यज्ञ कर्त्ता द्वारा अग्नि प्रज्जवलित नहीं होती।''

गीता में कहा गया है-

''जिसकी जैसी श्रद्धा होती है उसे उसी तरह की सिद्धि प्राप्त होती है। कर्म योगियों में श्रद्धावान व्यक्ति श्रेष्ठ होते हैं।''

अश्रद्धा से किया गया हवन, दान, तप और उपासना सब असत कहा जाता है।

देवों के देव महादेव पर अपनत्व एवं पुत्र भाव का प्रभाव

भगवान शिव सम्पूर्ण जगत के-''परमपिता'' हैं, अतः वे अपनी सभी सन्तानों से एक तरफ प्यार तो करते ही हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि जो जीव उनसे विशेष अनुराग- और अपनत्व का भाव रखता है उसे भोलेनाथ की विशेष कृपाएँ अतिरिक्त रूप से अवश्य प्राप्त होती रहती हैं।

यह परम पिता परमात्मा का बनाया हुआ नियम है सद्‌भावों और

अपनत्व की भावना का प्रति–उत्तर हमेशा प्रेम, दुलार विशेष कृपाओं के रूप में मिलता है, जबकि घृणा के प्रति–उत्तर में अधिकतर तो घृणा ही मिलती है या फिर मिलता है गहन उपेक्षा का भाव।

यह संसार का नियम है कि जिस व्यक्तियों को हम प्यार करते हैं, जो हमें अच्छे लगते हैं, जिनके हृदय में हमारे प्रति सम्मान का भाव होता है, या जिनके प्रति हमारा हृदय वात्सल्य भाव से भरा होता है, हम उनका बुरा कभी सोच ही नहीं पाते। जिनके प्रति हमारे हृदय में प्रेम, आदर, श्रद्धा और प्रत्येक प्रकार से सुख पहुंचाने का सद्भाव होता है वे सभी व्यक्ति स्वयं हमारे सद्भाव का उत्तर सद्भाव से, और भलाई का जवाब उससे भी अधिक भलाई कर देने के लिए तत्पर रहते हैं।

यह लौकिक नियम है कि जिसे हम आदर और सम्मान देंगे, वह भी हमें आदर–मान देगा, जिसका हम भला करेंगे वह सर्वस्व हम पर लुटा देगा। मानव ही नहीं सम्पूर्ण जीव जगत इस नियम के अधीन ही कार्य करता है, क्योंकि वह स्वयं परब्रह्म परमेश्वर का बनाया हुआ नियम है, जिसे कोई व्यक्ति या देवी–देवता तो क्या स्वयं–''परमेश्वर'' भी नहीं तोड़ सकते।

महादेव के प्रति अपनत्व के भावों का विकास उपासना की प्रथम सीढ़ी तो है ही साथ ही उपासना और अराधना का आधार स्तम्भ भी है।

परम पिता ''परमेश्वर'' के हम पुत्र हैं और वे हैं हमारे पिता, इस भाव के हृदय में आते ही बिना कुछ किये ही हम–परम पिता महादेव के विशेष कृपाओं के अधिकारी बन जाते हैं। पुत्र कुछ भी करे, पिता को कितनो ही कष्ट पहुंचाये परन्तु पिता तो पिता ही रहते है, उसकी कृपा और अनुकम्पा पुत्र पर वैसी ही बनी रहती है, उसमें अनुकम्पा पुत्र पर वैसी ही बनी रहती है उसमें कमी नहीं आती। बालक जब कुछ और बड़ा हो जाता है, वह खेलने–कूदने और स्कूल जाने लगता है, तब उसके प्रत्येक अच्छे कार्य पर माता–पिता विशेष प्रसन्न होते हैं, उसे प्रोत्साहन और पुरस्कार देते हैं, उसकी किसी गलती पर उसे समझाते हैं, परन्तु वह कितना ही शैतान हो–उसे घर से तो नहीं निकाल देते रखते तो घर में ही हैं।

जब सांसारिक माता–पिता अपने अबोध बालकों से घृणा नहीं करते, उन्हें घर से नहीं निकालते, बल्कि हर प्रकार से उनकी आवश्यकताओं की सतत् आपूर्ति करते रहते हैं तब परम पिता परमेश्वर जो सम्पूर्ण संसार के पिता हैं, वे किस प्रकार अपनी सन्तानों से विमुख हो सकते हैं।

यही कारण है कि जो भी व्यक्ति एक ही बार परम पिता महादेव को अपना पिता मानकर चलता है, उसे उनकी कृपाओं की प्राप्ति अनायास ही अनवरत रूप से होने लग जाती है। एक बार पिता और पुत्र का यह सम्बन्ध स्थापित होते ही आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है, क्योंकि आप बन जाते हैं देवों के देव ''महादेव'' के प्रिय सन्तान।

अयोग्य उपासक के लक्षण

उपासना काल के अयोग्य अर्थात् गुरु दीक्षा के लिए अनुपयुक्त व्यक्तियों के सम्बन्ध में शास्त्रकारों का मत है कि–

अपराधी मनोवृत्ति वाले, पापी, क्रूर, कृष्ण, भष्टाचारी, पर निन्दारत, मन्त्र भ्रष्ट, आस्थाहीन, आलसी, कायर, कटुभाषी, क्रोधी, हिंसक, ईर्ष्यालु, अनैतिक मार्ग के अनुयायी, दुर्व्यसनी, शास्त्र निन्दक, अहंकारी, मूर्ख, दुर्बुद्धि, प्रलापी और लम्पट व्यक्ति न तो किसी गुरु द्वारा मंत्र दिए जाने योग्य है न ही वह दीक्षा प्राप्त करने पर उपासना क्षेत्र में कोई उपलब्धि कर पाते हैं। ऐसे लोगों को ज्ञानोपदेश, मंत्र दीक्षा, साधना अथवा उपासना परामर्श और आध्यात्मिक संकेत देने का प्रयास सर्वथा निरर्थक है।

उपासना से पूर्व मुख्य निर्देश

मन्त्रानुष्ठान अथवा उपासना हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों मर्मज्ञों ने परीक्षण करके इनकी व्यवहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है।

यदि आप भगवान शंकर की अजुष्ठान रूपी उपासना करना चाहते हैं तो निम्न मुख्य निर्देश का पालन अवश्य करें–

1. स्नान करके शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर उपासना स्थल में जाना चाहिए।

2. वस्त्र दो ही हों और सिले हुए न हों।

3. साधना स्थल पूर्णतया शान्त, सुरक्षित और एकान्त में हो।

4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र, अनुष्ठान के समय नहीं पहनना चाहिए।

5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर, बार–बार उठना उचित नहीं होता।

6. बैठने में शरीर सदैव सीधा रहे, मेरू दण्ड को झुकाना नहीं चाहिए।

7. अनुष्ठान या उपासना में पूजन—जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

8. अनुष्ठान से सम्बन्धित मंत्र का जप पूर्ण रूपेण करना चाहिए।

9. अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहूर्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

10. जप काल में नित्य देवता का "आवाहन विसर्जन" करते रहना आवश्यक होता है।

11. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, गंगाजल, नैवेद्य आदि का नियमानुसार प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

12. अनुष्ठान की समाप्ति पर हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् दान और ब्राह्मणों एवं कुमारी कन्याओं के भोजन को भी वरीयता दी गई है।

13. पूरी साधना काल में "ब्रह्मचर्य व्रत" का पालन करना चाहिए।

14. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, परस्पर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य और विचार दोनों ही पवित्र, स्वच्छ हों।

15. अनुष्ठान प्रारम्भ करने के पूर्व जैसा कुछ "संकल्प" (निश्चय) किया जाये, उसका अंत तक पालन करना चाहिए।

16. अनुष्ठान से बचे समय में भी धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म चर्चा,—आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याण कारी होता है।

17. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

उपासना में निषेध

1. प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्याज्य है। गरिष्ठ, तामसिक भोजन से साधक की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तुएं, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु फकीर गांजे—चरस का दम लगाकर कहते हैं—"इससे ध्यान लगता है"—यह सर्वथा असंगत है। उपासकों के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार का विलासित और मादक पदार्थों का निषेध किया गया है।

साधक के लिए अनुष्ठान काल में गांजा, भाँग, चरस, शराब, ताड़ी, सिगरेट–बीड़ी, तम्बाकु, मांस–मछली–अंडे आदि को सर्वथा त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए। साधना में उपासना में मन लगाने के लिए नशे का नहीं, आस्था का अवलम्ब लेना चाहिए।

4. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में साधना–उपासना करना वर्जित है।

5. शिखा खोलकर उपासना नहीं करनी चाहिए।

6. बिना आसन बिछाये नंगी भूमि पर उपासना–वर्जित है।

7. उपासना के समय किसी से वार्तालाप नहीं करना चाहिए।

8. भीड़–भाड़ वाले जनसंख्या स्थान में उपासना करना निषेध है।

9. माला जपते समय हाथ और सिर खुला नहीं रहना चाहिए, किसी वस्त्र से ढक लें।

10. राह चलते या राह में कहीं बैठकर जप नहीं किया जाता।

11. भोजन करते समय, अथवा शयन काल में जप करना वर्जित है।

12. आसन विरूद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर लेटकर या पैर पसार कर जप नहीं किया जाता।

13. छींक, खखार, खाँसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

13. जप करते समय निर्धारित मणियों द्वारा बनी हुई माला ही होनी चाहिए। काम चलाऊ या सजावट के रूप में रेडियम, प्लास्टिक या काँच की माला प्रयोग निषिद्ध है।

15. जप में माला का प्रयोग (उपयोग) बाँए हाथ से न करें।

16. माला के मणियों में नाखून का स्पर्श न होने दें।

17. जप के समय माला पूरी हो जाने पर "सुमेरू"– का उलंघन नहीं किया जाता। वहाँ से फिर उलटी दिशा में लौट जाना चाहिए। (माला उलटने का नियम समीपस्थ पंडित से पूछें)।

18. माला जपते समय उँगलियों और मणियों के बीच कोई व्यवधान अन्तर नहीं आना चाहिए।

(तृतीय भाग)

उपासना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड

प्रिय शिव भक्तों ! किसी भी उपासना में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है–

1. कुशासन 2. मृग चर्म 3. व्याघ्र चर्म 4. ऊनी वस्त्र 5. रेशमी वस्त्र 6. काष्टासन।

कुशासन पर उपासना के लाभ

(क) साधारण कोई भी उपासना हो, यदि कुशासन पर बैठकर जप एवं पूजा–पाठ किया जाये तो सफलता अवश्य मिलती है।

(ख) अन्तः करण पवित्र होता है।

(ग) उपासक को फल की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।

(घ) उपासक की दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

(ङ) दुषित प्रभावों अर्थात् भूत–बाधावों का शमन होता है।

(च) उपासक की उपासनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

मृग चर्म आसन पर उपासना के लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना में ''कृष्ण मृग चर्म'' विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

व्याघ्र चर्म आसन पर उपासना के लाभ

यह ''रजोगुणी''–आसन है।

राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उद्देश्य की पूर्ति की जाने वाली उपासना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावकारी होता है। सिंह के स्वभाव वाले सभी गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि–व्याघ्र चर्म के पास कोई जीव–जन्तु नहीं जाते। इस पर बैठे हुए उपासक को सांप–बिच्छु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उस पर आसीन उपासक को छूने का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न उपासना के लिए ''व्याघ्र चर्म'' विशेष उपोयगी है।

वैसे इसका भी वैज्ञानिक महत्व है, और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और सृष्टि के सबसे बड़े महान योगी तथा मन्त्र साधक ''भगवान शिव'' को यह इतना प्रिय है कि वे उसे ओढ़ने–बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

कम्बल के आसन की उपयोगिता

पाठको ! ''कर्म सिद्धि'' की लालसा से किए जाने वाली उपासना में–कम्बल का आसन लाभदायक होता है।

रेशमी आसन की उपयोगिता

ऊनी आसन तथा रेशमी आसन भी उपासना में अति लाभदायक होते हैं। इन पर बैठकर जप या उपासना करने वाले उपासक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती हैं। वस्तुतः ये दोनों आसन–भी कुचालक (असंक्रामक–नॉन कन्डक्टर) पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्वपूर्ण माना गया है। कामना पूति हेतु लाल कम्बल का प्रयोग विशेष प्रभावी होता है। अनेकों रंग वाला कम्बल और भी श्रेष्ठ माना जाता है।

लकड़ी के आसन की उपयोगिता

पाठको ! लकड़ी के आसन पर बैठकर उपासना या साधना नहीं करनी चाहिए। इसका फलदानवों को प्राप्त होता है।

त्याग करने योग्य आसन

निम्नलिखित–आसनों का उपयोग उपासना काल में वर्जित है– बांस, पत्थर, घुनी लकड़ी, तिनके अथवा पत्तों से बने आसन पर बैठकर जप करना या उपासना करना अनिष्ट कारक है।

अर्थात्–

(क) बाँस के बने आसन पर बैठकर उपासना करने से ''दरिद्रता''–आती है।

(ख) पत्थर का आसन उपासक को व्याधिग्रस्त करना है।

(ग) धरती पर बैठकर (बिना कोई आसन बिछाए) अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाले व्यक्ति दुःख से आक्रान्त होता है तथा उनकी उपासना का फल आधा धरती प्राप्त कर लेती है।

(घ) छेद वाली लकड़ी (छुने हुए काक्टासन) का प्रयोग दुर्भाग्यकारी होता है।

(ङ) तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(च) पल्लवों (पत्तों) से निर्मित आसन मानसिक विघ्न उत्पन्न करता है।

और–

सामान्य वस्त्र कपड़ा और कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में निन्दित कहा गया है।

माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

पूर्व काल के ऋषि–महर्षियों ने जप–तप, पूजा–पाठ के लिए माला विशेष का नियम बनाया है। व्यवहारिक रूप में हम रूद्राक्ष, तुलसी, कमलगट्ठा, बैजयन्ती, शंख, चन्दन, राजमणि, पुत्रजीवा, स्फटिक आदि की मालाएँ जप कार्य में लाते हैं।

मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। माला के दाने टूटा–फटा, कीड़ों से छिद्र किया हुआ नहीं उपयोग करना चाहिए। प्रायः माला 108 दाने की होती है। जपते समय माला का एक फेरा पूरा हो जाने पर ''सुमेरू''–तक पहुंच कर, वहीं से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

''सुमेरू'' को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

1. शत्रु नाश के लिए–कमलगट्ठे की माला।
2. सन्तान प्राप्ति हेतु–पुत्र जीवा की माला।
3. अभिष्ट सिद्धि हेतु–चांदी की माला।
4. धन प्राप्ति हेतु–मूंगा की माला।
5. पाप नाश हेतु–कुशा जड़ की माला।
6. भैरवी विद्या सिद्धि हेतु–मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला।
7. देवि–देवता उपासना हेतु–लाल चन्दन एवं रूद्राक्ष की माला।
8. वैष्णंवी मत साधना हेतु–तुलसी की माला।
9. गणेश पूजन हेतु–हाथी दाँत की माला।

(चतुर्थ भाग)

शिव पूजन में कुछ अति आवश्यक वस्तुओं का निर्णय खण्ड

पूजा के पाँच प्रकार

शास्त्रों में पूजा के पाँच प्रकार बताये गये हैं–

अभिगमन, उपादय, योग, स्वाध्याय और इज्या।

1. देवता के स्थान को साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना–ये सभी कर्म– ''अभिगमन''– के अर्न्तगत है।

2. गंध, पुष्प आदि पूजा–सामग्री का संग्रह–''उपादान'' है।

3. इष्ट देव की आत्म रूप से भावना करना–''योग'' है।

4. मन्त्रार्थ का अनुसंधान करते हुए–जप करना, सूक्त, स्तोत्र आदि का पाठ करना, गुणनाम, लीला आदि का कीर्तन क्र्ना, वेदान्त, शास्त्र आदि का अभ्यास करना–ये सब ''स्वाध्याय'' है।

5. उपचारों के द्वारा–अपने आराध्य देव की पूजा–''इज्या'' है।

ये पाँच प्रकार की पूजाएँ क्रमशः सृष्टि, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य और–''सारूण्य मुक्ति''–देने वाली है।

भगवान सदा शिव की पूजा की उपासना में एक रहस्य की बात यह है कि जहाँ एक ओर रत्नों से परिर्निमित लिंगों की पूजा में अपार समारोह के साथ राजोपचार आदि विधियों से विशाल वैभव का प्रयोग होता है, वहाँ सरलता की दृष्टि से केवल जल, अक्षत, बिल्वपत्र और मुख वाद्य (मुख से बम–बम की ध्वनि) से ही परिपूर्णता मानी जाती है और सदाशिव की कृपा सहज उपलब्धं हो जाती है, इसीलिए तो वे आशुतोष और उदार–शिरोमणि कहे गये हैं।

फूल तोड़ने का मंत्र

प्रातः कालिक स्नानादि कृत्यों के बाद देवपूजा का विधान है। एतदर्थ स्नान के बाद तुलसी, बिल्वपत्र और फूल तोड़ने चाहिए। तोड़ने से पहले हाथ-पैर धोकर आचमन कर ले। फिर पूरब की ओर मुँह कर हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र बोले-

"मा नु शोकं कुरूष्व त्वं स्थान त्यागं च मा कुरु।
शिव पूजनार्थाय प्रार्थयामि-वनस्पते।।"

पहला फूल तोड़ते समय-"ॐ वरूणाय नमः", दूसरा फूल तोड़ते समय- "ॐ व्योमाय नमः", और तीसरा फूल तोड़ते समय-"ॐ पृथिव्यै नमः"-बोले। इसके पश्चात् इच्छानुसार पुष्प तोड़े।

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र

पुष्प तोड़े के समान ही बिल्वपत्र तोड़ने में भी निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें-

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेव प्रियः सदा।
गृहामि तव पत्राणि शिव पूजार्थ मादरात।।

नोट-उपरोक्त मंत्र हाथ जोड़कर, बिल्वपत्र वृक्ष में शिव का ध्यान कर पढ़ें। मंत्र पढ़े के बाद-तीन पत्ते वाला शुद्ध व स्वच्छ बिल्वपत्र आवश्यकतानुसार वृक्ष से तोड़ लें, फिर वृक्ष को प्रणाम कर जायें।

बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

शिव भक्तो ! चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रान्ति के दिन और सोमवार को-"बिल्वपत्र"-न तोड़ें। किंतु बिल्वपत्र शंकर जी को बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समय में पहले दिन का रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए।

शास्त्र ने तो यहाँ तक कहा है कि-

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनः पुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्।।

हिन्दी अनुवाद-यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए

बिल्वपत्र को धोकर बार–बार चढ़ाता रहे। (स्कन्द पुराण, आचारेन्दु पृ० १६५)

बासी जल, फूल का निषेध

शिव जी के दीवाने उपासको ! बासी जल, फूल के सम्बन्ध में शास्त्रों में निम्नलिखित "मंत्रसूत्र"–वर्णित है–

वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं वर्ज्यं पर्युषितं जलम्।
न वर्ज्यं तुलसी पत्रं न वर्ज्यं जाह्नवी जलम्।।

(बृहन्नारदीय)

हिन्दी अनुवाद–"जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गए हों, उन्हें देवताओं पर न चढ़ायें। किंतु तुलसी दल और गंगाजल बासी नहीं होते।"

तीर्थों के जल के बारे में कहा गया है–

"न पर्युषित दोषोऽस्ति तीर्थतेयस्य चैवहि"

हिन्दी अनुवाद–"तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता"

(स्मृति सारावली)

इसी प्रकार शास्त्रों में कहा गया हैकि–"यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता।"

"माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता।" "मणि, रत्न, वस्त्र आदि से बनाए गये फूल–बासी नहीं होते।" इन्हें प्रोक्षण कर (नवीन भिगोये वस्त्र से पोंछकर) चढ़ना चाहिए।

नारद जी ने "मानस" (मन के द्वारा भावित) फूल को सबसे श्रेष्ठ फूल माना है।

उन्होंने देवराज इन्द्र को बताया है कि हजारों–करोड़ों बाह्य फूलों को चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जा सकता है, वह केवल एक मानस फूल चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है। इससे मानस पुष्प ही उत्तम पुष्प है। मानस पुष्प में बासी आदि कोई दोष नहीं होता। इसलिए पूजा करते समय–मन से गढ़कर फूल चढ़ाने का आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

सामान्यतया निषिद्ध फूल

यहाँ उन "निषेधों" को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं–

भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल–''निर्माल्य'' कहलाता है, सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल इसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ायें।

भौरे के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता।

जो फूल अपवित्र वर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिसमें खट्टी गंध या सड़ाँध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गंध वाला है–

ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए।

जो फूल बाँए हाथ, पहनने वाले वस्त्र, रेंड़ (अरण्डी के पत्ते) के पत्ते पर रखकर लाये गए हों, वे फूल ''त्याज्य'' है।

कलियों को चढ़ाना मना है।

फूल को जल में डुबाकर धोना मना है।

केवल फूल को जल से प्रोक्षण कर देना चाहिए।

शिव पूजन के योग्य पत्र पुष्प

भगवान शंकर पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। बताया गया है कि तपःशील सर्वगुण सम्पन्न वेद में वर्णित–

''किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण दान करने पर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान शंकर पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है।''

कौन–कौन पत्र–पुष्प शिव के लिए विहित है और कौन–कौन निषिद्ध है, इनकी जानकारी अपेक्षित है। अतः उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है–

पहली बात यह है कि भगवान विष्णु के लिए जो–जो पत्र और पुष्प विहित हैं, (निर्धारित हैं) वे सब भगवान शंकर पर भी चढ़ाए जाते हैं।

केवल ''केतकी''–केवड़े का निषेध है।

शास्त्र ने कुछ फूलों के चढ़ाने से मिलने वाले फल का तारतम्य (मांप दण्ड) बतलाया है–

जैसे–दस सुवर्ण–माप के बराबर सुवर्ण दान का फल–एक आक के फूल को चढ़ाने से मिल जाता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा–''एक बिल्वपत्र'' से फल मिल जाता है। और हाजर बिल्वपत्रों की अपेक्षा एक ''गूमा फूल'' (द्रोण पुष्प) होता है। इस तरह हजार गूमा से बढ़कर चिचिड़ा (चिरचिरी, अपामार्ग) हजार चिचिड़ों से बढ़कर एक कुश का फूल, हजार कुश पुष्पों से बढ़कर एक–''नील कमल'', हजार

नील कमलों से बढ़कर–''एक धतूरा'', हजार धतूरों से बढ़कर एक शमी का फूल होता है। अन्त में बताया गया है कि समस्त फूलों की जातियों में सबसे बढ़कर–''नील कमल''– होता है।

भगवान व्यास ने ''कनेर'' की–कोटि में–चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेत कमल, शमी के फूल और ''बड़ी भटकटैया'' को रखा है। इसी तरह धतूरे की कोटि में–''नाग चम्पा'' और ''पुनाग'' को माना है।

शास्त्रों ने भगवान शंकर की पूजा में ''मौलसिरी'' (बकबकुल) के फूल को ही अधिक महत्व दिया है।

''भविष्य पुराण''–ने भगवान शंकर पर–चढ़ाने योग्य और भी फूलों के नाम गिनाए हैं–

करवीर (कनेर) मौलसिरी, आक, धतूरा, पाढर, बड़ी कटेरी, कुरैया, कास, मन्दार, अपराजिता, शमी का फूल, कुब्जक, शंख पुष्पी, चिचिड़ा (चिचिरी) कमल, चमेली, नाग चम्पा, चम्पा, खस, तगर, नाग केशर, किंकिरात, (करंटक अर्थात् पीले फूल वाली कट सरैया) गूमा, शीशम, गूलर, जयन्ती, बेला, पलास, बेलपत्ता, कुसुम्भपुष्प, नील कमल और लाल कमल।

शिव पूजन में निषिद्ध पत्र पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल, या कढूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, बसंत ऋतु में खिलने वाला कन्द विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, सर्ज और दोपहरिया के फूल भगवान शंकर को नहीं चढ़ाना चाहिए। ''वीरभित्रोदय''–में इनका संकलन किया गया है।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि

फूल फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इसे चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख उपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए। इनका मुख नीचे की ओर न करें।

''दूर्वा'' एवं ''तुलसी दल'' को अपनी ओर और ''बिल्वपत्र'' नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनके भिन्न पत्तों को उपर मुखकर या नीचे मुखकर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है।

दाहिने हाथ के करतल को उतारना कर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

शिवलिंग के उपर से फूल उतारने की विधि

चढ़े हुए फूल को दूसरे दिन या उसी दिन अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

शिवलिङ्ग निर्माण विधि

भगवान सदा शिव का पूजन करने के लिए "शिवलिंग" की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। "भगवान शिव की प्रतिमा और लिङ्ग में लिङ्ग श्रेष्ठ माना गया है।" मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक साधकों को–शिवलिंग का ही पूजन करना चाहिए। लिंग का पूजन उपनीत साधकों को–"प्रणव" से करना चाहिए। मूर्ति का पूजन "पञ्चाक्षर मंत्र" से किया जाता है।

शिवलिंग की स्थापना योग्य पंडित द्वारा करावें। विधिपूर्वक प्रतिष्ठापित शिवलिंग का पूजन उत्तम द्रव्य युक्त उपचारों से करने पर "शिवलोक सुलभ हो जाता है।"

चल प्रतिष्ठा में शिवलिंग या विग्रह छोटा देना चाहिए। अचल प्रतिष्ठा के लिए "स्थूल विग्रह" लेना चाहिए। शिवलिंग का पीठ उत्तम और सुदृढ़ होना चाहिए।

शिवलिंग जिस द्रव्य से बना हो उसी द्रव्य से पीठ भी बनाना चाहिए। लिंग की लम्बाई बनाने वाले या यजमान के नाप से "बारह अंगुल" होनी चाहिए। लम्बाई में कमी से फल में कमी आ जाती है। निश्चित मान से अधिक हो तो कोई दोष की बात नहीं है। चललिंग की लम्बाई कर्त्ता के नाप से एक अंगूल से कम नहीं होनी चाहिए। अल्प होने पर फल में अल्पता आ जाती है। अधिक हो तो कोई हानि नहीं है।

"महालिंग" की स्थापना करके विविध उपचारों से पूजा करनी चाहिए। "षोड़शोपचारों" (सोलह वस्तुओं द्वारा) से या "अर्घ्य से नैवेद्य तक" उपचार अर्पित करें। अभिषेक, नैवेद्य, नमस्कार और तर्पण–ये सभी यथाशक्ति नित्य सम्पन्न करना चाहिए। इस तरह किया गया शिव पूजन–"शिवलोक की प्राप्ति कराता है।"

पार्थिवलिंग में या वाणलिंग में अथवा पारद शिवलिंग में तथा

स्फटिक शिवलिंग में किया गया पूजन भी मनोरथों को पूरा करने वाला होता है।

''परिक्रमा'' और ''नमस्कार''–करने से भी शिवपद की प्राप्ति होती है।

यदि नियम पूर्वक ''शिवलिंग का दर्शन'' किया जाय तो वह भी–''कल्याण दायक'' होता है।

पूजन दिशा निर्णय की दृष्टि से सामान्य रूप से दक्षिण दिशा में बैठकर–''उत्तराभिमुख''–होकर करना चाहिए।

शिव उपासना में भस्म धारण करने की विधि

भगवान शिव के उपासको ! उपासना करते वक्त स्वयं चन्दन के बदले ''भस्म'' धारण करें। यह भस्म हवन कुंड, यज्ञ, स्थल हवन कुंड, अथवा, प्रसिद्ध शिव स्थलों का होना चाहिए। भस्म लगाने का वैसे तो शरीर के प्रत्येक स्थान बताए गए हैं–बत्तीस, सोलह, आठ या पाँच स्थान वैदिक विधि में वर्णित है।

सर्वमान्य रूप से मस्तक, दोनों भुजाएँ, हृदय और नाभि–इन पाँच स्थानों में भस्म ''त्रिपुंड'' लगाने का विधान है। भस्म लगाते समय सर्वप्रथम मस्तक में तीन उँगलियों के सहारे त्रिपुंड (तीन रेखाकार) भस्म लागवें और दाहिने हाथ से लगावें। भस्म मस्तक में लगाते समय–''ॐ नमः शिवाय''–मंत्र पढ़ें। इसके बाद दोनों कलाईयों में, ''पितृभ्यां नमः–'' पढ़कर हृदय में, उमेशाभ्या नमः–पढ़कर पीठ में और सिर के पिछले भाग में ''त्रिपुंड भस्म'' लगावें। तत्पश्चात् उपासना आरम्भ करें।

शिवोपासना से पूर्व ''रूद्राक्ष धारण'' की महानता (रूद्राक्ष की उत्पत्ति)

शिव भक्तों ! शिवोपासना में ''रूद्राक्ष'' मुख्य अंग है, इस कारण रूद्राक्ष का विशिष्ट महत्व बताया गया है। ''रूद्राक्ष'' शिव जी की सर्वाधिक प्रिय वस्तुओं में से एक है। यह उन्हें इतना रूचिकार लगा कि वे इसके दोनों में अपनी सूक्ष्म शक्ति के रूप में निवास करने लगे। इसी

कारण रूद्राक्ष को लोग शिवलिंग की भांति पूजते हैं और उपासना से पूर्व रूद्राक्ष धारण करने की इस कारण प्रधानता है।

रूद्राक्ष धारण कर रूद्राक्ष उपासना करने वाला व्यक्ति या आमतौर पर रूद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति भौतिक और दैविक सभी आपदावों से सुरक्षित रहता है। इसमें अद्वितीय भक्ति प्रदायक और रोग निवारक शक्ति निहित है। इसकी अद्भुत शक्ति मानसिक शांति प्रदान करती है तथा व्यक्ति उपासना में सफलता प्राप्त करते हुए धन, वैभव एवं आरोग्य से परिपूर्ण हो जाता है। इसके दोनों से बनी माला जप के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

रूद्राक्ष की उत्पत्ति गौड़ देश में–हुई, तदनन्तर इन देशों में भी, रूद्राक्ष उत्पन्न हुआ जैसे–मथुरा, अयोध्या, लंका, मलाय और काशी।

रूद्राक्ष के वर्ण और धारण के अधिकार

रूद्राक्ष चार वर्ण का होता है–''श्वेत,'' ''रक्त'', ''पीत'' और ''कृष्ण''। इसी प्रकार वर्ण भेद से रूद्राक्ष धारण करने की विधि है।

ब्राह्मणों को श्वेत वर्ण का, क्षत्रियों को रक्तवर्ण की, वैश्य को पीतवर्ण का और शूद्र को कृष्ण वर्ण का रूद्राक्ष धारण करने की विधि है।

सर्वाश्रमानां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां,
''शिवाज्ञया धार्याः सदैव रूद्राक्षाः।''

(शिव पु० विश्वे० १५–४७)

हिन्दी अनुवाद–''सभी आश्रमों एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्रों को सदैव रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, यह शिव जी की आज्ञा है।''

शास्त्रों में रूद्राक्ष के एक मुख से चौदह मुख तक का वर्णन प्रशस्त है। रूद्राक्ष ''दो जाति'' के होते हैं–''रूद्राक्ष'' तथा ''भद्राक्ष''–

''रूद्राक्षाणां तु भद्राक्षः स्यान्महाफलम्''

(देवी भा० ११–७–६)

अर्थात्–रूद्राक्ष के मध्य में भद्राक्ष का धारण करना भी महान फलदायक होता है।

रूद्राक्ष में स्वयं छिद्र होता है–

''स्वयमेव कृतं द्वारं रूद्राक्षं स्यादिहोत्तमम्।
यत्तु पौरुष यत्नेन कृतं तन्मध्यम भवेत्।।''

हिन्दी अनुवाद—जिस रूद्राक्ष में स्वयं छिद्र होता है, वह उत्तम होता है, पुरुष प्रयत्न से किया गया छिद्र वाला रूद्राक्ष मध्यम कोटि का माना गया है। (रूद्रा० जाबालो०—१२—१३)

रूद्राक्ष के मुख और धारण मंत्र

एकमुखी रूद्राक्ष—एक मुख रूद्राक्ष के विशिष्ट महत्व का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

"एक वक्त्रं तु रूद्राक्षं परतत्त्वस्वरूपकम्"

हिन्दी अनुवाद—एक मुखी रूद्राक्ष साक्षात् शिव तथा परतत्व (परब्रह्म) स्वरूप है और परतत्व प्रकाश भी है। और —"ब्रह्महत्या व्यपोहति" अर्थात् ब्रह्मत्या का नाश करने वाला है। इसको धारण करने का मंत्र है—ॐ ह्रीं नमः।

दो मुखी रूद्राक्ष—

द्विवक्त्रं तु मुनिश्रेष्ठ चार्धनारीश्वरात्मकम्।

हिन्दी अनुवाद—द्विमुखी रूद्राक्ष साक्षात "अर्धनारीश्वर" है, इसको धारण करने से शिव—पार्वती प्रसन्न हो जाते हैं। "ॐ नमः"—इस मंत्र से द्विमुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

तीन मुखी रूद्राक्ष—

त्रिमुखचैव रूद्राक्ष मग्नित्रयस्व स्वरूपकम्।

हिन्दी अनुवाद—त्रिमुखी रूद्राक्ष तीनों अग्नियों (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि) का स्वरूप है। तीन मुख वाले रूद्राक्ष को धारण करने से "ऐश्वर्य" की प्राप्ति होती है। "ॐ क्लीं नमः"—यह त्रिमुखी रूद्राक्ष धारण करने का मंत्र है।

चार मुखी रूद्राक्ष—

चर्तुमुखं तु रूद्राक्षं चतुर्वक्त्रस्वरूपकम्।

हिन्दी अनुवाद—चर्तुमुखी रूद्राक्ष साक्षात ब्रह्मा जी का स्वरूप है। इसको धारण करने से संतति की प्राप्ति होती है।—"ॐ ह्रीं नमः"—यह इसके धारण करने का मंत्र है।

पाँच मुखी रूद्राक्ष—

पञ्चवक्त्रं तु रूद्राक्षं पञ्चब्रह्मस्वरूपकम्।

हिन्दी अनुवाद—पञ्चमुखी रूद्राक्ष पञ्चदेवों (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य, और देवी)—का स्वरूप है। इसके धारण करने से—"नरहत्या" के

पाप से प्राणी मुक्त हो जाता है। पञ्चमुखी को "ॐ ह्रीं नमः" इस मंत्र से धारण करना चाहिए।

छः मुखी रूद्राक्ष—

षड्वक्त्रमपि रूद्राक्षं कार्तिकेयाधि दैवतम्।

हिन्दी अनुवाद—षडमुखी रूद्राक्ष साक्षात "कार्तिकेय" है। इसके धारण करने से लक्ष्मी एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। "ॐ ह्री नमः"—इस मंत्र से इसे धारण करना चाहिए।

सात मुखी रूद्राक्ष—

सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनङ्गों नाम नामतः।

हिन्दी अनुवाद—सप्तमुखी रूद्राक्ष "अनङ्ग" नाम वाला है। इसे धारण करने से स्वर्ण चोरी के पाप से मुक्त हो जाता है। "ॐ हुं नमः"—इसे धारण करने का मंत्र है।

आठ मुखी रूद्राक्ष—

अष्टवक्त्रो महादेवः साक्षी देवो विनायकः।

हिन्दी अनुवाद—अष्टमुखी रूद्राक्ष साक्षात साक्षी विनायक है और इसके धारण करने से—"पञ्चपातकों"—का विनाश होता है। ॐ हुं नमः—इस मंत्र से धारण करने से "परमपद" की प्राप्ति होती है।

नवमुखी रूद्राक्ष—

नवक्त्रं तु रूद्राक्षं नवशक्त्यधिदैवतम्।

हिन्दी अनुवाद—नवमुखी रूद्राक्ष नवदुर्गा का प्रतीक है। इसे— ॐ ह्रीं हुं नमः—मंत्र से बाँये भुजदण्ड पर धारण करने से नव शक्तियाँ प्रसन्न हो जाती हैं।

दसमुखी रूद्राक्ष—

दशवक्त्रस्तु देवेशः साक्षाद्देवो जनार्दनः।

हिन्दी अनुवाद—दसमुखी रूद्राक्ष साक्षात—"भगवान जनार्दन" है। ॐ ह्री नमः—मंत्र से धारण करने पर साधक की पूर्णायु होती है और वह शान्ति प्राप्त करता है।

ग्यारह मुखी रूद्राक्ष—

एकादश मुखं त्वक्ष रूद्रैकादशदैवतम्।

हिन्दी अनुवाद—एकादश मुखी रूद्राक्ष "ॐ ह्री हुं नमः— इस मंत्र से धारण करना चाहिए। धारक साक्षात रूद्र रूप होकर सर्वत्र विजयी होता है।

बारह मुखी रूद्राक्ष—

रूद्राक्षं द्वादशमुखं महाविष्णु स्वरूपकम्।
द्वादशादित्य रूपं च बिभर्त्यैव हि तत्परम्।।

(रूद्राक्ष जाबाल० १४)

हिन्दी अनुवाद—द्वादश मुखी रूद्राक्ष साक्षात महाविष्णु का स्वरूप है। —ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः इस मंत्र से धारण करने से धारक साक्षात विष्णु को ही धारण करता है। इसे कान में धारण करे। इससे ''अश्वमेघ यज्ञ'' का फल प्राप्त होता है।

तेरह मुखी रूद्राक्ष—

त्रयोदशमुखं त्वक्षं कामदं सिद्धिदं शुभम्।
तस्य धारणमात्रेण कामदेवः प्रसीदति।।

(रूद्राक्ष जाबाल० १५)

हिन्दी अनुवाद—त्रयोदशमुखी रूद्राक्ष धारण करने से सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्तिपूर्वक कामदेव प्रसन्न हो जाते हैं। ॐ ह्रीं नमः—इस मंत्र से इसे धारण करना चाहिए।

चौदह मुखी रूद्राक्ष—

चर्तुदशमुखं त्वक्षं रूद्रनेत्रसमुद्भवम्।
सर्वव्याधि हरं चैव सर्वदारोग्य माप्नुयात्।।

हिन्दी अनुवाद—चर्तुदसमुखी रूद्राक्ष रूद्र की अग्नि से उत्पन्न हुआ, वह भगवान का नेत्र स्वरूप है। ''ॐ नमः''—इस मंत्र से धारण करने पर यह रूद्राक्ष सभी व्याधियों को हर लेता है।

रूद्राक्ष धारण करने में वर्जित पदार्थ

रूद्राक्ष धारण करने वाले को निम्नलिखित पदार्थों का वर्जन (त्याग) करना चाहिए—

मद्यं मांसं च लसुनं पलाण्डुं शिग्रमेव च।
श्लेषमातकं विड्वराहम् भक्ष्यं वर्जयेन्नरः।।

(रूद्राक्ष जाबाल० १७)

हिन्दी अनुवाद—मांस, लहसुन, प्याज, सहजन, लिसोडा विड्वराह (ग्राम्यसूकर) इन पदार्थों का परित्याग करना चाहिए।

रूद्राक्ष को मंत्र द्वारा ही धारण का विधान

बिना मन्त्रेण यो धत्ते रूद्राक्षं भुवि मानवः।
स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश।।

हिन्दी अनुवाद–बिना मंत्रोच्चारण के रूद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य घोर नरक में तब तक रहता है, जब तक चौदह इन्द्रों का राज्य रहता है।

रूद्राक्ष धारण करने का शुभ मुहूर्त

ग्रहणे विषुवे चैवमयने संक्रमऽपि वा।
दर्शेषु पूर्णमासे च पूर्णेषु दिवशेषु च।
रूद्राक्ष धारणात् सद्यः सर्वपापैर्विमुच्यते।।

हिन्दी अनुवाद–ग्रहण में विषुव संक्रान्ति (मेषार्क तथा तुलार्क) के दिन कर्क संक्रान्ति और मकर संक्रान्ति, अमावस्या, पूर्णिमा एवं पूर्णा तिथि को रूद्राक्ष धारण करने से सम्पूर्ण पापों से निवृत्ति हो जाती है।

शिव उपासना के "विविध उपचार"

भगवान शिव के संक्षेप और विस्तार के भेद से पूजन के अनेकों प्रकार के "उपचार"–पाँच, दस, सोलह, अठारह, छत्तीस, चौंसठ तथा "राजोपचार" आदि।

यहाँ इन्हें दिया जा रहा है–

पांच उपचार द्वारा पूजन–(पंचोपचार पूजन)

1. गन्ध, 2. पुष्प 3. धूप 4. दीप और 5. नैवेद्य।

दस उपचार–(दसोपचार पूजन)

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र समर्पण 6. गन्ध 7. पुष्प 8. धूप, 9. दीप और 10. नैवेद्य।

सोलह उपचार–(षोड़शोपचार पूजन)

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र 6. आभूषण

7. गन्ध 8. पुष्प 9. धूप 10. दीप 11. नैवेद्य 12. द्विआचमन 13. ताम्बूल 14. स्तवन पाठ 15. तर्पण 16. नमस्कार।

अठारह उपचार—1. आसन 2. स्वागत 3. पाद्य 4. अर्घ्य 5. आचमनीय 6. स्नान 7. वस्त्र 8. यज्ञोपवीत 9. भूषण 10. गन्ध 11. पुष्प 12. धूप 13. दीप 14. नैवेद्य 15. दर्पण 16. माला 17. चन्दन 18. नमस्कार।

छत्तीस उपचार—1. आसन 2. अभ्यञ्जन 3. उद्धर्तन 4. निरूक्षण 5. सम्मार्जन 6. सर्पिस्नपन 7. आवाहन 8. पाद्य 9. अर्घ्य 10. आचमन 11. स्नान 12. मधुपर्क 13. पुनराचमन 14. यज्ञोपवीत वस्त्र 15. अलङ्कार 16. गंध 17. पुष्प 18. धूप 19. दीप 20 नैवेद्य 21. ताम्बूल 22. पुष्प माला 23. अनुलेपन 24. शय्या 25. चामर 26. व्यञ्जन 27. आदर्श 28. नमस्कार 29. गायन 30. वादन 31. नर्तन 32 स्तुतिगान 33. हवन 34 प्रदक्षिणा 35. पुष्पांजलि 36. विसर्जन।

चौंसठ उपचार—(शिव—शक्ति महापूजन में)

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आसन 4. तैलाभ्यङ्ग 5. मञ्जनशाला प्रवेश 6. पीठापवेसन 7. दिव्य स्नान 8. उद्धर्तन 9. उष्णोदक स्नान 10. तीर्थाभिषेक 11. धोते वस्त्र परिभार्जन 12. अरूणदुकूल धारण 13. अरूणोत्तरीय धारण 14. आलेप मण्डप प्रवेश 15. पीठोपवेसन पुनः 16. चन्दनादि—दिव्य गन्धानुलेपन 17. नानाविध पुष्पार्पण 18. भूषण मण्डप प्रवेश 19. भूषण मणिपीठोपवेसन 20. नवरत्न मुकुट धारण 21. चन्द्रशकल 22. सीमन्त सिन्दूर 23. तिलक रत्न 24. कालाञ्जन 25. कर्णपाली 26. नासाभरण 27. अधरयावक 28. ग्रन्थन भूषण 29. कनकचित्र पदक 30. महापदक 31. मुक्तावली, 32. एकावली 33. देवच्छन्दक 34. केयूरचतुष्टय 35. वलचावली 36. ऊर्मिकावली 37. काञ्चीदाम कटिसूत्र 38. शोभाख्याभरण 39. पादकटक 40. रत्ननुपुर 41. पादांगुलीयक 42. (चार हाथों में क्रमशः) अंकुश 43. पाश 44. पुण्ड्रेच्छुचाप और पुष्प वाण का धारण 45. माणिक्य पादुका 46. सिंहासन रोहण 47. पर्यंकोपवेसन 48. अमृतासव सेवन 49. आचमनीय 50. कर्पूरवाटिका 51. आनन्दोलास—विलासहास 52. मंगलार्तिक 53. श्वेतछत्र 54. चामर 55. दर्पण 56. तालवृन्त 57. गन्ध 58. पुष्प 59. धूप 60. दीप 61. नैवेद्य 62. आचमन 63. पुनराचमन।

नोट—राजोपचार पूजन में भी उपरोक्त इन्हीं 63 उपचारों का प्रयोग किया जाता है।

पूजन उपचारों में विशेष ध्यान देने योग्य वैदिक वृतान्त

1. आसन समर्पण में–आसन के उपर पाँच पुष्प भी रख देने चाहिए।

2. छः पुष्पों से भगवान शिव का–"स्वागत" करना चाहिए।

3. पाद्य में–चारपल जल और उसमें श्यामा घास, दूब, कमल और अपराजिता देनी चाहिए। ("पल"–"अरघी" को कहते हैं)

4. अर्घ्य में–चार पल जल और गन्ध–पुष्प, अक्षत, चव, दूब, तिल कुशा का अग्र भाग तथा श्वेत सरसों देने चाहिए।

5. आचमनीय में छः पल जल और उसमें जायफल लवंग, और कंकोल का चूर्ण देना चाहिए।

6. मधुपर्क में–कास्य पात्र में घृत, मधु (शहद) एवं दधि (दही) देना चाहिए।

7. बाद वाले आचमन में–केवल एक पल शुद्ध जल ही आवश्यक होता है।

8. स्नान के लिए–पचास पल जल का विधान है।

9. वस्त्र–बारह अंगूल से ज्यादा, नवीन और जोड़ा होना चाहिए।

10. आभूषण–स्वर्ण निर्मित हो और उसमें मोती आदि रत्न जड़े हों।

11. गन्ध जल, चन्दन, अगर, कर्पूर मिली वस्तुओं को–गन्ध करते हैं। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है।

12. पुष्प–पूजन के समय पचास से अधिक पुष्पों का उपयोग करें। ये अनेकों रंग का होना चाहिए।

13. धूप "गुग्गुल" का धूप उपयोग में लावें और कास्य पात्र में आग रखकर उसे जलावें। "मिट्टी के धूपदानी" में भी धूप जला सकते हैं।

14. नैवेद्य–मिठाईयाँ, हलुवे, विभिन्न प्रकार के फलों को, अथवा सूखे मेवे जो भगवान को समर्पित किए जाते हैं, उसे–"नैवेद्य" कहते हैं। नैवेद्य में एक पुरुष के भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिए।

15. दीप–पीतल, तांबा, कांश्य अथवा मिट्टी का बना हो। बत्ती हेतु कपास की रूई उपयोग में लावें। बत्ती की लम्बाई चार अंगुल के लगभग हो और दृढ़ हो।

16. दूर्वा और अक्षत "दुर्वा" (दुभरी) एक प्रकार की घास होती है और पूजन में उपयोग होने वाला–अरवा चावल को अक्षत कहते हैं।

17. एक–एक सामग्री अलग–अलग पात्रों में रखी जाय।

18. पूजन में उपयोग होने वाला पात्र–सोने, चांदी, तांबा, पीतल, कांश्य अथवा मिट्टी के हों।

19. पूजन के वक्त जो वस्तु की आपके पास कमी है, उसके लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

शिवोपासना के विभिन्न रूप

वेदादि शास्त्रों में शिव जी की पूजा–अर्चना और उपासना विभिन्न रूपों में वर्णित है। भगवान शिव सगुण साकार मूर्त रूप में तथा निर्गुन निराकार अमूर्त रूप में भी पूज्य हैं।

सगुण आकार रूप में सदा शिव का पूजन विभिन्न रूपों में भक्त अपनी भावना के अनुसार करता है। परम शिव, साम्ब सदाशिव, उमा महेश्वर, अर्धनारीश्वर, महामृत्युञ्जय, पंचवक्त्र, पशुपति, कृत्तिवास, दक्षिणामूर्ति, योगीश्वर, तथा महेश्वर आदि नाम और रूप में भगवान महादेव की आराधना की जाती है। इसके अतिरिक्त ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव, तथा सद्योजात–ये भगवान शिव की पाँच मूर्तियाँ हैं– जिन्हें ''पञ्चमूर्ति''–कहा जाता है। पंचवक्त्र पूजन में इन्हीं पांच नामों से महादेव का पूजन होता है।

भगवान शिव की ''अष्टमूर्ति'' पूजन का विधान भी मिलता है। सर्व, भद्र, रूद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव–ये क्रमशः पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चन्द्रमा में अधिष्ठित मूर्तियाँ हैं।

''रूद्र भगवान''–सदा शिव के ''परब्रह्म तत्व''–को प्रकट करता है। ब्रह्मा–विष्णु महेश्वर नामक आत्मत्रय का आलम्बन होने पर भी भगवान रूद्र संहार–कर्त्ता माहेश्वर स्वरूप को ही अपना प्रधान अधिष्ठान मानते हैं। इसलिए कार्यकाल में उनकी मूर्ति ''घोरा''–मानी गयी है। यह रूप माया से मुक्त है तथा परब्रह्म का सच्चा स्वरूप है, इस दृष्टि से ''रूद्र'' ही परब्रह्म हैं और भगवान शिव के नाम रूप में अधिष्ठित हैं।

''शिवलिंग'' के पूजन की विशेष महिमा बतायी गयी है। पूजन के पूर्व नवनिर्मित शिवलिंग की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। ''वाणलिंग'' एवं ''नर्म देश्वर लिंग''– ''शालिग्राम शिला'' की तरह स्वप्रतिष्ठित माने जाते हैं। इनमें प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं रहती। इसके अतिरिक्त मन्दिर आदि स्थानों में ''पूर्व प्रतिष्ठित लिंग'' स्वचम्भू लिंग, तथा ज्योर्तिलिंग आदि देवों की पूजा में ''आवाहन विसर्जन'' की आवश्यकता नहीं होती, विशेष रूप से ''पार्थिवलिंग पूजन'' में प्रतिष्ठा तथा आवाहन विसर्जन आवश्यक होता है।

शास्त्रों में तो यहाँ तक लिखा है कि–''शिवलिंग में सभी देवताओं का पूजन किया जा सकता है''–

शिवलिङ्गों अपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत्।
सर्वलोक मये यस्माच्छि वशक्तिर्विभुः प्रभु।।

(वृहद् धर्म पुराण अ० ५७)

विविध प्रकार के शिवलिंगों के निर्माण की विधि बतायी गयी है, गन्धलिंग, (कस्तूरी चन्दन और कुंकुम से निर्मित) पुष्पलिंग, (विविध सौभमय पुष्पों से निर्मित) रजोमय लिंग, (चांदी से निर्मित) यवगोधूमशालिज लिंग, (जौ, गेहूँ, चावल के आटे से निर्मित) इनके अतिरिक्त–लवणमय लिंग, शर्करामय लिंग, गूड़ोत्थलिंग, भस्मयलिंग इत्यादि कई प्रकार के लिंगों का निर्माण विविध फलों की दृष्टि से किया जाता है।

मुख्य रूप से–पारदलिंग, स्फटिक लिंग, स्वर्णधातुलिंग, नीलम आदि रत्नमय लिंग का विशेष महत्व बताया गया है।

भगवान सदा शिव के उपासक के लिए कुछ विशेष नियमों का विधान है, जिसमें त्रिपुण्ड धारण, (मस्तक पे तीन रेखा चन्दन का लगाना) भस्मावलेपन, (वह चन्दन भस्म का लगाना) रूद्राक्ष धारण आदि आवश्यक माना जाता है।

शास्त्रों में लिखा है कि–

''देवो भूत्वा यजेद् देवम्''–अर्थात् अपने जिस इष्ट देव की उपासना करनी हो, अन्तर और बाहर–दोनों प्रकार से उस देवता के स्वरूप में स्थित होना चाहिए।

इसीलिए जिसका अन्तर्मन जितना शुद्ध होगा उसे इष्ट देव की उपासना से उतनी ही जल्दी लाभ प्राप्त होगा।

भगवान शंकर की बाह्य उपचारों की पूजा के साथ–साथ अन्य कई प्रकार की उपासना विधि बतायी गयी है, जो विभिन्न फलों की प्रदात्री है–

मन्त्र उपासना में पञ्चाक्षर, (नमःशिवाय) षड्क्षर–(ॐ नमः शिवाय) मंत्र का जप, लघुमृत्युञ्जय, महामृत्युञ्जय आदि मंत्रों का जप विशेष रूप से प्रशस्थ है। इन जप अनुष्ठान आदि से – मृत्युमय दूर होकर दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

भगवान सदा शिव की उपासना में यजुर्वेद की–''रूद्राष्टध्यायी'' का विशेष महत्व है। समस्त वेदराशि के मध्य–मणि के रूप में यह रूद्राध्याय विराजमान है।

इसके अतिरिक्त नाम जप, स्तोत्र पाठ, मानस पूजा, शिवलिंग पर मात्र जल समर्पण, शिव चरित्र चिन्दन, कीर्तन, गायन, शिवपुराण आदि ग्रन्थों का पठन–पाठन, श्रवण, मनन, शिव लिंग परिक्रमा, पाठ श्रवण–मनन, और ब्रतोपवास, आदि–उपासना के विभिन्न साधन बताये गये हैं।

भगवान शिव की विविध प्रकार की उपासनाएँ

शिव भक्तों ! भगवान शिव की वेदों में वर्णित अनेकों प्रकार की उपासनाओं का स्वरूप आप सब की सेवा में समर्पित कर रहा हूँ। इनमें से कोई भी एक उपासना स्वरूप अपना कर आप धन–जन–सुख सम्पदा व प्रसन्नता से युक्त हो सकते हैं।

भगवान शिव भोले भण्डारी हैं अतः जिन निर्धन–गरीब–असहाय के पास पूजा की वस्तुएँ नहीं है, मंदिर भी पास में नहीं, भोलेनाथ की तस्वीर भी नहीं–वे शिव भक्त भी भोले नाथ की उपासना कर सकते हैं और इस शिव उपासना का नाम है–

"शिव मानस पूजा"

शास्त्रों में शिव पूजा को हजार गुण अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए एक उपाय बतलाया गया है, वह उपाय है–"मानस पूजा"। वेदों का कहना है कि भगवान शिव की प्रतिमा, शिवलिंग अथवा भावनात्मक स्थापित शिव लिंग पर यदि–

मनः कल्पित एक फूल भी चढ़ा दिया जाय तो करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होती है। इसी प्रकार मानस जल, चन्दन, धूप–दीप, नैवेद्य भी भगवान को करोड़ों गुणा संतोष प्रदान करते हैं। अतः मानस पूजा बहुत अपेक्षित है।

वस्तुतः भगवान को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, वे तो भाव के भूखे हैं। संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं है, जिससे महादेव–परमेश्वर की पूजा की जा सके, इसलिए पुराणों में वेदों में मानस पूजा का विशेष महत्व माना गया है।

मानस पूजा में भक्त अपने इष्ट साम्ब सदाशिव को सुधा सिन्धु से

आप्लावित कैलाश शिखर पर कल्प वृक्षों से आवृत कदम्ब वृक्षों से युक्त ''मुक्तामणि मंडित भवन में,'' चिन्ता मणि से निर्मित सिंहासन पर विराजमान कराता है।

स्वर्ग लोक की मन्दाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को ''स्नान'' कराता है, कामधेनु गौ के दुग्ध से ''पंचामृत'' का निर्माण करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वी रूपी गन्ध का अनुलेपन करता है। अपने आराध्य के लिए कुवेर की पुष्प वाटिका से स्वर्ण कमल पुष्पों का चयन कराता है।

भावना से वायु रूपी धूप, अग्नि रूपी दीपक तथा अमृत रूपी नैवेद्य भगवान को अर्पण करने की विधि है। इसके साथ ही त्रिलोक की सम्पूर्ण वस्तुएँ परमात्मा के चरणों में भावना से भक्त अर्पण करता है। यह है–''मानस पूजा का स्वरूप''।

यह पूजा शिव मंदिर में, शिवलिंग, एवं भगवान शिव की तस्वीर के समक्ष आरम्भ करें। यदि मंदिर, शिवलिंग या तस्वीर आपके पास नहीं है तो पर भी–

सोमवार को प्रातः काल स्नान से पवित्र हो जावें।

नवीन वस्त्र या धुले हुए द्विवस्त्र धारण कर लें। पवित्र स्नान पर पृथिवी पर ही बैठ जावें। अपने सामने–भावना का शिवलिंग निर्माण कर पूजन आरम्भ करें।

(दरिद्रता निवारण हेतु)
शिव मानस पूजन आरम्भ
(पूजन का प्रथम स्वरूप)

पूजन सामग्री–हृदय की भावना

उपासक करजोड़ कर भावना से निर्मित शिवलिंग की प्रार्थना करे–

1. ''ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि''।

हिन्दी अनुवाद–''प्रभो ! मैं पृथिवी रूप ''गंध'' (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।'' (उपासको ! जो संस्कृत मंत्र नहीं पढ़ सकते हैं, वे ''हिन्दी अनुवाद'' पढ़कर पूजन का सम्पूर्ण लाभ उठा सकते हैं)

2. ''ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि''।

हिन्दी अनुवाद–''हे प्रभो ! मैं आकाश रूपी पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।''

3. "ॐ यं वायवात्मकं धूपं परिकल्पयामि"।

हिन्दी अनुवाद—"हे महादेव ! मैं वायुदेव में धूप आपको प्रदान करता हूँ।"

4. "ॐ रं वहन्यात्मकं दीपं दर्शयामि"।

हिन्दी अनुवाद—"हे शिव शंकर ! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक आपको प्रदान करता हूँ।"

5. "ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।"

हिन्दी अनुवाद—हे महादेव ! "मैं अमृत के समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।"

6. "ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।"

हिन्दी अनुवाद—"हे सर्वेश्वर ! मैं सर्वात्मा के रूप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।"

(शिव मानस पूजन समाप्त)

महादेव मानस पूजा के द्वितीय स्वरूप
(दुःखों के निवारण हेतु)

पूजन सामग्री—महादेव के प्रति समर्पण की **"सच्ची भावना"**

(पूजन आरम्भ)

यह दिव्य उपासना भी सोमवार के दिन ही आरम्भ करें। प्रात: काल स्नान से पवित्र होकर, स्वच्छ वस्त्र पहनकर, आसन नहीं हो तो पृथिवी पर ही बैठकर, उत्तर मुख करके, हाथ जोड़कर वन्दना करें। वन्दना आरम्भ से पूर्व अपने सामने भावना की शिवलिंग स्थापित कर लें और निम्नलिखित वैदिक मंत्र वन्दना पढ़ें—

रत्नैः कल्पित मासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं।
नानारत्न विभूषितं मृगमदा मोदांकितं चन्दनम्।।
जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हत्कल्पितं गृहयन्ताम।।१।।

हिन्दी अनुवाद—हे दयानिधे ! हे पशुपते ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावलि विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरी का

गंध समन्वित चन्दन, जुही,–चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब–मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिए।

सौवर्णे नवरत्नखण्ड रचिते पात्रे घृतं पायसं।
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधि युतं रम्भाफलम् पानकम्।।
शाकानाम युतं जलं रूचिकरं कर्पूरखण्डोजज्वलं।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरू।।२।।

हिन्दी अनुवाद–हे महेश्वर ! मैंने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पाँच प्रकार का व्यञ्जन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित किया और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल–ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत कियें हैं, प्रभो ! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं।
वीणा भेरि मृदगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।।
साष्टागं प्रणतिः स्तुतिर्वहुविधा ह्वेतसमक्तं मया।
संकल्पेण समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।३।।

हिन्दी अनुवाद–छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि वाद्य, गान और नृत्य साष्टांग प्रणाम, नानाविध स्तुति–ये सब मैं ''संकल्प'' से ही आपको समर्पण करता हूँ, प्रभो ! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजाते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः।।
सञ्चारः पद्योः प्रदक्षिणविधिः सतोत्राणी सर्वा गिरो।
यद्यतकर्म करोमि तत्तदिखिलं शम्भो तवाराधनम्।।४।।

हिन्दी अनुवाद–हे शम्भो ! मेरी आत्मा आप हैं बुद्धि पार्वती जी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मंदिर है, सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है। निद्रा समाधि है, मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं। इस प्रकार मैं जो–जो भी कर्म करता हूँ–वह सब आपकी अराधना है।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।।
विहित मविहितं वा सर्व मेतत्क्षभस्व।
जय-जय करूणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।५।।

हिन्दी अनुवाद—प्रभो ! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र, अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको आप क्षमा कीजिए।

हे करूणासागर ! हे श्री महादेव शंकर !! आपकी जय हो !!!
(मानस पूजन समाप्त)

शिवलिंग पर नित्य जल चढ़ाने की विधि और पूजन-प्रदक्षिणा

(कामना पूर्ति हेतु)

महादेव को हृदय में बसाने वाले भक्तगणों ! देवों के देव महादेव महान दयालु हैं अतः भक्तों द्वारा मात्र जल समर्पण से ही, अपने प्रिय भक्तों को सब कुछ प्रदान कर देते हैं। शिवलिंग पर जल समर्पण की विधि इस प्रकार है।

प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर, गड़वी में जल भरकर शिव मंदिर को जावें और पवित्र हृदय से शिवलिंग पर जल चढ़ावें. जल चढ़ाते वक्त "ॐ नमः शिवाय"—महामंत्र का जप करें। जल चढ़ाने के बाद पाँच वार शिवलिंग की परिक्रमा करें। तत्पश्चात् शिवलिंग को श्रद्धा पूर्वक नमस्कार कर घर चले आवें।

नित्य उपरोक्त विधि से जल चढ़ाने और प्रदक्षिणा करने से भी भोलेनाथ अपने भक्तों की सभी मुरादें पूरी कर देते हैं।

महादेव पंचोपचार पूजन

(सरल हिन्दी में)

(समस्त अनिष्ट निवारक एवं सर्व कामना प्रदायक नित्य पूजन विधि—निष्काम भाव से नित्य ही शिव जी की उपासना करने वाले उपासक को चाहिए कि वे "ब्रह्म मुहूर्त्त" में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नान करके पवित्र हो जाएं, फिर स्वच्छ वस्त्र धारण कर

उत्तर की तरफ मुख करके भगवान शिव की प्रतिमा, तस्वीर अथवा शिवलिंग के समक्ष काले या लाल कम्बल के आसन पर बैठ जावें। बैठने से पूर्व नीचे लिखित पूजन सामग्री अपने पास एकत्र कर लें। धूप या सुगन्धित अगरबत्ती और देसी घी का दीपक जगावें। शिव जी की प्रतिमा या तस्वीर आम लकड़ी से बने या लाल चन्दन की लकड़ी से बने सिंहासन पर नीले रंग या लाल रंग के वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। घर में यदि स्थापित शिवलिंग हो, या आप शिवालय में पूजन करें तो सिंहासन, तस्वीर व प्रतिमा की आवश्यकता नहीं है, अपनी पूजा समर्पण शिवलिंग पर ही करें।

नित्य पूजन सामग्री—स्थापित शिवलिंग या शिव जी की प्रतिमा अथवा तस्वीर, सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु नीला या लाल वस्त्र, दीपक, रूई, देसी घी, धूप, अगरबत्ती, लाल चन्दन, भस्म (यज्ञ स्थल का, परन्तु पंचोपचार पूजन में भस्म उपलब्ध नहीं हो तो कोई बात नहीं) गंगाजल, पान, सूपारी, नैवेद्य, बिल्वपत्र, यज्ञोपवीत, नीला पुष्प (अभाव में सब रंगे पुष्प जो पुस्तक में पूर्व वर्णित है) यज्ञोपवीत, पुष्प की माला, कपूर, माचिस, आक के फूल, धतूरा, भांग के पत्ते, पहनने हेतु नवीन लाल वस्त्र, अंगोछा, तौलिया अथवा रूमाल।

नित्य श्री महादेव पूजन आरम्भ

(साधारण हिन्दी में)

आइये अब हम नित्य भगवान शिव की पूजा आरम्भ करें। कम्बल के आसन पर उत्तर मुख होकर बैठें। तत्पश्चात् धूप और दीप जगावें। उत्तर मुख इस प्रकार बैठें कि शिवलिंग या शिव प्रतिमा—तस्वीर का सिंहासन सामने हो। अब दाहिने हाथ की अंजुली में गंगा जल लेकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़ें। मंत्र समाप्त होते ही अंजुली का जल शरीर पर छिड़क लें—

पवित्र होने का मंत्र—

हे मन्दाकिनी गंगे माँ, मम तन-मन करो पवित्र।
भोले भंडारी शंकर, बन जायें मेरे मित्र।।
"हर-हर" प्रेम की भावना, मन में देहु जगाय।
मेरी हर श्वासें बोले, "ॐ नमः शिवाय।।"

नोट—मंत्रोच्चारण समाप्त होते ही अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें, तत्पश्चात् करजोड़ कर गणनायक श्री गणेश जी की वन्दना करें, क्योंकि किसी भी पूजन के आरम्भ में सर्वप्रथम श्री गणेश

पूजन न करे तो उपासना सफल नहीं होती। अतः आत्म शुद्धि के पश्चात् गणेश जी की स्तुति करजोड़ कर करें–

श्री गणेश अराधना मंत्र

हे गणनायक दया करें, शुभता करदें साथ।
ऋद्धि-सिद्धि शुभ लाभ प्रभु, सब हैं तेरो हाथ।।
सर्व सिद्धि मम साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करें जी कामना, है बारंबार-प्रणाम।।

नोट–इसके बाद दाहिनी हथेली पर गंगाजल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, सिन्दूर, दुर्वादल, नैवेद्य आदि वस्तुएँ लेकर नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें। और मंत्र समाप्ति के बाद हाथ की वस्तुएँ शिवालय में स्थित गणेश जी प्रतिमा के चरणों में समर्पित करें, अथवा घर में पूजन करते हों तो शिव जी सिंहासन पर समर्पित करें–

श्री गणेश सामग्री समर्पण मंत्र

जल, अक्षत-चन्दन पुष्प से, तुझको प्रभु रिझाता हूँ।
नैवेद्य दुर्वादल सिन्दूर से, अपना विनय सुनाता हूँ।
कैसे पूजन मैं करूँ? न पूजन का सामान।
हृदय समर्पित करता हूँ, पूर्ण करें अरमान।।
शिव-शिव की भक्ति दें, यही विनती बारंबार।
रोम-रोम शिवमय कर दो, हे गौरी के लाल।।

नोट–अब पुनः गंगाजल दाहिनी अंजुली में लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़ें तथा मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली जल भगवान शिव के सिंहासन पर छिड़क दें। (यदि आप शिवालय स्थापित शिव लिंग के पास उपासना कर रहे हैं तो–''आसन शुद्धि'' नीचे लिखे मंत्र प्रयोग न करें)

आसन शुद्धि मंत्र

हे अंजुली जल बन त्रिवेणी, प्रभु आसन करो पवित्र।
होंगे विराजित गौरी-शंकर, संग में सारे इष्ट।।
आसन प्रभु पवित्र किए, होवें विराजमान।
पास मेरी एक भावा, पूजन का सामान।।
दीन-हीन पर दया करो, हे देवों के सरताज।
सर्वसुखों का साधन दो, विनती सुन लो आज।।

नोट—इसके बाद शिवलिंग के सम्मुख खड़े होकर गंगाजल चढ़ावें। यदि प्रतिमा पूजन कर रहें हों तो प्रणाम के समक्ष थाल रखकर भावना के शिवलिंग पर जल चढ़ावें। अर्थात् शिवलिंग का ध्यान करते हुए थाल में गंगाजल गिरावें।

शिव स्नान मंत्र

गंगा की ये पावन जल, अमृत रूप समान।
उस जल से हे महादेव जी, करा रहे स्नान।।
अपना तन व मन मेरा, "हर-हर" करो पवित्र।
भक्ति अपनी दान दें, तुम्हीं हो मेरे इष्ट।।

नोट—इसके पश्चात् करवद्ध होकर प्रार्थना करें–

प्रार्थना मंत्र

नित्य करूँ मैं उपासना, हे शंकर भगवान।
धन-जन भक्ति दें हमें, सफल करें सब काम।।
बार-बार विनती करूँ, दे जग में सम्मान।
पार करो भवसागर से, शक्ति देहु महान।।

नोट—इसके बाद शिवलिंग या शिव सिंहासन पर अक्षत–(चावल) समर्पित नीचे लिखित मंत्रोच्चारण द्वारा करें–

शक्ति और सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
महादेव जी चरणों में, स्नेह समर्पित करता हूँ।।
गौरी-गणपति कार्तिकेय संग, सदा बिराजें द्वार।
निर्वल की सुन याचना, हे जग के करतार।।

नोट—अब शिवलिंग या शिव जी तस्वीर या प्रतिमा, जिसका पूजन आप कर रहे हैं, उनके मस्तक पर चन्दन लेपन करें–

चन्दन लेपन मंत्र

हे "हर-हर" जी हृदय विराजे, चन्दन प्रभु चढ़ाऊँ मैं।
नेह लगाकर शिव चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊँ मैं।।
कराइये मम अधम से, मस्तक चन्दन लेप।
क्यों बालक से रूष्ट हैं, नैन खोलकर देख।।
भवसागर में डूब रहा, हे शंकर सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनके खेवन हार।।

नोट—अब शिवलिंग पर (प्रतिमा या तस्वीर) "बिल्वपत्र" चढ़ावें–

बिल्वपत्र समर्पण मंत्र

शम्भु प्यारा बिल्वपत्र, करें प्रभो स्वीकार।
भक्ति रोम-रोम भरदें, मांग रहा हूँ प्यार।।
ग्रह अनिष्ट को नाश करें, हे जग के पालन हार।
धन-जन सुख सम्पत्ति से भरें प्रभु भण्डार।।

नोट—अब मांग—धतूरा तथा आक का फूल समर्पित करें—

भंग-आक एवं धतूरा समर्पण मंत्र

भंग-धतूरा आक पुष्प, करें प्रभु स्वीकार।
दया करो मम पापी पे, हे जग के आधार।।
माया मोह से मुक्त करो, हे करूणा के खान।
राग द्वेश का हरण करो, हर-हर कृपा निधान।।

नोट—इसके बाद पुष्प समर्पित करें—

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्पों की पंखुड़ियों, अपना स्नेह जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ।।
मेरा मस्तक कमल समझ, अपने चरण बिराजो की।
रौशन कर दो सारे जग में, विद्या-बुद्धि पाऊँ जी।।

नोट—अब पुष्पों की माला समर्पित करें—

पुष्प माला समर्पण मंत्र

इन पुष्पों की पंखुड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित है, जगादें शिव जी भाग्य मेरा।।
भक्ति ऐसी दें हमें, युग-युग नहीं भुलाऊँ मैं।
जब भी देखूँ जहाँ भी देखूँ, एक तुम्हीं को पाऊँ मैं।।
हर कष्टों को दूर करें, हे शंकर भगवान।
धन-जन से परिपूर्ण करें, बारंबार-प्रणाम।।

नोट—अब सुगन्धित धूप दिखावें—

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को प्रभु हर्षित करने, धूप करें स्वीकार।
सबको तूने तारे शंकर, हमको भी अब तार।।

शक्ति सकल मनोरथ दें, पूरण कर सब काम।
महादेव जी है मेरा-बारंबार-प्रणाम।।

नोट—इसके पश्चात् प्रज्जवलित दीपक दिखावें—

प्रज्जवलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से प्रभु जी, भेज रहा संदेश।
विनय सुनो हे शिव शंकर, पूरा करो उदेश।।
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट-पतंग समान।
हर्षित होकर बालक का, पूर्ण करें अरमान।।

नोट—अब नैवेद्य समर्पित करें—

नैवेद्य समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, करो प्रभु स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, करें प्रभु उद्धार।।
कृपा करो अनाथ पे, करदो हमें सनाथ।
शिव-शिवा जी हृदय विराजें, संग रहें गणनाथ।।

नोट—अब दोनों हाथों की अंजुली में पुष्प भरकर, ठेहुने के बल बैठकर या खड़े होकर नीचे लिखित प्रार्थना करें। प्रार्थना समाप्त होने के बाद अंजुली का पुष्प प्रभु को समर्पित कर दें—

पुष्पांजलि प्रार्थना

विनय करूं हे भोले बाबा,
जीवन मेरा संवार।
बाबा तार - तार - तार,
बाबा तार-तार-तार।।१।।
बाधा से कहदो हे शिवजी,
सीने न लिपटाये।
कहो निराशा से वो हमसे,
प्रिती नहीं लगाए।।
दिल से कह दो दरिद्रता से,
करे न हमसे प्यार।
बाबा तार - तार - तार,
बाबा तार-तार-तार।।२।।
दारूण दुख ने महादेव जी,
जियरा मेरा जलाए।

डूबा गम के सागर दिल की,
ज्योती बुझती जाए।।
चिन्ता ने नित ही लटकाए,
गर्दन पे तलवार।
बाबा तार – तार – तार,
बाबा तार–तार–तार।।३।।
लक्ष्मी और सरस्वती माता,
मेरे घर बस जायें।
चरणों में ये दास पड़ा है,
इतनी दया दिखायें।।
उलझन से कहदो शिव शंकर,
करे नहीं लाचार।
बाबा तार – तार – तार,
बाबा तार–तार–तार।।४।।
तुम बिनु जग में भोले बाबा,
और न कोई मेरा।
अंधकार में जीवन मेरा,
मांग नया सवेरा।
अपने इस नांदा बालक को,
करदो जो उद्धार।
बाबा तार – तार – तार,
बाबा तार–तार–तार।।५।।

नोट–''पुष्पांजलि प्रार्थना'' समाप्त होते ही हाथों का पुष्प सिंहासन पर अथवा शिवलिंग पर चढ़ावें, तत्पश्चात् शिव चालीसा का पाठ करें। पाठ समाप्त होने के बाद बांशे की थाली में पान के पत्ते पर कर्पुर जलाकर भगवान शिव को आरती दिखावें और पुस्तक में लिखित भगवान शिव की आरती गावें। आरती करने के बाद भगवान शिव को पुनः प्रणाम करें, फिर चाय–नाश्ता आदि ग्रहण कर अपने नित्य कार्यों में संलग्न हो जाएं।

श्री शिव चालीसा

(दोहा)

जै गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्या दास जी, देऊ अभय वरदान।।

(चौपाई)

जै गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नाग फणी के।।
अंग और सिर गंग बहाए। मुण्डमाल तन छार लगाए।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु के हवैं दुलारी। वाम अंग सोहत छवि भारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दीगण सोहत है कैसे। सागर मध्य कमल है जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जब ही जाय–पुकारा। तब ही दुःख प्रभु आप निवारा।।
कियो उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिली तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायऊ। लव निमेष मे मारि गिरायऊ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयस तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर संग युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन्ह बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। करी तपस्या सकल पुरारी।।
दानिन में तुम सम कोऊ नाही। सेवक स्तुति करत सदा ही।।
वेद नाम महिमा तब गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रकट उदधि मथन में ज्वाला। जरत सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नील कण्ठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेऊ गोई। कमल नयन पूजन चह सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिया इच्छित वर।।
जय जय जय अनंत अविनाशी। करत कृपा सबके घट वासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं। भ्रमत रहूं मोहि चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारी। यहि अवसर मोहि आन उबारी।।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो।।
मातु पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहीं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु मम संकट भारी।।

धन निर्धन को देत सदा ही। जो कोई जाँये सो फल पाही।।
स्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। छमहुं नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन। विघ्न विनासक मंगल कारन।।
योगि यति मुनि ध्यान लगावै। शारद नारद शीश नवावैं।।
नमो नमः जय नमः शिवाय। सुर–ब्रह्मादिक पार ना पाय।।
जो यह पाठ करे मन लाई। तापर होत हैं शम्भु सहाई।।
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन हारी।।
पुत्रहीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को बुलावै। ध्यान पूर्वक होम करावै।।
त्रयोदशी व्रत जो करे हमेशा। ताके तन नहीं रहे कलेशा।।
शंकर सन्मुख पाठ सुनावै। मन क्रम वचन जो ध्यान लगावै।।
जनम जनम के पाप नशावै। अन्त वास शिवपुर में पावै।।
कहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरो हमारी।।

(दोहा)

नित्य नेम करि प्रातः ही, पाठ करै चालीस।
तब सब मन की कामना, पूर्ण करहि जगदीश।।
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संबत चौंसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्याण।।

समस्त कामनाओं की पूर्ति हेतु

भगवान शिव के "वैदिक" वृहद षोड़शोपचार पूजन

(हिन्दी अनुवाद सहित)

शिव भक्तो–"षोड़शोपचार पूजन" का अर्थ–"सोलह उपचारों द्वारा पूजन" होता है। ये सोलह उपचार हैं–

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र 6. आभूषण 7. गन्ध 8. पुष्प 9. आचमन 10. दीप 11. नैवेद्य 12. द्विआचमन 13. ताम्बूल 14. स्तवन पाठ 15. तर्पण और 16. नमस्कार !

पूजन के पात्र

भगवान शिव की पूजन में पाँच प्रकार के "पात्रों" की (कांशे की कटोरियाँ, ग्लास, थाली आदि) आवश्यकता होती है–

1. पाद्य पात्र–इस पात्र में जल, दुर्वादल, और कमल पुष्प की पंखुड़ियां रखी जाती हैं।

2. अर्घ्य पात्र–इस पात्र में जल के अलावा दही, दुर्बादल, कुशा, पुष्प, अक्षत, कुंकुम (गुलाल) पीली सरसों और सुपारी होती है।

3. आचमन पात्र–इस पात्र में जल के अलावा जायफल, लौंग और शहद डालना चाहिए।

4. प्रोक्षणी पात्र–इस पात्र में पूजन हेतु गंगाजल रखना चाहिए।

5. पूर्ण पात्र–यह विशेष पात्रों की गिनती में आती है, जैसे–आरती की थाली, पंचामृत बनाने हेतु कटोरी, पूजा जल रखने हेतु गड़वी (लोटा) आदि।

पूजन सामग्री

आम की लकड़ी से बना नीले रंग का सिंहासन, भगवान शिव की प्रतीमा तस्वीर या स्थापित शिवलिंग, सिंहासन पर बिछाने हेतु नीले रंग का वस्त्र, (यदि शिवलिंग की पूजा करनी हो तो उपरोक्त वस्तुओं की आवश्यकता नहीं। घर में पूजन करना हो, जहाँ शिवलिंग स्थापित नहीं है, वहाँ के लिए उपरोक्त वस्तुएँ है।)

भगवान शिव को अर्पित करने हेतु बधछाला या मृगछाला, भगवान को भेंट करने हेतु नीले रंग का चादर, जनेऊ, लाल अबीर, गेहूँ का आटा, पान, सूपारी, काले तिल, यव (जौ) सिन्दूर, लाल चन्दन, रूद्राक्ष की माला, गाय का घी, गुग्गुल, सुगन्धित अगरबत्ती, रूई, कपूर, लड्डू, पाँच तरह के फल, अरबा चावल, नीले फूल, नीले फूल की माला, या वैदिक वर्णित सामान्य फूलों की माला, गंगाजल, बिल्वपत्र, अरधी, पंचपात्र, आसन हेतु नीला कम्बल, चौमुखी दीपक, माचिस, केले का पत्ता, दूर्वादल, शहद, गाय का दही, गाय का दूध, कई तरह के फूल, बिल्वपत्र, भंग, धतूरा, आक का फूल, आरती स्टेन्ड, विग्रह को पोछने हेतु नवीन वस्त्र, चन्दन (श्री खंड चन्दन) चन्द्रोटा, शंख, मोली, पुरोहित का नवीन वस्त्र, भेंट में देने हेतु द्रव्य आदि कमल पुष्प की पंखुड़ियाँ, पीली सरसों, जायफल लौंग इत्यादि।

पूजन प्रारम्भ से पूर्व

भगवान शिव के श्रद्धालु भक्तो ! महादेव जी का षोड़शोपचार पूजन–शिवरात्रि, श्रावण महीने के पूर्ण मास, किसी भी माह की त्रयोदशी तिथि, को सर्वोपरि महत्व रखता है। विशेष परिस्थिति में किसी भी सोमवार को यह पूजन की जा सकती है।

उपरोक्त समय (दिन) ''ब्रह्म मुहूर्त्त'' (प्रातः चार बजे) में निद्रा को त्यागें। शौचादि स्नानादि से पवित्र होकर नवीन वस्त्र धारण करें। फिर पूजा स्थल पर आम लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। (यदि शिवलिंग स्थापित पर पूजन करना हो तो सिंहासन स्थाना की

आवश्यकता नहीं होती न तस्वीर या प्रतिमा लगाने की आवश्यकता होती) तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगाजल छिड़कें, धूप जगावें, फिर पवित्र तन–मन से गाय घी रूई की बाती का दीप प्रज्जवलित करें, दीपक जलाकर भगवान शिव सिंहासन के सामने, या शिवलिंग के सामने दाहिनी ओर अक्षत पुंज पर (चावल छिड़ककर) प्रज्जवलित दीपक रखें।

तत्पश्चात् कम्बल के आसन पर बैठ जावें और पूजन आरम्भ करें। यह पूजन योग्य वैदिक पंडित से ही सम्पन्न करावें तो अति लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि योग्य पंडित के रहते पूजन में अशुद्धि नहीं आती। संभव न होतो स्वयं ही शुद्ध विधि से पूजन प्रारम्भ करें। पूजन के समय उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजन आरम्भ करने से पूर्व सिर पे लाल रूमाल या लाल तौलिया अवश्य रख लें।

पूजन प्रारम्भ

नोट—सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अजुंली में गंगाजल लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़ें, और मंत्र समाप्ति के बाद उस अंजुली जल को अपने शरीर के उपर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स वाह्याम्भयंतरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरीकाक्ष पुनातु।।

हिन्दी अनुवाद—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो ''पुण्डरीकाक्ष'' का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है, अतः हे ''ॐ'' रूप ''पुण्डरीकाक्ष'' हमें पवित्र करें।

नोट—अंजुली का जल शरीर पर छिड़क लें। भक्तों ! यह ''वैद्मंत्र'' जो भी पूजन हेतु लिख रहा हूं, यदि संस्कृत भाषा में पढ़ने में कठिनाई हो तो–''हिन्दी अनुवाद मंत्र''–द्वारा ही उपासना पूर्ण कर सकते हैं।

अब दीपक की पूजा करें–

दीप पूजन मंत्र

ॐ दीप ज्योतिषे नमः।।

यह मंत्र मुख से पढ़कर जल अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र और नैवेद्य दीपक के पास चढ़ावें। फिर उस दीप की ज्योति में श्री महादेव जी ज्योर्तिमय रूप की भावना करते हुए यह श्लोक बोलें–

''भो दीप देवरूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्याविघ्नकृत।''
यावम् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत त्वं सुस्थिरोभव।।

हिन्दी अनुवाद—हे दीप ! आप देवता के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं, जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाय, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।

नोट—इसके पश्चात् निम्न मंत्रों को पढ़कर ''आचमन'' करें। आचमन करने की प्रक्रिया है—दाहिना हथेली के बीच में पांच कतरा जल लें और उसे ओठों में लगायें। यह जल कंठ के या मुख के अन्दर नहीं जाना चाहिए।

आचमन निम्न मंत्रों से क्रमशः तीन बार करें—

आचमन मंत्र

ॐ केशवाय नमः।।

ॐ नाराणाय नमः।।

ॐ माधवाय नमः।।

तत्पश्चात् अंतिम आचमन—

ॐ हृषिकेशवाय नमः।।

नोट—आचमन करने के बाद हाथ धो लें। फिर दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथे न० की अंगुली में कुशा से बना ''पवित्री'' (अंगूठी) या तांबे की अंगूठी धारण करें। पवित्री धारण के समय निम्न मंत्र पढ़ें—

पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव,
उत्पुणाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्र पते पूतस्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम।।

नोट—पवित्री धारण करने के बाद मस्तक पर त्रिपुण्ड्र (यज्ञ भस्म, हवन का भस्म) ''भस्म'' लगावें। भस्म के अभाव में श्री खंड चन्दन ''चन्दन चन्द्रोटा'' पर घिसकर लगावें। चन्दन मस्तक, दोनों बाजू, सीना, कंठ और पीठ पर लगावें। चन्दन लगाते समय निम्नलिखित मंत्र पढ़ें—

ॐ चन्द्रनस्य महत्वपुण्यं पवित्र पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा।।

नोट—अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा (टीक) बांधें—

ॐ मानस्तो के तनये मानङ्ग आयुषि मानौ।
गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।।
मानो वीरान भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः।
सदमित्वा हवामहे।।

नोट—इसके पश्चात् भगवान श्री गणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजन में सर्वप्रथम शुभता के दाता श्री गणेश जी की ध्यान पूजा की जाती है तभी कोई भी उपासना में सफलता मिलती है। हाथ जोड़कर ध्यान करें।

श्री गणेश अराधना मंत्र

ॐ विश्वेश माधवं दुण्दि दण्डपाणि।
बंदे काशी गुह्य गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्।।
वक्रतुण्डं महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।
विघ्नि कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
सुमखश्यैकन्तस्य कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्नासो विनायकः।।
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षतो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नमामि च पठेच्छणु यादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लांवर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्वदिघ्नोपशान्त ये।।
अभीत्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो च सुरासुरैः।
सर्वघ्निच्छेद तस्मै गणधिपते नमः।।

हिन्दी अनुवाद—हे विश्व नाथ, माघव, दुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा, तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। कोटि सूर्य के समान महातेजस्वी विशालकाय और टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव ! आप सर्वदा—सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन, ये गणपति जी के बारह नाम हैं। जो मनुष्य विद्यारम्भ, विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो सारी विघ्न वाधाओं का हल हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट—इसके पश्चात् पृथ्वी की पूजा करें। इस संदभ में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपसर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता रस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

नोट—अब पूजन का ''संकल्प'' करें। इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंगुली पर—पान, सूपारी, द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, तिल, पुष्प, बिल्वपत्र लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें—

पूजन संकल्प मंत्र

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु—श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्निं द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टां विशतितमे, युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे, भूर्लोक जम्बूद्विपे, भारत वर्षे, भरतखण्डे, आर्चावर्तान्तर्गतकै देशे, ''अमुक'' नगरे, ''अमुक'' ग्रामे, ''अमुक'' स्थाने, अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने, अमुकतौमहामांगलस्य प्रद भाषोत्तमे मासे अमुक मासे, अमुक पक्षे, योगे, अमुक करण, अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति हेतु, धन, जन, सुख, सम्पदा—शान्ति—प्रसन्नता, सन्तति पुत्र प्राप्ति, सफलता प्राप्ति हेतु, भक्ति भावना—शिव प्रेम शिवा प्रे प्राप्ति हेतु श्री ''महादेव''—पूजन अहम् करिष्यते।

नोट—हथेली की वस्तुएँ शिवलिंग या शिव सिंहासन पर समर्पित कर दें।

पाठको ! ''संकल्प मंत्र'' के मध्य—जहाँ—जहाँ भी ''अमुक शब्द का'' उच्चारण किया गया है वहाँ क्रमशः मास, तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, नाम, निवास स्थान, ग्राम, नगर, इत्यादि उच्चारण करें, जिस मास, नक्षत्र दिवस आदि में आप पूजन कर रहे हैं।

हर—हर महादेव के भक्तों ! अब आप ''स्वस्ति बाचन'' मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ कर वद्ध करे।
(दोनों हाथ जोड़ लें)

स्वस्ति वाचनम् के ग्यारह मंत्र

(पहला मंत्र)

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो प्रद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति न स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः बृहस्पतिर्दधातु।।१।।

(य० वे० २५–१८ से प्राप्त)

हिन्दी अनुवाद—अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों, जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता, वह परमात्मा गरूड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें।

(दूसरा मंत्र)

पयः पृथिव्यां पयः औषधिसु पयो दिव्यन्त-रिक्षे पयोधा, पयश्वती प्रदिसाः सन्तु मह्ययम्।।२।।

हिन्दी अनुवाद—हे अग्ने ! तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करें, स्वर्ग में और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा प्रदिशा आदि सभी रस देने वाले हों।

(य० वे०–१८–३८)

(तीसरा मंत्र)

विष्णो रराट मसि विष्णोर्ै श्नत्पेस्थौ विष्णोः स्यू रसि विष्णो ध्रवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।३।।

हिन्दी अनुवाद—''हे दर्भ मालाकर वंश। तुम विष्णु के ललाट रूप हो। हे रराट तुम दोनों भगवान विष्णु के कोष्ट सन्धि हो, हे वृहद् सूची! तुम यज्ञमडल की सुचि हो, मनुष्य में सोनेवाली हो। हे ग्रन्थ ! तुम विष्णु के लिए होने के कारण विष्णु रूप ही हो, अतः भगवान ''शिव की प्रीति'' के लिए मैं तुम्हारा स्पर्श करता हूँ।''–(यजमान सिंहासन स्पर्श कर प्रणाम करे)

(य० वे० ५–२ से प्राप्त)

(चौथा मंत्र)

अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रूद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पति र्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता।।४।।

हिन्दी अनुवाद—(मैं) अग्नि देवता के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ, वायु देवता के मनन से, इष्ट को स्थापित करता हूँ, सूर्य देवता के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ, चन्द्रमा देवता को मनन कर इष्ट को स्थापित करता हूँ, बसुगण देवता का मनन कर इष्ट को

स्थापित करता हूं, रूद्रगण देवता को मनन कर इष्ट को स्थापित करता हूँ। आदित्य गण देवता के मनन सहित इष्ट को सादित करता हूँ, विश्वदेवता, बृहस्पति, इन्द्रादि देवता और वरूम देव के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ।ष

नोट—मंत्र समाप्त होते ही उपासक कुछ अक्षत उठाकर सिंहासन पर छिड़क दें। फिर हाथ जोड़कर आगे का स्वस्ति वाचन मंत्र पढ़ें।

(पाँचवा मंत्र)

ॐ द्यौ, शान्तिः रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः शपः शान्ति शेषधयः शान्ति वर्नस्पतयः शान्तिः विश्वदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्वग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। सुसान्ति र्भवतु।।५।।

हिन्दी अनुवाद—स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो, जल, औषधि, बनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्मरूप ईश्वर, सब संसार शांति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है वह भी मेरे लिए शान्ति करने वाली हो।

(य० वे०– ३६–१७)

(छठा मंत्र)

ॐ विश्वाणि देवसिवतिर्दुरितानि परासुव यद भंद्रतन्न आसुव।।६।।

हिन्दी अनुवाद—सर्व प्रेरक सविता देव के तेज को हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों के निमित्त प्रेरित करें।

(य० वे० ३०–३)

(सातवाँ मंत्र)

इमा रूद्राय तवसे कर्पिने क्षयद्विराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसदिद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नातुरम्।।७।।

हिन्दी अनुवाद— पुत्रादि मनुष्यों और आदि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो, और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार हम अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हूँ।

(य० वे० १६–४८)

(आठवां मंत्र)

***एंतते देव सवित यर्ज्ञ प्राहुर्बृस्पतये।
ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपति तेन मामव।।***

(अ० वे० २–१२ से प्राप्त)

हिन्दी अनुवाद—हे दानादिगुण सम्पन्न सविता देव ! इस यज्ञानुष्ठान को यजमान तुम्हारे निमित्त करते हैं और तुम्हारी प्रेरणा से इसके लिए बृहस्पति को देवताओं की ब्रह्मा मानते हैं, अतः इस यजमान की रक्षा करो।

(नौवां मंत्र)

ॐ मनोजूतिर्जु षताभर्आज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिवं तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मो प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रेतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठित भवति।।८।।

(अ० वे० 2—१६)

हिन्दी अनुवाद—यज्ञ सम्बन्धी आज्यघृत सर्वव्यापी सविता देव की सेवा करें, ब्रहस्पति इस यज्ञ का बिस्तार करें। वे इस यज्ञ को निर्विघ्न सम्पन्न करें। सभी देवता हमारे इस यज्ञ में तृप्त हों, इस प्रकार पार्थिव सविता देव यजमान के प्रति अनुकूल हों।

(दसवां मंत्र)

ॐ गणानांत्वा गणपतिग्वं हवामहे प्रियानांत्वां प्रियपतिग्वं हवामहे निधिना त्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो मम्। आहम जानि गर्भध मात्व भजासि गर्भधम्।।१०।।

(य० वे० २३—१८)

हिन्दी अनुवाद—हे गणपति ! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते ! हम तुम्हें आहुत करते हैं, तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होवों। मैं गर्भधारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करते हैं, तुम गर्भ धारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए—सब प्रकार से अभिमुख होते हो।।१०।।

(ग्यारहवां मंत्र)

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यस्य वो नमो नमो ब्रातेभ्यो ब्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृतपतिभ्यश्य वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यस्य वो नमो नमो।।११।।

(य० वे० १६—२५)

हिन्दी अनुवाद—हे देवताओं के अनुचर गणों के अधिपति को नमस्कार, विशिष्ट रूप जाति समूहों को नमस्कार, समूहों के अधिपति

को नमस्कार, विविध रूप वाले को नमस्कार, और विश्वरूप को नमस्कार।।११।।

नोट—इसके पश्चात् शिवलिंग या शिव प्रतिमा सिंहासन पर पूजन करें—

भगवान शिव को आसन समर्पण मंत्र

नोट—सिंहासन पर नीले वस्त्र का स्पर्श करते हुए या शिवलिंग का स्पर्श करते हुए नीचे लिखित मंत्र पढ़ें—

ॐ विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्रम्।
स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीस्व रूद्रस्यपूजितः।।

हिन्दी अनुवाद—हे भगवान रूद्र ! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन, ग्रहण कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गए हैं, तथा इस पर दिव्य बिछावन बिछा हुआ है।

नोट—अब पाद्य जल अरघी में लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल भगवान शिव को समर्पित करें। याद रहे पाद्य जल में चार पल जल, श्यामा घास, दूब, चन्दन, कमल पुष्प, अपराजिता एक कांश्य वर्तन में मिलाकर रखें और वही जल पाद्य जल के रूप में उपयोग करें। यदि वस्तुओं का अभाव हो तो समान जल से ही पाद्य जल समर्पित करें—

पाद्य जल समर्पण मंत्र

ॐ सर्वतीर्थं समूदभूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम्।
अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेद भगवन भक्त वत्सला।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तवत्सल भगवान शिव जी ! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चन्दन) आदि से मिश्रित पाद्य जल आप ग्रहण कीजिए।

भगवान शिव को अर्घ्य समर्पण मंत्र

नोट—सर्व प्रथम अर्घ्य हेतु जल तैयार करें। जलचार पल, (चार अरघी) गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव दूब, तिल, कुशा का अग्र, भाग तथा श्वेत सरसों डालकर जल तैयार करें फिर भगवान को अर्घ्य प्रदान करें—

ॐ महादेवः नमस्तेस्तु गृहाण करूणाकारी।
अर्घ्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षते युतम्।।

भावार्थ—हे देवों के देव महादेव जी ! हे करूणाकर ! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प, अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें।

भगवान शिव को आचमन कराने का मंत्र

नोट—आचमन जल में—छः पल जल, जाय इसके बाद अरघी से तीन बार भगवान शिव के सिंहासन या शिवलिंग पर समर्पित करें—

पार्वती पते नमस्तुभ्यं त्रिदेरेभिवन्ति।
गंगोदकेन देवेशि कुरूष्वाचमन भगवतः।।

हिन्दी अनुवाद—हे आद्याशक्ति पार्वती पते। आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में दूध भरकर भगवान शिवलिंग को स्नान करावें—

भगवान शिव को दूध से स्नान कराने का मंत्र

प्रभु कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञाहेतुश्च पयः स्नानार्थं समर्पितम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे प्रभो ! कामधेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवन दायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान के लिए अर्पित है।

नोट—अब अरघी में दधि लेकर भगवान शिव पर समर्पित करें, अर्थात् गंगाजल मिश्रित पतला दही से भगवान को स्नान करावें।

भगवान शिव को दधि से स्नान कराने का मंत्र

प्रिय त्रिलोकेश्वरम् पयस्तु समूद भूतां मधुराम्लं शशिप्रभाम।
दहयानितं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थ—हे प्रिय त्रिलोकेश्वर भगवान ! यह दूध से निर्मित खट्टा-मीठा चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूँ, आप इससे स्नान कीजिए।

नोट—इसके बाद अरघी में गाय का घी लेकर भगवान को स्नान कराईये—

श्री महादेव को घृत से स्नान कराने का मंत्र

महादेवः नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थ—हे महादेव ! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको सतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत (घी) आपको अर्पित करता हूँ। इससे आप स्नान करें।

नोट—अब अरघी में शहद भरकर महादेव जी को स्नान करावें—

श्री महादेव जी को शहद से स्नान कराने का मंत्र

विश्वनाथं पुष्प रेणु समुद्भुतं सुस्वादु मधुरंमधु।
तेज पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्त्ताम।।

भावार्थ—हे विश्वनाथ ! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से भगवान शिव को स्नान करावें।

शर्करा स्नान मंत्र

परमेश्वरम् इक्षुसार समूद्भूतां शर्करा पुष्टिवा शुभा।
मलापहारिका दिव्य स्नानार्थं प्रति गृहयन्त्ताम्।।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा रस आपके स्नान की सेवा में प्रस्तुत है।

नोट—अब भगवान शिव को पुनः गंगा जल से स्नान करावें।

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृहयन्त्ताम।।

भावार्थ—हे दया के सागर ! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान हैं, शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोट—अब भगवान शिव के ऊपर सुगन्धित इत्र या सुगन्धित तेल डालें।

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पाकाशोस्कुल मालती मोगरादिर्भिः।
वासित स्निग्धता हेतु चारू प्रगृहयन्त्ताम्।।

भावार्थ—हे दयासिन्धु भगवान शिव ! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

वस्त्र समर्पण मंत्र

नोट—नीचे लिखित मंत्रोच्चारण करके भगवान शिव को वस्त्र समर्पित करें। इस वस्त्र में बधछाला, मृगछाला, या नीले रंग का वस्त्र समर्पित करने का विधान है।

गौरीनाथ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षनं परम्।
देवलंकारनम् वस्त्रभतः शांति प्रयच्छ मे।।

भावार्थ—हे गौरी नाथ ! यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है, यह सर्दी, गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है। इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करें।

नोट—अब भगवान शिव के उपर "यज्ञोपवीत" (जनेऊ) चढ़ावें।

यज्ञोपवीत समर्पण मंत्र

भो परमात्मनः नर्वाभस्तन्तु भिर्यक्तं त्रिगुनं द्ववतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहण परमेश्वरः।।

भावार्थ—हे परमात्मा शिव जी ! नौ तंतुओं से बना, त्रिगुणा और देवता स्वरूप यह यज्ञोपवीत (जनेऊ) मैंने समर्पित किया है। हे परमेश्वर, आप इन्हें ग्रहण करें।

चन्दन समर्पण मंत्र

नोट—निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए भगवान शिव को त्रिपुण्ड्र चन्दन लगावें।

श्री खंड रक्त चन्दनं दिव्य गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलपेन महादेवः चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थ—हे करूणावतार महादेव जी ! यह दिव्य श्रीखंड व रक्त चन्दन सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलोपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट—इसके पश्चात् शिवलिंग या तस्वीर पर अक्षत छिड़कें।

अक्षत समर्पण मंत्र

अक्षताश्च भगवतः कंकुभाक्त सुशोभिताः।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! ये अक्षत आप की सेवा में अर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोट—इसके पश्चात् नीले या लाल फूलों की माला समर्पित करें।

पुष्पमाला अर्पण मंत्र

आदिदेवः महेश्वरः माल्यादिनी सुगन्धीनि माल्यादिनी वैदेवः।
मयाहतानि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।

भावार्थ—हे आदि देव महेश्वर ! नीले, लाल पुष्प मालती इत्यादि

पुष्पों की मालाएँ और पुष्प आपके लिए लाया हूँ। आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् नीले कमल, नीले रंग के पुष्प या मन्दार पुष्प, भगवान शिव को निम्न मंत्र द्वारा समर्पित करें।

पुष्प समर्पण मंत्र

वन्दारूजनाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दार जानि रक्त पुष्पाणि श्वेता का र्दीन्मुपेहि भो।।

भावार्थ—वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्पवृक्ष के समान कामना पूरक है। हे दायनिधे महादेव ! ये मन्दार, नीले तथा लाल पुष्प आपकी पूजा हेतु समर्पित करता हूँ।

नोट—अब भगवान शिवलिंग या तस्वीर के उपर आक के फूल, भंग, धतूरा के फूल व फल समर्पित करें।

आक व धतूरे का पुष्प एवं भंग समर्पण मंत्र

आकधतूरश्य पुष्पं च भंगस्य त्वं प्रिय महेश्वरः।
भक्ष्यभोज्य समर्पयामि ॐ श्री शंकराय नमः।।

भावार्थ—हे शिव जी ! आपको नमस्कार है। आक धतूरे का पुष्प एवं भांग आपको प्रिय है, भक्ष्य करने हेतु ये सभी भोज्य वस्तुएँ समर्पित करता हूँ।

नोट—अब भगवान शिव को ''बिल्वपत्र'' समर्पित करें।

भगवान शिव को बिल्वपत्र चढ़ाने का मंत्र

बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूला कार मेव च।
मयाऽर्पितं महादेव ? बिल्वपत्रं गृहाण मे।।

हिन्दी अनुवाद—हे महादेव सुवर्ण के समान सुशोभित आपके त्रिशूल के आकार में समहित बिल्वपत्र आपकी पूजा में समर्पित कर रहा हूँ, इन्हें प्रभु स्वीकार करें।

नोट—अब भगवान शिव को दूर्वादल (दूब–दूभरी) अर्पित करें।

भगवान शिव को दूर्वादल अर्पण मंत्र

दुर्वाकुरान् सुहरितान्मृतान् मंगल प्रदान।
अनीतास्त्व पूजार्थं गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आपकी पूजा के लिए मेरे द्वारा अत्यन्त हरे अमृतमय मंगल प्रद दुर्वाकुर लाए हैं। आप इन्हें ग्रहण करें।

नोट—अब भगवान शिव को सिन्दूर समर्पण करें।

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थ—हे महादेव ! सुन्दर लाल सौभाग्य सूचक, सुखर्द्धन पार्वती माँ के लिए शुभद तथा कामपूरक सिन्दूर आपकी सेवा मेंअर्पित है इसे स्वीकार करें।

नोट—इसके पश्चात् शिवलिंग पर लाल गुलाल समर्पित करें।

लाल गुलाल अर्पण मंत्र

नाना परिमेल दंर्व्यौनिर्मित चूर्णमुत्तमम।
गुलाल नामकं चूर्णं गन्धाढ्यं चारू प्रतिगृहयन्तान्।।

भावार्थ—हे महेश्वर ! तरह–तरह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोट—अब भगवान शिव को सुगन्धित धूप दिखावें।

महादेव जी को सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

वनस्पति रसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोढ्यं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थ—हे भक्तवत्सल महादेव। वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित उत्तम गन्ध रूप और समस्त देवि–देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट—अब भगवान शिव को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

प्रज्जवलित दीप दर्शन मंत्र

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देव महादेवः।
त्राहि देव निरयाद घोरा हो पज्योतिर्नभोस्तुते।।

भावार्थ—हे देवों के देव महादेव ! गाय के घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ, इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभूवन के अंधकार को मिटाने वाला है। मैं अपने इष्ट देव श्री महादेव जी को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे भोलेनाथ ! आप हमें नरक रूपी घोर अंधकार से बचाइये।

नोट—अब महादेव जी को नैवेद्य समर्पित कीजिए।

श्री महादेव जी को नैवेद्य समर्पण करने का मंत्र

नैवेद्य गृहयन्त्ताम शिवः भक्त्ति मे ह्यचलं कुरु।
ईप्सित मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दिव्य क्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्य च नैवेद्य प्रतिगृहयन्त्ताम्।।

भावार्थ—हे औघड़दानी ! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गये खाद्य पदार्थ, दही, दूध, घी एवं भक्ष्य भोज्य आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिए।

नोट—अब अरघी से तीन बार जल चढ़ावें और नीचे लिखित मंत्र पढ़े।

भगवान शिव को पुनः आचमन कराने का मंत्र

एला लवंग संयुक्तं कर्पूर परिवासितम्।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गिरिजापतिः।।

नोट—अब भगवान शिव को पान का बीड़ा समर्पित करें।

भगवान शिव को ताम्बूल अर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला चुर्णादि संयुक्तं ताम्बुलं प्रतिगृहयन्त्ताम।।

हिन्दी अनुवाद—हे दया के सागर ! महान दिव्य पूंगीफल ईलाईची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् भगवान शिव को नारियल फल भेंट करें।

नारियल फल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया देव स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलतावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।

भावार्थ—हे सर्वमुख दाता भोले नाथ ! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे जन्म-जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें।

नोट—अब भगवान शिव को दक्षिणा (द्रव्य) समर्पित करें।

भगवान शिव को दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भगर्भस्यं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तं पुण्यं फल दमतः शांति प्रयच्छमे।।

भावार्थ—हे महादेव जी ! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। हे परमेश्वर यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर मुझे शांति प्रदान करें।

नोट—अब दोनों हथेलियों में पुष्प भकर भगवान शिव को ''पुष्पांजिल'' समर्पित करें।

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पामि यथाकलोद् भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह–तरह के सुगन्धित पुष्प मैंने पुष्पांजिल के रूप में अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर भगवान शिव के ''नमस्कार स्तोत्र'' का पाठ करें।

भगवान शिव नमस्कार स्तोत्र

1. श्लोक

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

हिन्दी अनुवाद—कल्याण एवं सुख के मूल स्तोत्र भगवान शिव को नमस्कार है। कल्याण के विस्तार करने वाले तथा सुख के विस्तार करने वाले भगवान शिव को नमस्कार है। मंगलस्वरूप और मंगलमयता की सीमा भगवान शिव को नमस्कार है।

2. श्लोक

ॐ ईशानः सर्वविद्या नामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणो अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम।।

भावार्थ—जो सम्पूर्ण विद्याओं के ईश्वर, समस्त भूतों के अधीश्वर, ब्रह्म वेद के अधिपति, ब्रह्म बल–वीर्य के प्रतिपालक तथा साक्षात ब्रह्मा एवं परमात्मा हैं, वे सच्चिदानन्द मय नित्य कल्याण स्वरूप शिव मेरे बने रहें।

3. श्लोक

ॐ तत्पुरुषाय विद्मये महादेवाय धीमहि।
तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्।।

भावार्थ—तत्पदार्थ—परमेश्वर रूप अन्तर्यामी, पुरुष को हम जानें, उन महादेव का चिन्तन करें, वे भगवान रूद्र हमें सद्धर्मों के लिए प्रेरित करते रहें।

4. श्लोक

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकार नाय नमो बलाय नमो बलप्रमथ नाय नमः सर्व भूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः

भावार्थ—प्रभो ! आप ही वामदेव, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, रूद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूत दमन तथा मनोन्मन आदि नामों से प्रतिपादित होते हैं, इन सभी नाम रूपों में आपके लिए मेरा बारंबार—नमस्कार है।

5. श्लोक

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे-भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्धवाय नमः।।

भावार्थ—मैं सद्योजात शिव की शरण लेता हूँ। सद्योजात को मेरा नमस्कार है। किसी जन्म में या जगत में मेरा अंतिभव—पराभव न करें, आप भवद्धव को मेरा नमस्कार है।

6. श्लोक

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्रया नमो दिवा।
भवाय च सर्वाय चोभाग्यामकरम् नमः।।

भावार्थ—हे रूद्र ! आपको सायंकाल प्रातः काल, रात्रि और दिन में भी नमस्कार है। मैं भवदेव एवं रूद्रदेव दोनों को नमस्कार करता हूँ।

7. श्लोक

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम्।।

भावार्थ—वेद जिनको निःश्वास हैं, जिन्होंने वेदों से सारी सृष्टि की रचना की और जो विद्याओं के तीर्थ हैं, ऐसे शिव की मैं वन्दना करता हूँ।

8. श्लोक

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

भावार्थ—तीन नेत्रों वाले सुगन्ध युक्त एवं पुष्टि के वर्द्धक शंकर का हम पूजन करते हैं, वे शंकर हमको दुःखों से ऐसे छुड़ायें, जैसे खरबूजा पककर बेल से अपने आप टूट जाता है, किंतु वे शंकर हमें मोक्ष से न छुड़ावें।

9. श्लोक

सर्वो वै रूद्रस्तस्मै रूद्राय नमो अस्तु।
पुरुषो वै रूद्रः सन्महो नमो नमः।।
विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधाजातं जायमानं च यत्।
सर्वो ह्येष रूद्रस्तस्मै रूद्राय नमो अस्तु।।

भावार्थ—जो रूद्र उमापति हैं वही सब शरीर में जीवनरूप से प्रविष्ट हैं, उनके निमित्त हमारा प्रणाम हो। प्रसिद्ध एक अद्वितीय रूद्र ही पुरुष हैं, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप से, प्रजापति लोक में प्रजापति रूप से, सूर्य मण्डल में वैरट रूप से, तथा देह में जीव रूप से स्थित हुए हैं—उन महान सच्चिदानन्द स्वरूप रूद्र को बारम्बार प्रणाम है। समस्त चराचरात्माक जगत जो विद्यमान है, हो गया है तथा होगा, वह सब प्रपञ्च रूद्र की सत्ता से भिन्न नहीं हो सकता, वह सब कुछ रूद्र ही है अतः भगवान रूद्र को मेरा कोटि—कोटि नमस्कार है।

नोट—अब भगवान शिव की परिक्रमा करें। परिक्रमा पांच बार करें।

भगवान शिव परिक्रमा मंत्र

यानि कानि च पापानि च ज्ञाताज्ञात कृताणि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

भावार्थ—हे परम कृपालु भोलेनाथ मनुष्यों से जाने अन्जाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद—पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट—अब भगवान शिव की आरती करें। कांश्य पात्र में पान पत्ते के उपर कर्पूर जलावें और नीचे लिखित मंत्र को पढ़कर भगवान को आरती दिखावें।

आरती समर्पण मंत्र

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूर तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

आ रात्रि पार्थिवरजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाशिव वृहति वि तिष्ठस आ त्वेसं वर्तते नमः।। (पुस्तक में लिखित आरती गावें)

नोट—अब ''क्षमा प्रार्थना'' करें।
दोनों हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें।

क्षमा प्रार्थना मंत्र

आवाहनं न जानामि न जाजामि विसर्जनम्।
पूजां नैव हि जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति हीनं सदाशिव।
यत पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।।

नोट—अब भगवान शिव को अन्तिम विसर्जन अर्घ्य प्रदान करें। गड़वी में जल भरकर बूंद–बूंद शिव सिंहासन के पास गिरावें। (यदि शिवलिंग पर पूजन करते हों तो आवाहन–विसर्जन की आवश्यकता नहीं होती)।

शिव पूजन विसर्जन मंत्र

रक्ष-रक्ष भक्तवत्सल रक्ष त्रिलोक्य रक्षकः।
भक्तानाम भयं कर्त्तां त्राता भाव भवार्णवात्।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरः।
मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च।।
ॐ साम्ब सदा शिवाय नमः
ॐ साम्ब सदा शिवाय नमः,
ॐ साम्ब सदा शिवाय नमः।।

भावार्थ—हे महादेव जी ! रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाले और भवसागर से उसकी रक्षा करने वाले हैं। हे परमेश्वर ! हमारी यह पूजन ग्रहण कर अपने लोक को प्रस्थान करें, और हम पर सदैव अपनी कृपा बनाए रखें। हे भोलेनाथ ! आपको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार है।

(षोड़शोपचार शिव पूजन सम्पूर्ण)

(छठा भाग)

भगवान शिव का "वृहद वैदिक" महामृत्युञ्जय अनुष्ठान एवं पार्थिव लिंग पूजन खण्ड

"महामृत्युञ्जय" मंत्र क्या हैं और "पार्थिवलिंग" क्या है?

"महामृत्युञ्जय साधना" अर्थात् "मृत्यु पर विजय पाने वाली साधना"। मृत्यु के बन्धन से मुक्त कराने वाले श्री "महामृत्युञ्जय महादेव" हैं।

"भगवान मृत्युञ्जय" के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों कर कमलों से दो धड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो अमृत घट लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है। शेष दो हाथों में वे रुद्राक्ष की माला तथा मृगी–मुद्रा धारण किए हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और उनके शिरःस्थ चन्द्र से निरन्तर अमृत वृष्टि के कारण उनका देह भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है। उनके वामाङ्ग भाग में गिरिराज नन्दिनी "भगवति उमा" विराज मान हैं।

"पार्थिव लिंग" पवित्र मिट्टी को जल से सान कर (गूंध कर) अंगुल के आकार का और अंगुल के समान ही मोटा–निर्मित शिवलिंग को–"पार्थिव लिंग"–कहते हैं। यह पार्थिव लिंग में भगवान लिंगाकार शिव का पूजन होता है।

महामृत्युञ्जय अनुष्ठान एवं पार्थिव पूजन से लाभ

1. इस अनुष्ठान से ''महामृत्युञ्जय महादेव'' अपने भक्तों की सभी इच्छित कामनावों को पूर्ण कर देते हैं।

2. उपासक अकाल मृत्यु से बचा रहता है।

3. यह अनुष्ठान शारीरिक रोगों, बुढ़ापे के कष्टों और मृत्यु के भय से बचाता है।

4. जिन रोगों को किसी वैध या डाक्टर के द्वारा भी इलाज नहीं हो सकता, वह भी पूरी श्रद्धा से यह अनुष्ठान कराने से हो जाते हैं।

5. बाढ़, भूकम्प, वज्रपात, भू-स्खलन आदि प्राकृतिक आपदावों से प्राणों की रक्षा होती है।

6. निपुत्र पुत्रवान हो जाता है।

7. यह मंत्र अनुष्ठान उपासक को धन, दौलत सुख-शान्ति व प्रसन्नता प्रदान करने वाला है।

8. आयु लम्बी होती है।

9. सांसारिक कामों में भी उपासक को सफलता मिलती है।

10. इस परम पावन अनुष्ठान से भगवान शंकर अपने भक्तों पर जल्द प्रसन्न हो जाते हैं।

11. अनिष्ट ग्रहों का प्रभाव सूक्ष्म हो जाता है।

12. भयानक भूत-प्रेत बाधाओं से उपासक मुक्त हो जाता है।

13. उपासक अन्त समय में ''मोक्ष'' प्राप्त करता है।

महामृत्युञ्जय मंत्र और उनका अर्थ

ॐ त्रयंबकं यजामेह, सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उर्ब्बारुक मिव बन्धनाभृत्योभुक्षीय मामृतात्।।

हिन्दी अनुवाद-''हे त्रिनेत्र भगवान शिव मैं आपकी उपासना करता हूँ, आपकी प्रार्थना सुख शान्ति देने वाली और हष्ट-पुष्ट करने वाली है। आप आध्यात्मिक उन्नति कराने वाले हैं। हे भगवान-आप सब प्रकार के दुःखों रोगों, बुढ़ापे के कष्टों और आवागमन से छुड़ाने वाले हैं। हे महादेव कृपा करके आप मेरी मौत को मोक्ष में इस तरह बदल दें जिस प्रकार एक खरबूजे का फल पक जाने पर अपनी बेल से अपने आप अलग हो जाता है।''

मृत्यु को दीर्घायु में बदलने वाला महामृत्युञ्जय अनुष्टान का एक लोमहर्षक दास्तान

शिव भक्तों ! शास्त्रों, वेदों और पुराणों का मानना है कि विधाता श्री ब्रह्मा जी द्वारा निर्मित ''जीव'' की आयु को स्वयं ब्रह्मा जी भी नहीं बदल सकते। मनुष्य की आयु ब्रह्मा जी ने जितना निर्धारित किया हैं उससे अधिक मनुष्य एक क्षण भी अधिक जीवित नहीं रह सकता, ये बातें तो सत्य हैं, परन्तु हमें कई प्रयोग से यह ज्ञात हुआ है कि– ''महामृत्युञ्जय अनुष्ठान'' विधि पूर्वक कराने से मनुष्य को महादेव जी मौत के मुख से भी बाहर निकाल कर दीर्घायु प्रदान कर देते हैं। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में–किसी भी निर्णय पर ''अमेरिका को'' ''विटो'' लगाने का अधिकार है, उसी प्रकार–महामृत्युञ्जय अनुष्ठान से महामृत्युञ्जय महादेव ने अपने उपासक की मृत्यु पर कुछ वर्षों के लिए ''विटो'' लगा देते हैं और इस ''विटो'' पर देवलोक में प्रतिक्रिया व्यक्त करने का किसी के पास अधिकार नहीं है।

कैंसर, दोनों गुर्दे गले हुए, डाक्टरों द्वारा इलाज से इन्कार किए गये कितने ही असाध्य रोगी–महामृत्युञ्जय अनुष्ठान के द्वारा आज भी निरोग होकर सुखी जीवन जी रहे हैं।

अतः शिव भक्तों, ''महामृत्युञ्जय अनुष्ठान'' मृत्यु योग को दीर्घायु योग में बदलने की महान शक्ति अपने अंदर समाए हुए हैं।

पाठको ! महामृत्युञ्जय अनुष्ठान वैदिक पूजन का विस्तृत विवरण आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(सातवां भाग)

पार्थिव लिंग अनुष्ठान एवं महामृत्युञ्जय अनुष्ठान के वैदिक विस्तृत पूजन खण्ड

पाठको ! महामृत्युञ्जय अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अनुष्ठान है, अतः किसी ''योग्य वैदिक पंडित'' के द्वारा ही यह अनुष्ठान सम्पन्न करावें। अनुष्ठान में कम से कम एक लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न कराकर ही पूर्णाहुति डालें।

पूजन सामग्री–षोड़षोपचार पूजन में जो चाहिए वही सामग्री इस अनुष्ठान में भी लगती है। मात्र तीस किलो गंगा किनारे की या किसी नदी किनारे की मिट्टी विशेष रूप से लानी पड़ती है। मिट्टी लाने वाले दिन प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त मे उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पवित्र वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् उत्तर मुख होकर शिवलिंग निर्माण हेतु शुद्ध मृत्तिका (मिट्टी) निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करके उठावें–

पार्थिव लिंग निर्माण हेतु मृत्तिका (मिट्टी) उठाने का मंत्र

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन सतबाहुना।
मृत्तिके त्वां प्रगृह्यामि प्रजया च धनेन च।।
ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः।।१।।

हिन्दी अनुवाद–हे पृथिवी ! बराह, कृष्ण, शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गई, इसलिए धन–पुत्रादि की कामना से मैं आपके रज को ग्रहण करता हूँ।

नोट–मंत्रोच्चारण करके पृथिवी को प्रणाम करें और कम से कम 30 किलो मिट्टी शुद्ध बोरी में भरकर घर ले आवें। यह मिट्टी सोमवार को ही उठा कर लावें।

योग्य वैदिक विद्वान पंडित से अनुष्ठान का शुभ मुहूर्त

निकल वावें। वैसे श्रावण महीने के पूरे माह, किसी भी महीने की त्रयोदशी तिथि, मास का कोई भी सोमवार, शिवरात्री आदि के दिन यह अनुष्ठान आरम्भ कर सकते हैं।

अनुष्ठान प्रारम्भ वाले दिन वैदिक पंडित को आमंत्रित कर बुलावें, और स्वयं प्रातः काल ब्रह्ममुर्हूत्त में उठकर स्नान से पवित्र होकर लाल रंग से रंगा नवीन धोती धारण करें। कंधे पर एक अंगोछा, (तौलिया) या लाल रंग का चादर ओढ़ लें। वैदिक विधि से रुद्राक्ष की माला गले में धारण करें। कम्बल या कुशा के आसन पर उत्तर मुख होकर बैठें, सामने आम की लकड़ी से बने लाल रंग के सिंहासन पर भगवान शंकर की प्रतिमा या तस्वीर लाल कपड़े बिछाकर स्थापित करें। समस्त पूजन सामग्री अपनी दाहिनी दिशा में रख लें।

धूप और देसी घी (गाय का घी) का दीपक जगावें। इसके पश्चात् पार्थिव लिंग का निर्माण आरम्भ करें। सर्वप्रथम–षोडषोपचार पूजन में लिखित–शरीर पवित्र करने वाला–''अपवित्रः पवित्रो वा''–मंत्र पढ़कर अपने शरीर पर गंगाजल छिड़कें, मस्तक पे त्रिपुण्ड्र चन्दन या यज्ञ भस्म लगावें। इसके पश्चात् पार्थित्र लिंग निर्माण हेतु मिट्टी को नीचे लिखित मंत्र द्वारा चूर्ण करें और उससे कंकर पत्थर आदि निकाल दें–

मृत्तिका चूर्ण करने का मन्त्र

ॐ सधोजातं त्रयद्यामि सधोव्रताय वै नमः।
भवे-भवे नाति भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।।
ॐ ह्वा ह्वी जूं सः महेश्वराय नमः।।२।।

नोट–इसके पश्चात् पवित्र जल से मिट्टी को निम्न मंत्र द्वारा–शक्त रूप में (रोटी हेतु गूंधे आटे की तरह) गूंधे–

मृत्तिका गूंधने का मंत्र

।।ॐ महेश्वराय नमः।।

नोट–उपरोक्त मंत्र पढ़कर मृत्तिका को गूंधने के बाद अब ''पार्थिव लिंग निर्माण'' आरम्भ करें। पार्थिव लिंग शिवलिंग के समान ही एक अंगुल से लम्बा और अंगुल के आकार का ही मोटा एकावन सौ तैयार करें। इन छोटे–छोटे पार्थिव लिंग को एक से दूसरे को सटाकर सौ–सौ का एकावन संयुक्त पार्थिव लिंग तैयार करें। परन्तु याद रहे पार्थिव लिंग को एक दूसरे से संयुक्त करने में उपर का लिंगाकार रूप अलग–अलग दिखाई पड़ना चाहिए। इन ''शहस्त्राकार''–51 संयुक्त पार्थिव लिंगों को केले के पत्ते पर आसन के सामने बिल्वपत्र बिछाकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़ते हुए स्थापित करें–

पार्थिव लिंग प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ शूलपाणये नमः हे शिव इह प्रतिष्ठितो भव।

नोट—इसके पश्चात् षोड़षोपचार पूजन में लिखित—दीप पूजन मंत्र, आचमन, चन्दन लेपन, शिखा बन्धन मंत्र व विधि उपयोग करें। तत्पश्चात् तीन बार ''प्रणायाम'' करें।

प्राणायाम की विधि एवं मंत्र

मन की चंचलता का शमन करने (समाप्त करने) उसे एकाग्र करने और अपने उपास्यदेव के कमल रूपी चरणों में ''मन रूपी भ्रमर'' को अवस्थित करने में ''प्राणायाम'' एक महत्वपूर्ण कार्य करता है।

प्राणायाम की प्रक्रिया के विविध चरणों में महादेव जी के प्रिय मंत्र ''ॐ नमः शिवाय'' का निश्चित समय में मन ही मन जप किया जाता है।

सर्वप्रथम दक्षिण नासिका अर्थात् नाक के दाएं नथूने को दाहिने हाथ के अंगूठे से बन्द करके बायें नथूने से धीरे—धीरे श्वास अन्दर की ओर खीचिए। इस क्रिया के मध्य मन ही मन ''ॐ नमः शिवाय'' मंत्र का एक दो या चार बार जप भी करते रहिये। श्वास भर जाने के पश्चात् सीधे हाथ की मध्यमा व अनामिका उंगलियों से दाहिना नथूना भी बन्द कर लीजिए। सांस को रोके रखिये और चार आठ अथवा सोलह बार उपरोक्त मंत्र का जप कीजिए। अब अंगूठे को नथूने से हटाकर अत्यन्त मन्द गति से वायु को बाहर निकल जाने दें। इस मध्य भी दो चार या आठ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें।

यह उपरोक्त सभी क्रियाएं तीन बार करें।

प्रथम बार उपरोक्त विधि से दाहिने नथूने अर्थात् दक्षिण नासिका को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं। दूसरी बार बांए नथूने को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं यह प्रक्रिया। तीसरी बार फिर पहले के समान ही दक्षिण नासिका को बन्द करके की जाती है—यह प्रक्रिया।

यहाँ विशेष ध्यान रखने की यह बात है कि श्वांस खींचने में जितना समय लगता है उससे चार गुणा समय इसे रोक कर रखते हैं और दूने समय में बाहर निकालते हैं। यही कारण है कि क्रमशः एक चार और दो के अनुपात में मंत्र पढ़ने का विधान शास्त्रों में दिया गया है।

प्रारम्भ में कुछ दिनों तक श्वांस रोकने में थोड़ी असुविधा भी अनुभव हो सकती है, परन्तु चन्द दिनों में ही ये सभी कार्य आसानी से होने लग जाते हैं।

नोट—''प्राणायाम विधि'' सम्पन्न कर ''विनियोग'' करें। विनियोग

करते समय दाहिने हाथ की अंगुली में जल भर लें और विनियोग मंत्र समाप्त होने के बाद जल पृथ्वी पर छिड़क दें।

विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल विशष्ठः ऋषयः पंक्ति गायत्रयुष्णिगनुष्टुप छन्दांसि, सदाशिव महामृत्युञ्जय रूद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं, महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।।

नोट—विनियोग के बाद "ऋष्यादिन्यास" करें। इस प्रक्रिया में मंत्र पढ़ते हुए शरीर के अंगों का स्पर्श किया जाता है।

ऋवयादि न्यास मंत्र व विधि

ॐ वामदेवर्षये नमः (सिर स्पर्श करें दाहिने हाथ से)

ॐ अनुष्टुप छन्दसे नमः (दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करें।)

ॐ सदाशिव दैवतायै नमः (हृदय स्पर्श करें)

ॐ बिजाय नमः (गुदा मार्ग स्पर्श करें)

ॐ शक्त्ये नमः (चरणों का स्पर्श करें)

ॐ शीवाय कीलकाय नमः (नीचे से उपर तक सर्वांग शरीर पर हाथ फेरें)

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः (पुनः हृदय स्पर्श करें)।

ॐ मं अघोराय नमः (दोनों चरण का स्पर्श करें)

ॐ शिंद्धोजाताय नमः (गुदा मार्ग स्पर्श करें)

ॐ वां वामदेवाय नमः (कंठ स्पर्श करें)

ॐ यं ईशानाय नमः (मुख स्पर्श करें)

नोट—अब नीचे लिखित मंत्र व विधि द्वारा "करन्यास" करें—

करन्यास मंत्र व विधि

ॐ ह्रीं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकम् ॐ नमो भगवते रूद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।

नोट—उपरोक्त मंत्र पढ़कर यजमान दोनों तर्जनी उंगलियों से दोनों अंगूठे का स्पर्श करें। इसके पश्चात निम्न मंत्र पढ़कर दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनियों का स्पर्श करें—

ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भूवः स्वः यजामहे ॐ नमो-भगवते रूद्राक्ष अमृतमूर्तये मां जीवयवद्ध तर्जनीभ्यां नमः।

नोट—अब दोनों अंगूठे से निम्न मंत्र पढ़ते हुए दोनों मध्यमा उंगलियों का स्पर्श करें—

ॐ ह्रौं जूं सः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ भगवते रूद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा, मध्यमाभ्यां-नमः।

नोट—अब दोनों अंगूठों से अनामिकावों का निम्न मंत्रोच्चारण द्वारा स्पर्श करें—

ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भूवः स्वः उर्वारूकमिवबन्धनात् ॐ भगवते रूद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः।

नोट—अब दोनों अंगूठे से दोनों कनिष्ठिका उँगलियों का स्पर्श करें।

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साम मन्त्राय कटिविटकाभ्यां नमः।

नोट—अब दोनों तलहथियों को आपस में मलें। नीचे लिखित मंत्र को पढ़ें।

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रूद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय, करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

नोट—भक्तों ! अब ''हृदयादि न्यास'' करें।

हृद्यादिन्यास मंत्र व विधि

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः त्रयम्बकं ॐ नमो भगवते रूद्राय शूलपाणये स्वाहा, हृद्याय नमः।

नोट—उपरोक्त मंत्र पढ़कर ''तत्व मुद्रा'' से हृदय का स्पर्श करें। शिवभक्तो ! अंगुलियों और अंगुष्ट के अग्र भाग को मिलाने से अंगुष्ट मुद्रा बनती है। अब नीचे लिखित मंत्रोच्चारण करते हुए तत्व मुद्रा द्वारा शिर का स्पर्श करें—

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रूद्राय अमृतर्भूतये मां जिवय वद्ध शिरसि स्वाहा।

नोट—अब निम्नलिखित मंत्र द्वारा शिखा का स्पर्श करें—

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्ध नम ॐ नमो भगवते रूद्राय चन्द्र शिरसे जटिनें स्वाहा, शिखायै वषट।

नोट—अब दाहिने हाथ से बांया कन्धा और बांये हाथ से दाहिने कन्धे का स्पर्श करें।

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः उर्वारूकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिपुरान्तकाय कवचाय हुम।

नोट—अब निम्नलिखित मंत्र द्वारा दोनों नयन का स्पर्श करें।

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु स्साम मन्त्राय, नेत्रयाय वौषट्।

नोट—अब दाहिने हाथ को बांये ओर से सिर के चारों ओर घुमाकर बांये हाथ की हथेली पर तर्जनी और मध्यमा से तीन बार ताली निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए बजायें—

ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मामृतात ॐ नमो-भगवते रूद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वलं मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय, अस्त्राये फट्।

नोट—अब निम्न पत्र पढ़कर मस्तक पे त्रिपुण्ड्र चन्दन का या यज्ञ का भस्म लेपन करें।

त्रिपुण्ड्र यज्ञ भस्म या चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य महत्वपुण्यं पवित्र पाप नाशनम्। आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा।।

नोट—अब निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए अपनी चोटी (शिखा, टीक) बांधें।

शिखा बन्धन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान भामिनो वधीर्ह है विषमन्तः सदमित्वा वामहे।।

नोट—अब दाहिनी हथेली पर जल लेकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली जल छिड़क कर पृथ्वी को शुद्ध करें।

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

भावार्थ—भगवान शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहने वाले सब अनिष्टकारी जीव यहां से हट जावें।

नोट—इसके पश्चात् गणेश आराधना मंत्र (जो "षोड़षोपचार पूजन खण्ड में" लिखा है) से भगवान श्री गणेश की आराधना करें। इसके पश्चात् उसी खण्ड में लिखित "पूजन संकल्प मंत्र" द्वारा अनुष्ठान का "संकल्प" एवं "स्वस्ति वाचनम्" के ग्यारह मंत्र आराधना सम्पन्न करें।

इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपति पूजन के बाद "भगवान विष्णु" और "पंच देवता" की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में भगवान शिव सिंहासन के सामने पार्थिव लिंग के पास (केले के पत्ते पर) पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी, फल व नैवेद्य रखें और उन पर भगवान विष्णु की पूजा करें।

महामृत्युञ्जय एवं पार्थिव पूजन से पूर्व भगवान विष्णु का पूजन

नोट—गंगा जल दाहिनी अंगुली में रखकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार उस पान पत्ते पर क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, नैवेद्य, तुलसी पत्र, (धूप, दीप दर्शन) और पुनः जल से पूजन करें। यह पूजन संक्षिप्त "दशोपचार"—द्वारा करें। यह दशोपचार पूजन का उपयोग "भगवान महामृत्युंञ्जन महादेव" के अलावा सभी देवी—देवताओं के पूजन में करना होगा।

संक्षिप्त दशोपचार पूजन गंगा जल

ॐ गंगा जले स्नानियम् भगवते श्री विष्णवे नमः।

अक्षत से—*ॐ इदमक्षतं समर्पयामि भगवान विष्णु यहा गच्छ इह तिष्ठ।*

तिल से—*ॐ एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।*

चन्दन से—*ॐ इदम चन्दनम् लेपनम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।*

बिल्वपत्र से—*ॐ बिल्वपत्राणियम् समर्पयामि भगवान यहां गच्छ इह तिष्ठ।*

पुष्प से—ॐ इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नैवेद्य से—ॐ इदम् नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

तुलसी पत्र से—ॐ तुलसी पत्रम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णुवे नमः। (शिवं सिंहासन एवं पार्थिव पर तुलसी) न चढ़ावें।

धूप दिखावें--ॐ गन्धं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

दीप दिखावें—ॐ दीपं दर्शयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुनः गंगाजल से--ॐ एतानि गंध-पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बुल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नोट--उपरोक्त "दशोपचार पूजन विधि" से ही "पंचदेवता" का पूजन उसी स्थान पर करें। जहां "विष्णवे नमः" मंत्र के अन्तर्गत बोलते थे वहां "पंचदेवतायै नमः" बोलना है।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् "महामृत्युञ्जय महादेव कलश" की स्थापना करें।

श्री महामृत्युञ्जय महादेव कलश की स्थापना विधि और पूजन

नोट—सर्वप्रथम सतरंगे गुलाल से अष्ट दल कमल पूजा स्थल पर श्री महादेव जी सिंहासन के आगे दाहिने तरफ बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जव (जौ) का कड़ा बनावें। उस कड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास भूमि पर हाथ रखकर यह मंत्र पढ़े।

शिवकलश भूमि स्पर्श मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य। भुवनस्य धत्री पृथिवीं दुस्वहिं पृथिवी मां हिसी।।

नोट—इसके पश्चात् कलश के पेंदे के पास धान्य छिड़कें।

शिव कलश पर धान्य चढ़ाने का मंत्र

ॐ धान्यामि छिनुहि देवान्यप्राणाय त्वोदाना यत्वा व्यानायत्वा। दीर्घमानु प्रसितिभायुषेधां देवो वः सविता हिरण्य

पाणिः प्रतिगृह नात्वा च्छिद्रेण पाणिना चक्षुसे त्वांमहिनाम्पयोसि।।

नोट—कलश के मुख को दाहीनी हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ें।

ॐ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भसर्जनीस्थां वरूणस्य ऋृदसदन्यसि वरूणस्य ऋृदसदनभीस वरूणस्य ऋृदतसदननासीद्।

कलश में सर्वोसधी डालने का मंत्र

नोट—निम्नलिखित मंत्र पढ़कर कलश जल में सर्वोसधि डालें।

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा। मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च।।

नोट—अब कलश में दुर्बादल डालें।

कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

ॐ काण्डात काण्डातप्ररोहन्ति पुरूषः परूषपरि। एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

नोट—अब कलश में पूंगीफल (सूपारी) डालें।

कलश पूंगीफल समर्पण मंत्र

ॐ या फलिनीयां अफला अपुष्पा याश्च पुविषणीः। बृहस्पति प्रसूतास्त्तानो मुञ्चनत्वग्वं हसः।।

नोट—अब कलश में पंचरत्न डालें।

कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत दधद्रत्नानि दाशुषे।

नोट—अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें।

कलश में द्रव्य समर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भः समवर्त्ततार्गे भूतस्य जातः पतिरेख-आसीत। स दाधार पृथिवीधामुतेमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

नोट—कलश ममें सप्तमृत्तिका डालें।

कलश सप्तमृत्तिका समर्पण मंत्र

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानुक्षरा निवेशनि। यच्छानः सर्म्मसप्रयाः।।

नोट—अब कलश पर आम का पल्लव रखें।

आम्रपल्लव समर्पण मंत्र

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्चद्। किंचिद्वासिनं कलशं दद्यात्।।

नोट—अब कलश में कुशा की पवित्री (अंगूठी) डालें—

कलश कुशा पवित्री समर्पण मंत्र

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽऊप्पुणा-म्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य पवित्रपते पवित्रपुतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

नोट—अब कलश के उपर चावल युक्त (पूर्णपात्र) सकोरा रखें।

पूर्णपात्र समर्पण मंत्र

ॐ पूर्णाः दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्येव विक्रिनावहाऽइष भूर्ज्जशत्कतो।।

नोट—अब कलश पे पानी वाला नारियल रखें।

शिव कलश श्रीफल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्या बहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो ब्याप्रम। ईष्पन्निषाणां ङ्मुम्म ईशान सर्वलोकम्प ईशान।

नोट—कलश पे लाल वस्त्र लपेटें।

कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः।।

नोट—अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें।

गाय का गोबर कलश में स्पर्श कराने का मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुवमान व्यर्दिवृविषः। सदमित्वा हबामहे इति गोमत्रेण कलश स्पर्शयेत।।

नोट—अब हाथ जोड़कर भगवान वरूण देव का आवाहन करें।

श्री वरूण देव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हर्विभिः। अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषग्वं आयुः प्रमोसि।। ॐ भुर्भूवः स्वः भो वरूण भो महादेव इह तिष्ट। स्थापयामि पूजयामि।।

नोट—इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का आवाहन करें।

सम्पूर्ण नदियां व तीर्थों का आवाहन मंत्र

ॐ सर्वे समुद्रा सरितसंतर्थाणी जलदाः नदाः-आयान्तु देवपूजार्थ दुरितक्ष्कारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।।

नोट—तत्पश्चात् अक्षत कलश पर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश की प्राण प्रतिष्ठा करें।

कलश प्राण प्रष्तिठा मंत्र

ॐ मनोजूर्तिजु वताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिवं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वदेवास इह श्री महामृत्युज्जय देव मादयन्तामे प्रतिष्ठ।।

नोट—अब नेत्रों को बंद करके दोनों हाथ जोड़कर कलश में समस्त देवों के देव महादेव का ध्यान करें।

श्री कलश ध्यान मंत्र

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थिते मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कक्षो तु सागराः सर्वे सर्व वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽर्थ यर्जुवेर्दः सामवेदो हयाथवर्णः।।
अंगैस्य सहिताः सर्वे कलशं तू समश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शारदा शान्ति पुवकारि तथा।।
आयान्तु मम शान्तियार्थं दुरतिक्ष्यकार काः।

नोट—अब नीचे का मंत्र पढ़कर कलश पर अक्षत छिड़कें।

ॐ वरूणाद्याः वाहित देवताभ्यो नमः।
'ॐ विष्णुआद्या वाहित देवताभ्यो नमः।।

नोट—अब कलश पे वरूण देव का ''दशोपचार पूजन'' करें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर कलश की प्रार्थना करें।

शिव कलश प्रार्थना मंत्र

देवदानवं संवादे मध्यमाने महानद्यौः।
उत्पन्नौ असि तथा कुम्भ विद्युतो विष्णुणा स्वयं।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वीय तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठाः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वदेवाः सपैतुकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वतप्रसाददिमं यज्ञ कर्तुमिहे जलोद भव।।
सान्निष्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाव सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाहस्ताय इषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

नोट—शिव भक्तो ! कलश स्थापना के पश्चात् ''षोड़षमातृतिका'' (सोलह देव माताओं) का पूजन करें। इसके संदर्भ में अग्नि कोण में एव चौंकी पर सफेद नवीन वस्त्र बिछाकर, सतरंगे अक्षतों (चावलों से) से चक्र के अन्दर सोलह माताओं के नामों की रचना करें।

षोड़षमातृका पूजन
(षोड़षमातृका चक्र)

कुल देवी १६	लोक माता १३	देव सेना ७	मेघा ५
तुष्टि १६	सरस्वती १२	जया ८	शचि ८
पुष्टि १५	स्वाहा ११	सावित्री ७	पद्मा ३
घृति १४	स्वधा १०	दुर्गा काली २०	गौरी १

नोट—षोड़षमातृ का चक्र निर्माण करने के बाद हाथ में अक्षत लेकर मंत्रोच्चारण करते जायें और समस्त मातृका चक्रों पर क्रमशः धीरे–धीरे दो–चार दाने करके अक्षत छिड़कते जायें।

षोड़स मातृका आवाहन मंत्र

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नं हरं सदा।
त्रैलोक्य वन्दितं देव गणेशं स्थाप याम्यहम्।।
ॐ श्री गणपताये नमः गणपति मावाह यामि स्थापयामि।
गौरी पद्मा शचि मेधा, सावित्री विजया जया।।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।
धृति पुष्टि स्थिता तुष्टिरात्मनः कुल देवता।।
गणेशे नाधिका होता वृद्छे पुज्यास्तु षोड़शा।
ॐ श्री गौर्य नमः गौरीभावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री पद्मायै नमः पद्मावाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री शचैःनमः शचीमावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री मेधायै नमः मेधावाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री सावित्रयै नमः सावित्रीमावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री विजयै नमः विजयामाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री जयायै नमः जया मावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री देवसेनायै नमः देवसेनामाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री स्वधायै नमः स्वधामावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री स्वहायै नमः स्वाहामावाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री मातृभ्यो नमः मातुः आवाह्यामि यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री लोकमातृभ्यो नमः लोकमातुः आवह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री धृ नमः धृति यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री पुष्टये नमः पुष्टि यामि स्थापयामि।
ॐ श्री तुष्टयै नमः तुष्टिमावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ आत्मनः श्री कुलदेवतायै नमः आत्मनः।
कुलदेवता मावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री गौर्याधाः कुलदेवतान्मातरो गणपतिः सहिताः सुप्रतिष्ठा वरदाः भवन्तु।।

नोट—अब हाथ जोड़कर षोड़षमातृकावों से विनय करें।

षोड़षमातृका विनय मंत्र

आयुरारोग्यं मैश्वर्य ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कूरुध्वं समगणाधिपंः।।

नोट—इसके पश्चात् सभी मातृका चक्रों पर क्रमशः ''दशोपचार पूजन'' करें।

तत्पश्चात् पांच शान्ति पाठ हाथ जोड़कर करें।

पाँच शान्ति पाठ

(प्रथम पाठ)

ॐ स्वस्तिनो मिमिता भश्विना भगः स्वस्ति देण्यदिति- रनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति धावाः पृथिविं सुचेतुना।।१।।

हिन्दी अनुवाद—हम अपने कल्याण के लिए वायु सोम की स्तुति करते हैं। सोम--सम्पूर्ण जगत के लिए पालन कर्त्ता हैं। हम अपने कल्याण के लिए सब देवताओं के साथ मंत्र पालक बृहस्पति की स्तुति करते हैं। अदिति के पुत्र देवता और अरूणादि द्वादश देव हमारे लिए मंगलकारी हों। (ऋ० वे० 5/51/1)

(द्वितीय पाठ)

ॐ स्वस्त्ये सोम स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पति सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।२।।

हिन्दी अनुवाद—हे अश्विनी कुमार ! हमारे लिए कभी कष्ट न होने वाले सुख प्रदान करें। पराक्रमी सत्यस्वरूप और शत्रुओं के हनन कर्त्ता पूषा हमारे लिए सुखकारी हों। (ऋ० वे० 5/51/12)

(तृतीया पाठ)

विश्वेदेवा नो अद्या स्वस्तये श्वानरो वसुरग्निः।
स्वस्तये देवा अवन्तवृभवः स्वस्तये स्वस्तिनो रूद्रः पात्व हसः।।३।।

हिन्दी अनुवाद—सब देवता इस यज्ञ में हमारा कल्याण करें तथा हमारे रक्षक हों। मनुष्यों में प्रमुख तथा गृह दाता अग्नि देव हमारा कल्याण करें और रक्षक बनें। तेजस्वी ऋभुगण हमारा मंगल करें, रूद्र हमको पाप से बचाते हुए मंगलकारी हों। (ऋ० वे० 5/51/13)

(चतुर्थ पाठ)

स्वस्ति मित्रा वरूण स्वस्ति पत्थये रेवति।
स्वस्तिनः इन्द्रश्यग्निश्य स्वस्तिनो अदितेकृधि।।१४।।

हिन्दी अनुवाद--हे दिन रात्री के देवता मित्रा वरूण ! आप दोनों हमारा कल्याण करें। हे धन की देवी हमारा मंगल करें। इन्द्र और अदिति हमारा कल्याण करें। (ऋ० वे० 5/51/14)

(पंचम पाठ)

स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यभरिष्टनेमि महद् भूतं वायसंदेवतानाम।
असुरध्नमिन्द्र शंख समत्सु वृहद्यसो नावमिवा रूहेम्।।5।।

हिन्दी अनुवाद—सूर्य और चन्द्रमा बिना बाधा के जैसे भ्रमण करते हैं, वैसे ही हम भी मार्गों में सुख पूर्वक विचरण करें। प्रवास में दीर्घकाल तक रहने पर भी हमारे स्नेह करने वाले तथा हमारी याद करने वाले कुटुम्बियों और मित्रों से हम मिलें। (ऋ०वे० 5/51/15)

नोट—इसके पश्चात् कलश पे निम्नलिखित देवि—देवताओं का ''दशोपचार पूजन'' करें—

लक्ष्मी, सरस्वती, नवग्रह, इष्टदेवता, ग्राम देवता, नव–दुर्गा काली, कुलदेवता, राम लक्ष्मण सहित जानकी, राधा कृष्ण, सर्वदेवता सर्वदेवी, नन्दीश्वर, वीरभद्र, कार्तिकेय, नाग देव, कीर्तिमुख।

इसके पश्चात् ''पार्थिव लिंग'' में भगवान महामृत्युञ्जय महादेव का ध्यान करते हुए उनका निम्नलिखित मंत्र द्वारा ''आवाहन'' करें। हाथ जोड़ लें।

महामृत्युञ्जय देव आवाहन मंत्र

आगच्छ भगवन देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधो भव।।
त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
श्री शाम्ब शिवाय नमः।।

नोट—अब ''षोड़षोपचार विधि'' (सोलह उपचारों द्वारा, जो पहले इसी पुस्तक में वर्णित है) से महामृत्युञ्जय महादेव का '' पार्थिव लिंग'' पर सम्पूर्ण विधि से पूजन करें। परन्तु षोड़षोपचार पूजन विधि में वर्णित विसर्जन व प्रदक्षिणा विधि स्तोत्र पाठ, के बाद पूर्ण किया जायेगा।

इसके पश्चात् शिव अष्टमूर्तियों की ''दशोपचार पूजन'' विधि द्वारा (जल, अक्षत, तिल, चन्दन, पुष्प, विल्वपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य एवं आचमन सहित से) आठों दिशाओं में पूजा करें–

अष्टमूर्ति महादेव पूजन

1. पूर्व दिशा में—ॐ सर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
2. ईशान कोण में—ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।
3. उत्तर दिशा में—ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
4. वायव्य कोण में—ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।
5. पश्चिम दिशा में—ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
6. नैऋत्य कोण में—ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
7. दक्षिण दिशा में—ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।
8. अग्नि कोण में—ॐ ईशानाय सूर्यभूतये नमः।

नोट—उपासको ! अष्टमूर्ति महादेव का पूजन करने के बाद—अमोध महामृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ करें।

महर्षि मार्कण्डेय द्वारा रचित अमोध महामृत्युञ्जय स्तोत्र

(मृत्यु भय निवारक, आयु में वृद्धि
एवं असाध्य रोग निवारण हेतु)
(विनियोग)

ॐ अस्य श्रीः महामृत्युञ्जय स्तोत्र मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री मृत्युञ्जयो देवता, गौरी शक्ति, मम सर्वारिष्ट मृत्युशान्ति यर्थे, सकलैश्वर्य प्राप्त्यर्थ च जपे विनियोगः।

श्लोक—(मृत्युञ्जय महादेव का स्तोत्र)

हस्ताभ्यांकलशद्वयामृत रसैराप्लावयन्तं शिरो।
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्त परम।।
अकन्यस्तकर द्वयामृत घटं कैलाशकान्तं शिवं।
स्वच्छभ्योजगतं नवेन्दु मुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।१।।

हिन्दी अनुवाद—श्री महामृत्युञ्जय महादेव अष्ट भुजा धारी हैं। इनके एक हाथ में अक्षमाला, दूजे हाथ में मृग मुद्रा, दो हाथों से अमृत से भरे कलश रस से अपने मस्तक को आप्लावित कर रहे हैं और दो

हाथों में एक और अमृत घट अपने भक्तों को प्रदान करने हेतु थामे हुए हैं। शेष दो हाथ अंक पर धरे हैं। वे श्वेत पद्म पर बैठे हैं, मुकुट पर बाल चन्द्र शोभायमान है, मुख मण्डल पर तीन नेत्र हैं। ऐसे देवाधिदेव महादेव श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१।।

श्लोक

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिश्रृंग निकेतनम्।
शिञ्जनीकृत पन्नगेश्वरम् च्युतानन सायकम्।।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालचरै भिवन्दितम्।
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै दामः।।२।।

हिन्दी अनुवाद—कैलाश के सर्वोच्च शिखर पर जिनका निवास है, जिन्होंने मेरू गिरि का धनुष, महाविशालकाय नागराज वासुकि की प्रत्यञ्चा और भगवान विष्णु को अग्नि मय बाण बनाकर तुरन्त ही दैत्यों के तीनों पुरी को जला डाले थे, समस्त देवता जिनके चरणों की प्रार्थना करते हैं, उन महादेव चन्द्र शेखर का मैं शरण ग्रहण करता हूँ। मृत्यु के देवता यमराज मेरा क्या बिगाड़ेगा? ।।२।।

श्लोक

पञ्चपादप पुवपगछय दाम्बुज द्वय शोभितम्।
भाल लोचन जात पावक दग्धमन्मथ विग्रहमं।।
भस्मदिग्धं कलेवरं भवनाशनं भवव्यचं।
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिवयति वै यमः।।३।।

हिन्दी अनुवाद—मन्दार, पारिजात, हरि चन्दन, कल्पवृक्ष, सन्तान— इन पंच महादिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित चरण कमल— जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाट वर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की भयानक ज्वाला से कामदेव के देह को भस्मी भूत कर डाला था, जिनका श्री विग्रह सदैव भस्म से विभूषित रहता है, जो भव—सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव—सागर के नाशक हैं, तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उस भगवान चन्द्रशेखर की शरण में मैं समाहित हो गया हूँ। यमराज मेरा क्या बिगाड़ेगा?।।३।।

श्लोक

मत्तवारण-मुख्य चर्म कृत्तोत्तरीय मनोहरम्।
पंकजासन पद्मलोचन पूजितांघ्रि सरोरुहम्।।
देवसिन्धुतरंग सीकर सिक्त शुभ्र जटाधरम्।
चन्द्रशेखर माश्रयेमम किं करिष्यति वै यमः।।४।।

हिन्दी अनुवाद–जो मतवाले गजराज के प्रधान चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर दिखते हैं, साक्षात ब्रह्मा और विष्णु भी जिनके कमल रूपी चरणों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुई शीतल जटा धारण किए हैं, उन महादेव चन्द्रशेखर की चरणों का मैं शरणागत हूँ। यमराज मुझे क्या कर सकेंगे।।४।।

श्लोक

कुण्डली कृत कुण्डलेश्वर कुण्डल वृषवाहनं।
नारदादि मुनिश्वरस्तुत वैभव भुवनेश्वरम्।।
अन्धकांधक माश्रिताऽपर पादपं शमनान्तकम्।
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यम।।५।।

हिन्दी अनुवाद–गेंडुली मारे हुए साक्षात नागराज जिनके कानों के कुंडल बने हुए हैं, जो वृषभ वाहन पर आरूढ़ हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति गान करते हैं, जो समस्त लोकों एवं भुवनों के स्वामी हैं, जो अन्धकासुर जैसे पराक्रमी के विनाशक हैं, अपने भक्तों के लिए जो कल्पवृक्ष के समान हैं और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं, उन देवाधिदेव महादेव की मैं शरण लेता हूँ, हे यमराज ! आप मेरा क्या करेंगे ?।।५।।

श्लोक

यमराज संख भगाक्षहरं भुजंग विभूषणं।
शैलराज सुता परिष्कृत चारुवाम कलेवरम्।।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वद्यधारिणं मृगधारिणम्।
महादेव माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।

हिन्दी अनुवाद–जो यमराज कुबेर के सखा, भग देवता की आँख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं। जिनके श्री विग्रह के सुन्दर वाम भाग में गिरिराज किशोरी भगवती उमा सुशोभित हैं, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठ भाग नीलाम्बर के समान दिखाई पड़ता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे कर में मृग मुद्रा धारण किये हुए हैं, उन कृपालु महादेव की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या बिगाड़ लेंगे ?।।६।।

श्लोक

भेषजं भवरोगिणाभखिला पराम पहारिणं।
दक्ष यज्ञ विनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।।

भुक्ति मुक्ति फलप्रदं निखिलाय संहनिवर्हण।
चन्द्रशेखर माश्रयेमम किं करिष्यति वै यमः।।७।।

हिन्दी अनुवाद–जो जन्म–मृत्यु के रोग से ग्रस्त मानवों के लिए औषधि समान हैं, जो समस्त विपत्तियों के निवारक हैं एवं जो दक्ष यज्ञ को विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो त्रिनयन धारण करने वाले हैं, जो भोग और मोक्ष रूपी ज ल के प्रदाता हैं तथा जो सम्पूर्ण पाप राशि के संहारक हैं, उन परमेश्वर चन्द्रशेखर की शरणों में मैं समा रहा हूँ, अतः हे यमराज आप मेरा क्या करेंगे ?।।७।।

श्लोक

भक्तवत्सल मर्जितं निधि मक्षयं हरिदम्बरं।
सर्व भूतपतिं परात्परमत्र मेयमनुत्तमम।।
भूमिवारिन भुहूतासन सोमपानि लखाकृतिं।
रूद्र देवः माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

हिन्दी अनुवाद–जो अपने भक्तों पर सदैव दया लुटाते हैं, जो भक्तों को अक्षय निधि प्रदान कर स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों के मालिक, परात्पर, अप्रेमय एवं उपमा रहित हैं, पृथ्वी, जल, आकाश अग्नि एवं चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सर्वसुरक्षित है, उन देवाधि देव महारूद्र की शरणों में मैं समा रहा हूँ, अतः हे यमराज ! आप मेरा क्या करेंगे ?।।८।।

श्लोक

विश्व सृष्टि विधायियं पुनरेव पालन तत्परं।
संहरन्तमपि प्रपञ्चम शेषलोक निवासनम्।।
क्रीड़यन्त महर्निशं गणनाथ यूथ समन्वितम्।
मृत्युञ्जय माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।९।।

हिन्दी अनुवाद–जो ब्रह्मरूप से सम्पूर्ण लोकों के सृष्टि कर्त्ता हैं, जो विष्णु रूप से समस्त लोकों के पालन में तल्लीन रहते हैं, एवं अन्त में समस्त प्रपञ्च के जो संहारक हैं, समस्त लोकों में समस्त जीवों में जिनका निवास है, तथा जो गणपति देव के पार्षदों से घिरकर दिन–रात भाँति–भाँति की लीला रचाते हैं, उन मृत्युञ्जय महादेव की मैं पूजा करता हूँ, अतः हे यमराज ! आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे।।९।।

श्लोक

रूद्रं पशुपतिस्थाणुं नीलकंठ मुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति।।१०।।

हिन्दी अनुवाद—जो अपने भक्तों के दुःखों को दूर करने के कारण ''महारूद्र'' कहलाते हैं, जो जीव रूपी पशुओं का पालन करने से पशुपति महादेव और स्थिर होने से स्थानु तथा कष्ठ में नीला विष धारण करने से नीलकंठ और आधा शक्ति माहेश्वरी ''उमा'' के स्वामी होने से उमापति कहलाते हैं, उन भगवान् महारूद्र को मैं सिर नवाकर नमस्कार कता हूँ, अतः हे मृत्यु आप मेरा क्या कर लेंगी ?।।१०।।

श्लोक

कालकण्ठ कलामूर्ति कालाग्नि कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं न मृत्यु करिष्यति।।११।।

हिन्दी अनुवाद—जिन महादेव का कंठ काला है, जो कलामूर्ति हैं और कालग्नि स्वरूप तथा काल के विनाशक हैं, उन देवाधिदेव महादेव को मैं सिर नवाकर नमस्कार करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या बिगाड़ेगी ?।।११।।

श्लोक

नीलकण्ठ विरूपाक्षं निर्मलं निरूपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति।।१२।।

हिन्दी अनुवाद—जिनका कंठ भाग नीला और नेत्र विकराल होते हुए भी अत्यन्त निर्मल और उपद्रव रहित हैं, उन देवाधिदेव महादेव को मैं मस्तक झुकाकर नमन् करता हूँ, अतः हे मृत्यु ! आप मुझे कुछ न कहेंगी।।१२।।

श्लोक

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगत् गुरूम्।
नमामि शिरसा देवं किं नौ मृत्यु करिष्यति।।१३।।

हिन्दी अनुवाद—जो वामदेव, महादेव, विश्व नाथ और जगत गुरू कहलाते हैं, उन देवाधिदेव रूद्र को मैं नमस्कार करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?।।१३।।

श्लोक

देवेशं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति।।१४।।

हिन्दी अनुवाद—जो समस्त देवताओं, तथा आपके भी आराध्य देव हैं, जो जंगत के स्वामी और समस्त देवताओं पर शासन करने

वाले हैं, जिनकी ध्वजा पर वृषभ चिन्ह अंकित है, उन देवाधिदेव महादेव को मैं सिर नवाकर प्रणाम करता हूँ। मेरा क्या कर लेगी मृत्यु ?॥१४॥

श्लोक

गंगाधरं महादेवं सर्वाभरण भूषितम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति॥१५॥

हिन्दी अनुवाद—जो गंगा जी को मस्तक पर धारण करने वाले हैं, जो चन्द्रमा, नागराज व मुण्डमाल का आभूषण धारण करते हैं, उन महारूद्र को मैं बारंबार सिर नवाकर नमस्कार करता हूँ, अतः हे मृत्यु आप हमें कुछ न कहेंगी॥१५॥

श्लोक

उत्पत्तिस्थिति संहारकर्तार भीश्वरं गुरूम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति॥१६॥

हिन्दी अनुवाद—जो समस्त लोकों का सृष्टि पालन तथा संहार करने वाले हैं, उन देवाधिदेव भगवान शिव को मैं सिर नवाकरक बारंबर नमस्कार करता हूँ, अतः हे मृत्यु आप हमपर दृष्टि भी नहीं डालेंगी॥१६॥

श्लोक

स्वर्गापवर्ग दातारं सृष्टि स्थिति विनाशकम्।
नमामि शिरसा महादेवं किं नो मृत्यु करिष्यति॥१७॥

हिन्दी अनुवाद—जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता हैं, जो सृष्टि के पालक और संहारक हैं, उन देवाधिदेव शंकर को मैं सिर झुकाकर वन्दना करता हूँ, अतः हे मृत्यु आप हमें कुछ न कहेंगी॥१७॥

श्लोक

मार्कण्डेय कृत स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निथौ।
तस्य मृत्यु भयं नास्ति नाग्नि नाग्नि चोर भयं क्वचित्॥१८॥

हिन्दी अनुवाद—जो देवाधिदेव महामृत्युञ्जय महादेव का यह स्तोत्र पाठ नित्य करता है, उसे मृत्यु और दुघर्टनाएँ कुछ नहीं कर सकती, अग्नि एवं चोरी के भय से भी उपासक मुक्त हो जाता है, अकाल मृत्यु नहीं होती और आयु में वृद्धि होती है।

इसी स्तोत्र के द्वारा ''महर्षि मार्कण्डेय'' जी मृत्यु पर विजय प्राप्त किए थे।

नोट—अब यजमान ''शिव शरणागति स्तोत्र'' का पाठ करें—

शिव शरणागति स्तोत्र
(महादेव की कृपा प्राप्ति हेतु)

त्वं वेदान्तैर्विविध महिमा गीयते विश्वनेतृस्तत्वं
विप्राद्यैर्वरद निखिलैरिज्यसे कर्मभिः स्वैः।
त्वं दृष्टानुश्राविक विषयानन्द मात्रावितृष्णै-
रन्तग्रन्थिं प्रविल चकृते चिन्त्यसे योगिवृन्दैः।।१।।

हिन्दी अनुवाद–हे विश्व नायक ! उपनिषदों में आपकी ही अनन्त महिमा का बखान है, हे वरदायक ! ब्राह्मण–क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र–चारों वर्षों के लोग अपने–अपने वर्नानुकूल आचरण के द्वारा आपका ही पूजन करते हैं, ऐहलौकिक एवं पारलौकिक–दोनों प्रकार के सुखों से जिन्हें वैराग्य हो गया है, ऐसे योगिजन भी अविद्या रूपी हृदय ग्रन्थि के भेदन के लिए सदा आपका ही चिन्तन करते हैं।।१।।

श्लोक

ध्यायन्तस्त्वां कतिचन भवं दुस्तरं निस्तरन्ति-
त्वत्पादाब्जं विधिवदितरे नित्यमाराधयन्तः।
अन्ये वर्णाश्रम विधिरताः पालयन्त स्त्वदाज्ञां, सर्व
हित्या भवजल निधावेष भज्जामि घोरे।।२।।

हिन्दी अनुवाद–कुछ लोग आपके विज्ञान नानन्दधन परब्रह्म स्वरूप का ध्यान करके इस दुस्तर भवार्णव को पार करते हैं, और कुछ लोग आपके सुरदुर्लभ चरणारविन्द का पूजन कर अपने मनोरथ को सिद्ध करते हैं और कुछ लोग वर्णाश्रम धर्म के अनुसार आचरण करते हुए शास्त्र रूप आपकी आज्ञा का पालन करते हैं। किन्तु मैं सब कुछ छोड़कर इस घोर संसार सागर में गोते लगा रहा हूँ–मुझसे न तो आपका ध्यान होता है, न आपका पूजन बन पड़ता है और न शास्त्र–मर्यादानुकूल आचरण ही करते बनता है। मुझसे अधिक अभागा संसार में कौन होगा ?।।२।।

श्लोक

उत्पद्यापि स्मरहर महत्युत्तमानां कुलेऽस्मि-
न्नास्वाद्यत्वन्महिम जल घेरण्यहं शीकराणूनू।
त्वत्पादार्चा विमुख हृदय चापलादिन्द्रियाणां-
व्यग्रस्तुच्छेष्वहह जननं व्यर्थयाम्येष पापाः।।३।।

हिन्दी अनुवाद–हे स्मरिये ! मैंने उत्तम कुल में जन्म लिया और आपकी महिमा रूपी अपार सागर के कतिपय बिन्दुओं का आस्वादन भी किया, किंतु फिर भी मैं पापात्मा आपकी पादसेवा से मुँह मोड़कर इन्द्रियों की चंचलता के कारण क्षुद्र सांसारिक विषयों के पीछे पागल हुआ घूमता हूँ और इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को व्यर्थ गवाँ रहा हूं, हीरे को कांच के मोल बेच रहा हूँ। मुझसे अधिक अज्ञानी और कौन होगा ?।।३।।

श्लोक

अर्कद्रोण प्रमृति कुसुमैरर्चनं ते विधेयं,
प्राप्यं तेन स्मरहर फलं मोक्ष साम्राज्य लक्ष्मीः।
एतज्जानन्नपि शिव शिव व्यर्थयन् कालामात्म-
न्नात्म द्रोही करण विवसो भूयसाधः पतामि।।४।।

हिन्दी अनुवाद–हे स्मरारे ! आपके पूजन के लिए न तो अधिक पैसा चाहिए और न विशेष सामग्री की ही अपेक्षा है। आक की डोंडियों और धतूरे के पुष्पों से ही आप प्रसन्न हो जाते हैं, कौड़ियों में काम होता है, किन्तु आपका पूजन इतना सस्ता होने पर भी आप उसके बदले में क्या देते हैं? आक और धतूरे के एवज में आप देते हैं– "मोक्षसाम्राज्य लक्ष्मी" जो देवताओं को भी दुर्लभ है। कितना सस्ता सौदा है ? इसीलिए तो आप "आशुतोष" एवं "औढरदानी" की उपाधि से विभुषित हैं। किन्तु शिव ! शिव ! मैं ऐसा आत्मद्रोही हूँ कि यह सब कुछ जानता हुआ भी अपना जीवन व्यर्थ ही नहीं खो रहा हूँ, अपितु इन्द्रियों के वशीभूत होकर बार–बार पाप के गड्ढे में गिरता हूँ।।४।।

श्लोक

नाहं रोद्धुं करणनिचयं दुर्नयं पारयामि,
स्मारं स्मारं जनिपथरूजं नाथ सीदामि भीत्या।
किं वा कुर्वे किमुचितमिह क्काद्य गच्छामि हन्त,
त्वत्पादाब्ज प्रपतनमृते नैव पश्यामभ्युपायम्।।५।।

हिन्दी अनुवाद–हे नाथ ! मेरी इन्द्रियाँ बड़ी दुर्दमनीय हो गयी हैं, वे मेरे काबू से बाहर हो चली हैं, इन्हें नियंत्रण में रखना मेरे बस का नहीं है। इधर इनको स्वतंत्र छोड़ देने से मेरी जो दुर्दशा होगी, उसे सोचकर एक बारगी रूह कांप उठती है। क्योंकि इनकी लगाम ढीली कर देने से संसार में बार–बार जन्म लेना तो निश्चित ही है और गर्भवास में जो नरक–यन्त्रनाएँ भोगनी पड़ती है, उसका ध्यान आते ही

रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी दशा में मैं क्या करूं, कहां जाऊँ, कुछ समझ में नहीं आता। इस दुविधा में पड़कर मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया हूँ। अब तो आपके भक्तभयहारी चरणारविन्दों का आश्रय लेने के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं सूझता, अतः आप हमें कृपाकर अपने चरणों की शरण में ले लीजिए।।५।।

श्लोक

उल्लङ्घ्या ज्ञामुडु पतिकला चूड़ ते विश्वबन्ध
त्यक्ताचारः पशुवद्धुना त्यक्तलज्जश्चरामि।
एवं नानाविध भवतांतिप्राप्त दीर्घायराधः-
क्लेशाम्भोधिं कथमहमृते त्वत्प्रसादात्तरेयम्।।६।।

हिन्दी अनुवाद–हे शशि शेखर ! हे–जगदून्ध प्रभो ! मैं आपकी आज्ञा की अवहेलन करता हुआ सदाचार के मार्ग का परित्याग कर पशु की भांति निर्लज्ज हुआ घूमता हूँ। जन्म जन्मान्तरों में मैंने इतने बड़े पाप किए हैं कि करोड़ों जन्मों में भी उनसे छुटकारा सम्भव नहीं है। अब तो इस दुखिया को पार जाने का यदि कोई उपाय है तो आपकी कृपा का अवलम्बन ही है। अतः इस दीन की ओर भी तनिक कृपा की कोर हो जाए।।६।।

श्लोक

क्षाम्यस्येव त्वमिह करुणा सागरः कृत्स्नमागः-
संसारोत्थं गिरिश समय प्रार्थनादैन्य मात्रात।
यद्यण्येवं प्रकिल महं व्यक्तभागः सहस्त्रं,
कुर्वन्मूकः कथमिव तथा निस्त्रपः प्रार्थयेयम।।७।।

हिन्दी अनुवाद–हे गिरिश ! आप ऐसे दयासागर है कि जो मनुष्य संसार रूपी घोर दावानल से भयभीत होकर दीनता पूर्वक आपसे अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगता है, उसके जन्म जन्मांतर के पापों को आप अपनी कृपा से नष्ट कर देते हैं और उसको कल्मषहीन एवं मोक्ष पद का अधिकारी बना देते हैं, किन्तु मैं तो ऐसा निर्लज्ज हूँ कि अपने पूर्व कृत अपराधों के लिए क्षमा मांगना तो दूर रहा, उलटा प्रति पल नये–नये पाप बटोर रहा हूँ और इस प्रकार मेरे पापों का बोझ क्रमशः वृद्धिगत हो रहा है, उसका क्षय होने की तो बात ही क्या है ? ऐसी हालात में मैं अपने पापों के सिर आपसे क्षमा ही किस मुंह से माँगू ? अब तो आप स्वयं ही अपनी स्वभाविक दयालुता से मेरे पापों को क्षमा कर दें, तभी निस्तार हो सकता है, अन्यथा नहीं।

श्लोक

ध्यातो यत्नाद्विजि तकरणै योगिभिर्यो विमुग्य-
स्तेभ्यः प्राणोत्क्रमण समचे संनिधायात्मनैव।
तद्व्याचष्टे भवमय हरं तारकं ब्रह्म देव-
स्तं सेवेऽहं गिरिश सततं ब्रह्मविद्या गुरू त्वाम।।८।।

हिन्दी अनुवाद–जितेन्द्रिय योगिजन ध्यान मार्ग से आपको प्राप्त करने का यत्न करते हैं, किन्तु फिर भी वे आपको नहीं देख पाते। अन्त समय में जब उनके प्राण पखेरू उड़ने को होते हैं, तब आप बिना बुलाये अपने आप ही उनके निकट उपस्थित हो जाते हैं और उनके कान में "मोक्ष दायक तारक मंत्र" फूंककर उन्हें भव बन्धन से सदा के लिए मुक्त कर देते हैं। हे ऐसे ब्रह्मविद्या के उपदेशक आपकी मैं शरण लेता हूँ।

श्लोक

भक्ताग्रयाणां कथमपि परैचेऽचिकित्स्या ममर्त्यैः
संसाराख्यां शमयति रूजं स्वात्म बोधोषधेन।
ते सर्वाधीश्वर भवमहा दीर्घती प्रामयेन-
क्लिस्टोऽहं त्वां वरद शरणं यामि संसारवैद्यम्।।८।।

हिन्दी अनुवाद–हे सर्वेश्वर ! वरदायक शम्भो ! आप आत्मबोध रूपी औषध के द्वारा अपने भक्तवरों के भवरोग को हर लेते हैं। अन्य देवताओं की सामर्थ्य नहीं कि वे इस दुःसाध्य रोग की, मृत्यु योग की चिकित्सा कर सके। इस भवरूपी महा भयंकर एवं जन्म–जन्मातंर से पीछे लगे हुए रोग से–पीड़ित होकर मैं आप "संसार वैद्य" की शरण आया हूँ। कृपया ऐसा कीजिए कि जिससे फिर इस संसार रोग का मुंह न देखना पड़े।।८।।

श्लोक

दासोऽस्मीति त्वाय शिव मया नित्यसिद्धं निवेद्यं
जानास्येतत त्वमपि यदहं निर्गतिः सम्भ्रमामि।
नास्त्येनान्यन्मम किमपि ते नाथ विज्ञापनीयं
कारूण्यान्मे शरण वरणं दीनवृत्ते गृहाण।।१०।।

हिन्दी अनुवाद–हे शिव ! मैं आपका दास हूँ, यही मुझे आपके चरणों में नित्य निवेदन करना है। आप भी इस बात को जानते ही हैं कि मैं असहाय होकर इधर–उधर भटक रहा हूँ। बस, आपसे और कुछ नहीं मांगता, केवल इतनी ही प्रार्थना है कि आप मुझ दीन को

अपनी अकारण करूणा का कणमात्र प्रदान कर सदा के लिए अपनी शरण में ले लें।।१०।।

श्लोक

ब्रह्मोपेन्द्र प्रभृतिरपि चेत् स्वेप्सित प्रार्थनाय
स्वामिन्नग्रे चिरमव सरस्तोषयद्भिः प्रतीक्ष्यः।
द्रागेव त्वां यदिह शरणं प्रार्थये कीटकल्प-
स्तद्धिश्वरा धिश्वर तव कृपा मेव विश्वस्य दिने।।११।।

हिन्दी अनुवाद—हे स्वामिन् ! हे विश्वेश्वर ! ब्रह्मा और विष्णु-प्रभृति देवता तक जब अपनी प्रार्थना को लेकर आपके समीप उपस्थित होते हैं, तब उन्हें चिरकाल तक आपके दर्शन के लिए अवसर ढूँढना पड़ता है। किंतु मैं एक अधम कीड़े के समान होते हुए भी आपसे अपनी शरण में ले लेने के लिए इस तरह तकाजा कर रहा हूँ जैसे कोई ऋणदाता अपने ऋणी से कर्ज दिया हुआ रूपया लौटाने का तकाजा-करता हो। आपकी मुझ जैसे असहाय दीनों पर अहेतु की कृपा को देखकर ही मुझसे ऐसी अनुचित धृष्टता हो रही है। आशा है, आप मेरी दीन अवस्था को ध्यान में रखते हुए मेरे इस अपराध को अवश्य क्षमा करेंगे और मुझे आपको बारम्बार तंग न करना पड़े। जब तक आप मुझे अपना न लेंगे, तब तक मैं आपको हैरान करता ही रहूँगा। आप कहां तक मौन साधन किये बैठे रहेंगे? एक न एक दिन मेरी बांह अवश्य पकड़नी होगी। इसलिए अच्छा है कि तुरंत ही यह काम कर डालें, जिससे दोनों को ही तंग न होना पड़े।।१२।।

श्लोक

क्षन्तब्यं वा निखिलमपि मे भूतभाविब्यलीकं
दुर्ब्यापार प्रवणमथवा शिक्षनीयं मनो मे।
न त्वेवार्त्या निरतिशयया त्वत्पदाब्जं प्रपन्नं,
त्वद्विन्य स्ताखिल भरममुं युक्तमीश प्रहातुम्।।१२।।

हिन्दी अनुवाद—हे स्वामिन् ! या तो आप मेरे भूत एवं भविष्य के सभी अपराधों को क्षमा कर दीजिए या इस कुमार्गगामी दुष्ट मन को ठीक रास्ते पर लाइये। दोनों में से एक काम तो करना ही होगा, नहीं तो काम कैसे चलेगा? यह तो हो ही नहीं सकता कि आप इस घोर दुःख में मेरा हाथ छोड़ दें, क्योंकि यह कार्य आप जैसे दयालु स्वामी के लिए उचित नहीं होगा। जिसे आपके चरणों का ही एकमात्र अवलम्ब है और जिसने अपना सारा भार आपके उपर डाल दिया है, उसे आप कभी धोखा नहीं देंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास हैं।।१२।।

श्लोक

सर्वज्ञास्त्वं निरवधि कृपासागरः पूर्णशक्तिः ।
कस्मादेनं न गणयसि मामापदब्धौ निमग्नम् ।
एवं पापात्म कमपि रूजा सर्वतोऽत्यन्त दीनं
जन्तु यद्युद्धरसि शिव कस्तावतातिं प्रसंगः ।।१३।।

हिन्दी अनुवाद–हे शंकर ! आप सर्वज्ञ हैं, दया के अपार समुद्र हैं तथा पूर्ण सामर्थ्यवान हैं, फिर भी न जाने क्यों मुझे आप इस दुःख सागर से नहीं उबारते ? माना कि मैं पापात्मा हूँ, किन्तु साथ ही दुःख से अत्यन्त कातर भी हूँ। ऐसी दशा में यदि आप मुझे उबार लें तो इससे आपकी न्यायपरायणता में कौन सी बाधा आती है ? सभी नियमों में "अपवाद" भी होते हैं। इसलिए दया की भिक्षा दे दें तो इसमें क्या आपत्ति है ? जैसे भी हो, इस बार तो दया करनी ही होगी।।१३।।

श्लोक

कीटा नागास्तरव इति वा किं न सन्ति स्थलेषु ।
त्वत्पादाम्भो रूहपरि मलोद्धा हिमन्दा निलेषु ।
तेष्वेकं वा सृज पुनरिमं नाथ दीनार्तिहारि-
न्नातोषं ते मृड भवमहाङ्गारनद्यां लुठन्तम् ।।१४।।

हिन्दी अनुवाद–हे नाथ ! जिन–जिन–स्थलों में आपके चरण कमल जाते हैं, उन–उन स्थानों में कीड़े–मकोड़े, सांप–बिच्छू अथवा झाड़–झंखाड़ भी तो अवश्य होंगे। यदि और कुछ नहीं, तो उन्हीं में से कोई शरीर मुझे दे दें, जिनसे उन चरण कमलों के सुमधुर गन्ध से सम्पृक्त सुशीतल वायु का सुखकर स्पर्श पाकर मैं अपने शरीर और आत्मा–दोनों की तपन को बुझा सकूं और इस सुतप्त अंगारों से पूर्ण भवनदी से छुटकारा पाऊं। उस योनि में मुझे आप जब तक आपकी तबीयत चाहे, रख सकते हैं। उसमें मुझे कोई आपत्ति न होगी, बल्कि जितने अधिक समय तक आप मुझे उस शरीर में रखेंगे, उतना ही अधिक आनंद मुझे होगा और मैं अपना अहो भाग्य समझूँगा। क्या मेरी इस प्रार्थना को भी आप स्वीकार नहीं करेंगे ? अवश्य करेंगे।।१४।।

श्लोक

अन्तर्वाष्पा कुलित नयनान्त रंगानपश्य-
न्नग्रे घोषं रूदित बहुलं कातराना मश्रृण्वन् ।
अण्युत्क्रान्ति श्रममगणयन्नन्त काले कपर्दिन्न-
ङ्घ्रिद्वन्द्वे तव निविशाता मन्तरात्मन ममात्मा ।।१५।।

हिन्दी अनुवाद–हे कपर्दिन ! हे मेरे अन्तरात्मा ! अपने अनन्त काल का चित्र इस समय मेरी इन आँखों के सामने आ रहा है। मैं देख रहा हूँ कि मेरे आत्मीय जन डबड़बाये हुए कातर नेत्रों से मानो मेरी ओर निहार रहे हैं, चारों ओर स्त्रियाँ बच्चे बिलबिला रहे हैं औरकोई–कोई उनमें से ठाढ़े मारकर रो रहे हैं। उस हृदय विदारक दृश्य की कल्पना करने पर शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सोचता हूँ, उस समय मेरी खुद की क्या दशा होगी। बस, उस समय तो ऐसी कृपा हो कि कुटुम्बियों के वाष्पाकुलित नेत्र तो दिखाई न पड़े, स्त्रियों और बच्चों की क्रन्दन ध्वनि सुनायी न दे, प्राणोत्सर्ग की व्यथा से विचलित न होऊँ और चित्त आपके चरण युगल के चिन्तन में लीन हो जाय ! आप यदि चाहें तो ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं, आपके लिए कुछ भी दुःसाध्य नहीं है।।१५।।

श्लोक

स्वप्ने वापि स्वरसविकस द्दिव्यपंकेरुहाभं,
पश्येयं तत्तव पशुपते पादयुग्मं कदाचित्।
क्वाहं पापः क्व तव चरणालोक भाग्यं तथापि,
प्रत्याशां मे छटयति पुनर्विश्रुता तेऽनुकम्पा।।१६।।

हिन्दी अनुवाद–हे पशुपते ! क्या आपके खिले हुए पंकज के समान चरण युगल को स्वप्न में भी देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होगा ? जब अपने आचरणों की ओर देखता हूँ, तब तो मैं निराशा से घिर जाता हूँ, किन्तु आपकी अपार दया का स्मरण कर मन में फिर से आशा का संचार होने लगता है। उस समय मैं अपने मन को आश्वासन देता हूँ और कहता हूँ, तू नीच है तो क्या हुआ ? तेरा स्वामी तो परम कृपालू हैं। वह तुझ पर अवश्य कृपा करेगा, निश्चिन्त रह।।१६।।

श्लोक

भिक्षावृत्तिं चर पितृवने भूतसंघैर्भ्रमेदं,
विज्ञातं ते चरितमखिलं विप्रलिप्सोःकपालिन।
आवैकुण्ठ द्रुहिणाभखिल प्राणीनामीश्वर स्त्व,
नाथ स्वप्नेऽप्यहमिह न ते पादपद्मं त्यजामि।।१६।।

हिन्दी अनुवाद–हे कपालिन ! हे–नाथ ! आप चाहे भीख मांगने का नाट्य करें अथवा भूतों के दल के साथ श्मशानों में गस्त लगावें, कुछ भी करें, आपका ऐश्वर्य मुझसे छिपा नहीं रह सकता। मैं जान गया हूँ कि आप ब्रह्मा विष्णुपर्यन्त समस्त चराचर जगत के स्वामीहैं, इसलिए आप–मेरी कितनी ही प्रपञ्चना करें, मैं स्वप्न में भी आपके

सुरमुनि दुर्लभ चरण कमल का परित्याग नहीं कर सकता, अब तो आपका ही होकर रहूंगा।।१६।।

श्लोक

न किंचिन्मे नेतः समभिलषणीयं त्रिभुवने
सुखं वा दुःख वा मम भवतु यद्भावि भगवन।
समुन्मीलत्पा थोरूहकुह रसो भाग्य रूचि ते,
जद्वन्द्वे चेतः परिचय भुपेयान्मन सदा।।१७।।

हिन्दी अनुवाद—हे नाथ ! हे भगवन ! मुझे त्रिभुवन की किसी भी वस्तु की अभिलाषा नहीं है और न मुझे सुख दुःख की परवाह है, जो कुछ प्रारब्ध में वदा है सो होता रहेगा। बस, मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि आपके खिले हुए पंकज के समान चरण युगल में मेरा चित्तरूपी चंचरीक सदा चिहुँटा रहे। कभी उससे पृथक न हो।।१७।।

श्लोक

कर्मज्ञान प्रचय मखिलं दुवकरं नाथ पश्यन्
पापासक्तं हृदयमपि चापारयन् संनिरोद्धुम्,
संसार राख्ये पुरहर महत्यन्धकूपे विषीदन्,
हस्तालम्ब प्रपतनमिदं प्राप्य ते निर्भयोऽस्मि।।१७।।

हिन्दी अनुवाद—धन्य प्रभो ! धन्य—भक्तवत्सल ! आखिर आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ही ली और मुझे अपने वरद हस्त का अवलम्ब दे ही दिया। अब क्या है ? अब तो बाजी मार ली। अब मुझे किस बात का डर है। अब तक मुझे यह डर था कि न तो मैं ज्ञान मार्ग का अधिकारी हूँ और न कर्म मार्ग का ही अनुसरण कर सकता हूँ, मुझे दोनों ही पहाड़ से मालूम होते हैं। इधर मेरा मन पापों में गर्क हो रहा है, उसे पाप की ओर जाने से मैं किसी प्रकार रोक ही नहीं सकता। वह इतना बेकाबू हो गया है। ऐसी दशा में इस संसार रूपी घोर अन्धकूप से मेरा निस्तार कैसे होगा, यह चिंता मुझे बारंबार सताती थी। किंतु अब आपका सहारा पाकर मैं निश्चिन्त हो गया हूँ। अब मेरा कोई कुछ भी नहीं कर सकता। तुम धन्य हो प्रभु तुम धन्य हो।

(पंडित श्री वाई.एन. झा रचित ''शिव शरणागति स्तोत्र'' सम्पन्न)

नोट—उपासको ! स्तोत्र सम्पन्न करने के पश्चात् हवन करने का विधान है, परन्तु मात्र ''पार्थिव पूजन'' करनी हो तो पूजन यहीं समाप्त कर हवन कर, मूर्द्धान, आरती, प्रदक्षिणा, विधि सम्पन्न कर

पूजा विसर्जन कर सकते हैं। किंतु यदि ''महामृत्युञ्जय तप'' सम्पन्न करना हो तो स्तोत्र पाठ के बाद रूद्राक्ष की माला से ग्यारह दिन या 21 दिन में एक लाख एकावन हजार–मंत्र जप सम्पन्न करें। यदि लघु अनुष्ठान करना हो तो कमसे कम एकावन हाजर मंत्र जप सम्पन्न करें। जप हेतु मंत्र अर्थ सहित पहले पृष्टों पर अंकित है, जो इस प्रकार है–

ॐ त्रयंबकं यजामेह सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उब्बार्रुक मिव बन्धना मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

जिस दिन जप सम्पन्न हो, उस दिन कुल मंत्र जप का दशांस मंत्र से हवन में आहुति डालें। ''हवन विधि'' का विस्तृत विवरण आगे दे रहा हूँ।

(आठवां भाग)

वैदिक हवन विधि खण्ड

हवन का वैदिक महत्व

किसी भी पूजन या अनुष्ठान के बाद हवन करने का विधान वेदों में मिलता है, क्योंकि पूजन जप–यज्ञ या अनुष्ठान की सिद्धि के लिए यह आवश्यक अंग है। हवन के बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण हो ही नहीं सकता। हवन केवल मात्र करने वाले को ही नहीं, अपितु हवन का धुँआं सम्पूर्ण प्राणीमात्र को अपना कल्याणकारी प्रभाव देता है।

इस क्रिया में पवित्र समिधा के द्वारा अग्नि को विशिष्ठ पदार्थों का मिश्रण मंत्रोच्चारण करते हुए अर्पित किया जाता है। प्रत्येक बार मंत्र के अंत में ''स्वाहा'' शब्द भी बोला जाता है। यह स्वाहा शब्द का तार्त्पय भस्म होना नहीं, बल्कि हवन वस्तु स्वाहा की देवी द्वारा देवताओं को समर्पित की जाती है।

हवन की लकड़ी

काष्ठ (लकड़ी) प्रयोग के कुछ विशेष नियम हैं। हवन में ''आम की लकड़ी'' किसी भी हवन में प्रयोग कर सके हैं, पूर्ण फल मिलेगा, परन्तु नवग्रह के हवन और विविध अनुष्ठान के हवन में सिर्फ आम की लकड़ी से ही काम नहीं चलेगा, क्योंकि उसमें नौ प्रकार की लकड़ियों की आवश्यकता होती है, जिसका नाम है–आम, शैन, खैर, चिर्राचरी, आक, गुल्लर, बेल, जलाश और कुशा।

हवन हेतु सामग्री

हवन सामग्री में कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मिश्रण किया जाता है।

जैसे–गाय का घी, जौ, तिल, सरहड़, गुग्गुल, अक्षत, शक्कर, मेवा, चन्दन, (जावित्री, लौंग, दालचीनी, अगरतगर, जायफल, ईलायची, आंवला, कर्पूर, इन्द्र सौ, गिलोय, नाग केशर, वालछड़, पटीलपन पवार बीज, मुलहठी, लाल चन्दन, अष्टगंध, केशर, मोचरस, ब्राह्मी, शंख पुष्पी, पुष्कर मूल, मजीठ, धाम पुष्प, श्वस, गोकरन, शतावर, छरीला और देवदारू)

उपरोक्त वस्तुओं मे जो वस्तुएं–''कोष्टक'' के अन्दर लिखी गई है, उन वस्तुओं का मिश्रण पैकेट बाजार में उपलब्ध है। साधक पृथक–पृथक सामग्री न खरीदकर सुविधा हेतु ''हवन सामग्री पैकेट'' खरीद कर भी काम चला सकते हैं, परन्तु वह हवन सामग्री का पैकेट शुद्ध और कीड़ों से रहित होना चाहिए।

हवन के प्रकार और पूर्णाहुति का अर्थ

हवन कई प्रकार का होता है। कुछ लोक नित्य ही पूजा के समय हवन करते हैं। विशेष पर्वों, उत्सवों और धार्मिक क्रिया कलापों में भी हवन का प्रचलन है।

मंत्र साधना में धूप–दीप–नैवेद्य अर्पण करने का नियम है। मंत्र समाप्ति पर (अभीष्ट मंत्र जप संख्या पूर्ण हो जाने पर) उपर्युक्त वस्तुओं द्वारा हवन क्रिया सम्पन्न की जाती है।

हवन कुंड का निर्माण यथा सम्भव पूजन स्थल के पास ही करना चाहिए। हवन में निर्देशित मंत्र का उच्चारण करते हुए–''स्वाहा'' शब्द ध्वनि के साथ अग्नि में आहुति डाली जाती है।

अन्तिम आहुति को ''पूर्णाहुति'' कहते हैं। पूर्णाहुति के पश्चात् उपासक को इस आशय की प्रार्थना करनी चाहिए कि–''हे देवता !–समस्त क्रिया में, मंत्र जप में, पूजन में मेरी भावना व्यवहार और आचरण में कहीं कोई त्रुटि हो गई हों तो उसे कृपा कर क्षमा करें।''

क्षमा याचना के बाद परम श्रद्धा पूर्वक हवन कुंड से थोड़ी सी भस्म लेकर मस्तक पर धारण करनी चाहिए। भस्म लेपन के गुणों को चिकित्सा विज्ञान ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

हवन के बाद आरती तत्पश्चात् पुन–प्रदक्षिणा और विसर्जन का विधान है। विसर्जन पूजा–पाठ या मंत्र साधना का अन्तिम चरण है। इसके बाद उपासक अपनी दैनिक चर्चा हेतु स्वतंत्र हो जाता है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह अपनी नैतिकता, सद्वृत्ति, आस्तिकता, और संयम का परित्याग करके उच्छ जीवन बिताये। नहीं, इन गुणों को तो उसे सदैव ही सुरक्षित रखना चाहिए, क्योंकि उसके पूजन प्रभाव को स्थायी बनाने में अच्छे गुण ही सहायक होते हैं।

हवन की बेदी व कुशकण्डिका निर्माण विधि

पूजन के पश्चात् हवन के लिए चार अंगुल उँची एक हाथ परिमाण चौरस बेदी बनावें। उस बेदी को कुशा से संचार करके उस कुशा को ईशान कोण में फेंक दें।

यह बेदी वालुका (रेता) से हवन कुंड का निर्माण करें तो सर्वोत्तम है। पश्चात् गौ के गोबर से लीपकर खैर के स्त्रुव (चम्मच) से रेखा करके अनामिका और अंगूठे से मिट्टी निकालें, फिर जल को छिड़कर कांशे के पात्र में अग्नि लाकर वेदी पर स्थित आम की लकड़ी पर अग्नि स्थापित करें।

फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्रादि लेकर ब्राह्मण को ''वरण'' दें, फिर वे हवन आरम्भ करने हेतु आदेश करें, संकेत मिलने पर आप कहें–''करता हूँ''।

ऐसा आचार्य के (पुरोहित के) कहने पर अग्नि से दक्षिण दिशा में शुद्ध आसन देकर पूर्व दिशा में अपभाग कुशावों को रखकर, उस पर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए–ब्रह्मस्वरूप कुशा को स्थापित करें, जो हवन कर्म समय के–''ब्रह्मा'' होते हैं।

फिर प्रणीता पात्र को आगे करके जल से पूरित करते हुए कुशाओं से ढककर, ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि की उत्तर दिशा में कुशावों पर प्रणीता पात्र को स्थापित करें।

इसके अनन्तर कुशावों का परिस्तरण करें–कुशावों का चौथा हिस्सा अर्थात चार कुशायें लेकर अग्नि कोण से ईशान कोण तक फिर चार कुशायें ब्रह्मा से अग्नि तक, फिर चार कुशाएँ नैऋत्य से वायब्य तक, फिर चार कुशाएँ अग्नि से प्रणीता पात्र तक स्थापित करें। फिर ''पवित्रच्छेदन'' के लिए तीन कुशाएँ बीच में गर्म भाग वाली दो कुशाएँ परिच्छेदन के लिए रखें।

इसके बाद पवित्रों को छेदन करने वाली कुशावों से पवित्रों को छेदन करके पवित्र सहित हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालकर दोनों अनामिका और अंगूठे से दो पवित्रों को उत्तराय ग्रहण करके जल को तीन बार उपर को उछालें, फिर प्रोक्षणी पात्र को बाँए हाथ में लेकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगूठे से दोनों पवित्रों को ग्रहण करके जल को तीन बार उछालें। इसके बाद प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र को जल से स्थापना की हुई वस्तुओं का सेचन करके उसके अनन्तर अग्नि से उत्तर दिशा में और प्रणीता

पात्र से दक्षिण दिशा में प्रोक्षणी की स्थापना करें।

पश्चात् घृत पात्र में घृत डालकर अग्नि पर रखें, उसके अनन्तर जलता हुआ तृण लेकर घृत और चरण के उपर घुमा कर अग्नि में डालें। तीन बार स्त्रुप को तपावें और सम्मार्जन कुशावों को अग्रभाग करके भीतर को स्त्रुप को तपाकर अपने दाहिने हाथ की ओर स्थापना करें। घृत को अग्नि से उतार कर तीन बार प्रोक्षणी पात्र के जल की तरह उछालें। फिर देखकर कोई अपद्रव्य हो तो उसे निकाल दें। फिर स्त्रुप का पूजन करें। उपयवन कुशावों को हाथ में लेकर प्रजा–पति का ध्यान करते हुए तीन समिधावों को घृत में भिगोकर मौन धारण किए हुए अग्नि में डाल दें।

उसके बाद बैठकर स्त्रुप से हवन मंत्रोच्चारण करते हुए आरम्भ करें। आहुति देने के बाद स्त्रुप से बचे घृत को "प्रोक्षणी पात्र में" डाल दें।

हवन मंत्र

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये।
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय इत्याधारो।
ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये।
ॐ सोमाय स्वाहा, इदम सोमाय न मम् इत्याज्य भागौ।
ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे।
ॐ स्वः स्वाहा, इदम् सूर्याय।।

ॐ तन्नोऽअग्ने वरुणास्य विद्वान देवस्य हेड़ो अवयासिसीष्ठ यजिस्टो वह्नितम् शौशुचानो विश्वेद्धेबाग्वसि प्रमभुग्ध वस्तम् स्वाहा, इदम् अग्नि वरूणाभ्यां न मम।।१।।

ॐ सत्वन्नोऽग्नेवमो भवेति नेदिष्ठो अस्या उषशो व्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणाग्वं ररागो ब्रीहि मुडिकग्वं सुहवो नएधि स्वाहा, इदम् अग्नि वरूणाभ्यां न मम्।।२।।

ॐ अयाश्याग्नेऽस्य नभिसस्ति पाश्य सत्वभित्वमया असि, अयानो यज्ञं वहास्य यानोधेहि भेषजग्वं स्वाहा, इदमग्नये न मम्।।३।।

ॐ ये ते शतं वरुणाये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशाः वितताः

महान्त स्तेभिर्नेऽिद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुग्चन्तु मरूतः स्वर्काः स्वाहा, इदम् वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरूदभ्यः स्वकेभ्यश्च न मम्।।४।।

ॐ उदुत्तमं वरूण पाशभस्मद्वाधमं विमध्य मग्वं श्रथाय अथावयमादित्य व्रते तवानाग-सो अदितयेस्याम स्वाहा।।५।।

ॐ गणानांत्वा गणपतिग्वं हवामहे प्रियानांत्वा प्रियपतिग्धं हवामहे निधिनांत्वा निधिपतिग्वं हवामेव व्योमम आहम जानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधाम स्वाहा ॐ महागणपतये।।६।।

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरूयो वेन आवः स बुध्या उपमा अस्य विष्टा सतशय योनिमस्तश्च विवः-स्वाहा, इदम् ब्रह्मणे।।७।।

ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम समूढ़भस्य पांडग्वं सुरे स्वाहा, इदं विष्णवे।।८।।

ॐ नमस्ते रूद्रभन्यव उतीत इषवे नमः बाहुभ्या मुतते नमः स्वाहा, इदम् रूद्राय।।९।।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे व्यावाह मुपबुबे देवां आसादयादिह स्वाहा, इदमग्नये।।१०।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानुमा निवेशिनी यच्छानः सर्म सप्रथा स्वाहा, इदं पृथिव्यै।।११।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्दं हवे हवे सुहवग्वं शूरमिन्द्रमाह वयामि शक्रं पुरूहुतमिन्द्रं स्वस्तिनो मधवाधात्विन्द्रः स्वाहा, इदं इन्द्राय।।१२।।

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता वभूव यत्कामास्ते जूहू भस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम स्वाहा, इदं प्रजापतये।।१३।।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्य-विश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् स्वाहा, इदं दुर्गायै।।१४।।

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वा सप्त विसतिः ते अग्र अश्वम युज्जस्ते अस्मिनजसमादधुः स्वाहा, इदं वायवे।।१५।।

ॐ उध्र्या अस्यसमिधो भवन्युर्ध्वा शुक्राः शोचीग्वंष्यग्ने द्युमत्तमा सुप्रति कश्य सुनोः स्वाहा, इदं आकाशाय।।१६।।

ॐ अश्विना भेषजं मधु भेषजं न सरस्वती इन्द्र त्वष्टा यशः श्रियं रूपग्वं रूपहमधुः सुते स्वाहा, इदं सरस्वत्यै।।१७।।

नवग्रह हवन मंत्र

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च हिरण्येनसविता रथेना देवोयाति भुवनामि पश्चन् स्वाहा, इदं सूर्याय।।१।।

ॐ इमं देवता असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते ज्यानाराज्यायेन्द्र स्योन्द्रिय, इममंभुस्य पुत्र भुस्वै विष एधवोमि राजा सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानांग्वें राजा स्वाहा, इदं चन्द्रमसे।।२।।

ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्यां अयम आपाग्वं रेताग्वं सिजिन्वति स्वाहा, इदं भौमाय।।३।।

ॐ उद्बुध्यस्वास्ते प्रतिजागृहित्वाभिष्टा पूर्ते सग्वंसुचेथा मयञ्च अस्मिन सधस्थै- अध्यु त्तरस्मिन् विश्वे देवाः यजमानस्यं-सीदत स्वाहा, इदं बुधाय।।४।।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अहर्दिद्युभद्धि भाति चक्र तु भज्जनेषु यद्दीयच्छवस ऋृदयप्रजातत्त दस्मासु द्रविणं धेहियित्रम स्वाहा, इदं बृहस्पतये।।५।।

ॐ अन्नातपीर स्त्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यपिवतः क्षत्रम्मयः सोमं प्रजापितः ऋतेन सत्यभिनिन्द्रयं विषानग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्योन्द्रि यामिदम्प योऽमृतम्मधु स्वाहा, इदं शुक्राय।।६।।

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रमाधिस्त्र वन्तु न स्वाहा, इदं शनैश्चराय।।७।।

ॐ कयानिश्यन्न आभुव दूती सदा बुधः सखा, कयाशयिष्ठया वृता स्वाहा, इदं राहवे।।८।।

ॐ केतु कृष्वन्न केतवे पेशेर्भर्या अपेशते, समुसभिद भरजा यथा स्वाहा, इदं केतवे।।९।।

नोट—उपासको ! अब महामृत्युञ्जय मंत्र की निर्धारित जप संख्या का दशांस हवन करें।

ॐ त्रयम्बकं यजामये सुगन्धिम पुष्टि वर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्भृत्योर्भुक्षीय मामृतात स्वाहा।।

नोट—अब नीचे लिखित मंत्रों द्वारा इच्छानुसार यथा संख्या में आहुतियाँ डालें—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात् सवाहा।

ॐ सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ जयन्ती काली मंगला काली भद्रवाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तुते स्वाहां।

ॐ सर्वाबाधाविर्निमुक्तो धनधान्यसुतान्वितः मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः स्वाहा।

ॐ मंगल भगवान विष्णु मंगलम् गुरूड़ध्वज् मंगलम् पुण्डरी काक्ष मंगलाय तनोहरि स्वाहा।

नोट—उपासको ! अब हवन का ''मूर्द्धान'' करें।

मूर्द्धान् मंत्र

नोट—इस क्रम में पान, सूपारी, सूखे—खड़कते नारियल और बची हुई हवन सामग्री, मिठाई, द्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रख कर, खड़े होकर निम्न मंत्र उच्चारण कर हवन कुंड में समर्पित करें—

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वा नरमृत मजात् मग्नि कविग्वं सम्भ्राजभतिथि जना नामसन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर अग्नि देव की प्रार्थना करें।

अग्नि प्रार्थना मंत्र

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिश्रियं वलम। तेजः आयुष्यमारोग्यं देहि मेहव्य वाहन।। ततः उपविश्च श्रवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकया गृहीत भस्मना।

नोट—अब हवन का भस्म शरीर के निम्नलिखित अंगों में मंत्रोच्चारण करते हुए लेपन करें।

हवन भस्म लेपन मंत्र

ॐ त्र्ययायुषं जमदग्ने इति ललाटे।। हवन का त्रिपुण्ड्र चन्दन मस्तक पे लगावें।

ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषं ग्रीवायाम्।। हवन का भस्म कंठ में लगावें।

ॐ यद्देवेषुत्रया युषं हृदिः। कंठ में लगावें।

ॐ तत्ते अस्तु त्र्यायुषं दक्षिण वाहुमूले।। दोनों बाहों में लागवें।

नोट—अब भगवान शिव के सिंहासन, पार्थिव लिंग सहित हवन कुंड की पाँच बार ''प्रदक्षिणा'' करें और निम्न मंत्र का उच्चारण करते जावें।

प्रदक्षिणा मंत्र

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

नोट—अब कांशो की थाली में पान के पत्ते पर कर्पूर जलाकर भगवान शिव को आरती दिखावें और परिवार के समस्त जन खड़े होकर इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखी हुई आरती गान मधुर शब्दों में हृदय से गावें। आरती गान समाप्त होने के बाद पूजा विसर्जन करें।

इस क्रम में दोनों हाथों से गंगाजल की गड़वी पकड़कर, खड़े होकर भगवान शिव को अन्तिम अर्घ्य प्रदान करें, साथ में निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

अनुष्ठान विसर्जन मंत्र

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम।
यजमान हितार्थाय पनराग भनाय च।।

नोट—मंत्रोच्चारण के पश्चात् भगवान महामृत्युञ्जय महादेव को प्रणाम करें। इस प्रकार अनुष्ठान सम्पन्न कर फिर प्रसाद का वितरण करें। ग्यारह ब्राह्मण एवं ग्यारह कन्याओं को आदर पूर्वक मीठा व्यञ्जन का भोजन करावें। सभी ब्राह्मणों एवं कन्याओं के भोजन के बाद सभी को फल एवं द्रव्य दक्षिणा देकर विदा करें। तत्पश्चात् वैदिक पुरोहित को दक्षिणा से पूर्ण सन्तुष्ट कर विदा करें। पवित्र पार्थिव लिंग व पूजा के पुष्प विल्पपत्र पत्ते वगैरह बहती दरिया में प्रवाह कर दें।

हवन की अग्नि जब बुझ जाय तो हवन कुंड का भस्म सम्भालकर किसी डिब्बे में बंद करके रख दें। जो असाध्य रोगी हैं वे पिड़ित अंगों में नित्य प्रातः काल, सायंकाल और दोपहर में लेपन करें और नित्य ही एक चुटकी भस्म खाया भी करें। असाध्य रोगों से मुक्ति हेतु पूर्ण वैदिक विधि से महामृत्युञ्जय अनुष्ठान कराने हेतु पंडित वाई. एन. झा ''तूफान'' से पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

(इति श्री वृहद् महामृत्युञ्जय अनुष्ठान सम्पूर्ण)

शिवरात्रि का रहस्य और महिमा

इस देश में जितने प्रकार के पूजा—पार्वण, व्रत—उपवास, पर्वोत्सव प्रचलित हैं, उनमें शिवरात्री व्रत के समान प्रचार अन्य किसी का भी नहीं देखा जाता। इस विराट् हिन्दू—भारत क स्त्री—पुरुष, बाल—वृद्ध, प्रौढ़—युवा—प्रायः सभी किसी न किसी रूप में इसके अनुष्ठान में रत देखे जाते हैं। बहुतेरे यथाविधि पूजादि न करते हुए भी—उपवास करते हैं। जिनकी उपवास में भी रूचि नहीं होती, वे कम से कम रात्रि—जागरण करके ही इस व्रत के पुण्य का कुछ भाग लेना चाहते हैं।

सौर, गाणपत्य, शैव, वैष्णव और—शाक्त—प्रधानतः इन्हीं पाँच सम्प्रदायों में विराट् हिन्दू समाज विभक्त है। इनमें से जो जिसके उपासक होते हैं, वे अपने उस इष्टदेव को छोड़कर अन्य की उपासना प्रायः नहीं करते। परन्तु इस शिवरात्रि व्रत की महिमा है—शास्त्र में भी ऐसा विहित है तथा इसी विधान का आज तक पालन होता आया है कि सम्प्रदाय के भेद को त्याग सभी मनुष्य इसका पालन करते हैं और इसके फल स्वरूप भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त करना चाहते हैं—

आचाण्डाल मनुष्याणां भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्।

शिव पूजा और शिवरात्रि व्रत में थोड़ा—सा अन्तर है। व्रत शब्द के निर्वचन से हम समझ सकते हैं कि जीव में जो वरणीय है—बार—बार अनुष्ठान के द्वारा, मन वचन, कर्म से जो प्राप्त करने योग्य है—वही व्रत है। इसी कारण प्रत्येक व्रत के साथ कोई न कोई कथा या आख्यान जुड़ा रहता है। इन कथाओं में ऐसे—ऐसे चरित्रों की बातें रहती हैं, जिनके साथ उस व्रत की उत्पत्ति, परिणति और समाप्ति का संक्षिप्त इतिहास ग्रथित रहता है। इसके अतिरिक्त इन कथाओं के द्वारा यह भी प्रमाणित होता है कि व्रत मानव जीवन की धर्म पिपासा की परितृप्ति के लिए केवल बीच—बीच में ही अनुष्ठान करने योग्य नहीं है, बल्कि यह हमारे व्यवहारिक जीवन का एक प्रधान अंग बन सकता है।

ईशान संहिता में शिवरात्री व्रत के सम्बन्ध में कहा है—

माघ कृष्ण चतुर्दश्या मादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोधृतः कोटिसूर्य समप्रभः।।
तत्काल व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रि व्रते तिथिः।।

अर्थात्—माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी की महानिशा में आदि देव महादेव कोटि सूर्य के समान दीप्तिसमपन्न हो शिवलिंग के रूप में

आविर्भूत हुए थे, अतएव शिवरात्रि व्रत में उसी महानिशा--व्यापिनी चतुर्दशी का ग्रहण करना चाहिए। माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी बहुधा-फाल्गुन मास में ही पड़ती है। ईशान संहिता के मत से शिव की प्रथम लिंगमूर्ति उक्त तिथि की महानिशा में पृथिवी से पहले पहल आविर्भूत हुई थी, इसी के उपलक्ष्य में यह व्रत की उत्पत्ति बताई जाती है। इस श्लोक का ''महानिशा'' शब्द भी एक विशिष्ठ अर्थ का ज्ञापक है। ''महर्षि देवल'' कहते हैं-

महानिशा द्वे घटिके रात्रेर्भध्य मयामयो।

चतुर्दशी तिथि युक्त चार प्रहर रात्रि के मध्यवर्ती दो प्रहरों में पहले की अन्तिम और दूसरे की आदि--इन दो घटिकाओं की (घड़ी) ही ''महानिशा'' संज्ञा है।

व्रत कथा में कहा गया है कि एक बार कैलाश शिखर पर स्थित पार्वती ने शंकर से पूछा-

कर्मणा केण भगवन् व्रतेन तपसापि वा।
धर्माथ काम मोक्षाणां हेतुस्त्वं परितुष्यति।।

हिन्दी अनुवाद-हे भगवन् ! धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्ग के तुम्हीं हेतु हो। साधना से संतुष्ट हो मनुष्य को तुम्हीं इसे प्रदान करते हो। अतएव यह जानने की इच्छा होती है कि-किस कर्म, किस व्रत वा किस प्रकार की तपस्या से तुम प्रसन्न होते हो?

इसके उत्तर में भगवान शंकर कहते हैं-

फाल्गुने कृष्णपक्षस्य या तिथिः स्याचतुर्दशी।
तस्या या तामसी रात्रिः सोच्यते शिवरात्रि का।।
तत्रोपवासं कुर्वाणः प्रसाद यति मां ध्रुवम्।
न स्नाणेन न वस्त्रेण न धूपेन न चार्चया।।
तुष्यामि न तथा पुस्पैर्यथा तत्रोपवासतः।।

हिन्दी अनुवाद-फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को आश्रय कर जिस अन्धकारमयी रजनी का उदय होता है-उसी को ''शिवरात्री'' कहते हैं। उस दिन जो उपवास करता है वह निश्चय ही मुझे संतुष्ट करता है। उस दिन उपवास करने से मैं जैसा प्रसन्न होता हूँ वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प, विल्वपत्र के अर्पण से भी नहीं होता।

उपर्युक्त श्लोक से जाना जा सकता है कि इस व्रत का-''उपवास'' ही प्रधान अंग है। तथापि रात्रि के चार प्रहरों में चार बार पृथक-पृथक पूजा का विधान भी प्राप्त होता है-

दुग्धेन प्रथमे स्नानं दुध्नायैव द्वितीयके।
तृतीय तु तथाऽऽज्येन चतुर्थे मधुा तथा।।

अर्थात्–प्रथम प्रहर में दुग्ध द्वारा शिव की ईशान मूर्ति को, द्वितीय प्रहर में दधि द्वारा अघोर मूर्ति को, तृतीय में घृत द्वारा कामदेव मूर्ति को एवं चतुर्थ में मधु द्वारा सद्योजात मूर्ति को स्नान कराकर उनका पूजन करना चाहिए।

शिवरात्री व्रत प्राकट्य कथा

शिवरात्री व्रत की उत्पत्ति के बारे में शिवपुराण के पन्द्रहवें अध्याय में भगवान नन्दीश्वर ने ''महर्षि सनत्कुमार'' जी–के पूछे जाने पर बोले हैं–हे सनत्कुमार !

पूर्व समय में, सब देवताओं के स्वामी विष्णु अपनी शय्या पर आनन्द पूर्वक शयन कर रहे थे। उसी अवसर पर ब्रह्मा जी उनके समीप जा पहुँचे और उन्हें लेटे हुए देख अत्यन्त क्रुद्ध हो, अंहकार में भर, इस प्रकार कहने लगे–''हे अभिमानी ! तुम कौन हो, जो हमारे आने पर भी इस प्रकार लेटे हुए हो ? हम तुम्हारे स्वामी हैं तथा अत्यन्त कृपा करके तुम्हारे पास आए हैं।'' यह सुनकर विष्णु ने उन्हें उत्तर दिया–हे ब्रह्मण ! तुम हमारे पुत्र हो। अस्तु, तुम्हें ऐसे कटु वचन कहना उचित नहीं है। तुम यहाँ आनन्द पूर्वक बैठो और अपने अहंकार को त्याग दो। यह सुनकर ब्रह्मा बोले–हे विष्णु ! तुम हमें अपना पुत्र किस प्रकार कहते हो ? इस प्रकार की दुर्बुद्धि द्वारा अपने हृदय से धर्म को त्याग देना श्रेष्ठ नहीं है। क्या तुम्हें यह नहीं ज्ञात है कि हमारे नाम स्वयम्भू, अज, परमेष्ठी, विधाता तथा ब्रह्मा आदि हैं ? हम तुम्हारे पिता हैं और तीनों लोकों को धारण करने वाले हैं। हमारा उत्पन्न करने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं है।'' यह सुनकर विष्णु ने उत्तर दिया ''हे पुत्र ! तुम हमारी नाभि से उत्पन्न हुए हो और माया में भूलकर अपने को सबका स्वामी समझ बैठे हो।''

हे सनत्कुमार ! इस प्रकार ब्रह्मा तथा विष्णु बहुत समय तक विवाद करते रहे। तदुपरान्त उन दोनों में घोर युद्ध होने लगा, तभी देवाधिदेव महादेव वहाँ पर विशालकाय ज्योतिर्लिंग रूप मं प्रकट हुए। जिसका न कहीं ओर था न छोर। उस महाज्योति के प्रकट होते ही ब्रह्मा तथा विष्णु के बाण एक दूसरे से अलग हटकर शान्त हो गये। इस आश्चर्य को देखकर ब्रह्मा तथा विष्णु ने युद्ध करना बन्द कर दिया और यह निश्चय किया कि हम दोनों में जो व्यक्ति इस ज्योति स्वरूप स्वम्भ के आदि तथा अंत का पता लगा लायेगा, वही सबका स्वामी

स्वीकार किया जायेगा। इस निश्चय के अनुसार विष्णु शूकर का स्वरूप धारण कर पृथ्वी के नीचे की ओर चल पड़े तथा ब्रह्मा हंश का रूप धारण कर आकाश की ओर उड़े। परन्तु उन दोनों में से किसी ने भी उस ज्योति रूप खम्भे का आदि अन्त नहीं पाया। तब ब्रह्मा ''केतकी फूल'' को अपने साक्षी के रूप में साथ लेकर लौटे और केतकी ने विष्णु जी से यह झूठ बात कही कि ब्रह्मा ने उस ज्वाला के आदि को देख लिया है। परन्तु विष्णु ने इसी सत्य को स्वीकार किया कि वे इस ज्वाला के अन्त को नहीं पा सके हैं।

नन्दीश्वर ने कहा ''हे सनत्कुमार ! विष्णु के सत्य को देखकर भगवान सदा शिव अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा ब्रह्मा के मिथ्या वचन को सुनकर अत्यन्त कुपित हुए। तदुपरान्त उन्होंने अपना मुख्य रूप उन दोनों देवताओं के बीच प्रकट कर दिया। उस स्वरूप को देखकर विष्णु जी स्तुति करने लगे। तब शिव जी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसने यह कहा–

''हे विष्णु ! हम तुम्हारे सत्य को देखकर बहुत आनन्दित हुए हैं। हम तुम्हें यह वर देते हैं कि तुम हमारे समान होओगे तथा सब लोक तुम्हारी पूजा भी हमारी ही पूजा की भाँति किया करेंगे।'' इस प्रकार विष्णु को वरदान देकर भगवान सदा शिव ब्रह्मा जी बोले–

''हे ब्रह्मण ! तुमने सांसारिक आनन्द तथा प्रशंसा प्राप्त करने के हेतु अपने धर्म को त्यागा है और तुम तीनों लोकों में अपना पूजन कराने के लिए झूठ भी बोले हो। इतना ही नहीं, तुमने मिथ्या साक्षी को भी उपस्थित किया है। अस्तु, हम तुम्हें यह शाप देते हैं कि तीनों लोकों में कोई भी तुम्हारी पूजा नहीं करेगा तथा कोई भी देवता अथवा मुनि तुम्हें अपना स्वामी स्वीकार नहीं करेगा।''

हे सनत्कुमार ! शिव जी के मुख से यह वचन सुनकर ब्रह्मा ने अत्यन्त लज्जित होकर बहुत प्रकार से विनय करते हुए–कहा–''हे प्रभो ! अब मैं आपकी शरण में आया हूँ, हमारी रक्षा करें, हमपर प्रसन्न–होवें महेश्वर ! ब्रह्मा के इस विनम्र वचनों को सुनकर शिव जी प्रसन्न हो गये। तब वे इस प्रकार कहने लगे–''हे ब्रह्मण ! अब हम तुम्हें युक्तिपूर्वक यह वर देते हैं कि तुम वैधानिक मुख्य कर्म आदि में गुरू हुआ करोगे और अपना पूरा भाग प्राप्त करोगे।''

ब्रह्मा से इस प्रकार शिव जी केतकी पुष्प से बोले–हे केतकी ! तूने धर्म के विरूद्ध आचरण करते हुए मिथ्या साक्षी दिया है। अस्तु, तू आज से हमारी पूजा के काम नहीं आयेगी–'' यह सुनकर केतकी ने अत्यन्त दुखी हो, शिव जी की प्रार्थना करते हुए कहा–हे प्रभो ! आप मेरे अपराध को क्षमा कर देने की कृपा करें। वेद इस बात को कहते हैं कि आप शरणागत पालक हैं तथा आपके स्मरण मात्र से ही सब पाप

नष्ट हो जाते हैं। फिर मैं तो आपको सशरीर देख रही हूँ। ऐसी अवस्था में मेरे पाप नष्ट क्यों न होंगे?

यह सुनकर शिव जी ने प्रसन्नता पूर्वक कहा–"हे केतकी ! हम तुम्हारी विनय से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अस्तु, अब यह वरदान देते हैं कि तुम मुझपर वितान के द्वारा चढ़ोगी। इस प्रकार शिव जी ने सब लोगों पर अत्यन्त अनुग्रह किया।

हे सनत्कुमार ! उस समय ब्रह्मा तथा विष्णु ने दाँयें–बाँयें खड़े होकर परिवार सहित भगवान सदा शिव का पूजन किया। तब शिव जी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर यह कहा–"हे ब्रह्मा तथा विष्णो ! तुम दोनों हमें प्राणों के समान प्रिय हो। आज का दिन परम पवित्र तथा मुक्ति को देने वाला है। आज फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि की रात्रि है, जो संसार में--"शिवरात्री" के नाम से प्रसिद्ध होगा।"

"शिवरात्री का व्रत–सब लोगों को अत्यन्त आनन्द प्रदान करेगा। इस व्रत को करने के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जायेंगे, प्राणी समस्त कामनाओं को प्राप्ति करेगा।

शिवरात्री व्रत चारों प्रहरों में करने की विधि

महाशिव पुराण के दशम् खण्ड के दूसरे अध्याय में शिवरात्रि व्रत के चारों प्रहरों की विधि बताते हुए ब्रह्मा जी ने कहा है–हे नारद! प्रातः काल उठ कर नित्य कर्म करने के उपरान्त सर्वप्रथम प्रसन्नता पूर्वक शिव मंदिर में जाकर भगवान सदा शिव की स्तुति करना चाहिए कि" "हे भगवान सदा शिव ! मैं आपका व्रत कर रहा हूँ, उसमें किसी प्रकार का विघ्न न पड़े।"

इस प्रकार "संकल्प" करने के उपरान्त व्रत धारी को चाहिए कि वह पूजन की सम्पूर्ण सामग्री (षोड़षोपचार पूजन में लिखित समस्त सामग्री) को एकत्रित कर, उस स्थान पर उत्तर या पश्चिम मुख-- आसन बिछाकर पूजन की सामग्री को वहां रखे, जहाँ कोई प्रसिद्ध शिवलिंग स्थापित हो। इसके उपरान्त षोड़षोपचार, दशोपचार या पंचोपचार पूजन करे। हे नारद ! यदि पास में शिवमंदिर न हो तो व्रती अपने घर के पवित्र स्थान में ही "पार्थिव लिंग" बनाकर, विधि से पूजन कर सम्पूर्ण फल प्राप्त कर सकता है। इसके बाद व्रत धारी को उचित है कि वह सामर्थ्यानुसार श्रेष्ठ वस्त्र को पहन कर आसन पर बैठे और शिवरात्री के माहात्म्य को या तो स्वयं पढ़े अथवा किसी अन्य के द्वारा श्रवण करें?

कथा कहने वाले की अनेक प्रकार की सेवा पूजा करना आवश्यक है। शिव जी को श्रेष्ठ वस्तुओं का भोग लगाने के उपरान्त, चारों प्रहरों में संकल्प करके शिवलिंग का पूजन करना श्रेष्ठ कहा गया है। शिवरात्री को रात भर जागरण करके बढ़ा उत्सव मनाना चाहिए।

प्रातः काल होने पर पुनः स्नान करके शिवजी का पूजन करना श्रेष्ठ कहा गया है। प्रातः काल स्तुति करने के उपरान्त व्रतधारी को भगवान सदा शिव के प्रति यह विनय करनी चाहिए कि हे प्रभो ! मैंने श्रद्धा पूर्वक आपके व्रत में अपना मन लगाया है, अस्तु आप मुझे अपना सेवक जानकर प्रसन्न हों तथा मेरे सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करें। इतना कहकर शिव जी के उपर पुष्पांजलि छोड़नी चाहिए। इस प्रकार व्रत की क्रियाएँ समाप्त हो जाने के पश्चात् प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मणों को दान देना चाहिए तथा अपनी शक्ति के अनुसार शिवभक्तों, ब्राह्मणों तथा यतियों को श्रेष्ठ भोजन दान आदि द्वारा प्रसन्न करना चाहिए।

हे नारद ! अब मैं चारों प्रहरों में पूजन की विधि का विस्तार पूर्वक वर्णन करता हूँ। संध्या के समय सर्व प्रथम संध्या आदि सम्पूर्ण नित्य कर्मों से निश्चिन्त होकर पहले प्रहर में इस प्रकार पूजन करें–

सर्वप्रथम सम्पूर्ण सामग्री एकत्र कर शिव जी के दोनों लोकों अर्थात् पार्थिव लिंग तथा शिवलिंग में जो भी उस स्थान पर हो, का दशोपचार या षोड़षोपचार पूजन करें। सम्भव न हो तो मात्र–''ॐ शिवाय नमः'' मंत्र का उच्चारण करते हुए ही–गंगाजल, अक्षत, तिल, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, धतूरा, आफ, भंग, धूप, दीप, नैवेद्य, आदि द्वारा महादेव का पूजन करें, आरती करें तथा श्रेष्ठ पकवान चढ़ाकर बेल के रस का अर्ध्य देना चाहिए। इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त दंडवत करते हुए शिव जी का ध्यान करना चाहिए। यदि पूजन करने वाला किसी अन्य देवता का भक्त हो तो उसे भी उचित है कि वह ''पंचाक्षरी मंत्र द्वारा'' शिव जी का जप करे। शिव जी के सम्मुख गोमुद्रा दिखाकर, जल में बैठकर तर्पण करें तत्पश्चात् पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प करे। यदि इतनी सार्म्थय न हो तो केवल एक ही ब्राह्मण को भोजन करावें। इस प्रकार जब तक पहला प्रहर व्यतीत न हो जाये, तब तक विविध प्रकार से उत्सव मनाता रहें।

हे नारद ! दूसरा प्रहर आरम्भ होने पर भी इसी प्रकार शिव जी का पूजन करें, परन्तु इस पूजन की विधि में इतना अधिक कहा गया है कि–जौ का लखोहर तथा कमल के पुष्प पहले प्रहर से दुगुने होने चाहिए–और शिव जी का पंचाक्षरी मंत्र जप भी पहले प्रहर से दुगुना करना चाहिए।

हे नारद ! तीसरे प्रहर की पूजा भी इसी प्रकार करनी चाहिए,

परन्तु उसमें इतना कहा गया है कि गेहूँ का लखोहर (चूरमा) तथा मदार के फूल इस पूजन में आवश्यक है।

चौथे प्रहर की पूजा भी पंचोपचार, दशोपचार या षोड़षोपचार विधि से ही करें। इस प्रहर में मिठाईयाँ, उड़द से बना मिष्ठान्न, मूंग या काकु का लखोहर (चूरमा) तथा अनेक प्रकार के फलों के रस से भगवान शिव को अर्घ्य प्रदान करा चाहिए।

हे नारद ! चारों प्रहर की पूजा में शिव जी के उपर असंख्य बिल्वपत्रों का चढ़ाना शुभ कहा गया है, क्योंकि बिल्वपत्र शिव जी को अत्यन्त प्रिय है। बहुत से मनुष्यों को एकत्रित कर चारों प्रहर नृत्य गायन आदि का उत्सव करना चाहिए। इस प्रकार रात्रि भर जागरण करते हुए, शिव जी का ध्यान करना सर्वोपरि कहा गया है। हे ''नारद! मैंने विष्णु जी से शिवरात्रि व्रत की जो विधि सुनी थी, वह तुम्हें सुनायी है।''

शिवरात्री व्रत कथा

देवीर्ष नारद जी ने विधाता श्री ब्रह्मा जी से कहा–हे पिता ! शिवरात्रि व्रत की कथा हमें सुनाने की कृपा करें, आप हमें यह बताने की दया करें कि जिन लोगों ने बिना जाने हुए शिवरात्रि का व्रत किया, उन्हें क्या फल प्राप्त हुआ है ?

यह सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा–हे पुत्र ! इस सम्बन्ध में तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ, शिवरात्रि की रात्रि में जो भी मानव, दानव, देव, नाग, किन्नर आदि इस कथा का श्रवण और पठन–पाठन, मनन करेगा तथा चौदह वर्ष तक लगातार शिवरात्रि में चारों प्रहर भगवान शिव का पूजन, नाम जप आदि सम्पन्न करेगा उसे सम्पूर्ण भोग एवं मोक्ष दोनों की प्राप्ति होगी।

पुरातन समय में एक व्याघ्र (शिकारी) ''निषाद'' नाम से प्रसिद्ध था। वह सभी जीवों को दुःख देने वाला, हिंसक तथा अत्यन्त कठोर था। उसका परिवार बहुत बड़ा था। वह प्रतिदिन वन में जाकर जीव–जन्तुओं का संहार करता तथा चोरी–डाका आदि द्वारा धन प्राप्त करता था। बाल्यावस्था से ही उसने कोई शुभ कर्म नहीं किया था। जिस वन में वह रहता था, वहाँ किसी को चैन नही लेने देता था। इस प्रकार के कुकर्म करते हुए उसे बहुत समय व्यतीत हो गया।

हे नारद ! एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि उसके घर में भोजन समाप्त हो गया। तब उसके माता–पिता, स्त्री आदि ने क्षुधातुर होकर उससे कहा कि हम लोग अब भूख से मर जायेंगे, किसी तरह कहीं से भी भोजन का प्रबन्ध करो। उन लोगों की बात सुनकर निषाद अपना

धनुष वाण ले एक घने वन में जा पहुंचा। जिस दिन की यह घटना है वह ''शिवरात्रि व्रत'' का दिन था, परन्तु निषाद इस बारे में कुछ नहीं जानता था। अस्तु, उस दिन सन्ध्या तक वन में फिरने पर भी भाग्यवश निषाद को कोई जीव–जन्तु दिखाई नहीं दिया। जब रात्रि का समय हुआ, तब वह निषाद अपने मन में अत्यन्त व्याकुल होकर यह विचार करने लगा कि मुझे यहाँ तो कोई शिकार मिला नहीं, तब घर जाकर ही क्या करूँगा? तदुपरान्त वह यह सोचकर एक नदी के तट पर जा पहुँचा।

हे नारद ! इस प्रकार निश्चय करके निषाद नदी के तट पर जो एक बेल का वृक्ष था उसके उपर छिपकर बैठ गया और टकटकी लगा यह देखने लगा कि यदि कोई जीव नदी के तट पर पानी पीने आवे, तो मैं उसका संहार कर डालूँ। जब रात्रि का पहला प्रहर समाप्त होने को हुआ, उस समय वहाँ एक प्यासी। हिरनी उछलती–कुदती हुई आ पहुँची। उसे देखते ही निषाद ने अपने धनुष पर बाण–चढ़ाया, जिसका प्रभाव यह हुआ कि उस धनुषवान के आघात से बिल्व वृक्ष के कुछ पत्ते तथा निषाद के पास रखा हुआ पीने का शुद्ध जल, वृक्ष के नीचे स्थापित शिवलिंग पर गिर पड़े। इस प्रकार भाग्य वश उसके पहले प्रहर की पूजा स्वयं ही पूर्ण हो गयी। उस अन्जान अवस्था में शिव पूजन हो जाने के प्रभाव से निषाद के अनेक पाप नष्ट हो गये।

हे नारद ! उधर हिरणी ने जब निषाद को बेल के वृक्ष के उपर बैठे हुए तथा धनुष ताने हुए देखा तो उसे सम्बोधित करते हुए पूछा–''हे निषाद ! तुमने अपना धनुष क्यों ताना है?'' निषाद ने उत्तर दिया–''हे हिरणी ! मेरे परिवार के सभी लोग दिन भर के भूखे हैं, अस्तु मैंने यह विचार किया है कि मैं तुझे मारकर तेरे मांस से सब लोगों के क्षुधा का निवारण करूँ।''

यह सुनकर हिरणी ने चिन्तित होकर अपने मन में यह विचार किया कि मुझे किसी प्रकार इसका संकट दूर करना चाहिए। अस्तु, उसने निषाद को सम्बोधित करते हुए कहा–''हे–निषाद ! मेरे धन्य भाग्य हैं जो तुम मेरे मांस द्वारा अपना तथा अपने पारीविारिक जनों का मनोरथ पूर्ण करना चाहते हो। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे मांस से तुम्हारे परिवार का पेट भर जायेगा तथा इसमें मुझे कोई आपत्ति भी नहीं है, तथापि मैं यह चाहती हूँ कि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो।''

हे नारद ! हिरणी की बात सुनकर निषाद ने पूछा–''तुम क्या कहना चाहती हो?'' हिरणी बोली–''हे निषाद ! मेरे घर छोटे–छोटे अनेक बच्चे हैं। अस्तु, मैं यह चाहती हूँ कि उन सबको अपने बहन के पास सौंप आऊँ। इतना करके मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगी, तब तुम

मुझे मारकर अपना प्रयोजन सिद्ध करना। संसार में सत्य के समान और कोई वस्तु नहीं है। यह पृथ्वी तथा आकाश भी सत्य के बल पर ठहरे हुए हैं। मैं भी अपने वचन को अवश्य सत्य सिद्ध करूँगी।'' इस प्रकार उस हिरणी ने घर हो आने देने के लिए निषाद से बहुत प्रार्थना की, परन्तु निषाद ने उसे स्वीकार नहीं किया।

हे नारद ! यह देखकर हिरणी ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत हो निषाद को–विश्वास दिलाते हुए, इस प्रकार पुनः कहना आरम्भ किया–''हे निषाद ! यदि मैं अपने बच्चों का प्रबन्ध करके तुम्हारे पास लौट न आऊँ, तो मुझे वह पाप लगे जो वेद के विरूद्ध आचरण करने वाले मनुष्य को लगता है। उस समय निषाद ने हिरणी की बात पर विश्वास करके, उसे घर हो आने की आज्ञा दे दी। तब वह हिरणी जल पीने के उपरान्त अपने घर को चली गयी और निषाद उसी पेड़ पर बैठा हुआ उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा करने लगा।''

हे नारद ! जब रात्रि का दूसरा प्रहर आया, उस समय उस हिरणी की बहिन अपनी बहिन को ढूँढती हुई उसी स्थान पर आ पहुँची। निषाद ने उसे देखते ही फिर अपने धनुष बाण को चढ़ाया, जिसके कारण अनेक बिल्वपत्र टूटकर शिवलिंग पर जा गिरे और उसके दूसरे प्रहर का शिव पूजन अपने आप हो गया। इस अज्ञानावस्था के पूजन से भी उसके असंख्य पाप नष्ट हो गये। तब दूसरी हिरणी ने पहली हिरणी की भाँति व्याध से धनुष चढ़ाने का कारण पूछा और व्याध्र ने अपना उत्तर दुहरा दिया। तदुपरान्त उस हिरणी ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत होकर इस प्रकार कहा–''हे निषाद ! मेरे बड़े भाग्य हैं जो तुम मेरे मांस द्वारा अपनी तथा अपने परिवार की क्षुधा का निवारण करना चाहते हो। यह शरीर नाशवान है, अस्तु इसके द्वारा यदि परोपकार हो तो इससे अधिक आनन्द की बात क्या होगी ? फिर भी मैं यह चाहती हूँ कि मैं अपनी छोटी लड़की को अपने पति को सौंप आऊँ, तत्पश्चात् यहाँ आकर तुम्हारे बाण का लक्ष्य बनूँ''। जब निषाद ने उसकी प्रार्थना को अस्वीकार किया, तब उस हिरणी ने विश्वास दिलाते इस प्रकार कहा–''यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग करूँ तो मुझे वह पाप लगे जो अपनी स्त्री को छोड़कर परायी स्त्री के साथ भोग करने पर लगता है।'' यह सुनकर निषाद ने उसे भी घर हो आने की आज्ञा दे दी। तब वह तो पानी पी कर चली गयी और निषाद उसके लौटने की प्रतीक्षा में जगता हुआ, धनुष ताने अपने स्थान पर बैठा रहा।

हे नारद ! उधर जब हिरणी देर तक घर लौटकर न पहुंची और रात्रि का तीसरा प्रहर आया, तब हिरण उसे ढूँढने के लिए स्वयं भी चिन्तातुर तथा तृषातुर हो, नदी की ओर चल दिया। जब वह तट पर पहुँचा तो उसे भी देखकर निषाद ने अपने धनुष को खींचा, जिसके

कारण पेड़ से कुछ बिल्वपत्र फिर शिवलिंग के उपर गिर पड़े। इस प्रकार तीसरे प्रहर का पूजन पूर्ण हो गया। इस पूजन से निषाद के शेष बचे पापों में आधे पाप और नष्ट हो गये। जब हिरण ने निषाद को धनुष खींचे हुए देखा तो उसका कारण पूछा तब निषाद ने भी पहले समान उत्तर दे दिया। उसे सुनकर हिरण बोला–''हे निषाद ! मेरे धन्य भाग्य हैं जो तुम मेरे शरीर द्वारा अपने पूरे परिवार को तृप्त करना चाहते हो। मेरा एक बालक है, तुम उसे मुझे अपनी स्त्री को सौंप आने दो। बालक को सौंपने के उपरान्त मैं फिर यहाँ आ जाऊँगा, तब तुम मुझे मारकर अपनी अभिलाषा पूर्ण करना। हे नारद ! यह सुनकर निषाद ने उत्तर दिया–हे हिरण ! तुम्हारे समान दो पशु और भी पहले यहाँ आकर जा चुके हैं। वे भी तुम्हारे ही समान प्रतिज्ञा करके यहाँ से गये, परन्तु अभी तक लौटकर नहीं आए। इस प्रकार दो बार धोखा खाने के उपरान्त अब मैं तुम्हारे उपर विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ। मैं तुम्हें किसी भी प्रकार लौटकर नहीं जाने दूँगा।'' निषाद के ऐसे वचन सुनकर हिरण बोला–हे व्याघ्र ! मैंने अब तक सत्य की रक्षा की है और जीवन में कभी भी झूठ नहीं बोला है। मैं शपथपूर्वक तुमसे यह कहता हूँ कि चाहे जो भी हो, मैं तुम्हारे पास अवश्य लौटकर आऊँगा।

हे नारद ! जिस समय घर पर हिरण तथा हिरणी सब एकत्र हुए और उन्होंने अपना–अपना वृत्तान्त कहा तो वे एक दूसरे का हाल सुनकर अत्यन्त शोक करने लगे। तब जो हिरणी सबसे पहले वधिक को विश्वास दिलाकर लौट आयी थी, वह अपने पति से इस प्रकार कहने लगी–''हे स्वामी ! सर्वप्रथम मैं उस वधिक से प्रतिज्ञा करके आयी हूँ। आप यहीं घर में रहकर बच्चों का पालन करते रहें।'' यह सुनकर दूसरी हिरणी ने कहा–''नहीं बहिन ! यह कभी नहीं हो सकता। पहली स्त्री घर की स्वामिनी कहलाती है, अस्तु मैं आपको न जाने देकर स्वयं उस वधिक के पास जाऊँगी।'' अपनी दोनों स्त्रियों की ऐसी बातें सुनकर हिरण ने कहा–''पुरूष के रहते हुए स्त्री का जाना श्रेष्ठ नहीं है, अस्तु मैं अपने मांस से उस वधिक के परिवार को तृप्त करूँगा। बच्चों का पालन केवल माता ही कर सकती है।'' अपने पति के यह वचन सुनकर हिरनियों ने एक साथ कहा–''हे स्वामी ! हम विधवा होकर इस घर में कभी नहीं रहूंगी।''

हे नारद ! इस प्रकार उन तीनों ने जब स्वयं जाने के लिए आग्रह किया, तब वे सबके सब उस वधिक के पास चल दिए। अपनी माताओं तथा पिता को जाते हुए देखकर बच्चों ने यह सोचा कि जब हमारे रक्षक ही नहीं रहेंगे तो हम किसके आश्रय पर जीयेंगे। अस्तु, हमें भी इनके साथ चलना उचित है। तब वे भी उनके साथ चल दिए। इस प्रकार हिरण का सम्पूर्ण परिवार उस वधिक के समीप जा पहुँचा। जब

वधिक ने उन सबको अपने पास आते हुए देखा तो पूर्व की भाँति फिर अपना धनुष चढ़ाया तो फिर बिल्वपत्र तथा जल पुनः शिवलिंग के उपर गिर पड़े और उसके चौथे प्रहर का पूजन समाप्त हो गया। चौथा पूजन होते ही वधिक के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये। तब उसे श्रेष्ठ बुद्धि तथा उत्तम ज्ञान की प्राप्ति हुई। जिस समय हिरण ने दोनों हिरणियों तथा बच्चों के सहित उसके पास जाकर यह कहा–''हे वधिक ! अब तुम हमारे शरीर को शुद्ध करके, हम सबका संहार करो।'' निषाद अपने मन में यह विचार करने लगा कि जिन पशुवों को बुद्धिहीन कहा जाता है, वे मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक धन्य हैं, क्योंकि वे अपनी शरीर को नष्ट करके भी पराया उपकार करने को तैयार रहते हैं। न जाने इन अशुभ कर्मों के कारण मैं किस अवस्था को प्राप्त होऊँगा ?

हे नारद ! इस भाँति अपने मन में निश्चय करके वधिक ने आँखों से आँसू बहाते हुए उन हिरणों को सम्बोधित कर उच्च स्वर में कहा– हे शुद्ध पशुओं ! तुम अपने घर लौट जाओ, तुम्हारा जीवन तथा तुम्हारा धर्म धन्य है। मैं तुम्हें प्रतिज्ञा के बन्धन से मुक्त करता हूँ।

जिस समय निषाद ने उच्च स्वर से यह शब्द कहा, उस समय शिव जी अत्यन्त प्रसन्न होकर उसके सम्मुख प्रकट हो गये। उन्होंने वधिक का हाथ पकड़ते हुए कहा–''हे निषाद ! मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुमने शिवरात्रि का व्रत रखकर अपने सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर दिया है। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हमसे मांग लो।''

हे नारद ! भगवान सदा शिव के श्रीमुख से यह वचन सुनकर, निषाद उनके चरणों पर गिर पड़ा। फिर हाथ जोड़े हुए केवल यह कह सका–''हे प्रभो ! मैंने आपका दर्शन करके ही सब कुछ पा लिया है।'' तब भगवान भूतभावन ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसका नाम स्कन्द रखा और स्वयं ही अनेक वर देते हुए यह कहा–''हे निषाद ! तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। तुम श्रृंगेश्वर पुर को अपनी राजधानी बनाकर वहाँ सुख पूर्वक राज्य करो। तुम्हारे अनेक सन्तानें होंगी तथा सभी देवता तुम्हारी प्रशंसा किया करेंगे। हमारे भक्त राम चन्द्र जी तुम्हें अपना मित्र बनाकर संसार में यश प्रदान करेंगे।'' इतना कहकर भगवान सदा शिव अलक्षित हो गये। हे नारद ! भगवान भूत भावन के दर्शन पाने से उन हिरणों के भी समस्त पाप नष्ट हो गये। तब उन्होंने भी मृगयोनि त्याग कर देव स्वरूप प्राप्त किया। तदुपरान्त वे शिव जी की कृपा से विमानों पर आरूढ़ हो, देवलोक को चले गये। वे मृग आज तक नक्षत्र रूप से आकाश में दिखाई देते हैं। इस चरित्र को करने के उपरान्त भगवान सदा शिव प्रत्यक्षरूप में तो अन्तर्धान हो गये तथा लिंग रूप से वहीं स्थित होकर–''ब्याधेश्वर'' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्री शिव की कृपा से वह व्याघ्र भी स्कन्द नाम से प्रसिद्ध हो,

श्रृंगवेरपुर में जा पुहंचा, तथा समस्त भीलों का राजा बनकर सुख पूर्वक राज्य करने लगा। जब त्रेता युग में राजा रामचन्द्र जी ने अवतार लिया, तो उन्होंने स्कन्द के घर पहुँचकर उसे सम्मानित किया। राम चन्द्र जी ने अत्यन्त कृपा करके उसे शिव जी की भक्ति प्रदान की तथा शिव जी के अनुग्रह से वह इस लोक में सब प्रकार का सुख भोग कर अन्त में मोक्ष प्राप्त किया।

हे नारद ! शिवरात्री के व्रत की ऐसी महान महिमा है कि उस व्याघ्र ने अनजान में ही शिवरात्रि का व्रत करके मुक्ति को प्राप्त कर लिया। सभी वेद तथा पुराणों ने शिव रात्रि व्रत को सभी व्रतों का– ''स्वामी'' कहा है। व्याधेश्वर शिवलिंग की कथा जो भी प्राणी शिवरात्रि में श्रवण करेगा, वह समस्त पापों से छूट कर, इह लोक में सम्पूर्ण सुख भोगककर अन्त में शिवलोक प्राप्त करेगा।

(इति श्री शिवरात्रि व्रत कथा सम्पूर्ण)

शिवजी व्रत का उद्यापन विधि

नारद जी ने कहा–''हे परमपिता ! आपने शिवरात्रि व्रत की विधि का तो वर्णन किया कथा भी सुने, अब मेरी यह इच्छा है कि आप उस–''उद्यापन की विधि'' को सुनाने की कृपा करें, जिसे करने से शिवरात्रि का व्रत पूर्ण होता है। जिसके द्वारा शिव जी अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर, दोनों लोकों की कामनाएँ पूर्ण करते हैं।''

ब्रह्मा जी बोले--हे नारद ! यह परम शुभ शिवरात्रि का व्रत चौदह वर्ष तक करना चाहिए। इसके पश्चात् पन्द्रहवें वर्ष में उद्यापन करना चाहिए। उद्यापन की विधि इस प्रकार है--

त्रयोदशी के दिन संयपूर्वक रहे तथा चतुर्दशी के दिन निर्जल व्रत धारण करे। किसी शिवालय या घर में ही दिव्य मण्डल की रचना करके इसके मध्य में–सर्वतोभद्र चक्र का विविध प्रकार के रंगदार अक्षत से निर्माण कर–शिवलिंग या पार्थिव लिंग की स्थापना करना चाहिए। तत्पश्चात् आठ लिंगतोभद्र चक्रों पर आठ कलशों की प्राण प्रतिष्टा वैदिक विधि से कराकर फूल तथा वस्त्रों से सुसज्जित करे। कलश के ऊपर शिव–गिरिजा एवं नन्दीश्वर की स्वर्ण प्रतिमाओं की स्थापना करें। इन तीनों मूर्तियों को अपने सार्मथ्य के अनुसार स्वर्ण से बनवाना चाहिए। रात्रि में चारों प्रहर महादेव का षोड़षोपचार या दशोपचार विधि से पूजन करें तथा सम्पूर्ण रात्रि स्तोत्र पाठ, नृत्य, गायन, भजनादि करते रहे। उद्यापन विधि वैदिक रूप से समर्पण

कराने हेतु योग्य वैदिक पंडित का चयन करे तथा उसकी आज्ञा से ही शिव पूजन करें।

हे नारद ! इस प्रकार रात्रि भर पूजन करने के उपरान्त प्रातः काल होने पर पुनः स्नान करें तथा सबके साथ मिलकर शिव जी का पुनः पूजन (षोड़षोपचार) करें। फिर हवन व आरती विसर्जन आदि करने के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावें और उन्हें वस्त्र, आभूषण धन आदि दान में देकर प्रसन्न करे। जिस आचार्य को वरण किया हो, उसकी सबसे अधिक (पुरोहित पंडित का) सेवा करें। उसे विधिपूर्वक गोदान करें तथा समस्त सामग्री सहित शिव–गिरजा एवं नन्दी की स्वर्ण मूर्तियाँ उसी को दे दें। आचार्य को दण्डवत प्रणाम करने के पश्चात् शिव जी को पुष्पांजलि भेंट करता हुआ स्तुति करे। तदुपरान्त ब्राह्मणों की आज्ञानुसार स्वयं भी परिवार सहित भोजन करें।

जो लोग साधन सम्पन्न हों, उन्हीं के लिए यह उपरोक्त विधि का उद्यापन कहा गया है। जो सामर्थ्यहीन हों, वे साधारण रीति से (पंचोपचार विधि से) पूजन करके शिव जी को केवल पुष्पांजलि भेंट द्वारा ही अपना उद्यापन पूरा कर सकते हैं। उद्यापन कर लेने से व्रत पूर्ण हो जाता है।

(नौंवा भाग)

समस्त ऋद्धि-सिद्धि अनायाश ही प्राप्ति कराने वाला - भगवान शिव का प्रदोष व्रत विधि खण्ड

प्रदोष अर्थात् त्रयोदशी व्रत की विधि

महाशिवपुराण के दशम खण्ड के नौवाँ अध्याय में प्रदोष व्रत का माहात्म्य, विधि आदि का वर्णन करते हुए ब्रह्मा जी कहे हैं–हे नारद! अब मैं प्रदोष अर्थात् ''त्रयोदशी'' का व्रत वर्णन करता हूँ। मैं उन स्त्री–पुरुषों को धन्य समझता हूँ जो इस व्रत को धारण करते हैं।

प्रत्येक मास के दोनों पक्ष में दो त्रयोदशी आती है। इस व्रत का विधान यह है कि व्रत करने वाला त्रयोदशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त्त में निद्रा त्यागे और स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत्त हो भगवान सदा शिव का (शिव मंदिर में जाकर) पंचोपचार पूजन एवं उन्हें जल और बिल्वपत्र चढ़ावें तथा व्रत का संकल्प करके प्रदोष व्रत धारण करे। जब तीन घड़ी दिन शेष रह जाय, तब अपनी शक्ति के अनुसार पुनः स्नान कर मौन धारण करे तथा श्वेत वस्त्र पहने। संध्या के समय भगवान शिव का, अपने घर में ही–''षोड़षोपचार विधि'' से ब्राह्मण द्वारा या स्वयं ही कराकर, स्वयं बिना नमक का भोजन करें। परन्तु याद रखे–षोड़षोपचार पूजन के पश्चात् व्रती प्रदोष व्रत की कथा अवश्य सुने और हवन आरती करें।

इस प्रकार लगातार (दोनों त्रयोदशी को) एक वर्ष अर्थात् चौबीस व्रत रख कर उद्यापन करने से भगवान शिव अपने उपासक को अनायाश ही सम्पूर्ण ऋद्धि–सिद्धि प्रदान कर देते हैं–और उपासक सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।

हे नारद ! इसके समान तथा शिवरात्रि व्रत के समान और कोई व्रत नहीं है। वेद पुराणों का यह कहना है कि प्रदोष में किया शिव जी का पूजन अत्यन्त आनन्द दायक होता है, यह बात तीनों लोकों में प्रसिद्ध है।

भगवान शिव का प्रदोष व्रत कथा

हे नारद ! पुरातन काल में उज्जयनी पुरी में चन्द्रसेन नामक एक राजा शिव जी का परम भक्त हुआ। यह सदैव त्रयोदशी का व्रत रखता और विधिपूर्वक शिव जी का पूजन किया करता था। वह महाकाल लिंग की पूजा करता और हर समय उन्हीं के ध्यान में मग्न बना रहता था।

एक दिन मणिभद्र नामक शिव जी के एक गण ने उस राजा पर प्रसन्न होकर, उसे ''चिन्तामणि'' नामक एक मणि दी। उस मणि का यह गुण था कि जिस मनुष्य के पास वह मणि रहती थी तथा जो मनुष्य उसे देखता, स्पर्श विपत्तियों से छूटकर अतुलनीय आनन्द को प्राप्त करता था। उस मणि का स्पर्श पाते ही सभी धातुएं, स्वर्ण की हो जाती थी, अस्तु उस मणि को धारण करने के कारण राजा चन्द्रसेन सूर्य के समान तेजस्वी प्रतीत होने लगा।

हे नारद ! जब अन्य राजाओं को उस मणि का प्रभाव ज्ञात हुआ, तब उन्होंने चन्द्रसेन से उस मणि को स्वयं प्राप्त करना चाहा। परन्तु राजा ने किसी को भी वह मणि नहीं दी। निदान सब राजाओं ने एकत्रित होकर उसके नगर पर चढ़ाई कर दी। जब उज्जयिनी पुरी के चारों ओर उन राजाओं की सेनाएँ घेरा डाले पड़ी हुई थीं तब सभी नगर–निवासी अत्यन्त व्याकुल हो रहे थे।

उसके दूसरे दिन शिव जी का–''प्रदोष व्रत''–आया। तब राजा अपने शत्रुओं की कुछ भी चिन्ता न करके, तीन घड़ी दिन शेष रहने पर भगवान महाकाल का पूजन करने के निमित्त शिव मंदिर में जा पहुँचा। जिस समय राजा चन्द्रसेन महाकाल का पूजन कर रहा था, उसी समय एक स्त्री अपनी गोद में पाँच वर्ष के एक बालक को लेकर, कहीं से उसके पास आ पहुँची। राजा जिस प्रकार शिव जी का पूजन कर रहा था, उस विधि को उस स्त्री का बालक बड़े ध्यान पूर्वक देखता रहा। कुछ देर बाद जब वह स्त्री अपने पुत्र को साथ लेकर घर चली गयी, तब घर जाकर उस बालक के हृदय में शिव जी की ऐसी भक्ति उत्पन्न हुई कि वह कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा उठा लाया और जिस प्रकार उसने राजा को पूजन करते हुए देखा था, उसी प्रकार स्वयं भी उसका पूजन करने का प्रयत्न करने लगा। हे नारद ! जिस समय वह

छोटा सा बालक ''शिला खण्ड'' का पूजन करने में संलग्न था, उसी समय उसकी माता ने उसको भोजन करने के लिए दो तीन बार आवाजें दी, परन्तु वह उन्हें सुनकर भी अपने स्थान पर निश्चय भाव से बैठा रहा। तब वह स्त्री स्वयं अत्यन्त क्रोध में भरकर उसके पास जा पहुँची। जब उसने बालक को एक पत्थर का पूजन करते हुए देखा तो पहले उसे खूब मारा, फिर उस शिवलिंग को उठाकर दूर फेंक दिया। इसके बाद उसे हाथ पकड़कर घर के भीतर खींच ले गयी। तब वह बालक हाय–हाय करके रोने लगा तथा उसी अवस्था में मूर्छित हो गया। मूर्च्छावस्था में उसने एक दृश्य देखा, जिसमें यह जान पड़ता था कि एक शिवालय रत्नों से बना हुआ है। उसके मध्य में एक रत्नजड़ित सिंहासन रखा है तथा उस सिंहासन पर उसका शिवालिंग प्रतिष्ठित है। उस दृश्य को देखकर बालक ने भगवान सदा शिव की अत्यन्त स्तुति करते हुए प्रार्थना की–''हे प्रभो ! मेरी माता मूर्ख हैं, अतः आप उसका अपराध क्षमा कर दें।''

हे नारद ! संध्या के समय जब उस बालक की आँखें खुली तो उसने यह देखा कि उस का घर सचमुच ही रत्न तथा स्वर्ण से निर्मित परम सुन्दर हो गया है। इस अद्‌भुत चरित्र को देखकर बालक ने सच्या पर सोई हुई अपनी माता को जगाया। जब माता ने अपनी आँखें खोली और वह अद्‌भुत चरित्र देखा तो अत्यन्त प्रसन्नता में भरकर अपने पुत्र से कहने लगी–हे पुत्र ! यह सब शिव जी कृपा–का फल है, अस्तु किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं करना चाहिए। जब राजा चन्द्र सेन को यह समाचार मिला कि उस बालक की भक्ति से प्रसन्न होकर शिव जी ने ऐसी कृपा की है, तो वह स्वयं उस मंदिर को देखने गया। वहाँ उस बालक की तथा उसकी माता की अत्यन्त प्रशंसा की। जब अन्य आक्रामक राजाओं को यह समाचार मिला, तो वे उस नगर पर शिव जी की ऐसी कृपा देखकर अपने–अपने राज्य को लौट गये।

ब्रह्मा जी बोले–हे नारद ! जब अन्य राजाओं ने अपने दूतों द्वारा शिव जी की कृपा का यह समाचार सुना, तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय उन सबने परस्पर यह विचार किया कि जिस स्थान पर शिव जी की ऐसी कृपा है, वहाँ पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर सकते हैं ? अस्तु, सभी एकत्रित हो, शस्त्र डाल, राजा चन्द्र सेन के समीप जा पहुंचे और उससे अपने अपराधों की क्षमा याचना करने लगे। तदुपरान्त सबने उस स्त्री के घर पहुँचकर वह दृश्य अपनी आँखों से देखा तथा उस बालक की अत्यन्त प्रशंसा की। फिर उन्होंने उस बालक को अपनी ओर से असंख्य धन देकर, सब गोपों का राजा बनाया।

हे नारद ! जिस प्रकार जिस समय सब राजा उस बालक के घर उपस्थित थे, उसी समय हनुमान जी ने वहाँ प्रकट होकर सबको अपने

दर्शन से कृतार्थ किया। हनुमान जी को देखकर सब राजाओं ने दंडवत की। तब हनुमान जी उस बालक को अपनी गोद में ले कर सब लोगों को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार बोले–"हे राजाओ ! राजा चन्द्रसेन के ऊपर शिव जी की अत्यन्त कृपा है। भगवान सदा शिव ने–प्रदोष (त्रयोदशी व्रत) व्रत का "माहात्म्य" प्रकट करने के लिए ही यह सब चरित्र किया है। अब उचित है, कि तुम सब लोग भी भगवान सदा शिव के सेवक बनो।

विशेषकर जब त्रयोदशी के दिन शनिवार हो, तब उसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। दोनों पक्षों की त्रयोदशी तिथियों में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी अधिक शुभ कही गयी है। उस बालक ने शुक्ल पक्ष की शनिवार युक्त चतुर्दशी को शिव जी का पूजन किया, इसलिए उसे ऐसी शुभ गति प्राप्त हुई है। उस बालक की आठवीं पीढ़ी में नन्द नामक गोपों का एक राजा उत्पन्न होगा। उसके घर में भगवान विष्णु कृष्ण रूप में अवतार लेगें। आज से यह बालक "श्रीकर" के नाम से संसार में प्रसिद्ध होगा। तुम सब लोक अब अपने–अपने घर जाओ और भगवान सदा शिव की पूजा में संलग्न रहो। तुम सब प्रदोष व्रत में भस्म आदि धारण कर प्रदोष के भीतर ही भगवान सदा शिव का पूजन किया करना।

हे नारद ! इतना कहकर हनुमान जी श्रीकर को शिव पूजन की विधि का उपदेश किया। सर्वप्रथम उन्होंने नाम के माहात्म्य का वर्णन किया, फिर भस्म धारण करने की रीति बतलायी, अन्त में रूद्राक्ष की महिमा सुनाकर अर्न्तध्यान हो गये। उस समय से श्रीकर ब्राह्मण के साथ भगवान सदा शिव का पूजन तथा त्रयोदशी का व्रत करने लगा। राजा चन्द्रसेन तथा श्रीकर दोनों ही शिव भक्तों में प्रमुख तथा त्रयोदशी का व्रत धारण करने वालों में अत्यन्त प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! "त्रयोदशी व्रत" की ऐसी महिमा है। त्रयोदशी व्रत का यह माहात्म्य सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला है। जो लोग त्रयोदशी के दिन विधि विधान से इस कथा को पढ़ते, सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, वे भी दोनों लोकों में सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का भोग करते हैं।

भगवान शिव का प्रदोष व्रत करने की दूसरी विधि

महिलाओं के लिए पुत्र प्राप्ति हेतु अमोघ शक्तिाशी व्रत

महाशिवपुराण के दशम खण्ड के तेरहवें अध्याय में "प्रदोष व्रत" की पुत्र प्राप्ति हेतु विधि बताते हुए विधाता श्री ब्रह्मा जी ने कहा

हैं कि–हे नारद ! प्रदोष व्रत की दूसरी विधि यह है कि–त्रयोदशी के दिन शनिवार पड़े तथा शुक्ल पक्ष हो, उस दिन सन्तान खास कर पुत्र प्राप्ति हेतु ''त्रयोदशी का व्रत'' (प्रदोष व्रत) आरम्भ करें। यदि तेरस मंगलवार का हो तो वह भी शुभ होती है। शुक्रवार को पड़ने वाली तेरस (त्रयोदशी) स्त्री सन्तान को पड़ने वाली तेरस (त्रयोदशी) स्त्री सन्तान तथा भाग्य की वृद्धि करती है। रविवार के दिन पड़ने वाली त्रयोदशी आयु वृद्धि तथा रोग शान्ति के लिए फलदायक कही गई है।

व्रती को चाहिए कि वह संकल्प करके संध्या के समय प्रीतिपूर्वक भगवान सदा शिव का पंचोपचार, दशोपचार या षोड़षोपचार पूजन करें। घर में चारों ओर दीपक जलाकर, अपने मनोरथों को प्रकट करता हुआ शिव जी की अनेक प्रकार से स्तुति करे। फिर ''नन्दी के अण्डकोष'' को देखकर, उसके दोनों सींगों के बीच भाग को देखे। तदुपरान्त उसकी पूँछ का दर्शन करे। ऐसा करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

''संसार में जितने भी तीर्थ हैं, वे सब बैल के अण्डकोष में स्थित रहते हैं।'' तदनन्तर ब्राह्मणों को यथा शक्ति दक्षिणा, भोजन आदि से संतुष्ट कर मौन व्रत धारण करे। अन्त में संध्या के समय स्वयं भी लवण रहित भोजन करे अथवा खीर खाये। इस प्रकार एक वर्ष तक त्रयोदशी का व्रत धारण करे। यदि एक वर्ष तक व्रत करने की सुविधा न हो तो शनिवार की त्रयोदशी का केवल एक बार ही प्रदोष व्रत धारण करके सब व्रतों का फल प्राप्त कर ले।

हे नारद ! अब तुम्हें यह बताता हूँ कि स्त्रियों को प्रदोष व्रत किस प्रकार करना चाहिए।

स्त्रियों को उचित है कि वे मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को व्रत आरम्भ करें। उस मास में उन्हें चमेली वृक्ष की डाल से दतवन करना चाहिए। तथा भरूआ के पुष्प शिवजी के उपर चढ़ाने चाहिए। स्नान आदि से निवृत्त होकर, जब वे शिवजी का पूजन करने बैठे, तो सर्वप्रथम शिवलिंग के उपर भरूआ का पुष्प चढ़ावे, फिर अन्य विधियों से ब्राह्मण द्वारा ''षोड़शोपचार'' पूजन करवाके नारंगी रस का अर्ध्य प्रधान करें तथा फेनी एवं चिरौंजी का नैवेद्य लगावे। मार्गशीर्ष मास के पूजन में शिव जी का नाम ''अनंग'' होता है। स्त्रियों को चाहिए कि वे पूजन आदि से निवृत्त होकर, रात को शहद का भोजन करें।

हे नारद ! पौष मास में शिव जी का नाम ''लटेश्वर'' होता है। अस्तु, स्त्रियों को चाहिए कि इस मास में गूलर की दतवन करे तथा ''जाति पुष्प'' शिवजी के उपर चढ़ावे। अनार रस का अर्घ्य प्रदान करे और अशोक बत्ती का नैवेद्य लगावे। रात्रि को उस रोज, उस महीने में स्त्रियों को श्वेत चन्दन खाना चाहिए।

हे नारद ! माघ मास में शिवजी का नाम योगेश होता है। अस्तु स्त्रियों को चाहिए कि वे इस मास में विष्णु कान्ता की दतवन करे, कुन्द के पुष्प शिव जी पर चढ़ावे। बीजपूर का अर्घ्य दे तथा ईख का नैवेद्य लगावे।

हे नारद ! फाल्गुन मास में शिव जी का नाम ''वीरेश'' होता है। अस्तु, इस मास में स्त्रियों को अनार की दतवन करनी चाहिए। इस मास में शिव जी के उपर धतूरे का पुष्प चढ़ाना अति उचित है।

हे नारद ! चैत्र मास में शिव जी का नाम ''भैव'' होता है। इसलिए इस मास में बेल डाली (बिल्व) की दतवन करनी चाहिए। धतूरे को शिव जी पर चढ़ाना चाहिए और उसी के रस का अर्घ्य भी प्रदान करना चाहिए। इस मास में ''खजूर'' का नैवेद्य लगाना चाहिए तथा रात्रि के समय (पूजन–व्रत वाला रात्रि को) स्वयं कपूर खाना चाहिए।

हे नारद ! बैसाख मास में शिवजी का नाम ''महादेव'' होता है, इसलिए इस मास में स्त्रियों को उचित है कि लटजीरे की दतवन (दातुन) करे, शिव जी के उपर चमेली का पुष्प चढ़ावे, उत्पल का अर्घ्य दे तथा ''पटुक नामक'' अन्न का नैवेद्य लगावे।

हे नारद ! ज्येष्ठ मास में शिव जी का नाम ''प्रद्युम्न'' होता है। इसलिए इस मास में स्त्रियों को सहदेई की दातुन करनी चाहिए, शिव जी के उपर बकुल का पुष्प चढ़ाना चाहिए और रात्रि के समय स्वयं लौंग खाना चाहिए।

हे नारद ! आषाढ़ में शिव जी का नाम ''उमापति'' होता है। इसलिए इस मास में स्त्रियों को उचित है कि वे नारंगी डाली की दातुन करे तथा शिव जी के उपर कदम्ब का पुष्प चढ़ावे, स्वयं रात्रि को तिल खानी चाहिए।

हे नारद ! श्रावण मास में शिव जी का नाम ''शूलपाणि'' होता है। इस मास में स्त्रियों को उचित है कि वे जाति पुष्प की डाली का दातुन करे, तथा कमल का पुष्प शिव जी के उपर चढ़ावे। जामुन फलों के रस का अर्घ्य देकर दूध का नैवेद्य लगाना उचित कहा गया है। रात्रि के समय स्वयं पूए खाने चाहिए।

हे नारद ! भाद्रपद मास में शिव जी का नाम ''सदव'' होता है। इस मास में व्रती स्त्री कंकोल की दातुन करे तथा चम्पक के फूलों से शिव जी का पूजन करना चाहिए, स्वयं रात्रि के समय अगरू का भोजन करना चाहिए।

हे नारद ! आश्विन मास में शिव जी का नाम ''वामदेव'' होता है। इसलिए इस मास में व्रत स्त्रियों को पुनः कंकोल की दातुन करनी चाहिए तथा कनेर के पुष्प शिव जी के उपर चढ़ाने चाहिए। रात्रि के समय स्वयं काशी फल का भोजन करना चाहिए।

हे नारद ! बारहवें कार्तिक मास में शिव जी का नाम "जगदीश्वर" होता है, इसलिए व्रती स्त्रियाँ इस मास में उर्जकदम्ब की दातुन करें तथा शिव जी के उपर रक्त उत्पल चढ़ावे। रात्रि के समय में फल खाना चाहिए।

हे नारद ! इस प्रकार जो स्त्री प्रदोष व्रत करती है, उसे अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है–इसमें कोई संशय नहीं। इस भांति एक वर्ष तक व्रत धारण कर लेने पर व्रत का उद्यापन कर लेना चाहिए। इस विधि के सुनने तथा पढ़ने से भी दोनों लोकों में आनंद प्राप्त होता है।

प्रदोष व्रत उद्यापन विधि

जब व्रती एक वर्ष तक दोनों पक्षों का त्रयोदशी व्रत (24) पूर्ण कर लें तो व्रत का उद्यापन करें। उद्यापन के एक दिन पहले शिवालय में जाकर "गौरी–गणेश" का पूजन "पंचोपचार या दशोपचार" पूजन करें। तत्पश्चात् रात्रि भर भगवान शिव का कीर्तन–भजन परिवार सहित इष्ट–मित्रों के साथ करें। अगले दिन (त्रयोदशी को) स्नान से प्रातः काल ही निवृत्त हो जावें। घर में ही सुन्दर मण्डप निर्माण कर, भगवान शिव व माता पार्वती की मूर्ति या प्रतिमा सिंहासन पर स्थापित कर विधिवत (वैदिक पंडित द्वारा) षोड़षोपचार पूजन सम्पन्न करावें, खीर से हवन करें। ब्राह्मणों को वस्त्र दान करें और उन्हें खीर का ही भोजन करावें, उन्हें दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करें।

इस व्रत को करने से पुत्र की प्राप्ति, दरिद्रता नाश, पापों से मुक्ति, धन की प्राप्ति तथा विद्या और बुद्धि की प्राप्ति होती है।

शीघ्र सुयोग्य पति प्राप्त कराने वाला भगवान शिव का "हरितालिका व्रत"

यह पावन व्रत भगवान विष्णु के निदेशानुसार भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु स्वयं माता पार्वती जी ने किया था।

उपासको ! हिमाचल कन्या भगवती पार्वती ने शिव जी को पति रूप में प्राप्त करने हेतु घोर तप किया। उनके तप से प्रसन्न होकर सर्वप्रथम भगवान नारायण (हरि) प्रकट हुए और पार्वती जी को निम्न व्रत की विधि, पूजन स्तोत्र,–भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु निर्देशित किए।

भगवान हरि ने कहा–"हे पार्वती ! भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया

तिथि को जाप व्रत रख कर भगवान शिव का षोड़षोपचार पूजन कर–भगवान शिव के 108 नामों के स्तोत्र का पाठ करो, यह व्रत करने से भोलेनाथ प्रसन्न होकर तुम्हें अर्द्धांगिनी रूप में स्वीकर कर लेंगे''। माता पार्वती ने भगवान हरि के निर्देश को शिरोधार्य कर भगवान शिव की अर्द्धांगिनी बन गई।

भगवान हरि ने इस व्रत की पार्वती को ''विधि तालिका'' बतायी थी, इसलिए इस पावन व्रत का नाम ''हरितालिका व्रत'' पड़ा।

भगवान हरि ने कहा हे पार्वती ! भाद्रशुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को उपवास करें। प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर भगवान शिव का ''षोड़शोपचार पूजन'' करें फिर निम्न स्तोत्र का पाठ करें–(मूल पाठ)

हरितालिका व्रत स्तोत्र

(भगवती पार्वती द्वारा कृत)

(पार्वत्युवाच)

शरीरार्धमहं शम्भोर्येन प्राण्स्यामि-केशव।
तदिदानी समाचक्ष्व स्तोत्रं शीघ्रफल प्रदम्।।

(नारायण उवाच)

अस्ति गुह्यतमं गौरि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
शम्भोरहं प्रवक्ष्यामि पठतां शीघ्रकामदम्।।

(विनियोग)

ॐ अस्य श्री शिवाष्टोत्तर शतदिव्यनामा मृत स्तोत्र माला मन्त्रस्य नारायण ऋषिरनुवटुप् छन्दः श्री सदाशिवः परमात्मा देवता श्री सदाशिव प्रीत्यर्थेज विनियोगः।।

(ध्यान)

धवलवपुष मिन्दोर्मण्डले संन्निविष्टं,
भुजगवलयहारं भस्मदिग्धाङ्गमीशम्,
हरिणपरशुपाणिं चारू चन्द्रार्धमौलि,
हृदय कमल मध्ये संततं चिन्तयामि।
शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः।

वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नील लोहितः।।
शंकरः शूलपाणिश्चद्ववादिङ्ग विष्णुवल्लभः।
शिपिविष्टोऽम्बिका नाथः श्रीकंठो भक्तवत्सलः।।
भवः सर्वस्त्रिलोकेशः शिति कण्ठः शिवप्रियः।
उग्रः कपा[illegible]ः कामारिन्धका सुरसूदनः।।
गंगाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधराः।।
कैलाश वासी कवची कठोरिस्त्र पुरान्तकः।
वृषाङ्को वृषभारूढ़ो भस्मोद्धलित विग्रहः।।
सामप्रियः स्वरमयस्त्रयी मूर्तिनीश्वरः।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्नि लोचनः।।
हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवस्त्रः सदाशिवः।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणानाथः प्रजापतिः।।
हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरिशो गिरिशोऽनधः।
भुंजगभूषणे भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः।।
कृत्तिवासा पुरारातिर्भगवान प्रमथा धिपः।
मृत्युञ्जयः सूक्ष्म तनुर्जंग द्व्यापि जगदगुरुः।।
व्योमकेशो महासेनजन कश्चारुविक्रमः।
रूद्रोभूतपतिः स्थार्नुहिर्षुध्न्यो दिगम्बरः।।
अष्टमूर्तिर नेकात्माः सात्विकः शुद्ध विग्रहः।
शाश्वतः खण्डपरशु रणपाश विमोचकः।।
मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः।
पूषदन्त भिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः।।
भगनेत्रभिद्व्क्त : सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
अपवर्गप्रदोऽनन्त स्तारकः परमेश्वरः।।
एतदष्टोत्तरशत नाम्नामाम्नायेन सम्मितम्।
विष्णुना कथितं पूर्व पार्वत्या इष्टसिद्धये।।

शंकरस्य प्रिया गौरी जपित्वा त्रैकालभन्वहम्।
नोदिता पद्मनाभेन वर्षमेकं प्रयत्नतः।।
अवाप सा शरीरार्धं प्रसादाच्छूलधारिणः।
यस्त्रिसंध्यं पठेच्छम्भोर्नाम्ना भवेष्टात्तरं शतम्।।
शतरूद्रित्रिरा वृत्या यत्फलं प्राप्यते नरैः।
तत्फलं प्राप्नुया देतदेकवृत्त्या जपन्नरः।।
बिल्वपत्रैः प्रशस्तैर्वा पुष्पैश्च तुलसीदलैः।
तिलाक्षतैर्चजेद् यस्तु जीवन्भुक्तो न संशयः।।
नाम्नामेषां पशुपते रेक मेवाप वर्गदम्।
अन्येषां चावशिष्टानां फलं वक्तुं न शक्यते।।

(इति श्री शिवरहस्ये गौरी नारयण संवादे शिवाष्टोत्तर शतदिव्य नामामृत स्तोत्रं सम्पूर्णम्)

हरितालिका व्रत कथा

ब्रह्मा जी ने कहा–हे नारद ! हिमाचल कन्या भगवती पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तप किया। जिस स्थान में पार्वती तप करती थीं, वह बड़ा ही भयानक और सिंह, व्याघ्र, सर्प आदि हिंसक प्राणियों से पूर्ण था। वहाँ दिन–रात बर्फ की वर्षा सी होती रहती थी। पार्वती ने वहाँ बारह वर्ष तक नीचे की ओर मुख करके केवल धुएँ का सेवन किया। चौंसठ वर्ष तक केवल सूखे पत्ते खाकर रहीं।

वैसाख की गर्मी में पञ्चाग्नि का ताप किया और श्रावण की अंधेरी में वर्षा में भीगते बितायीं। पुत्री की इस प्रकार की कठोर तपस्या देखकर पिता हिमाचल को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने मुनि नारद जी की सम्मति से भगवान विष्णु के साथ उसका विवाह करना स्थिर किया। यह समाचार जब अनन्य उपासिका पार्वती ने सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। वे अपनी विश्वासपात्र सखियों की सलाह से दूसरे घोर वन में चली गयीं और वहाँ अन्न जल का सर्वथा त्यागकर उन्होंने शिव जी की बालुकामयी मूर्ति बनाकर उसका पूजन किया और रात्रि जप

कीर्तन करती हुई जागती रहीं, उस दिन भाद्रशुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि थी और हस्त नक्षत्र था।

भगवान शिव जी पार्वती की सच्ची अनन्य भक्ति से, पूर्ण दृढ़ व्रत से परम प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हो गये और उन्हें पत्नी रूप में ग्रहण करना स्वीकार किया और कुछ ही समय के बाद शिव जी के साथ पार्वती का विवाह हो गया।

एक दिन पार्वती ने शंकर जी से पूछा–कि मैंने ऐसा कौन सा कार्य किया था, जिससे आपको स्वामी रूप में प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य मिला। शिव जी ने कहा कि–''मैं इस तृतीया'' के व्रत से बहुत ही प्रसन्न होता हूँ। जैसे तारागण में चन्द्रमा, ग्रहों में सूर्य, वर्णों में ब्राह्मण, नदियों में गंगा, पुराणों में भारत, वेदों में सामवेद और इन्द्रियों में मन श्रेष्ठ है, उसी प्रकार व्रतों में यह व्रत श्रेष्ठ है। इस दिन तुम्हारा अनुकरण करके प्रत्येक स्त्री को निर्जल निराहार रहकर तुम्हारे सहित (शिव–पार्वती की) मेरी मूर्ति बनाकर पूजन करनी चाहिए। जिस कन्या का विवाह नहीं होता है, विवाह में अनेकों प्रकार की बाधाएँ आती हो, वह कन्या इस व्रत को करे तो शीघ्र ही उसे मन पसन्द सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है। पूजन वाले दिन, दिन भर व्रती को निराहार रहकर उपवास करना चाहिए। पूजन स्थल पर केले के स्तम्भ लगाने चाहिए। बंदनवार बाँधना तथा सुन्दर मंडप बनाना चाहिए। और उस पर चंदवा तान कर रंग–बिरंगे सुगन्धित पुष्पों से उसे सजाना चाहिए। चन्दन अक्षत, गंगाजल, धूप, दीप, नैवेद्य आदि नाना उपचारों से (षोड़शोपचार पूजन) रात को चार पहर की चार पूजा तथा भजन, स्तवन, गायन आदि करना चाहिए। गीत–वाद्य सहित मेरा गुण गाते हुए रात भर जागरण करना चाहिए। यही व्रत कथा श्रवण करनी चाहिए।

दूसरे दिन प्रातः काल तीन बाँस की टोकरियों में पका हुआ अन्न, वस्त्र सहित ब्राह्मण को दान देकर पारण करना चाहिए। व्रत के पहले दिन भी संयम से रहना चाहिए। इस प्रकार भक्ति पूर्वक व्रत करने वाली स्त्री यहाँ विविध भोगों को भोगकर अन्त में सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होती है। भाद्रशुक्ल तीज को हस्त नक्षत्र न हो तो भी व्रत करना चाहिए। जो स्त्री उस दिन भोजन करती है वह सात जन्मों तक वैधब्य और पुत्र शोक को प्राप्त होती है तथा अन्त में उसे नरकों में जाना पड़ता है। इसलिए प्रत्येक स्त्री पार्वती के दृढ़ व्रत की स्मृति दिलाने वाले इस व्रत को अवश्य करना चाहिए।

भगवान शिव के बारह व्रतों का वर्णन व विधि

महाशिव पुराण के दशम खण्ड के प्रथम अध्याय में देवर्षि नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा है—"हे पिता ! भगवान सदा शिव के जितने भी व्रत हों, उन्हें आप हमें बताने की कृपा करें।"

यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—हे पुत्र ! शिव जी के असंख्य व्रत हैं। उन सब व्रतों में निम्नलिखित बारह व्रत अत्यन्त आवश्यक तथा प्रमुख हैं। इन्हें "याज्ञवल्क्यस्मृति" में वर्णन किया गया है। मनुष्यों को चाहिए कि वे इन व्रतों को अवश्य धारण करें, क्योंकि इन्हें किए बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती।

हे नारद ! व्रत इस प्रकार है—दोनों अष्टमी, दोनों एकादशी, दोनों त्रयोदशी, दोनों चतुर्दशी तथा महीने में जितने सोमवार पड़े ये सब मिलाकर एक महीने में बारह व्रत होते हैं।

भगवान सदाशिव की आज्ञा है कि अष्टमी के व्रत के संध्या के समय केवल फलाहार करे, परन्तु शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जल व्रत रखना चाहिए। कृष्ण पक्ष की एकादशी को संध्या के समय भोजन (लवण हीन) किया जा सकता है। इसी प्रकार दोनों त्रयोदशी तथा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में भी एक बार भोजन (शाम को) करने की आज्ञा है, परन्तु शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में निर्जल व्रत धारण करना चाहिए। सोमवार के व्रत में भी संध्या काल एक समय भोजन कर लेने की आज्ञा है। इन सभी व्रतों में भक्ति सहित भगवान सदा शिव का पूजन करना चाहिए। इन व्रतों में अपनी सामर्थ्यानुसार शिव भक्तों को भोजन (या ब्राह्मणों को) कराना चाहिए तथा शक्ति के अनुसार दान भी देना चाहिए।

हे नारद ! जो मनुष्य इन बारहों व्रतों में से एक भी नहीं करता, उसे महापतित समझना चाहिए। जो मनुष्य शिव जी के सभी व्रतों को करता है, उसे परम पवित्र समझना चाहिए। यदि कोई मनुष्य बारहों व्रत रखने में असमर्थ होने के कारण केवल एक व्रत ही धारण करता है तो वह भी शुभ है। इन दोनों प्रकार के व्रत रखने वालों पर भगवान सदा शिव सदैव अपनी कृपा बनाए रखते हैं।

भगवान शिव गूढ़ ज्ञान खण्ड

श्री शिव प्रातः स्मरण स्तोत्र

(दुःखों एवं विपत्तियों का जखीरा नष्ट करने हेतु)

नोट—उपासको ! जिन्हें संस्कृत भाषा नहीं पढ़नी आती है, वे हिन्दी अनुवाद पाठ करके ही पूर्णफल के अधिकारी बन सकते हैं। भगवान भाषा की नहीं भावना के भूखे हैं।

प्रातः काल बिस्तर से उठते ही सर्वप्रथम पृथ्वी को प्रणाम करें, फिर हाथ जोड़कर भगवान शिव का ध्यान करते हुए निम्न स्तोत्र द्वारा भगवान शिव को नमस्कार करें तो आप समस्त दुःखों एवं विपत्तियों के जखीरों को नष्ट कर अति भाग्यशाली जीवन जी सकते हैं।

श्लोक

प्रातः स्मरामि भव भीति हरं सुरेशं।
गंगाधरं वृष वाहन नमम्बि केशम्।।
खट्वांग शूल वरदा भय हस्तमीशं।
संसार रोगहरमौषध मृद्धितीयम्।।१।।

हिन्दी अनुवाद—जो सांसारिक भय के हरने वाले और देवताओं के स्वामी हैं, जो गंगा जी को धारण करते हैं, जिनका वृषभ वाहन है, जो अम्बिका के ईश हैं तथा वृषभ हाथ में खट्वांग, त्रिशूल और वरद तथा अभय मुद्रा है, उन संसार—रोग को हरने के निमित्त अद्वितीय औषध रूप ईश (महादेव जी का) का मैं प्रातः समय में स्मरण करता हूँ।।१।।

श्लोक

प्रातर्नमामि गिरिश गिरिजार्ध देहं।
सर्ग स्थिति प्रलय कारणमादि देवम्।।

विश्वेश्वरं विजित विश्वमनोऽभिरामं।
संसार रोग हरभौषध भद्धितीयम्।।२।।

हिन्दी अनुवाद—भगवती पार्वती जिनका आधा अंग हैं, जो संसार की सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारण हैं, आदि देव हैं, विश्वनाथ हैं, विश्व–विजयी और मनोहर हैं, सांसारिक रोग को नष्ट करने के लिए अद्वितीय औषध रूप उन गिरिश (शिव) को मैं प्रातः काल नमस्कार करता हूँ।।२।।

श्लोक

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य।
श्लोक त्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।।
ते दुःख जातं वहु जन्म संचितं।
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः।।

हिन्दी अनुवाद—जो मनुष्य प्रातः काल उठकर शिव का ध्यान कर इन तीनों श्लोकों का पाठ करते हैं, वे लोग अनेक जन्मों के संचित दुःख समूह से मुक्त होकर, इह लोक में समस्त सुख भोगकर अन्त में शिवलोक प्राप्त करते हैं।

भगवान शिव का अक्षय भक्ति प्राप्ति हेतु शिव स्तुति

उपासको ! निम्न स्तुति का पाठ प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर, भगवान शिव व माता पार्वती तस्वीर के समक्ष धूप जगाकर करने से ''अक्षय शिव भक्ति'' की प्राप्ति होती है और बिना मांगे ही उसे सब कुछ मिल जाता है। इसी स्तुति द्वारा ''उपमन्यु'' ने भगवान शिव का प्रत्यक्ष दर्शन एवं सम्पूर्ण वैभव प्राप्त किया था।

श्लोक

पशुपति वचनाद् भवामि सद्यः कृमिरथवा तरुरण्नेकशाखः।
अपसुपति वरप्रसादजा मे त्रिभुवन राज्य विभूति रण्यनिष्टा।।

हिन्दी अनुवाद—मैं भगवान कीट पति के कहने से तत्काल प्रसन्नता पूर्वक कीट अथवा अनेक शाखाओं से युक्त वृक्ष भी हो सकता हूँ, परन्तु भगवान शिव से भिन्न दूसरे किसी के वर–प्रसाद से मुझे त्रिभुवन का राज्य–वैभव प्राप्त हो रहा हो तो वह भी अभीष्ट (स्वीकार) नहीं है।।१।।

श्लोक

जन्म श्वपाक मध्येऽपि मेऽस्तुहरचरण वन्दन रतस्य।
मा वानीश्वर भक्तो भवानि भवनेऽपि शक्रस्य।।२।।

हिन्दी अनुवाद–यदि मुझे भगवान शंकर के चरणारविन्दों की वन्दना में तत्पर रहने का अवसर मिले तो मेरा जन्म चाण्डालों में भी हो जाय तो वह मुझे सहर्ष स्वीकार है। पन्तु भगवान शिव की अनन्य भक्ति से रहित होकर मैं इन्द्र के भवन में भी स्थान पाना नहीं चाहता।।२।।

श्लोक

वाय्वम्बु भुजोऽपि सतो नरस्य दुःखक्षयः कुतस्तस्य।
भवति हि सुरासुर गुरौ यस्य न विश्वेश्वेर भक्तिः।।३।।

हिन्दी अनुवाद–कोई जल या हवा पीकर ही रहने वाला क्यो न हो, जिसकी सुरासुर गुरू भगवान विश्वनाथ में भक्ति न हों, उसके दुःखों का नाश कैसे हो सकता है ?।।३।।

श्लोक

अलमन्या भिस्तेषां कथाभिरण्यन्य धर्म युक्ताभिः।
येषां न क्षणमपि रूचितो हरचरणा स्मरणा विच्छेदः।।४।।

हिन्दी अनुवाद–जिन्हें क्षण भर के लिए भी भगवान शिव के चरणारविन्दों के स्मरण का वियोग अच्छा नहीं लगता, उन पुरूषों के लिए अन्यान्य धर्मों से युक्त दूसरी--दूसरी सारी कथाएँ व्यर्थ हैं।।४।।

श्लोक

हरचरण निरत मतिना भवितव्यमनार्जवं युगं प्राप्य।
संसार भयं न भवति हरभक्तिरसायंन पीत्वा।।५।।

हिन्दी अनुवाद–कुटिल कलिकाल को पाकर सभी पुरुषों को अपना मन भगवान शंकर के चरणारविन्दों के चिन्तन में लगा देना चाहिए। शिव भक्ति रूपी रसायन के पी लेने पर संसार रूपी रोग का भय नहीं रह जाता है।।५।।

श्लोक

दिवसं दिवसार्धं वा मुहूर्तं वा क्षणं लवम्।
न ह्यलब्ध प्रसादस्य भक्तिर्भवति शंकरे।।६।।

हिन्दी अनुवाद–जिसपर भगवान शिव की कृपा नहीं है, उस मनुष्य की एक दिन आधे दिन, एक मुहूर्त, एक क्षण या एक लव के लिए भी भगवान शंकर में भक्ति नहीं होती।।६।।

श्लोक

न नाकपृष्टं न च देवराज्यं न ब्रह्मलोकं न च निष्कलत्वम।
न सर्वकामान खिलान वृणोमि हरस्य दासत्वमहं वृणोमि।।७।।

हिन्दी अनुवाद—न तो मैं स्वर्ग लोक चाहता हूँ, न देवताओं का राज्य पाने की अभिलाषा रखता हूँ, न ब्रहलोक की इच्छा करता हूँ और न निर्गुन ब्रह्म का सायुज्य ही प्राप्त करना चाहता हूँ। भूमण्डल की समस्त कामनाओं को भी पाने की मेरी इच्छा नहीं है। मैं तो केवल भगवान शिव की दासता का ही वरण करता हूँ।।७।।

श्लोक

यदि नाम जन्म भूयो भवति मदीयैः पुनर्दोषैः।
तस्मिंस्त स्मिज्जन्मनि भवे भवेन्मेऽक्षाया भक्तिः।।८।।

हिन्दी अनुवाद—यदि मेरे दोषों से मुझे बारंबार इस जगत में जन्म लेना पड़े तो मेरी यही इच्छा है कि उस–उस प्रत्येक जन्म में भगवान शिव में मेरी अक्षय भक्ति हो।।८।।

दुर्घटनाओं से रक्षा हेतु "सदाशिव रक्षा कवच"

निम्न कवच का पाठ कर यात्रा करने से यात्राकाल में दुघर्टना नहीं होती है।

श्लोक

यस्यांके च विभूति भूधरसुता देवापगा मस्तके।
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराद।।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा।
सर्वसर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातुमाम्।।

हिन्दी अनुवाद—जिनकी गोद में हिमाचलसुता पार्वती जी, मस्तक पर गंगा जी, ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा, कण्ठ में हलाहल विष और वक्षः स्थल पर सर्पराज शेष जी सुशोभित हैं, वे भस्म से विभूषित, देवताओं में श्रेष्ठ, सर्वेश्वर, संहारकर्ता, भक्तों के पाप नाशक, सर्वव्यापक, कल्याण रूप, चन्द्रमा के समान शुभ्रवर्ण—शंकर जी सदा मेरी रक्षा करें।

देवर्षि नारद जी द्वारा रचित "शिव शरणागति स्तोत्र"

संग्राम में विजय, संकट-शोक विनाश हेतु, धन प्राप्ति एवं राज दरबार में सफलता हेतु

श्लोक

कृत्स्नस्य योऽअस्य जगतः सचराचरस्य।
कर्ता कृतस्य च तथा सुख दुःख हेतुः।।
संहारहेतुरपि चः पुनरत काले-।
तं शंकर शरणदं शरणं प्रजामि।।१।।

हिन्दी अनुवाद—जो चराचर प्राणियों सहित इस सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाले हैं, उत्पन्न हुए जगत के सुख–दुःख में एकमात्र कारण हैं तथा अन्त काल में जो पुनः इस विश्व के संहार में भी कारण बनते हैं, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१।।

श्लोक

यं योगिनी विगत मोहत मोरजस्का।
भक्त्यै कतान मनसो विनिवृत्तकामाः।।
ध्यायन्ति निश्चल धियोऽमि तद्दिव्यभावं।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।२।।

हिन्दी अनुवाद—जिनके हृदय से मोह तमोगुण और रजोगुण दूर हो गये हैं, भक्ति के प्रभाव से जिनका चित्त भगवान में लीन हो रहा है, जिनकी सम्पूर्ण कामनाएँ निवृत्त हो चुकी है और जिनकी बुद्धि स्थिर हो गयी हैं, ऐसे योगी पुरुष अपरिमेय दिव्य भाव से सम्पन्न जिन भगवान शिव का निरन्तर ध्यान करते रहते हैं, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।२।।

श्लोक

यस्चेन्दु खण्डम मलं विल सन्मयूखं।
बद्धवा सदा प्रियतमां शिरसा विभर्तिः।।
यश्चार्ध देह मद्दाद गिरिराज पुत्रिये।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।३।।

हिन्दी अनुवाद–जो सुन्दर किरणों से युक्त निर्मल चन्द्रमा की कला को जटाजूट में बाँध कर अपनी प्रियतमा गंगा जी को मस्तक पे धारण करते हैं, जिन्होंने गिरिराज कुमारी उमा को अपना आधा शरीर दे दिया है, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।३ ।।

श्लोक

चोऽयं सकृद्धि मलचारू विलोल तोयां।
गंगा महोर्मि विषमां गगनात् पतन्तीम्।।
मूर्ध्नाऽऽदधे स्त्रजमिव प्रतिलोल पुष्पां।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।४।।

हिन्दी अनुवाद–आकाश से गिरती हुई गंगा को, जो स्वच्छ, सुन्दर एवं चंचल जलराशि से युक्त तथा ऊँची–ऊँची लहरों से उल्लसित होने के कारण भयंकर जान पड़ती थीं, जिन्होंने हिलते हुए फूलों से सुशोभित माला की भाँति सहसा अपने मस्तक पर धारण कर लिया, उन शरण दाता भगवान शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।४।।

श्लोक

कैलाश शैल शिखरं प्रतिकम्पय मानं।
कैलाश शृङ्गस दृसेन दशाननेन्।।
यः पाद पद्मपरिवादन माद्धानस्तं।
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।५।।

हिन्दी अनुवाद–कैलाश पर्वत के शिखर के समान ऊँचें शरीर वाले दशमुख रावण के द्वारा हिलायी जाती हुई कैलाश गिरी की चोटी को जिन्होंने अपने चरण कमलों से ताल देकर स्थिर कर दिया, उन शरण दाता भगवान शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।५॥

श्लोक

येनासकृद दितिसुताः समरे निरस्ता।
विद्याधरोरग गणाश्च वरैः समग्राः।।
संयोजिता मुनिवराः फलमूल भस्क्षास्त।
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।६।।

हिन्दी अनुवाद–जिन्होंने अनेकों बार दैत्यों को युद्ध में परास्त किया और विद्याधर, नागगण तथा फलमूल का आहार करने वाले सम्पूर्ण मुनिश्वरों को वर दिए हैं, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।६।।

श्लोक

दग्ध्वाधरं च नयने च तथा भगस्य।
पूष्णास्तथा दशनपङ्ग क्तिमाप तयच्य।।
तस्तम्भ चः कुलिश युक्त महेन्द्र हस्तं।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।७।।

हिन्दी अनुवाद—जिन्होंने दक्ष का यज्ञ भंग करके भग देवता की आँखें फोड़ डाली और पूषा के सारे दाँत गिरा दिए तथा वज्र सहित देवराज इन्द्र के हाथ को भी—स्तम्मित कर दिया—जड़वत् निश्चेष्ट बना दिया, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।७।।

श्लोक

एनस्कृतोऽपि विषयेष्वपि शक्त भावा।
ज्ञानान्वय श्रुतगुणैरपि नैव युक्ताः।।
यं संश्रिता सुखभुजः पुरुषा भवन्ति।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।८।।

हिन्दी अनुवाद—जो पाप कर्म में निरत और विषयासक्त हैं, जिनमें उत्तम ज्ञान, उत्तम कुल, उत्तम शास्त्र ज्ञान और उत्तम गुण का भी अभाव है—ऐसे पुरुष भी जिनकी शरण में जाने से सुखी हो जाता है, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर का मैं शरण लेता हूँ।।८।।

श्लोक

अत्रिप्रसूति रवि कोटि समान तेजाः।
संत्रासने विबुधदान वसत्त मानाम्।।
यः कालकूट मपिवत् समुदीर्ण वेगं।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।९।।

हिन्दी अनुवाद—जो तेज में करोड़ों चन्द्रमाओं और सूर्यों के समान हैं, जिन्होंने बड़े—बड़े देवताओं तथा दानवों का भी दिल दहला देने वाले कालकूट नामक भयंकर विष का पान कर लिया था, उन प्रचण्ड वेगशाली शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।९।।

श्लोक

ब्रह्मेन्द्र रुद्र मरुतां च सषणमुखानां।
योऽदाद् वरांश्च बहुशो भगवान महेशः।।
नन्दिं च मृत्यु वदनात् पुनरुज्जहार।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजाति।।१०।।

हिन्दी अनुवाद—जिन भगवान महेश्वर ने कार्तिकेय सहित ब्रह्मा, इन्द्र, रूद्र तथा मरूद गणों को अनेकों बार वर दिए हैं तथा नन्दी का मृत्यु के मुख से उद्धार किया, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१०।।

श्लोक

आराधितः सुतपसा हिम वन्निकुञ्जे।
धूम्रवतेन मनसापि परैर गम्यः।।
सञ्जीवनीं समददाद् भृगवे महात्मा।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।११।।

हिन्दी अनुवाद—जो दूसरों के लिए मन से भी अगम्य हैं, महर्षि भृगु ने हिमालय पर्वत के निकुंज में होम का धुँआ पीकर कठोर तपस्या के द्वारा जिनकी आराधना की थी तथा जिन महात्मा ने भृगु को (उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर) संजीविनी विद्या प्रदान की, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।११।।

श्लोक

नानाविधै र्गजविडाल समान वक्त्रै-
र्दक्षाध्वर प्रमथनैर्बलि भिर्गणौघैः।।
योऽभ्यर्च्य तेऽमर गणैश्च सलोकपालै-
स्तं शंकर शरणदं शरणं व्रजामि।।१२।।

हिन्दी अनुवाद—हाथी और बिल्ली आदि की सी मुखाकृति वाले तथा दक्ष यज्ञ का विनाश करने वाले नाना प्रकार के महाबली गणों द्वारा जिनकी निरन्तर पूजा होती रहती है, तथा लोकपालों सहित देवगण भी जिनकी आराधना किया करते हैं, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१२।।

श्लोक

क्रीड़ार्थ मेव भगवान भुवनानि सप्त-।
नाना नदी विहगपादप मण्डितानि।।
सब्रह्मकाणि व्यसृजत् सुकृताहितानि।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।१३।।

हिन्दी अनुवाद—जिन भगवान ने अपनी क्रीड़ा के लिए ही अनेकों नदियों, पक्षियों और वृक्षों से सुशोभित एवं ब्रह्मा जी से अधिष्ठित सातों भुवनों की रचना की हैं तथा जिन्होंने सम्पूर्ण लोकों को अपने पुण्य पर ही प्रतिष्ठित किया है, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१३।।

श्लोक

यस्याखिलं जगदिदं वशवर्ति नित्यं
योऽष्टा भिरेव तनुभिर्भुवनानि भुङ्क्ते।।
यः कारणं सुमह तामपि कारणानां-
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।१४।।

हिन्दी अनुवाद–यह सम्पूर्ण विश्व सदा ही जिनकी आज्ञा के अधीन हैं, जो (जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु और प्रकृति–इन) आढ़ विग्रहों से समस्त लोकों का उपभोग करते हैं तथा जो बड़े से बड़े कारण–तत्वों के भी महाकारण हैं, उन शरण दाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१४।।

श्लोक

शंखेन्दु कुन्द धवलं वृषभ प्रवीर
मारुह्य यः क्षितिधरेन्द्र सुतानुयातः।।
यात्यम्बरे हिम विभूतिवि भूषितां
स्तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।१५।।

हिन्दी अनुवाद–जो अपने श्री विग्रह को हिम और भस्म से विभूषित करके शंख, चन्द्रमा और कुन्द के समान श्वेत वर्ण वाले वृषभ–श्रेष्ठ नन्दी पर सवार होकर गिरिराज किशोरी उमा के साथ आकाश में विचरते हैं, उन शरण दाता भगवान शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१५।।

श्लोक

शान्तं मुनिं यमनियोग परायणं तै-।
र्भीमैर्य मस्य पुरुषैः प्रतिनीयमानम्।।
भक्त्या नतं स्तुति परं प्रसमं ररक्ष।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।१६।।

हिन्दी अनुवाद–यमराज की आज्ञा के पालन में लगे रहने पर भी जिन्हें वे भयंकर यमदूत पकड़कर लिए जा रहे थे तथा जो भक्ति से नम्र होकर स्तुति कर रहे थे, उन शान्त मुनि को जिन्होंने बल पूर्वक यमदूतों से रक्षा की, उन शरण दाता भगवान शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१६।।

श्लोक

यः सव्यपाणि कमलाग्रनखेन देव-
स्तत् पञ्चमं प्रसभमेव पुरः सुराणाम्।।

ब्राह्मं शिरस्तरूण पद्म निभं चकर्त।
तं शंकरं शरणं शरणं व्रजामि।।१७।।

हिन्दी अनुवाद–जिन्होंने समस्त देवताओं के सामने ही ब्रह्मा जी के उस पांचवें मस्तक को, जो नवीन कमल के समान शोभा पा रहा था, अपने बायें हाथ के नख से बलपूर्वक काट डाला था, उन शरणदाता भगवान श्री शंकर की मैं शरण लेता हूँ।।१७।।

श्री ब्रह्मा-विष्णु कृत् महादेव स्तुति

मुकदमा में, इन्टरब्यू में विजय हेतु, भक्ति में डूब जाने हेतु, एवं समस्त-विद्या तथा कल्याण की प्राप्ति हेतु

(महादेव स्तुति)

नमस्तुभ्यं भगवते सुव्रतेऽनन्त तेजसे।
नमः क्षेत्राधिपतये बीजिने शूलिने नमः।।
नमस्ते ह्यस्मदा दीनां भूतानां प्रभवाय य।
वेदकर्माव दातानां द्रव्याणां प्रभवे नमः।।
विधानां प्रभवे चैव विद्यानां पतये नमः।
नमो व्रताणां पतये मन्त्राणां पतये नमः।।
अप्रमेयस्य तत्त्वस्य यथा विद्यः स्वशक्तिः।
कीर्तितं तव माहात्म्य मपारं परमात्मनः।।
शिवो नो भव सर्वत्र योऽस्मि सोऽसि नमोस्तुते।।

हिन्दी अनुवाद–(ब्रह्मा और विष्णु स्तुति करते हुए बोले) भगवन! आप सुव्रत और अनन्त तेजोमय हैं, आपको प्रणाम है। आप क्षेत्राधिपति तथा विश्व के बीज स्वरूप और शूलधारी हैं, आपको नमस्कार है। आप हम सभी भूतों के उत्पत्ति स्थान और वेदोक्त सभी श्रेष्ठ यज्ञ आदि कर्मों को सम्पन्न कराने वाले, समस्त द्रव्यों के स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप विद्या के आदि कारण और स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप व्रतों एवं मंत्रों के स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप अप्रमेय तत्व हैं। अपनी शक्ति से जैसा हमने आपको समझा, वैसा ही आपके अपार माहात्म्य का यशोगान किया। आप हमारे लिए ''सर्वत्र कल्याण कारक'' हों। आप जो हैं, वही हैं, अर्थात् अज्ञेय और अगम्य हैं, आपको नमस्कार है।। (वायु पुराण, पूर्वा०)

भगवान शिव के 108 नामों की माला

(समस्त कामना पूर्ति हेतु)

नोट–उपासको 108 बिल्वपत्र के उपर रक्तचन्दन या श्रीखण्ड चन्दन की स्याही से भगवान शिव के 108 नामों को लिखकर लगातार 42 दिन तक शिवलिंग पर चढ़ावें तो भोले भंडारी आपकी कामना पूर्ण कर देंगे।

विधि–भगवान शिव के 108 नामों का पूजन किसी सोमवार के दिन आरम्भ करें। प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर शिव मंदिर जावें और सर्वप्रथम 108 बिल्वपत्रों पर, वहीं बैठकर, भगवान शिव के 108 नामों को लिखें। तत्पश्चात् गंगा जल से निम्न मंत्र द्वारा भगवान शिव को अभिषेक (शिवलिंग पर जल चढ़ावें) करें।

श्री शिव अभिषेक मंत्र

ॐ कर्पूर गौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा बसन्तं हृदयारविन्दं भवं भवानी सहितं नमामि।।
ॐ गंगाजले समर्पयामि देवाधिदेव महादेवाय नमः।

नोट–अब बिल्वपत्रों पर लिखे नाम को पढ़ते हुए एक–एक बिल्वपत्र शिवलिंग के उपर समर्पित करें–

(108 नामों की माला)

1. ॐ जय शिवाय नमः।
2. ॐ जय भवाय नमः।।
3. ॐ जय शर्वाय नमः।
4. ॐ जय महेश्वराय नमः।
5. ॐ जय महादेवाय नमः।।१।।
6. ॐ जय शम्भवे नमः।
7. ॐ जय त्रिलोक नाथाय नमः।।
8. ॐ जय पिनाकिने नमः।
9. ॐ जय शितिकण्ठाय नमः।।

पूर्ण करें कामना–

10. ॐ जय शशिशेखराय नमः।।२।।
11. ॐ जय भक्तवत्सलाय नमः।
12. ॐ जय जटाधराय नमः।।
13. ॐ जय कंठाय नमः।

14. ॐ जय मृगयाणये नमः।।
15. ॐ जय अम्बिका नाथाय नमः।
पूर्ण करें कामना–
16. ॐ जय परशुहस्ताय नमः।।३।।
17. ॐ जय शिविविष्टाय नमः।
18. ॐ जय भीमाय नमः।।
19. ॐ जय विष्णु वल्लभाय नमः।
20. ॐ जय कृपा निधिये नमः।।
21. ॐ जय खटवांगिने नमः।
22. ॐ जय कलिकाय नमः।।
23. ॐ जय शूलपाणिने नमः।
पूर्ण करें कामना–
24. ॐ जय शंकराय नमः।।४।।
25. ॐ जय ललाटाक्षाय नमः।
26. ॐ जय गंगाधराय नमः।।
27. ॐ जय नीललोहिताय नमः।
28. ॐ जय अन्धका सुरसूदनाय नमः।।
29. ॐ जय शिवप्रियाय नमः।
30. ॐ जय वामदेवाय नमः।।
पूर्ण करें कामना–
31. ॐ जय उग्राय नमः।।५।।
32. ॐ जय विरूपाक्षाय नमः।
33. ॐ जय कामारये नमः।।
34. ॐ जय कपर्दिने नमः।
35. ॐ जय हराय नमः।।
36. ॐ जय सहस्त्राक्षाय नमः।
37. ॐ जय परमेश्वराय नमः।।
पूर्ण करें कामना–
38. ॐ जय तारकाय नमः।।६।।
39. ॐ जय अब्यक्ताय नमः।
40. ॐ जय अनन्ताय नमः।।
41. ॐ जय भगनेत्रभिदे नमः।
42. ॐ जय अपवर्गप्रदाय नमः।।

43. ॐ जय दक्षाध्वर हराय नमः।
44. ॐ जय सहस्त्र पदे नमः।।
45. ॐ जय अब्यग्राय नमः।

पूर्ण करें कामना–

46. ॐ जय कृत्तिवाससे नमः।।७।।
47. ॐ जय गिरिप्रियाय नमः।
48. ॐ जय त्रिलोचनाय नमः।।
49. ॐ जय गिरिधन्वे नमः।
50. ॐ जय दन्तभिदे नमः।।
51. ॐ जय भर्गाय नमः।
52. ॐ जय हरिपूषणे नमः।।
53. ॐ जय भुजंग भूषणाय नमः।

पूर्ण करें कामना–

54. ॐ जय अब्याय नमः।।८।।
55. ॐ जय अनधाय नमः।
56. ॐ जय गिरिशाय नमः।।
57. ॐ जय देवाय नमः।
58. ॐ जय प्रजापतये नमः।।
59. ॐ जय पशुपतये नमः।
60. ॐ जय हिरण्यरेतसे नमः।।
61. ॐ जय मृडाय नमः।

पूर्ण करें कामना–

62. ॐ जय गणानाथाय नमः।।९।।
63. ॐ जय पाशविमोचनाय नमः।
64. ॐ जय वीरभद्राय नम।।
65. ॐ जय खण्डपरसवे नमः।
66. ॐ जय विश्वेश्वराय नमः।।
67. ॐ जय शाश्वताय नमः।
68. ॐ जय सदा शिवाय नमः।।
69. ॐ जय शुद्ध विग्रहाय नमः।

पूर्ण करें कामना–

70. ॐ जय पञ्चवक्त्राय नमः।।१०।।
72. ॐ जय सोमाय नमः।

73. ॐ जय अनेकात्मने नमः।।
74. ॐ जय अष्टमूर्तिये नमः।
75. ॐ जय हविषे नमः।।
76. ॐ जय दिगम्बराय नमः।
77. ॐ जय सोम लोचनाय नमः।
78. ॐ जय अग्नि लोचनाय नमः।
79. ॐ जय अहिर्बुध्न्याय नमः।।
पूर्ण करें कामना–
80. ॐ जय परमात्मे नमः।।११।।
81. ॐ जय स्थाणवे नमः।
82. ॐ जय सर्वज्ञाय नमः।।
83. ॐ जय भूतपतये नमः।
84. ॐ जय अनीश्वराय नमः।।
85. ॐ जय रूद्राय नमः।
86. ॐ जय त्रयीमूर्तये नमः।।
87. ॐ जय चारू विक्रमाय नमः।
88. ॐ जय स्वरमयाय नमः।।
89. ॐ जय महासेन जनकाय नमः।
पूर्ण करें कामना–
90. ॐ जय साम प्रियाच नमः।।१२।।
91. ॐ जय व्योम केशाय नमः।
92. ॐ जय भोले नाथाय नमः।।
93. ॐ जय जगद् गुरूवे नमः।
94. ॐ जय भस्म भूताय नमः।।
95. ॐ जय वृषभारूढाय नमः।
96. ॐ जय जगत्ववयापिने नमः।।
97. ॐ जय सूक्ष्मतनवे नमः।
98. ॐ जय मृत्युञ्जाय नमः।।
99. ॐ जय वृषागिंने नमः।
पूर्ण करें कामना–
100. ॐ जय त्रिपुरान्त नमः।।३।।
101. ॐ जय कैलाश वासिने नमः।
102. ॐ जय नागेश्वराय नमः।।

103. ॐ जय भघवते नमः।
104. ॐ जय डमरू धराय नमः।।
105. ॐ जय त्रिशूल धराय नमः।
106. ॐ जय कृपालुवे नमः।।
107. ॐ जय वरदाय नमः।
108. ॐ जय त्रिदेव नाथाय नमः।।४।।

नोट—बिल्व पत्रों के तीनों पत्ते पर लम्बे नामाक्षर को लिखें।

श्री शिव पञ्चाक्षर स्त्रोत

(सुख, शान्ति व प्रसन्नता हेतु)

श्लोक

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय,
भस्माङ्ग रागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै "न" काराय नमः शिवाय।।१।।

हिन्दी अनुवाद—जिनके कण्ठ में सापों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अंग राग (अनुलेपन) है, दिशाएँ ही जिनका वस्त्र है—(अर्थात् जो नग्न हैं) उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर ''न'' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।।१।।

श्लोक

मन्दाकिनि सलिल चन्दन चर्चिताय,
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहु पुष्प सुपूजिताय,
तस्मै "म" काराय नमः शिव शिवाय।।२।।

हिन्दी अनुवाद—गंगा जल और चन्दन से जिनकी अर्चना हुई है, मन्दार पुष्प तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथ गणों के स्वामी महेश्वर ''म'' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।।२।।

श्लोक

शिवाय गौरी बदनाब्ज वृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्री नीलकंठाय वृषध्वजाय,
तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय।।३।।

हिन्दी अनुवाद–जो कल्याण स्वरूप हैं, पार्वती जी के मुख कमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिए जो सूर्य स्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ को नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिन्ह है, उन शोभाशाली नीलकंठ "शि" कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।।३।।

श्लोक

वशिष्ट कुम्भोद्ध वगौत मार्य-
मुनिन्द्र देवार्चित शेखराय।
चद्रार्क वैश्वानर लोचनाय,
तस्मै "व" काराय नमः शिवाय।।४।।

हिन्दी अनुवाद–वसिष्ठ, अगस्त्य, गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन "व" कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।।४।।

श्लोक

यक्षस्वरूपाय जटाधराय,
पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय,
तस्मै "य" काराय नमः शिवाय।।५।।

हिन्दी अनुवाद–जिन्होंने यक्ष रूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक हैं, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव "य" कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।।५।।

श्लोक

पञ्चाक्षर मिदं पुण्यं यः पठेच्छिव संनिधौ।
शिवलोक मावाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

हिन्दी अनुवाद–जो शिव के समीप इस पवित्र पंचाक्षर स्तोत्र का पाठ करता है, उसे सुख–शान्ति, प्रसन्नता तथा शिवलोक की प्राप्ति होती है और वहाँ शिव जी के साथ आनन्दित होता है।

श्री शिव रूद्राष्टकम् स्तोत्र

विद्या, बुद्धि, ज्ञान, उच्च यादास्त शक्ति एवं सर्वोच्च शक्ति की प्राप्ति हेतु

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाश माकाश वासं भझेऽहं।।

निराकार मोंकार मूलं तुरीयं।
गिरा ज्ञान गोतित मीशं गिरिशं।।
करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसार पारं नतोऽहं।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा।
लसद् भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं।
प्रसन्नानं नीलकंठं दयालं।।
मृगाधीश चर्माम्बर मुंडमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथम् भजामि।।

प्रचंड प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं।
अखंडं अजं भानुकोटि प्रकाशं।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी।
सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।।
न यावद् उमा नाथ पादार बिन्दं।
भजन्तीह लोके परे वा नाराणं।।

न तावत्सुखं शान्ति सन्ताप नाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधि वासं।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।

जरा जन्म दुःखौध तातात्यमानं।
प्रभो पाहि आपन्न मामीश शम्भो।।
रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्यातेषां शम्भु प्रसीदति।।

।। इति रूद्रारा‌ष्टकं सम्पूर्णम्।।

सदा शिव "मंगल कामना" स्तुति

सदैव सुमंगल की प्राप्ति, लोक लाज की रक्षा,
यश-मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु

काशी के बसैया परकाशी के दिवैया नाथ,
भंग के छनैया अरू गंग के धरैया तुम।
बेस के अमंगल औ जंगल के बासी प्रभु,
तौहू महामंगल हौ मंगल करैया तुम।।
केतिके उधारे केते तारे भवसागर तें,
केतिक सम्हारे ऐसे विपद हरैया तुम।
ऐहो त्रिपुरारि अधहारी सुखकारी शिव,
''तूफान'' परयौ द्वारे आज लाज के रखैया तुम।।

गोस्वामी तुलसी दास रचित शंकर स्तवन

भय, शोक नाश हेतु

भस्म अंग, मर्दन अनंग, संतत असंग हर।
सीस गंग, गिरिजा अर्द्धंग, भूषण भुजंग बर।।
मुंडमाल, बिधु बाल भाल, डमरू कपालु कर।
बिबुध वृंद नव कुमुद चंद, सुखकंद सूलधर।।
त्रिपुरारि लोचन, दिग्बसन, विष भोजन भवभय हरण।
कह तुलसी दास सेवत सुलभ, शिव शिव संकर सरन।।

द्वादश ज्योर्लिङ्ग नमस्कार स्तोत्र

(चिन्ता से मुक्ति हेतु)

ॐ श्री "विश्वेश्वराय" नमः।
ॐ श्री केदारेश्वराय नमः।।
ॐ श्री मल्लिकार्जन ईश्वराय नमः।
ॐ श्री भीम शंकराय नमः।।
ॐ श्री अमरनाथाय नमः।

ॐ श्री महाकालेश्वराय नमः।।
ॐ श्री सोमनाथाय नमः।
ॐ श्री वैद्यनाथाय नमः।।
ॐ श्री नागनाथाय नमः।
ॐ श्री घुश्मेशनाथाय नमः।।
ॐ श्री त्र्यम्बकाय नमः।
ॐ श्री रामेश्वराय नमः।।

पाप से उद्धार होने हेतु

द्वादस ज्योर्तिलिंग प्रार्थना

सोमनाथ सौराष्ट्र में, वैद्यनाथ, केदार।
मल्लिाकार्जुन शैल श्री, महाकाल औंकार।।
महाकाल औंकार त्र्यम्बक प्रभु घुश्मेशवर।
रामेश्वर नागेश, डाकिनी-संग भीमेश्वर।।
विश्वनाथ दातार, दरश काशी में पायें।
ये द्वादश महादेव, जो ज्योर्तिलिंग कहायें।।
इन्हें स्मरण मात्र से, नासत पाप पहाड़।
निशिदिन सुमिरन जो करे, हो जाये उद्धार।।

श्री शिवाष्टक स्तोत्र

(हर वक्त विजय प्राप्ति हेतु)

जय महेश जग बन्धु, नित्यत्रिभुवन अभंयकार।
जय राम प्रिय शर्व सर्वदा, जय शिव शंकर।।
व्योमकेश सर्वेश, त्रिपुर दनुजेश विनाशन।
जय मंगलमय मूर्तिशम्भु, जय भव भय नाशन।।१।।
जय जय चन्द्रललाम, कुण्डली कुंडल धारी।
जय प्रमथादिक भूत-प्रेत, गुह्लाक सुख कारी।।
प्रालेयाचल नन्दिनीश, मृद मंगल दाता।
जय गणेश शिखिवाहन पितु जय निज जन त्राता।।२।।
परम रम्य कैलाश विहारी, वृषभध्वज जय।
कृत्तिवास जय नीलकंठ जय, जय जय मृत्युञ्जय।।

शुद्ध सच्चिदानन्द सदाशिव, शक्ति नाथ जय।
जय भैरव, दशकंठ वरद, जय जय तेजोमय।।३।।
सर्वदेव अधिदेव निरंजन, जय मदनान्तक।
निराधार निष्पाप निरंकुश, जय शमनान्तक।।
निगुर्णनिर्मद निष्कलंक, निश्काम त्रिलोचन।
काल काल कर्पूरगौरष्षु, भव भय मोचन।।४।।
पंचानन सणिराज विभूषण, जय गंगा धर।
जय कमलासन श्रीपति पूजित, जय गुण सागर।।
डमरूनाद प्रिय भृङ्गि प्रिय, आनन्द राशि हर।
भक्त प्रिय भवभस्म प्रिय, रजनीश कला धर।।५।।
महाकाल श्री सोमनाथ, नागेश जटाधर।
वैद्यनाथ केदार सनातन, ईश दया कर।।
विश्वेश्वर रामेश्वर सर्वेश्वर,–काशीश्वर।
वाणेश्वर श्रीवाम देव, पशुपति नन्दीश्वर।।६।।
अन्धकरिपु शिति कंठ पिनाकी, जय गिरीश जय।
शूलपाणि मृडमहादेव जय, जय–जय करूणामय।।
निष्प्रपंच निर्दून्द्ध कपाली, निर्मल निर्मन।
ज्ञाण रूप वेदान्त सार, कैवल्यद् अनुपम।।७।।
पारिजात वरमाल विभूषित, धनदा मित्र वर।
अष्टसिद्धि निवनिधि परिसेवित, मर्ग महेश्वर।।
खण्ड परशु ईशान चन्द्रशेखर, प्रसन्न मन धन।
उग्र रूद्र श्रीकंठ नीललोहित शुभ दर्शन।।८।।

"तूफान" रचित महादेव स्तुति

दरिद्रता निवारक, सर्व कामना प्रदायक एवं शिव भक्ति में डूबे रहने हेतु

श्लोक

प्रभुस्त्वं दीनानां खलु परम बन्धुः पशुपते।
प्रमुख्योऽहं तेषामपि किमुत बन्धुत्व मनयोः।।
त्वयैव क्षन्तव्याः शिव मदपराधाश्च सकलाः।
प्रयत्नात् कर्तव्यं मदवन मियं बन्धुसरणि।।९।।

हिन्दी अनुवाद–हे पशुपते ! आप दीनानाथ एवं दीन बन्धु हैं और मैं दीनों का (गरीबी का) सरदार हूँ, क्या ही अच्छा जोड़ बैठा है। बन्धु का कर्तव्य है कि वह अपने सम्बन्धी को सर्वनाश से बचावे। फिर क्या आप मेरे सारे अपराधों को क्षमा कर मुझे इस घोर भवसागर से

नहीं उबारेंगे ? अवश्य उबारेंगे, अन्यथा आप अपने कर्तव्य से च्युत होंगे और आपके ''दीनबन्धु'' नाम पर बट्टा लगे।।९।।

श्लोक

उपेक्षा न चेत् किं न हरसि भवद्ध्यान विमुखां।
दुराशा भूयिष्टां विधिलिपिम शक्तो यदि भवान।।
शिरस्त द्वैधात्रं ननु खलु सुवृत्तं पशुपते।
कथं वा निर्यत्नं करनख मुखनैव लुलितम्।।२।।

हिन्दी अनुवाद—आप मेरा शीघ्र उद्धार नहीं करते, मेरी दरिद्रता का दुःख का, शोक का नाश नहीं करते, इससे तो यही जाहिर होता है कि आप मेरी उपेक्षा करते हैं, मेरी फरियाद को सुनकर आपके कान पर जूँ भी नहीं रेंगती, नहीं तो भला अबतक मेरी यह हालत रहती ? यदि आप कहें कि भाई ! हम क्या करें, विधाता ने तुम्हारे करम में यही लिखा है कि तुम हमारे ध्यान से विमुख रहकर दुराशाओं से पूर्ण जीवन व्यतीत करो, तो मैं आपसे यह पूछता हूँ कि क्या आप विधाता के लेख को नहीं मिटा सकते, उनके लिखे हुए पर कलम नहीं चला सकते ? आप तो सब कुछ करने में समर्थ हैं, ब्रह्मा–विष्णु सब कठपुतली की भाँति आपके इशारे पर नाचते हैं। फिर क्या आप मेरे लिए इतना भी नहीं कर सकते ? यदि आप कहें कि ब्रह्मा जी के सामने मेरी पेंश नहीं आती, तो मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आप उस दिन को भूल गये, जब आपने उनका गोल–गोल पाँचवां मुख जो बहुत बढ़–चढ़ कर बातें कर रहा था, बात की बात में अपने नख के अग्र भाग से ही कलम कर दिया था और इस प्रकार बेचारे ब्रह्मा जी, जो आपकी बराबरी करने चले थे, ''चतुरानन'' ही रह गये ? बस, यह सब बहाने बाजी रहने दीजिए, मैं इस प्रकार भुलावे में नहीं आने वाला। अब तो जिस तरह से भी हो आपको मेरा उद्धार करना ही होगा। इस बार तो मैं आपसे बाजी लेकर ही मानूँगा, यों सहज ही में नहीं छोड़ने का।।२।।

श्लोक

करोमि त्वपूजां सपदि सुखदो मे भव विभो।
विधित्वं विष्णुत्वं दिशासि खलु तस्याः फलमिति।।
पुनश्च त्वां द्रष्टुं दिवि भुवि वहन् पक्षिभृगता।
मद्दृवट्वा तत्खेदं कथमिह सहे शंकर विभो।।३।।

हिन्दी अनुवाद—हे प्रभो ! मैं अपनी पूजा का फल आपसे यही चाहता हूँ, कि आप मुझे अपने चरणों से कभी अलग न करें। आपके चरणों से दूर रहकर मैं और तो क्या, ब्रह्मा और विष्णु का पद भी नहीं

चाहता, क्योंकि ब्रह्मा और विष्णु को भी आपको ढूँढने के लिए क्रमशः हंश और वराह का रूप धारण करना पड़ा, किंतु फिर भी वे आपका पता न पा सके। वह ब्रह्मा और विष्णु का पद किस काम का जिसमें रहकर आपसे विछोह हो। बाज आया ऐसे बड़प्पन से, मुझे वह नहीं चाहिए। मैं तो छोटे से छोटा होकर आपके चरणों में पड़ा रहना चाहता हूँ कृपया मुझे वही स्थान दीजिए।।३ ।।

श्लोक

करस्थे हमाद्रौ गिरिश निकट स्थे धनपतौ।
गृहस्थे स्वर्भूजा मरसुर भिचिन्ता मणि गणे।।
शिरःस्थे शीतांशौ चरण युगलस्थे अखिलशुभे।
कमर्थ दास्येऽहं भवतु भवदर्थ मम मनः।।४।।

हिन्दी अनुवाद—हे गिरिश! स्वर्णगिरी (मुझसे) आपके समीप ही है, करतल गत ही है। मन में आयी की सोना ही सोना ! ऐसी दशा में आपको सोने की दरकार तो हो ही नहीं सकती और फिर यदि कोई सोना आपकी नजर करना ही चाहे तो बेचारा कहाँ तक देगा ? जगत भर का सोना यदि इकट्ठा कर लिया जाय तो भी वह सुमेरू गिरि के एक पासंग में भी नहीं आ सकता। इधर देवताओं के खजांची कुबेर जी जो साक्षात धनपति हैं, आपके बगल में ही ''अलका पुरी'' में रहते हैं, जब चाहा उनसे मंगवा लिया। जब धनपति आपके पड़ोसी हैं तब आपको धन की भी क्या कमी रह सकती है ? कल्प वृक्ष, कामधेनु और चिन्तामणियों का ढेर आपके घर में ही मौजूद हैं, क्योंकि ''ऋद्धि–सिद्धि'' आपकी पुत्र–वधू हैं। वे जब चाहें एक क्षण में ही दुनिया भर का सामान लाकर जुटा सकती हैं, वे जब चाहें एक क्षण में ही दुनिया भर का सामान लाकर जुटा सकती हैं, आपके इशारे भर की देरी है। ऐसी दशा में आपको किसी भी वस्तु का अभाव नहीं हो सकता। जिसकी मैं पूर्ति कर सकूँ।

चन्द्रमा जो सुधाकर (अमृत का खजाना) हैं सदा आपके मस्तक पर ही रहते हैं और आपके चरण युगल समस्त कल्याणों के धाम हैं। फिर ऐसी कौन सी वस्तु हो सकती है जो मैं आपको भेंट करूँ ? ''और फिर मेरे पास तो ''मन'' के सिवा और कोई वस्तु है भी नहीं। अतः आप कृपाकर इसी को स्वीकार कीजिए। मैं अपने को इसी से कृतार्थ समझूँगा।।४।।

श्लोक

नालं वा परमोपकारक मिदं त्वेकं पशूनां पते।
पश्यन् कुक्षिगतांश्च राचर गणान् बाह्यस्थितान रक्षितुम्।।
सर्वाभर्त्य पलाय नौषध मतिज्वालाकरं भीकरं।
निक्षिप्तं गरलं गले न गिलितं नोद्गीर्णमेव त्वया।।५।।

हिन्दी अनुवाद—हे पशुपते ! आपकी दयालुता का क्या कहना। समुद्र से निकले हुए कालकूट महाविष की प्रलयकारी ज्वालाओं से भयभीत हो देवता लोग जब आपकी शरण आये तो आप दयापरवश हो उस उग्र विष को अपनी हथेली पर रखकर—आचमन कर गये। इस प्रकार उसे आचमन तो कर गए, किंतु उसे मुँह में लेते ही आपको अपने उदस्थ चराचर विश्व का ध्यान आया और आप सोचने लगे कि जिस विष की भयंकर ज्वालाओं को देवता लोग भी नहीं रह सके, उसे मेरे उदरस्थ जीव कैसे सहेंगे ? यह ध्यान आते ही अपने उस विष को अपने गले में ही रोक लिया, नीचे नहीं उतरने दिया। इस प्रकार आपने उस भयंकर विष से देवताओं की ही नहीं अपितु समस्त चराचर जगत की रक्षा की। धन्य है आपकी परदुःख कातरता को ! इसी से तो आपको "भूत भावन" कहते हैं। उसी स्वभाविक दया से प्रेरित हो आप इस विषय विष से जर्जरित संतप्त हृदय की भी सुध लीजिए और इसे अपने अभय चरणों की सुखद सुशीतल छाया में रखकर शाश्वत सुख एवं शान्ति का अधिकारी बनाईये।।५।।

रूद्राभिषेक वैदिक मंत्र स्तुति

नोट—शिव भक्तों ! भगवान शिव को जल चढ़ाते समय निम्न लिखित "स्तुति पाठ" करें। जल चढ़ाते समय यह स्तुति पाठ करने से भक्तों पर भगवान शिव अति प्रसन्न होते हैं।

स्तुति आरम्भ

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
ॐ बाहुभ्याम्युत ते-नमः।।
या ते रूद्रा शिवा तनूर धोराऽपि पापकसिनी।
तया नस्तन्वा शन्त मया गिरिशन्ता भिचाकशीहि।।
या मुषं गिरिशन्त हस्ते विभर्व्य स्तवे।
शिवां गिरित्रतां कुरू मा हिसीः पुरुषं जगत्।।
शिवेन वचसा त्वा गिरिसाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्ज गदयक्ष्म् सुमना असत्।।
अध्यवोचदधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्य सर्वाज्जम्भ यज्त्स्वांश्च-।।
असौ यस्ताम्रो अरूण उतबभ्रूः सुमंगल।
ये चैनं रूद्रा अभितो दिक्षुःश्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा हेडईमहे।।

असौ योऽवसर्पीति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नु दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।
नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽकरं नमः।।
प्रमुञ्च धन्वन स्त्वमुभयो रार्त्योर्ज्याम।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवांशउत।
अनेषन्नस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः।।
या ते हेतिर्मी दुष्टम् हस्ते वभूव ते धनुः।
तयास्मान्वि श्वत स्त्वमयक्ष्मया परि भुज।।
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो च इषुधिस्त वारे अस्मन्नि धेहि तम्।।
अवतत्य धनुष्टव सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।
नमस्त आयुधा यानाततताय घृष्णवे।
उमाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।

मा नो महान्त मुत मा नो अर्भकं,
मा ना उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा,
नः प्रिया स्तन्वो रुद्र रीरिषः।।
मा नश्तोके तनये मा न आयुषि,
मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधी-,
र्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।

द्वादश ज्योर्तिलिंगो के अर्चाविग्रह स्तोत्र

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमों कारे परमेश्वरम्।।
केदारं हिमवत्पृष्टे डाकिन्यां भीम शंकरम्।
वाराणस्यां च विश्वेश त्र्यम्बकं गौतमी तटे।।

वैद्यनाथं चिन्ता भूमौ नागेशं दारूका वने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरूत्थाय चः पठेत्।
सर्वपापै विर्निर्मुक्तः सर्वसिद्ध फलं लभेत्।।

अर्थात्–(1) सौराष्ट्र प्रदेश–(काठियावाड़) में सोमनाथ (2) श्री शैल पर–मल्लिकार्जुन, (3) उज्जैन में महाकाल, (4) ओंकार में परमेश्वर, (5) हिमालय पर केदार (6) डाकिनी में भीम शंकर (7) काशी में विश्वेश्वर, (8) गोमती तट पर त्र्यम्बक, (9) चिन्ता भूमि में वैद्यनाथ, (10) दारूका वन में नागेश, (11) सेतबन्ध (12) शिवालय में स्थित घुश्मेश्वर–इन बारह ज्योर्तिलिंग के नामों का जो प्रातः काल उठकर पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है और समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

(ग्याहरवां भाग)

भगवान शिव यंत्र-मंत्र खण्ड

यन्त्र-मन्त्र का परिचय, शक्ति और महत्व

पाठको ! आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से–''यांत्रिक विकाश'' की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। इस यांत्रिक शक्तियों का निर्माण–''देवासुर संग्राम''–से पूर्व ही हो चुका था। उस समय देवि देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण–सुदर्शन चक्र, अग्नि–बाण, ब्रह्म शक्ति आदि हैं।

पूर्व काल के मूल यांत्रिक–परिभाषाओं को लेकर आज के वैज्ञानिकों ने ''परमाणुबम, हाईड्रोजन बम'' आदि–विश्व संहारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है। इस यंत्रों को हम भौतिक यंत्रों के नाम से जानते हैं।

परन्तु आज इस परम पवित्र शिव उपासना नामक पुस्तक में जिन यंत्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ, उसका नाम–''सिद्धि यंत्र'' है, जो आड़ी, तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है और इस सिद्धि यंत्र को यही कल–पुर्जे चलाते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा ''सिद्धि यंत्र'' मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

सिद्ध यंत्रों में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है, ये यंत्र जो इतनी ''बिस्फोटक ऊर्जा'' अपने गर्भ में छुपाये हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका ?

यंत्रों को समझने से पहले हमें मंत्र संसार में पदार्पण करना होगा, तभी हम इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है। उसी प्रकार ''शब्द'' मात्र भी भगवान है। जगत का मूल कारण शब्द है। यह बात ''स्फोट वाद'' प्रतिदिन करता है।

''प्रत्येक शब्द एक कम्पन उत्पन्न करता है'' और प्रत्येक कम्पन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएँ मात्र होती है, जो आँखों से नहीं दिखती। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती है, जिससे शब्द उत्पन्न होता है। ये रेखाएँ गाने वाले के शब्द के कम्पन से रिकार्ड पर बनी हैं। वर्षों पहले फ्रांस में किसी ने एक ऐसा यंत्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने पर यंत्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछल कर एक ''आकृति'' बना देता था। एक भारतीय सज्जन ने जब उस यंत्र के सम्मुख–''कालभैरव'' की स्तुति गायी तो–यंत्र के पर्दे पर रेत के कणों से–काल भैरव का रूप बन गया।

मन्त्र शब्दों का समूह है, मन्त्र–ईश्वरीय शक्ति है, यह निर्वाण का मार्ग है, यह ''शिव और शक्ति'' का प्रतीक है और साक्षात–''देवता'' है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है, जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षात कार करते हैं।

शब्दों के समूह मंत्रों की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है सुर है और अपनी ही ताल है। जो मानव इस महान सुरताल को समझ लेता है, जान लेता है, वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है। यदि मंत्र को श्रद्धा पूर्वक सुर व ताल में लयवद्ध होकर बोला जाता है, तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं, जिससे साधक के मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

शब्दों से कम्पन होती है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसलिए–यंत्रों मंत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किंतु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि–मुनि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की, जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इस विचार धारा को लेकर वेदों, पुराणों और अनेक तांत्रिक ग्रन्थों की रचना ऋषि–महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया और परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त कर प्राणी गलत कार्य करने लगे। अतः ऋषि–महर्षियों ने मंत्र को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखने के लिए उन्होंने ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया जिसे–''यन्त्र'' कहा गया।

यन्त्रों के सक्ष्म शब्द और अंकों का महत्व

यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक देवी और देवता हैं। जैसा वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं कि–"H.Q." का क्या तात्पर्य है कि–"श्रीं, ह्रीं, फ्रीं," और "क्रीं" क्या है। पाठको ! ये सभी सूक्ष्म शब्द "देवी" के स्वरूप हैं।

जैसे 'श्रीं' का मतलब 'लक्ष्मी', 'ह्रीं' का भगवति दुर्गा, 'क्रीं' का भगवति महाकाली, 'गं' का भगवान श्री गणेश, और 'ऐं' का तात्पर्य विद्या–बुद्धि दायिनी माता सरस्वती से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक 'अंक' भी देवता है, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतना ही नहीं, यंत्र के लाईन, त्रिकोण, भुपूर का भी बहुत विशाल और अद्‌भुत अर्थ है। जैसे–बिन्दु का मतलव ब्रह्मा, त्रिकोण का मतलव शिव और भुपुर की तुलना भगवती से की गई है। उस यंत्रों का रेखा चित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखा चित्र हैं और सूक्ष्म सशक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इस लिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गयी है कि आज इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया।

भारतीय विज्ञान यन्त्रों को–मांसल नहीं करता, रेखा चित्रों को ठोस रूप नहीं देता, बल्कि उसके माध्यम से–"शक्ति के बीज" को टटोलता है और उसे सक्रिय करता है। परन्तु हमारा विज्ञान अभी तक यह जान नहीं पाया है कि किसी पदार्थ की अन्तः शक्ति को किस वातावरण और विधि से प्रकट किया जा सकता है।

यंत्र लिखने का विधान

पाठको ! श्रद्धा यंत्रों का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना जीवन है। यंत्रों में रेखाओं बीजों को बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है।

यंत्र के प्रति सन्देह करने से यन्त्र मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि–"कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत"–। क्योंकि यंत्र लिखते समय जरा सी भी असावधानी मौत के मुँह में झोंक देता है। इसलिए यंत्र की साधना की अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति हेतु किसी परम सिद्ध गुरू से दीक्षा लेकर ही यन्त्र निर्माण करना चाहिए। यंत्र की प्रयोग विधि

पुस्तकों में मिलती जरूर है, किन्तु पुस्तकों को पथ प्रदर्शक ही समझें, क्योंकि इसका ज्ञान और दिशा गुरू ही निर्धारित करता है।

यन्त्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्मशक्तियों को उदय करता है। यन्त्र की रचना करते समय रेखाएँ शुद्ध भाव से रचना करते हुए खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएँ ही मनुष्य के अन्त–करण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती हैं। उस समय मन तथा चित्र के सहयोग से आसक्ति उत्पन्न होती है और अहंकार तथा बुद्धि के सहयोग से भाव तत्व का उदय होता है। (पूर्ण जानकारी हेतु पढ़ें–पंडित वाई. एन. झा द्वारा रचित–(1) यंत्र–मंत्र द्वारा भाग्य बदलिए (2) विपत्ति नाशक टोटके) तथा अन्तःकरण निर्मल हो जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

यन्त्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का सम्मिश्रण

पाठको ! यंत्र का मूल ''वेद'' है और वेदों का मूल मन्त्र जो शब्दों, अंकों, रेखाओं आदि के रूप में ईश्वरीय अवतार के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने–''रामचरित मानस'' में कहा है कि–''कलियुग में जीवों के कष्टों को देखकर, उसे दूर करने के लिए जगहित की करूण कामना से प्रेरित होकर श्री उमा–महेश्वर (शिव–पार्वती) ने मंत्रों और यन्त्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अक्षर, अंक आदि अनमिल होते हैं तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता तथापि महादेव के प्रताप से ये मंत्र और यंत्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट कर देते हैं।

यंत्र–मंत्र शक्तियों का वेद स्वतः प्रमाण है, इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। अतः यंत्र–मंत्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है।

आइये, अब आपको कुछ दिव्य और अमोघ रामबाण यंत्रों की सिद्धि विधि की जानकारी प्राप्त कराता हूँ।

असाध्य रोग एवं मृत्युभय नाशक "महामृत्युञ्जय यंत्र"

कैंसर, गुर्दे का रोग, आकस्मिक दुर्घटना, हार्ट अटैक, मृत्यु योग एवं किसी भी असाध्य रोगों के लिए अमोघ लाभदायक

असाध्य रोग व्याधि से मनुष्य कभी–कभी इस प्रकार परेशान हो जाता है कि वह मृत्यु शय्या पर सदा–सदा के लिए सो जाना चाहता है। क्योंकि जब डाक्टरों, वैद्यों आदि से इलाज कराते–कराते थक जाता है और रोग पीछा नहीं छोड़ता तब उसके सामने मृत्यु के सिवाय और कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता। उस परिस्थिति में यह महायंत्र ''रामबाण'' का काम करता है, इस यंत्र को धारण करने से दुर्घटना से बचाव और अकाल मृत्यु से भी रक्षा होती है। कृपया इस यंत्र का निर्माण कर स्वयं लाभ उठाकर देखें, अथवा किसी असाध्य बिमारियों को उपयोग करावें। निश्चित ही वह विकराल असाध्य बिमारियों से, अकाल मृत्यु योग से मुक्त हो जायेगा।
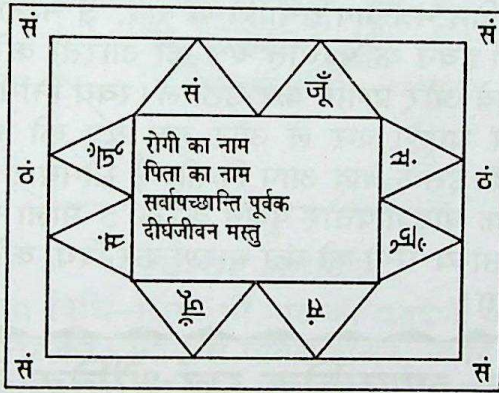
महामृत्युञ्जय यंत्र

साधना विधि—यह साधना किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातः काल छः बजे के अन्दर स्नानादि से निवृत्त होकर, उत्तर मुख बैठकर, अपने सामने आम लकड़ी से बना एक चौंकी रखें। चौंकी के उपर सफेद नवीन वस्त्र का आसन बिछाकर भगवान शिव की तस्वीर या शिवलिंग (धातुवों का बना) रखें। शिव जी तस्वीर के आगे तांबे के प्लेट में गुरू द्वारा प्राप्त ''सिद्ध महामृत्युञ्जय यंत्र रखें''। (गुरू द्वारा सिद्ध यंत्र पूजन स्थल पर रखने से साधना मार्ग की सभी बाधाएँ नष्ट हो जाती है, अनिष्टों से रक्षा होती है और साधक साधना में सफल हो जाता है।) इसके पश्चात् धूप और देसी घी का दीपक जलावें। तत्पश्चात् इस पुस्तक में वर्णित–भगवान शिव का ''षोड़शोपचार पूजन'' (सोलह उपचारों द्वारा) करें।

पूजन के बाद–भोजपत्र के उपर रक्त चन्दन की स्याही और अनार की कलम द्वारा–महामृत्युंजय यंत्र निर्माण करें। अपने द्वारा निर्मित यंत्र को भी गुरू यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् रूद्राक्ष की माला से निम्नलिखित मंत्र का जप आरम्भ करें–

ॐ जूं सः॥

उपरोक्त मंत्र का 11 माला जप सम्पन्न करें। मंत्र जप समाप्त होने के बाद यंत्र की आरती करें, फिर अपने नित्य कार्य में लग जावें। संध्या के समय पुनः स्नान से पवित्र होकर, धूप–दीप जगाकर 11 माला जप करें। इस प्रकार ग्यारह दिन लगातार उपरोक्त मंत्र जप क्रम करते रहें।

''षोड़शोपचार'' पूजन मात्र प्रथम दिन ही करें। दूसरे दिन से केवल जल, बिल्वपत्र, पुष्प, और चन्दन श्रद्धा पूर्वक यंत्र पे चढ़ाकर धूप दीप जगाकर ही जप कर लिया करें।

ग्यारहवें दिन मंत्र जप समाप्ति के बाद, 5 माला मंत्र जप करते हुए हवन करें। हवन के पश्चात् यंत्र की आरती करें। फिर यंत्र के उपर जल चढ़ावें और प्रणाम कर उठा लें। स्वयं निर्मित यंत्र को लाल डोरे में गले में धारण कर लें और गुरू यंत्र को बहती दरिया में प्रवाहित कर दें। इसके बाद आप किसी भी सोमवार को यंत्र निर्माण कर विधि पूर्वक षोड़शोपचार पूजन करके 5 माला मंत्र जप सम्पन्न कर, किसी असाध्य रोगी को यंत्र धारण कर दिया करेंगे, तो वह रोग मुक्त हो जायगा।

आर्थिक, व्यापारिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु ''पारदेश्वर महादेव यंत्र''

पारद शब्द में ''प'' अर्थात् विष्णु, ''आ'' यानि कालिका, ''र'' अर्थात् ''रूद्र'' (शिव) एवं ''द''–अर्थात् ब्रह्मा–इस तरह सभी उपस्थित हैं। इस महायंत्र की पूजन जीवन में मात्र एक बार ही की जाय, तो धन, ऐश्वर्य, सिद्धि व ज्ञान की चमत्कारिक प्राप्ति होती है। यह महायंत्र साधकों के लिए घर में स्थापित करने की ऐसी वस्तु है, जिसका प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी भी मिलता रहता है।

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं। जो सामान्य घर में जन्म लेकर विपरीत स्थितियों मे बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं और समस्याओं के होते हुए भी जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, या जो आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टी से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें भगवान ''पारदेश्वर महदेव यंत्र'' घर में अवश्य स्थापित करना चाहिए। पारदेश्वर यंत्र के पूजन से असम्भव कार्यों को भी साधकों ने–सम्भव कर दिखाया है। मैंने कितने ही साधकों को यह यंत्र प्रदान किया हूँ, जिससे गरीब उपासक

भी प्रसिद्ध उद्योगपति व धनपति बन चुके हैं, और उनकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हो गयी हैं, अतः आप भी इस महायंत्र की सिद्धि प्राप्त कर जीवन सार्थक बना सकते हैं।
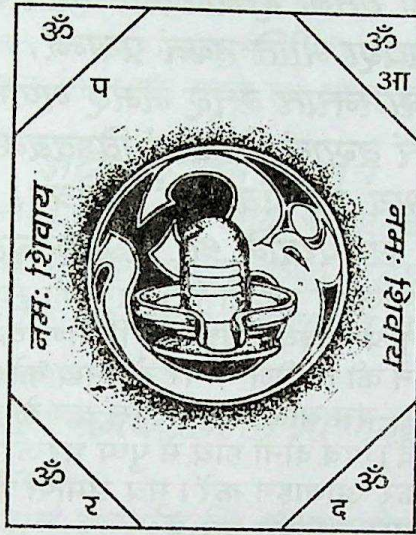
पारदेश्वर महायंत्र

यन्त्र साधना विधि—किसी भी माह की चतुर्दशी की रात्रि में इस महायंत्र की साधना करें। स्नान से पवित्र होकर, अपने घर के पवित्र स्थान पर कम्बल के आसन पर पूरब मुख होकर बैठें। अपने सामने आम लकड़ी की चौंकी पर सफेद आसन बिछाकर भगवान शिव की तस्वीर या मूर्ति स्थापित करें। इसके पश्चात् धूप और देसी घी का दीपक जलावें। तत्पश्चात् गुरू से प्राप्त किया—''सिद्ध गुरू यंत्र'' कांशे के प्लेट में लाल कपड़े में लपेट कर भगवान शिव की तस्वीर के आगे रख दें।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर नीचे—लिखित मंत्र पढ़े। मंत्र समाप्ति के बाद हाथ का जल शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
चः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याम्यंन्तरः शुचिः।।
।।पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर भगवान शिव के निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए ध्यान करें—

भगवान शिव ध्यान मंत्र

ध्यानेन नित्यं महेशं रजतगिरि निमं।
चारू चन्द्रा वतंसं रत्नाकल्पो ज्वलांगं।।
परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्माशनं समन्तात स्तुर ममर गणेर्व्याघ्र।।
व्याघ्र कृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबन्धन।
निखिल भय हरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।
इदं ध्यान समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

नोट—अब भोजपत्र पर रोली चन्दन की स्याही और कुशा की कलम से—भगवान् पारदेश्वर यंत्र का निर्माण करें। निर्मित यंत्र को तांबे, चांदी या सोने की ताबीज में भर लें, मुख को मोम से बन्द कर दें। निर्मित यंत्र को गुरू यंत्र वाले प्लेट में गुरू यंत्र के साथ ही लाल कपड़े में लपेट कर रख दें। अब दोनों हाथ में पुष्प भरकर भगवान पारदेश्वर का निम्नमंत्र पढ़कर आवाहन करें। मंत्र समाप्त होने के पश्चात् हाथ का पुष्प यंत्र के उपर समर्पित कर दें।

आवाहन मंत्र

आवाहयामि देवेशं आदि मध्यान्त वर्जितं।
आधारं सर्वलोकानां आश्रितार्थ प्रदायिनं।।
ॐ पारदेश्वराय नमः इदं आवाहनं समर्पयामि नमः।।

नोट—अब सिंहासन को स्पर्श कर निम्न मंत्र पढ़ें।

आसन समर्पण मंत्र

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बर निवासिने।
रत्न सिंहासनं चारू ददामि करूणा निधे।।
इदं आसनं समर्पयामि ॐ पारदेश्वराय नमः।।

नोट—अब अरघी (तांबे का चम्मच) से आसन पर रखे यंत्र पर नीचे लिखित मंत्र द्वारा दो बार जल डालें।

पाद्य समर्पण मंत्र

अनर्ध्य फलदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतश्च।
च तुभ्यं अर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरः।।
इदं अर्घ्य समर्पयामि ॐ पारदेश्वराय नमः।।

नोट—पुनः निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीन बार अरघी से यंत्र पे जल चढ़ावें।

आचमन मंत्र

ॐ आचमनीयं जलं समर्पयामि।
भगवन् श्री पारदेश्वराय नमः।।

नोट—अब जल (गंगा जल युक्त) की गड़वी दोनों हाथों से पकड़कर, खड़े होकर निम्न मंत्र पढ़ते हुए थोड़ा जल यंत्र पे समर्पित करें।

अभिषेक (स्नान) मंत्र

गंगा विलन्न जटा भारं सोम सोमार्द्ध शेखरं।
नद्या मया समानीते स्नानं कुरु महेश्वरः।।
स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

दूध से स्नान करावें—

इदं दुग्धं स्नान समर्पयामि ॐ श्री पारदेश्वराय नमः।।

दही से स्नान करावें—

इदं दधि स्नानं समर्पयामि ॐ पारदेश्वराय नमः।।

घृत से स्नान करावें—

इदं घृतं स्नानं समर्पयामि ॐ श्री पारदेश्वराय नमः।।

शर्करा रस (सक्कर) से स्नान करावें—

इदं इक्षुसार समुद्र भूतं समर्पयामि ॐ श्री पारदेश्वराय नमः।।

नोट—अब लाल कपड़े से दोनों यंत्र को बाहर कर गंगा जल से धोकर नये लाल वस्त्र से पोंछ दें। इसके पश्चात् क्रमशः अक्षत, तिल, बिल्वपत्र, पुष्प, चन्दन, कुंकुम, धूप, दीप और नैवेद्य से भगवान शिव के आठ रूपों की पूजा करें—

ॐ भवाय नमः।। *ॐ जगत पित्रे नमः।।*
ॐ रूद्राय नमः।। *ॐ कालान्त काय नमः।।*
ॐ नागेन्द्र हाराय नमः।। *ॐ काल कण्ठाय नमः।।*
ॐ त्रिलोचनाय नमः।। *ॐ पारदेश्वराय नमः।।*

नोट—इसके बाद किसी पात्र में पाँच बिल्वपत्रों पर कुंकुम अक्षत रखकर भगवान पारदेश्वर यंत्र पर अर्पित करें। अर्पित करते समय नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें—

पंच बिल्वपत्र चढ़ाने का मंत्र

**ॐ त्रिदलं त्रिगुणा कारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधं।
त्रिजन्म पाप संहार बिल्वपत्रं शिवार्पणं।।**

नोट—अब किसी पात्र में गाय का कच्चा दूध व पानी या गंगा जल मिलाकर रख लें। अरघी से एक एक बूंद जल यंत्र पर चढ़ावें और नीचे लिखित मंत्र का जप भी करते जावें। हर वार मंत्र पूरा होने के बाद एक बूंद जल यंत्र पे चढ़ावें। यह क्रम 31 मिनट तक लगातार करते रहें।

दुग्ध जल समर्पण मंत्र

ॐ शं शम्भवाय पारदे श्वराय सशक्तिकाय नमः।।

नोट—उपरोक्त विधि समाप्त होने के बाद हाथ जोड़कर—भगवान पारदेश्वर स्तोत्र का पाठ करें—

श्री पारदेश्वर स्तोत्र

**ॐ ऐं श्रीं हसौः देवः ॐ ह्रीं ह्रैं भैरवोत्तमः।
ॐ ह्रौं नमः शिवायेति मंत्रो वटुवरा युधः।।
ॐ ह्रौं सदा शिवः ॐ ह्रीं आपदुद्धा रणो मतः।
ॐ ह्रीं महाकरालास्य ॐ ह्रीं बटुक भैरवः।।
भर्गस्त्र्याम्बकः ॐ ह्रीं चन्द्रार्ध शेखर :।
ॐ ह्रीं सं जटिलो धूम्रः ॐ ऐं त्रिपुराघातकः।।
ह्रां ह्रीं ह्रं हरिवामांगः ॐ ह्रीं ह्रं ह्रीं त्रिलोचनः।
ॐ देवरूपो देवज्ञः ऋग्यजुः सामरूपवान।।
रूद्रो धोरखो घोरः ॐ क्षं ह्रं ह्रीं अघोरकः।
ॐ जूं सः पीयूषसक्तों मृताध्यक्षे मृतालसः।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगधि पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूक मिव बन्धनान् मृत्यों र्मुक्षीय मामृतातं।।
ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः मृत्युञ्जयः।
पातु मां सर्वदेवेशो मृत्युञ्जय सदाशिवः।।**

नोट—स्तोत्र पाठ के बाद दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवान पारदेश्वर यंत्र पर पुष्पांजलि समर्पित करें।

पुष्पंजलि मंत्र

**ॐ कर्पूर गौरं करूणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारं।
सदा वसन्त हृदया रविन्द्रे भवं भवानी सहितं नमामि।।**

नोट—उपासको ! यह प्रयोग ग्यारह रात्रि का है। ग्यारहों रात्रि उपरोक्त विधि से ही पूजन सम्पन्न करें। अन्तिम रात्रि पूजन समाप्ति के पश्चात् भगवान पारदेश्वर यंत्र को—उसी स्थान पर—(गुरू यंत्र के साथ ही) रहने दें। नित्य स्नान से पवित्र होकर धूप एवं शाम को धूप—दीप दोनों ही दिखाया करें।

पाठको ! इस महायंत्र की महिमा के बारे में ''ब्रह्मवैवर्त पुराण में'' कहा गया है—

पच्यते काल सूत्रेण यावच्यन्द्र दिवाकरौ।
कृत्वो यंत्र सकृत् पूज्य वसेत्कल्प शतंदिवि।।
प्रजावान भूमिवान विद्वान पुत्र वान्धव वांस्तथा।
ज्ञानवान् मुक्तिवान साधुः रसलिंगार्चनाद भवेत्।।

अर्थात्—''जो एक बार भी'' पारद शिव यंत्र ''का विधि—विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं, तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या, ज्ञान आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही ''मुक्ति'' प्राप्त करता है।''

''शिव तन्त्रावली'' में कहा गया है—

आयुरारोग्य मैश्वर्य यच्चान्य दीप वांछितम्।
पारद यंत्रस्याचर्ना दिष्टं सर्व लभते नरः।।

अर्थात् आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवांछित वस्तुएँ हैं, उन सबको 'पारद शिव यंत्र' की पूजा से सहज की प्राप्ति किया जा सकता है।

'सर्वदर्शन संग्रह' में पारदेश्वर शिव यंत्र की महानता इस प्रकार बतायी गयी है—

अभ्रकं तव बीजं मम बीजं तु पारदः।
बद्धो पारद यन्त्रोयं मृत्यु दारिद्रय नाशनम्।।

अर्थात्—''भगवान शिव भगवती से कहते हैं, हमारे पारद स्वरूप यंत्र की जो पूजन करता है, उसे जीवन में मृत्यु भय व्याप्त नहीं होता और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।''

सर्व कामना पूर्ति हेतु ''ॐ यंत्र''

विद्या-बुद्धि, नौकरी, इंटरब्यु में सफलता, नौकरी में प्रगति एवं सम्मान की प्राप्ति हेतु

उपासको ! निराकार रूप भगवान शिव स्वयं ही 'ॐ' हैं। शास्त्रों में 'ॐ

यंत्र' की उपासना के अनेकों विधान दिए गये हैं, परन्तु अनुभवगम्य साधना का महत्व ही अलग है। भगवान शिव ही तंत्र–मंत्र–यंत्र के रचयिता हैं।

भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं, जहाँ शिव ॐ स्वरूप से भक्तों के पाप–ताप का निवारण करता हूँ, वहीं मृत्युञ्जय स्वरूप में रोग निवारण, अकालमृत्यु भय से मुक्ति दिलाकर साधक को समस्त कामनाओं के साथ दीर्घायु प्रदान करते हैं।

ॐ स्वरूप की उपासना करने से साधक की अज्ञानता दूर होती है, मनवांछित नौकरी, विद्या, ज्ञान व मान–सम्मान की भी सुलभ प्राप्ति होती है।

शास्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भगवान शिव ने भक्त की भक्ति भावना से अत्यन्त प्रसन्न होकर ''कुवेर'' को देवताओं का कोषाध्यक्ष बना दिया, रावण की नगरी सोने की बना दी, अश्विनी कुमार को सम्पूर्ण आयुर्वेदिक विद्या सौंप दी।
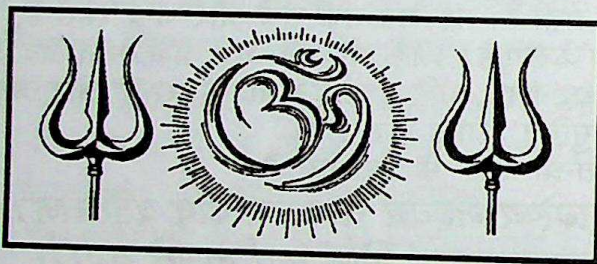
ॐ यंत्र

यंत्र साधना व निर्माण विधि–''ॐ'' यंत्र का निर्माण अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें, अथवा तांबे पत्र पर निर्माण किया हुआ यंत्र पूजन में प्रयोग करें।

शिवरात्रि की रात्रि में या किसी भी सोमवार की रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर पूजा स्थल पर बाधम्बर अथवा कम्बल के आसन पर बैठ जायें। आम लकड़ी के सिंहासन पर भगवान शिव की प्रतिमा या तस्वीर लाल कपड़े का आसन बिछाकर स्थापित करें। तत्पश्चात् गुरू से प्राप्त किया हुआ–सिद्ध ॐ यंत्र तांबे के प्लेट में तस्वीर के समक्ष रखें। धूप–दीप जगावें। भगवान शिव का गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र और नैवेद्य और ''पंचोपचार पूजन'' करें।

तत्पश्चात् अनार की कलम से रक्त चन्दन की स्याही द्वारा भोजपत्र पर ''ॐ यंत्र'' निर्माण करें। यंत्र निर्माण कर, उस यंत्र को तांबे की ताबीज में भरकर, गुरु यंत्र वाले प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् रूद्राक्ष की माला से 21 माला निम्न मंत्र का जाप करें–

"ॐ नमः शिवाय"

ग्यारह रात्रि लगातार उपरोक्त दिव्य मंत्र द्वारा 21–21 माला जप सम्पन्न करें। नित्य मंत्र जप के पश्चात् भगवान शिव की आरती उतारें। ग्यारहवें रात्रि को मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद, एक माला मंत्र जप करते हुए हवन करें, फिर आरती करें। तत्पश्चात् अपना निर्माण किया यंत्र पूजन स्थल पर ही रहने दें और नित्य धूप–दीप सुबह–शाम दिखाते रहें। गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र व बाकी सामग्री बहते जल में प्रवाहित कर दें।

इसके बाद सोमवार के दिन स्वयं ''ॐ यंत्र'' निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर और एक माला उपरोक्त दिव्य मंत्र का जप पूर्ण कर, जिसे भी यंत्र देंगे, सफलताएँ उसकी दासी बन जायेगी। आजमा कर देखें। यह मेरा स्वयं का अनुभव है। इस यंत्र के द्वारा अनेकों दुर्भाग्यशाली भाग्यवान बन चुके हैं।

भगवान शिव अघोरेश्वर यंत्र साधना

साधनाओं में सफलता, गृहस्थ सुख, व्यापार में प्रगति, तथा अपनी सन्तान को सुमार्ग पर लाने हेतु, एवं नौकरी आदि समस्त पूर्ति में ''रामबाण''

उपासको ! ''अघोरी'' शब्द सुनते ही मन में अजीब से भाव जाग्रत होने लगते हैं। आज कल के समाज में ''अघोरी'' का तात्पर्य है महीनों बिना नहाया हुआ, जटा जूट बढ़ाए हुए श्मशान में रहने वाला, चिता की अग्नि से रोटी सेंकने वाला, मैले कुचैले वस्त्र पहने लाल सूर्ख आँखें, गांजा–चरस–भांग पीने वाला क्रोधी स्वरूप, मुँह से निरन्तर अपशब्दों की झड़ी, हर एक से झगड़ने वाला–ऐसा ही मिला–जुला बिम्ब आँखों के सामने उभरता है। क्या यह अघोरी का स्वरूप है ? ऐसे सैंकड़ों व्यक्ति बनारस में देखने को मिलते हैं, जो मणिकर्णिका घाट, दशाश्वमेघ घाट पर पड़े रहते हैं। जिन्हें अपने तन की कोई परवाह नहीं है।

यह तो अघोरी का आज के जमाने में–स्वरूप है। क्या इस प्रकार के व्यक्ति को ही अघोरी औघड़ या अवधूत कहते हैं ? शास्त्रों में तो अघोरी के ऐसे स्वरूप का वर्णन कहीं नहीं है, ऐसा रूप तो अधकचरे कम पढ़े लिखे तांत्रिक करते हैं, जिनके जीवन का उद्देश्य ही मक्कारी, ठगी और धूर्तता है।

अघोरी तो वह शिव भक्त होता है, जो अपने तन की परवाह नहीं करते हुए–शिव के ध्यान में लीन रहता है। उसकी तंत्र क्रिया का

उद्देश्य आत्म उद्धार और आत्म आनंद प्राप्त है। ''अघोरी'' शब्द बना है अघोर से और अघोर हैं भगवान शिव, भगवान शिव को अघोरेश्वर कहा गया है, जो अपने प्रलयंकारी रूप में दसों दिशाओं को आन्दोलित कर सकते हैं, जो अपने नृत्य द्वारा सृष्टि में उथल–पुथल ला सकते हैं। ''अघोर तंत्र'' को तो वही समझा सकता है, जो पूर्ण शिवभक्त हो, जिसने अपने जीवन में तंत्र को पूर्ण रूप से समझने का निश्चय ठान रखा है।

वस्तुतः सच्चाई तो यह है, कि जिस व्यक्ति का अन्तः करण ज्ञान और चेतना से पूर्ण प्रकाशवान हो, वही व्यक्ति ''अघोरी'' है, क्योंकि वह किसी को भी देह रूप में नहीं वरन आत्म रूप में देखता और समझता है। अघोर का अर्थ ही है–अ+घोर–अर्थात् घोर या संसार न हो। अर्थात् जिसने यह जान लिया हो कि यह संसार नश्वर है, यह काया जो आज मेरी है, कल मेरी नहीं रहेगी, मृत्यु का ग्रास बन जायेगी।

अघोरेश्वर शिव स्वरूप की महिमा वर्णन करते हुए, हमारे पूज्य गुरूदेव सिद्ध औघड़ स्वामी माधवा नन्द जी महाराज पर शिव कृपा की घटना याद आ गयी। एक बार मैं पूज्य गुरू देव के साथ ''अमरनाथ की यात्रा'' पर जा रहा था। यह घटना उस वर्ष की है जिस वर्ष अमरनाथ यात्रियों के उपर भयानक कहर वरपा था, बर्फ के प्रलयकारी बरसात ने हजारों शिवभक्तों को मृत्यु और अमरता रूपी मोक्ष के गोद में सुला दिया था। गुरू देव के साथ पहलगांव यात्रा आधार शिविर से पैदल यात्रा करते हुए प्रथम रात्रि ''शेषनाग'' में पड़ाव डाले। ठीक एक बजे रात्रि को गुरूदेव ने हमें ''शेषनाग झील'' के किनारे ले गये और बोले–पुत्र ! तुमने हमारी बहुत सेवा की है आज तुम्हें उसके प्रतिफल में भगवान शिव का दर्शन कराता हूँ। उन्होंने हमें अघोरेश्वर मंत्र की शिक्षा देकर उसका भगवान शिव का ध्यान करते हुए जप करने को कहा, मेरे साथ स्वयं वे भी जप करने लगे। लगभग डेढ़ घण्टे के पश्चात् मेरे आँखों के सामने एक विचित्र रोशनी प्रकट हुई और उस दिव्य रोशनी में आर्शीवाद मुद्रा में, मन्द–मन्द मुस्कान स्वरूप भगवान शिव का अमोध दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। जिन देवाधिदेव भगवान शिव का दर्शन प्राप्त करने हेतु ऋषि–मुनियों को हजारों–हजारों वर्ष तक तपस्या करनी पड़ी थी, उस भगवान शिव का दर्शन, गुरुदेव की तपस्या के बल पर प्राप्त कर मैं धन्य हो गया। फिर वापस आकर ''कामरू कामाख्या'' अपने निज आश्रम में जाकर हमें–''अघोरेश्वर यंत्र'' की साधना करायी आज अघोरेश्वर साधना का ही प्रभाव है कि जिसे भी–अघोरेश्वर यंत्र सिद्ध करके दे देता हूँ, उसकी कामना चमत्कारिक ढंग से निश्चित रूप से पूर्ण हो जाती है।

साधको ! आज उसी साधना का सच्चा स्वरूप आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे सम्पन्न कर समस्त कामना प्राप्त करें।

साधना विधि–अघोरेश्वर यंत्र की साधना शिवरात्रि की रात्रि, किसी भी माह की चतुर्दशी तिथि, को आरम्भ करें। प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण करें। आम लकड़ी के बने सिंहासन पर पीले रंग का आसन बिछाकर भगवान शिव की तस्वीर स्थापित करें।

तस्वीर के आगे तांबे के पात्र में सिद्ध गुरू द्वारा प्राप्त–''सिद्ध अघोरेश्वर यंत्र''–प्लेट में 108 दाने वाली रूद्राक्ष की माला भी रख दें। इसके बाद दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल लेकर, निम्न, मंत्र पढ़कर जल शरीर पर छिड़क लें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

अब पाँच बार नीचे लिखित मंत्र का जप करें–

ॐ श्री गणेशाय नमः।।

इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल, पुष्प, बिल्वपत्र चन्दन, एक रूपये का सिक्का रखकर ''संकल्प'' लें–

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्री मद् भगवतो महापुरूषस्य विष्णु राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्राह्मणों द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्त गते पुण्य क्षेत्रे अमुक गोत्रस्य (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माहं (नाम बोलें) अद्य सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं अघोरास्यं यंत्र साधना संपत्स्ये। (हाथ की वस्तुएँ भगवान शिव के सिंहासन पर समर्पित कर दें)

दिग् बन्धन–

अलग–अलग दिशाओं में जल छिड़कते हुए बोलें–

पूर्व–

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर दुरितान्तक पूर्व दिशं-बन्धय-बन्धय। मां रक्ष रक्ष। प्रस्फुर-प्रस्फुर।

अग्नि कोण–

पञ्चानन आग्नेय दिशं बन्धय-बन्धय। मां-रक्ष-रक्ष।

दक्षिण—

घोर पशुपते दक्षिण दिशं बन्ध्य-बन्ध्य। मां रक्ष-रक्ष।

नैऋत्य—

घोरतर तमरूप रौद्ररूपिण नैऋदतीं दिशं बन्ध्य-बन्ध्य। मां रक्ष-रक्ष। चट-चट।

पश्चिम—

त्रिलोचन पश्चिम दिशं बन्ध्य-बन्ध्य। मां रक्ष रक्ष। प्रचट प्रचट।

वायब्य—

धूर्जटि वायब्य दिशं बन्धय बन्धय। मां रक्ष-रक्ष।

उत्तर—

गंगाधर उत्तर दिशं बन्ध्य-बन्ध्य। मां रक्ष-रक्ष। बम बम।

ईशान—

व्योम केश ईशान्यदिशं बन्ध्य बन्ध्य। मां रक्ष-रक्ष। बन्ध बन्ध।

पाताल—

पुरहर भूर्भुवः स्वराद्यु परिलोकेषु सर्व भयेभ्यो। मां रक्ष-रक्ष। घातय घातय।

आकाश—

कनुजान्तक अतलादि सप्तलोकेषु सर्वभयेभ्यो मां रक्ष रक्ष। हुं फट् स्वाहा। अस्त्राय फट् दिशं बन्धय। मां रक्ष रक्ष। अन्तरं बन्धय बन्धय। आकाशं बन्धय। मां रक्ष रक्ष।

नोट—अब दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर "विनियोग" करें। मंत्र समाप्त होने पर जल भूमि पर छोड़ दें।

विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री अघोर मंत्रस्य यन्त्रय अग्नि ऋषिः अनुष्टुप छन्दः अघोर रूद्रो देवता। मम इष्ट कामार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।।

नोट—निम्न मंत्र बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों को स्पर्श करें—

ॐ अघोरेभ्यो हृदयाय नमः। (हृदय)
ॐ अथ घोरेभ्यः शिरसे स्वाहा। (सिर)
ॐ घोरघोरतरेभ्यः शिखायै वौषट्। (शिखा)
ॐ सर्वेभ्यः कवचाय हुं। (पुरा शरीर)
नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः अस्त्राय फट्। (अपने सिर पर हाथ घुमाकर तीन ताली बजाएँ)

नोट—अब अपने हाथों से रक्त चन्दन, अनार की कलम से भोजपत्र पर निम्न यंत्र चित्र तैयार करें—
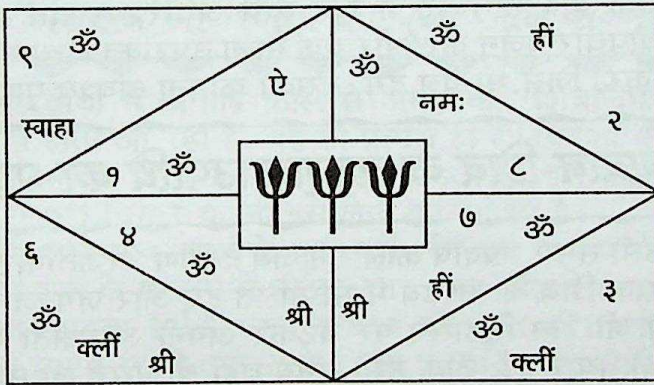
यंत्र निर्माण करने के पश्चात् उसे सोने, चांदी या तांबे की ताबीज़ में भरकर, गुरु द्वारा प्राप्त यंत्र के साथ रख दें। अब जल, अक्षत, चन्दन, बिल्व पत्र, पुष्प और नैवेद्य द्वारा यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर भगवान शिव का ध्यान करें—

ध्यान मंत्र

ध्यायेच्च पञ्चमूर्धानं दशबाह्विन्दु मौलिनम्।
भिन्नांजन चय प्रख्यं पिंग भ्रू श्माश्रु लोचनम्।।
गो नाना शरणं देवं व्यालयज्ञो पवी तिनम्।
हेमकुन्देन्दु दशनं कोटि राजं तु भीषणाम।।
स्वड्ग चर्म घरं देवं शरचाप समन्वितम्।
परशुश्च गदावज्र शूल प्रहर नोद्धतम्।।
दण्डांकुश घरं देवं प्रणतार्ति विनाशम्।।

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर अघोरेश्वर भगवान शिव को

प्रणाम करें तथा पूर्ण श्रद्धा युक्त होकर रूद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का जप 11 दिन तक नित्य पाँच माला मंत्र जप करें–

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः
सर्वतश्शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु-रूद्ररूपेभ्यः।।

ग्यारहवें दिन मंत्र जप के पश्चात् घृत से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए अग्नि में 108 बार आहुति दें। ऐसा करने से यह साधना पूर्ण हो जाती है। साधना समाप्ति के तीन दिन तक यंत्र व माला को पूजा स्थान में ही रहने दें, इसके पश्चात् गुरु द्वारा प्राप्त यंत्र व पूजन सामग्री बहती दरिया में प्रवाह कर दें। स्वयं निर्मित यंत्र को पूजन स्थल पर स्थापित कर दें और नित्य धूप–दीप दिखावें।

इसके बाद सोमवार के दिन स्वयं अघोरेश्वर यंत्र का निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर और एक माला उपरोक्त दिव्य मंत्र का जप सम्पन्न कर, जिसे भी यंत्र देंगे, उसकी कामना अवश्य पूर्ण होगी।

भगवान शिव के नटराज उपाधि का रहस्य

किसी समय ''प्रदोष काल'' में जब देवगण ''रजतगिरि कैलाश'' पर नटराज शिव के ताण्डव में सम्मिलित हुए और जगज्जननी आद्या श्री गौरी जी रत्न सिंहासन पर बैठकर अपनी अध्यक्षता में ताण्डव कराने को तैयार हुईं, ठीक उसी समय वहाँ श्री नारद जी महाराज भी पहुँच गये और अपनी वीणा के साथ ताण्डव में सम्मिलित हुए। तदनन्तर श्री शिव जी ताण्डव नृत्य करने लगे।

श्री सरस्वती जी वीणा बजाने लगीं, इन्द्र महाराज वंशी बजाने लगे, ब्रह्मा जी हाथ से ताल देने लगे और लक्ष्मी जी आगे–आगे गाने लगी, विष्णु भगवान मृदंग बजाने लगे और बचे हुए देवगण तथा गन्धर्व, यक्ष, पन्नग, उरग, सिद्ध, विद्याधर, अप्सराएँ सभी चारों ओर स्तुति में लीन हो गये। बड़े ही आनन्द के साथ ''ताण्डव'' सम्पन्न हुआ।

उस समय श्री आधा भगवती (महाकाली) पार्वती जी परम प्रसन्न हुई और उन्होंने श्री शिव जी (महाकाल) से पूछा कि आप क्या चाहते हैं ? आज बड़ा ही आनन्द मिला। फिर सब देवों से, विशेष कर नारद जी से प्रेरित होकर उन्होंने यह वर मांगा कि हे देवि ! इस आनन्द को केवल हम लोग ही प्राप्त करते हैं, किंतु पृथ्वी तल में एक ही नहीं, हजारों भक्त इस आनन्द से तथा नृत्य दर्शन से वंचित रहते हैं। अतएव मृत्यु लोक में भी जिस प्रकार मनुष्य इस आनन्द को प्राप्त करें, ऐसा कीजिए। किंतु मैं अपने ताण्डव को समाप्त करूँगा और ''लास्य'' करूँगा। इस बात को सुनकर श्रीआद्या भुवनेश्वरी महाकाली ने

''एवमस्तु'' कहा और स्वयं श्यामा, आद्या काली ''श्याम सुन्दर'' का अवतार लेकर श्री वृन्दावन धाम में आयी और श्री शिव जी (महाकाल) ने राधा जी का अवतार लेकर व्रज में जन्म लिया और देव दुर्लभ रासमंडली की आयोजन की और वही नटराज की उपाधि यहाँ श्याम सुन्दर को दी गयी। बोलो नटराज भगवान की जय।

दुनियाँ के अनेकों देशो में श्री शिव उपासना का उल्लेख एवं वर्तमान समय में भी विश्व के सबसे बड़े मुस्लिम देश ''इंडोनेशिया'' में ''भगवान श्री गणेश का पूजा और सम्मान''

भारतीयों में अनादि काल से अब तक ''शिवलिंग'' की पूजा अराधना होती आ रही है, यह तो प्रत्यक्ष ही है। विदेशों की शिवलिंग पूजा के सम्बन्ध में कुछ विवाद दीख पड़ता है, इस कारण उसी के विषय में कुछ विचार करना इस लेख का उद्येश्य है।

हाँ, तद्विषयक चर्चा के पूर्व–पूर्व–पीठिका के रूप में अपने दश की शिव पूजा के सम्बन्ध में भी दो–चार शब्द लिख देना आवश्यक है। ऐसा जान पड़ता है कि भगवान शिव की पूजा और भक्ति अखिल जगत् में व्याप्त रही है। भारत के किसी भी गाँव और शहरों में जितनी संख्या शिवालयों को मिलेगी उतनी और किसी देवालय को नहीं।

गिरि शिखरों, कन्दराओं, नदियों तथा वन्य प्रदेशों में जहाँ देखो वहाँ शिव स्थान भरे पड़े हैं। काशी, रामेश्वर, श्री शैल, केदार आदि महाक्षेत्रों में ''द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों'' का वैभव अब तक बहुत देखने में आता है। क्यों न हो, भगवान शिव ही तो सब कुछ हैं।

पाश्चात्य देशों में (विदेशों में) कई प्राचीन शिवालयों के होने का पता लगा है, जिससे अनुमान होता है कि–''ईसाई–मत'' के प्रचार के पूर्व उन देशों में भी शिव–स्थान निर्माण किए जाते रहे होंगे। किसी–किसी को इस बात से आश्चर्य हो सकता है, परन्तु आश्चर्य का कारण नहीं है। कारण, जिन शिव ने ''नव खण्डों'' को जन्म दिया है, उनका सम्बन्ध उन समस्त खण्डों के साथ होना बिल्कुल स्वभाविक है।

''काशी के'' परम शिवा भक्त कैलाशवासी ''बाबू श्री बेचू सिंह जी शाम्भव'' ने अपने ''शिवनिर्माल्य रत्नाकर नामक ग्रन्थ'' की ''प्रस्तावना'' में ''फ्रेंचदेशिच लुइस् साहब के ग्रन्थ के'' आधार पर विदेशों में शिवलिङ्गों की पूजन का उल्लेख किया है!

वे लिखते हैं कि–उत्तर अफ्रिका खण्ड के ''इजिप्ट'' प्रान्त में,

''मेफिस'' नामक और ''अशीरिस'' नामक क्षेत्रों में नन्दी पर विराजमान, त्रिशूल हस्त एवं व्याघ्र चर्मधारी शिव की अनेक मूर्तियाँ हैं, जिनका वहाँ के लोग बेलपत्र से पूजन और दूध से अभिषेक करते हैं।

''तुर्किस्तान'' के ''बाबीलन'' नगर में एक हजार दो सौ फुट का एक ''महाशिवलिङ्ग'' है। पृथ्वी भर में इतना बड़ा शिवलिंग और कहीं नहीं देखने में आया।

इसी प्रकार ''हेड्रोपोलिस'' नगर में एक विशाल शिवालय है, जिसमें तीन सौ फुट का ''शिवलिंग'' है। मुसलमानों के तीर्थ ''मक्का शरीफ'' में भी ''मक्केश्वर'' नामक शिवलिंग का होना शिवलीला ही कहनी पड़ेगी। वहाँ के ''जम् जम्'' नामक कुएँ में भी एक शिवलिंग है, जिसकी पूजा खजूर की पत्तियों से होती है।

सबसे बड़ी चौंकाने वाली बातें– समाचार पत्र ''पंजाब केसरी'' ने 29 सितम्बर ई० 2000 को प्रकाशित की है कि आज भी विश्व के सबसे बड़े मुस्लिम देश ''इंडोनेशिया'' में – भगवान शिव के पावन पुत्र भगवान गणपति ''श्री गणेश'' की पूजा अर्चना होती है, और वहाँ की सरकार ने अपनी ''करेन्सी नोटों'' पर शुभता के प्रदाता श्री गणेश जी की तस्वीर छापे हैं। देखिए नीचे चित्र–

'अमेरिका' खण्ड के 'ब्रेजिल देश' में बहुत से शिवलिंग मिलेंगे जो अत्यन्त प्राचीन है। 'यूरोप' के 'कारिन्थ' नगर में तो पार्वती मंदिर भी पाया जाता है। 'इटली' के कितने ही ईसाई लोग अब तक शिवलिंग की पूजा करते आए हैं। 'स्कॉटलैंड' (ग्लासगो) में एक विशाल सोने का शिवलिंग है, जिसकी पूजा वहाँ के लोग बड़ी भक्ति से करते हैं। 'फीजियन' के 'एटिस' और 'निनिवा' नगर में 'एषीर' नामक शिवलिंग है।

यहूदियों के देश में भी शिवलिंग बहुत है, इसी प्रकार – अफरीदिस्तान, चित्राल काबुल, आदि स्थानों में बहुत से शिवलिंग हैं, वहाँ के लोग ''पञ्चशेर'' और पञ्चवीर नामों से पुकारते हैं। इस प्रकार ''भूमण्डल'' के सभी देशों में प्रान्तों में शिवालयों को देखकर यह कहने में किसी को संकोच न होगा कि भगवान शिव की महिमा की महानता, शिवोपसाना महाव्यापक और अत्यन्त प्राचीन है।

श्री विष्णु प्रिया "जगन्माता लक्ष्मी की शिव निष्टा"

एक बार लीलामय भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी को भूलोक में– "अश्व योनि" में जन्म लेने का शाप दे दिया। भगवान की प्रत्येक लीला में जो रहस्य होता है, उसको तो वे ही जानते हैं। श्री लक्ष्मी जी को इससे बहुत क्लेश हुआ, पर उनकी प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने कहा–"देवि ! यद्यपि मेरा वचन अन्यथा तो हो नहीं सकता, तथापि कुछ काल तक तुम अश्वयोनि में रहोगी, पश्चात् मेरे समान ही तुम्हारे एक पुत्र उत्पन्न होगा। उस समय इस शाप से तुम्हारी मुक्ति होगी और तुम फिर मेरे पास आ जाओगी।"

भगवान के शाप से लक्ष्मी जी ने भूलोक में आकर अश्वयोनि में जन्म लिया और वे कालिन्दी तथा तमसा के संगम पर भगवान शंकर की आराधना करने लगी। वे भगवान सदाशिव त्रिलोचन का अनन्य मन से दिव्य एक हजार वर्षों तक ध्यान करती रहीं।

उनकी तपस्या से महादेव जी बहुत प्रसन्न हुए और लक्ष्मी के सामने वृषभ पर आरूढ़ हो, पार्वती समेत दर्शन देकर कहने लगे– देवि! आप तो जगत की माता हैं और भगवान विष्णु की परम प्रिया हैं। आप भुक्ति–मुक्ति देने वाले सम्पूर्ण सचराचर जगत के स्वामी विष्णु भगवान की आराधना छोड़कर मेरा भजन क्यों कर रही हैं ? वेदों का कथन है कि–"स्त्रियों को सर्वदा अपने पति की ही उपासना करनी चाहिए। उनके लिए पति के अतिरिक्त और कोई देवता ही नहीं है। पति कैसा भी हो वह स्त्री का आराध्य देव होता है। भगवान नारायण तो पुरुषोत्तम हैं, ऐसे देवेश्वर पति की उपासना छोड़कर आप मेरी उपासना क्यों करती हैं ?"

लक्ष्मी जी ने कहा–"हे आशुतोष ! मेरे पति देव ने मुझे अश्व योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया है। इस शाप का अंत पुत्र होने पर बताया है, परन्तु इस समय मैं पतिदेव के सांनिध्य से वंचित हूँ। वे वैकुण्ठ में निवास कर रहे हैं। हे देव ! आपकी उपासना इसलिए की है कि–आपमें और श्री हरि में किंचिन मात्र भी भेद–भाव नहीं है। आप और वे एक ही हैं, केवल रूप का भेद है, यह बात श्री हरि ने ही मुझे बतायी थी। आपका और उनका एकत्व जानकर ही मैंने आपकी आराधना की है। हे भगवन् ! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं तो मेरा यह दुःख दूर कीजिए।"

आशुतोष भगवान शिव लक्ष्मी के इन वचनों को सुनकर बहुत

प्रसन्न हुए और विष्णु देव से इस विषय में प्रार्थना करने का वचन दिया और श्रीहरि को प्राप्त करने तथा एक महान पराक्रम शाली पुत्र प्राप्त करने का वर भी उन्हें प्रदान किया। तदनन्तर वे पार्वती के साथ कैलाश चले गये और उन्होंने बुद्धिमान चित्ररूप को दूत बनाकर बैकुण्ठ भेजा। चित्ररूप से भगवान शिव का संदेश पाकर तथा देवि लक्ष्मी की स्थिति जानकर भगवान विष्णु ''अश्व'' का रूप धारण कर लक्ष्मी जी के पास गये और कालान्तर में देवी लक्ष्मी को–''एकवीर''–नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसी से ''हैहय वंश'' की उत्पत्ति हुई। अनन्तर लक्ष्मी जी के शाप की निवृत्ति हुई और वे दिव्य शरीर धारण कर भगवान के साथ बैकुण्ठ पधार गयी। उनकी ''शिव उपासना'' सफल हो गयी।

(देवी भा० ६/१८/22–23)

श्री ब्रह्मा जी के मानस पुत्र "आंगिरस" की शिवोपासना से "देवगुरु वृहस्पति" उपाधि की प्राप्ति

संसार की सृष्टि करने की इच्छा से ब्रह्मा ने मरिचि, अत्रि, अंगिरा आदि ''मानस पुत्र'' उत्पन्न किए। उनमें अंगिरा के एक– ''आंगिरज्ञ'' नामक पुत्र हुए। वे शैशवावस्था में ही बड़े बुद्धिमान और विद्वान थे। वे सब शास्त्र तत्व जानने वाले, वेदों के पारंगत, बड़े रूपवान, गुणवान एवं शील सम्पन्न थे। उन्होंने भगवान शंकर की अराधना प्रारम्भ की। परम पावनी काशी नगरी में शिवलिंग की स्थापना कर, वे घोर तपस्या करने लगे।

तपस्या करते हुए उनके जब दस हजार वर्ष बीत गये, तब जगदीश्वर महादेव उस लिंग से प्रकट होकर कहने लगे कि–''मैं तुम्हारी तपस्या से परम–प्रसन्न हूँ, अपना अभीष्ट पर मांगो।'' अपने सामने उत्कृष्ट तेजोमय जयजूटधारी, परम कल्याण कारी भगवान शंकर की मूर्ति देखकर वे प्रसन्न वदन से स्तुति करने लगे–हे देवाधिदेव जगन्नाथ ! आप त्रिगुणातीत, जरामरण से रहित, त्रिजगन्मय, भक्तों के उद्धार करने वाले और शरणागत वत्सल हैं। आपके दर्शनों ही से मैं कृतकृत्य हो गया हूँ। मेरी समस्त कामनाएँ पूर्ण हो गयीं।

''आंगिरस'' की ऐसी स्तुति सुनकर भगवान आशुतोष ने और भी प्रसन्न होकर उन्हें अनेक वर दिए। उन्होंने कहा–''हे आंगिरस ! तुमने बृहत (बड़ा) तप किया है, इसलिए तुम इन्द्रादि देवों के पति तथा ग्रहों में पूज्य होओगे और तुम्हारा नाम–''बृहस्पति'' होगा। तुम बड़े वक्ता और विद्वान हो इसलिए तुम्हारा नाम–''वाचस्पति'' भी होगा। जो प्राणी तुम्हारे द्वारा स्थापित इस लिंग की अराधना करेगा और

स्तुति पाठ करेगा, उसे मनोवांछित फल मिलेगा तथा ग्रह जन्य कोई भी बाधा भी उसे पीड़ित नहीं करेगी।

इस प्रकार अनेक वर देकर भगवान शंकर ने ब्रह्मा, इन्द्र आदि सभी देवताओं को बुलाया और ब्रह्मा जी से कहा कि–बृहस्पति जी को सभी देवों का आचार्य बना दो। ''ब्रह्मा जी ने उसी समय बृहस्पति का देवाचार्य पढ़ कर अभिषेक कर दिया। उस समय देवताओं की दुंदुभियाँ बजने लगी। इस प्रकार भगवान शंकर के अनुग्रह से ''आंगिरस'' ने वह पद पाया, जिससे बढ़कर स्वर्ग लोक में कोई दूसरा पद हो ही नहीं सकता।

उनके द्वारा स्थापित ''बृहस्पतिश्वर'' लिंग के पूजन से प्राणी प्रतिभा सम्पन्न हो जाता है और ''गुरुलोक'' में वह प्रतिष्ठित होता है।

(स्कन्द पुराण, काशी खण्ड से)

महर्षि वशिष्ठ की शिवोपासना

''महर्षि वशिष्ठ'' एक महान महर्षि हुए। उन्हें ब्रह्मवर्चस्व और अलौकिक शक्ति भगवान शंकर की आराधना में कठोर तप किया करते थे। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह–इन पाँचों यमों तथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान–इन पांचों नियमों का यथा विधि पालन करते थे। प्रातः काल और सायंकाल के समय अग्निहोत्र करने का उनका नियम था। यही अग्नि होत्र करने का उनका नियम था। यही अग्नि होत्र विधि पूरी करने के लिए वे– ''नन्दिनी'' नाम की गौ को अपने आश्रम में रखते थे। उन्हें यह गौ प्राणों से भी अधिक प्रिय थी और इसकी रक्षा तथा सेवा के लिए वे सब कुछ कष्ट उठा सकते थे। इसी गौ के लिए उनका ''विश्वामित्र'' से चिरकाल तक युद्ध होता रहा।

''सुरधेनु नन्दिनी'' कभी बांधी नहीं जाती थी। उसे जब भ्रमण करने की इच्छा होती थी तो वन में जाकर घूम–धाम आती। एक दिन वह आश्रम से भ्रमण करने के लिए कुछ दूर निकल गयी। वहाँ एक गड़ा गड्ढा था। उस गड्ढे की गहराई का पता नहीं लगता था। नन्दिनी उस जलाशय के तट पर चर रही थी। उसी समय पैर फिसलने से वह गड्ढे के जल में गिर पड़ी।

सायंकाल का समय था। प्रतिदिन नन्दिनी सूर्यास्त होने के पहले ही आश्रम में पहुँच जाया करती थी। उस दिन वह रात हो जाने पर भी नहीं आयी तो महर्षि वशिष्ठ चिन्तित हो गये और वे उसे ढूंढने के लिए निकल पड़े। उबड़ खाबड़ भूमि में खोजते हुए वे उसी गड्ढे के समीप

पहुंचे। उसमें से उसकी करूण आवाज सुनकर मुनि को नन्दिनी के गिर जाने का पता लग गया।

महर्षि वशिष्ठ ने उसी समय सरस्वती नदी का स्मरण किया और उनकी प्रार्थना से सरस्वती ने अपने निर्मल जल से उस गर्त को पूरा भर दिया। नन्दिनी झट बाहर आ गयी और महर्षि के साथ आश्रम को चली आयी। परोकारी वशिष्ठ ने सोचा कि इस महागर्त का रहना जीवों के लिए हानिकर है और अनेक जीव-जन्तुओं के इस विशाल गडढे में गिरकर मर जाने का भय है, इसलिए इसको भर देना परम आवश्यक है।

इस विचार से वे पर्वत राज हिमालय के यहाँ गये। हिमालय को महर्षि के आगमन से बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने पाद्य, अर्घ्य आदि सत्कारों से उनका प्रेम पूर्वक स्वागत किया और कहने लगे कि हे मुनि श्रेष्ठ ! आज इस पवित्र चरणों की रज के स्पर्श से यह देश पवित्र हो गया और मेरा जीवन सफल हो गया। देवों के भी परम पूज्य आप जैसे महार्षियों का आगमन साधारण भाग्य से नहीं होता। मेरे योग्य सेवा का आदेश कीजिए। आप जैसे महर्षियों एवं पुण्यात्माओं की सेवा में मेरा सब कुछ समर्पित है।

महर्षि वशिष्ठ ने उनके नम्र वचन सुनकर प्रसन्न होते हुए उस गर्त (महाविशाल गड्ढे) की बातें उन्हें बतलायीं और किसी पर्वत द्वारा उस गर्त को भर देने के लिए कहा। इसपर हिमालय ने कहा कि-''मैं तो पर्वत भेजने के लिए तैयार हूँ, पर उसके वहाँ तक जाने का उपाय क्या है ? पहले तो पर्वतों के पंख थे और वे जहाँ चाहते थे, उड़कर चले जाते थे, पर अब तो इन्द्र ने उनके पंखों को काटकर उन्हें अचल कर दिया है, जिससे वे कहीं नहीं आ जा सकते। ऐसी अवस्था में यहाँ से पर्वत का पहुंचना असम्भव है।

वशिष्ठ ने कहा-हे पर्वत राज ! आपका कहना तो ठीक ही है, पर एक उपाय से काम चल सकता है। वह यह कि आपके ''नन्दिवर्द्धन'' नामक पुत्र का ''अर्बुद'' नाम वाला एक मित्र है, उसमें उड़ने की शक्ति है। वह यदि चाहे तो नन्दिवर्द्धन को क्षण भर में मेरे आश्रम के समीप पहुंचा देगा। यदि मुझपर आपकी श्रद्धा हो तो बिना किसी प्रकार के दुःख माने उसे वहां भेज दीजिए।

हिमालय बड़े संकट में पड़ गये। उनका एक पुत्र मैनाक पर इन्द्र द्वारा काटे जो के भय से सागर में छिपा बैठा था। दूसरे को वशिष्ठ लेने आए। पुत्रों के वियोग में जीवन किस प्रकार सुख से बीतेगा, उन्हें इसी बात की चिन्ता थी, परन्तु इसी के साथ-साथ उन्हें इसका भी भय था कि कहीं वशिष्ठ जी प्रतिज्ञा भंग से कुपित होकर शाप न दे दें। उन्होंने पुत्र वियोग को ब्राह्मण शाप से अच्छा समझकर नन्दिवर्द्धन को वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में जाने का आदेश दे दिया।

नन्दिवर्द्धन ने विनय पूर्वक अपने पिता से कहा–पिता जी ! वह देश तो बहुत बुरा है। वहाँ पलाश, खैर, धव, सेमर आदि जितने वृक्ष हैं, उनमें न सुगन्धित पुष्प है और न मधुर फल ही होते हैं। भयंकर कोल, भील आदि दुष्ट जातियाँ ही उस प्रान्त में निवास करती हैं। वहाँ कोई नदी भी नहीं बहती, जिससे उस देश में रमणीयता आ सके। सबसे प्रधान बात यह है कि आपके चरणों की सेवा छोड़कर मुझे कहीं दूसरी जगह जाने में बड़ा कष्ट होगा। अतएव आप मुझे अपनी ही शरण में रखिये।

वशिष्ठ ने कहा–नन्दिवर्द्धन ! तुम वहाँ की कुछ भी चिन्ता न करो। तुम्हारे शिखर पर मैं नित्यस्वयं निवास करूँगा। विमल सलिल से लहराती हुई नदियाँ बुलाऊँगा। जिससे मनोहर पत्र पुष्प और फलों से परिपूर्ण वृक्षों से उस देश की अलौकिक शोभा हो जायेगी। मनोहर कलरव करने वाले असंख्य पक्षियों से उसकी रमणीयता देखते ही बनेगी। उस समय नाना प्रकार के जन्तु आकर उस देश में निवास करने लगेंगे। इन सब के अतिरिक्त मैं अपनी तपस्या के बल से भगवान शंकर को प्रतिष्ठित कर उस प्रदेश का इतना महत्व बढ़ा दूंगा कि पृथ्वी के सभी प्रान्तों से सहस्त्रों की संख्या में लोग वहाँ आकर अपना जन्म सफल करेंगे। वहाँ सभी देवताओं का वास होगा।

मुनि के वचन सुनकर नन्दिवर्द्धन को बड़ी प्रसन्नता हुई और वह ''अर्बुद'' की सहायता से वशिष्ठ जी के साथ उनके आश्रम में जा पहुँचा। मित्र अर्बुदाचल ने नन्दिवर्द्धन को उस–रात (विशालकाय गड्ढा) में छोड़ दिया और स्वयं भी वहाँ ही रह गया। उन दोनों पर्वतों पर वशिष्ठ जा बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि तुम लोगों को जो वर मांगना हो माँग लो, मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

अर्बुदाचल ने कहा–महर्षे ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिए कि मेरे इस निर्मल सलिल से परिपूर्ण झरने की ख्याति संसार भर में ''नागतीर्थ'' के नाम से हो जाय। इसमें स्नान करने से मनुष्यों को परम धाम मिले। यदि वन्ध्या स्त्री भी इसमें स्नान कर ले तो उसे पुत्र प्राप्त हो जाय।

वशिष्ठ जी ने प्रसन्नता पूर्वक–''ऐसा ही होगा''– यह कहा। तदनन्तर नन्दिवर्द्धन ने वर मांगा कि आप सर्वदा यहाँ निवास करें और इस स्थान का नाम ''अर्बुद'' नाम से प्रसिद्ध हो।

वशिष्ठ जी ने इन दोनों वरों को देकर उसी पर्वत पर अपना स्थायी आश्रम बनाया और देवी ''अरूधन्ती'' के साथ उसमें निवास करने लगे। अपनी तपस्या के प्रभाव से वे गोमती नदी को वहाँ ले आये, जिसमें स्नान करने से घोर पाप करने वाला भी मनुष्य ''स्वर्ग लोक'' को प्राप्त होता है। माघ के महीने में मनुष्य इसमें स्नान कर

जितने तिलों का दान करता है, उतने वर्ष तक स्वर्ग में अलौकिक सुख भोगता है।

उस स्थान का इतना सौन्दर्य और माहात्म्य बढ़ाने पर भी वशिष्ठ जी को संतोष नहीं हुआ और दया सागर भगवान शिव के निवास के बिना वह प्रान्त सूना-सा प्रतीत होता था। जिस देश में भगवान शिव का मंदिर न हो, वह कितना भी सुन्दर क्यों न हो, ''कुदेश'' ही है। इसलिए वशिष्ठ जी ने महादेव जी की आराधना में दुष्कर तप करना प्रारम्भ कर दिया। सौ वर्षों तक उन्होंने केवल फलों का आहार किया। दो सौ वर्ष तक केवल जल पीकर बिताये और एक हजार वर्ष तक केवल हवा पीकर भगवान की आराधना करते रहे। तब भगवान शंकर उनके उपर प्रसन्न हुए। उस समय पर्वत को भेदकर उसके सामने एक सुन्दर परम सुन्दर ''शिवलिंग'' प्रकट हुआ। उसे देखकर वशिष्ठ जी को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे अनेक प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। अनन्तर उसी लिंग में से यह वाणी निकली-

''हे मुनिवर ! तुम्हारे मन की सब बातें मुझे ज्ञात हैं। तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण करने के लिए आज से मैं सदा इस लिंग में निवास करूँगा। इसके पूजन से मनुष्यों को सब प्रकार के सुख प्राप्त होंगे। मेरी प्रसन्नता के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गयी इन त्रैयोक्य-पावनी-मन्दाकिनी में स्नान कर जो इस-''अचलेश्वर'' नामक लिंग का दर्शन करेगा, वह जरा और मरण से रहित परम पद को प्राप्त होगा।''

इतना वरदान देकर भगवान शिव अर्न्तध्यान हो गये और वशिष्ठ जी भगवान शंकर के अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न होकर अनेक तीर्थों और देवों को वहाँ ले आये।

(प्रभाकर खण्ड, अर्बुद० अ० १-४ से)

''द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों'' की उत्पत्ति इतिहास और उत्पन्न होने के स्थानों का वर्णन

हे शिव भक्तो ! इस विश्व में जो कुछ भी दृश्य देखा जाता है तथा जिसका वर्णन एवं स्मरण किया जाता है, वह सब ''भगवान शिव'' का ही ''रूप'' है। करूणा सिन्धु अपने आराधकों, भक्तों तथा श्रद्धास्पद साधकों और प्राणिमात्र की कल्याण की कामना से उनपर अनुग्रह करते हुए स्थल-स्थल पर अपने विभिन्न स्वरूपों में स्थित हैं। जहाँ-जहाँ जब-जब भक्तों ने भक्तिपूर्वक ''भगवान शम्भु'' का स्मरण किया, तहाँ-तहाँ तब-तब वे ''अवतार'' लेकर भक्तों का कार्य सम्पन्न करके स्थित हो गये।

"लोकों" का उपकार करने के लिए उन्होंने अपने स्वरूप भूत-- "लिंङ्ग" की कल्पना की। आराधकों की आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव उन–उन स्थानों में "ज्योतिरूप में" आविर्भूत हुए और "ज्योतिर्लिङ्गरूप में"–सदा के लिए विद्यमान हो गये। उनका ज्योतिः स्वरूप सभी के लिए वन्दनीय पूजनीय एवं नमनीय है।

पृथ्वी पर वर्तमान शिवलिंगों की संख्या असंख्य है तथापि इनमें– "द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की प्रधानता है"। इनकी निष्ठा पूर्वक उपासना से मानव अवश्य ही परम सिद्धि प्राप्त कर लेता है, अथवा वह शिव स्वरूप हो जाता है। शिव पुराण तथा स्कन्दादि पुराणों में इन ज्योतिर्लिङ्गों की महिमा का विशेष रूप से प्रतिपादन हुआ है। यहाँ तक भी कहा गया है कि इनके नाम स्मरण मात्र से समस्त पातक नष्ट हो जाते हैं, साधक शुद्ध निर्मल अन्तः करण वाला हो जाता है और उसे अपने सत्य स्वरूप का बोध हो जाता है तथा वह विशुद्ध बोधमय, विज्ञान मय होकर सर्वथा कृतार्थ हो जाता है। यहाँ इन्हीं–द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का संक्षिप्त विवरण शिव उपासकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पुराणों और वेदों ने इन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की महिमा को इस प्रकार गाये हैं–

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम्।।
केदारं हिमवत्पृष्टेऽाकिन्यां भीम शंकरम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यबकं गोमती तटे।।
वैद्यनाथं चिन्ताभूमौ नागेशं दारूकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत्।
सर्वपापै विर्निर्मुक्तः सर्वसिद्धफलं लभेत।।

हिन्दी अनुवाद–"सौराष्ट्र प्रदेश में "सोमनाथ", श्री शैल पर "मल्लिकार्जुन", उज्जैन में "महाकाल", ओंकार में "परमेश्वर", हिमाचल पर केदार डाकिनी में "भीमशंकर", काशी में "विश्वेश्वर", गोमती तट पर "त्र्यम्बक", चिन्ता भूमि में "वैद्यनाथ", दारूका वन में "नागेश", सेतुबन्ध में "रामेश्वर", और "शिवालय" में–स्थित "घुश्मेश्वर"--इन "बारह ज्योतिर्लिङ्गों के नामों का" जो प्रातः काल उठ कर पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है और समस्त धन–धान्य एवं सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।"–आगे इन्हीं–का संक्षिप्त में वर्णन दिया जा रहा है–

''श्री सोमनाथ'' अवतार कथा

''श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग'' प्रभाष क्षेत्र (काठियावाड़) के ''विरावल'' नामक स्थान में स्थित है। यहाँ के ज्योतिर्लिङ्ग के आविर्भाव के विषय में पुराणों में एक रोचक कथा प्राप्त होती है। ''शिवपुराण''– के अनुसार दक्ष प्रजापति की सत्ताईस कन्याओं का विवाह चन्द्रमा (सोम) के साथ हुआ था, इनमें से ''चन्द्रमा रोहिणी'' से विशेष स्नेह रखते थे। अपनी अन्य कन्याओं के साथ विषमता का व्यवहार देखकर कुपित हो दक्ष ने चन्द्रमा को क्षय रोग से ग्रस्त होने का शाप दे दिया।

सुधा किरणों के अभाव में सारा संसार निष्प्राण सा हो गया। तब दुखी हो चन्द्रमा ने ब्रह्मा जी के कहने पर ''भगवान आशुतोष'' की आराधना की। भगवान ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया और चन्द्रमा को अमरत्व प्रदान करते हुए मास–मास में पूर्ण एवं क्षीण होने का वर दिया। तदनन्तर चन्द्रमा तथा अन्य देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने पर–भगवान शंकर उन्हीं के नाम से–''ज्योतिर्लिङ्ग'' के रूप में वहाँ स्थित हो गए और ''सोमनाथ'' के नाम से तीनों लोकों में विख्यात हुए। इसी पवित्र प्रभास क्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी ने अपनी लीलाओं का संवरण किये थे। भगवान सोमनाथ का ज्योतिर्लिङ्ग गर्भ गृह के नीचे एक गुफा में है, जिसमें निरन्तर दीप जलता रहता है।

''श्री मल्लिकार्जुन'' अवतार कथा

2. दक्षिण भारत में ''तमिलनाडु'' में पाताल गंगा कृष्ण नदी के तटपर पवित्र–''श्री शैल पर्वत'' है, जिसे दक्षिण का ''कैलाश'' कहा जाता है। श्री शैल पर्वत के शिखर–दर्शन मात्र से भी सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और आवागमन के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

इसी शैल पर ''भगवान मल्लिकार्जुन'' का ज्योतिर्मय लिंग स्थित है। मंदिर की बनावट तथा सुन्दरता बड़ी ही विलक्षण है। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ भारी मेला लगता है। मंदिर के निकट ही श्री जगदम्बा जी का भी एक स्थान है। श्री पार्वती जी यहाँ–''भ्रमराम्बा''–कहलाती है।

''शिवपुराण'' की कथा है कि श्री गणेश का प्रथम विवाह हो जाने से कार्तिकेय जी रूष्ट होकर माता–पिता के बहुत रोकने पर भी–''क्रोंच पर्वत''–पर चले गये। देवगणों ने भी कुमार कार्तिकेय को लौटा ले आने की आदर पूर्वक बहुत चेष्टा की, किन्तु कुमार ने सबकी प्रार्थनाओं को अस्वीकार कर दिया। माता पार्वती और भगवान शिव पुत्र वियोग के कारण दुःख का अनुभव करने लगे और फिर दोनों स्वयं क्रौंच पर्वत पर गये। माता–पिता के आगमन को जानकर स्नेहहीन हुए कुमार कार्तिकेय और दूर चले गये। अन्त में पुत्र दर्शन की लालसा

से जगदीश्वर भगवान शिव ज्योतिः रूप धारण कर उसी पर्वत पर अधिष्ठित हो गये। उस दिन ही वहाँ प्रादुर्भुत शिवलिंग–मल्लिकार्जुन ज्योतिलिङ्ग के नाम से विख्यात हुआ। ''मल्लिका'' का अर्थ है– ''पार्वती'' और अर्जुन शब्द शिव का वाचक है। इस प्रकार इस ज्योतिलिङ्ग में ''शिव एवं पार्वती'' दोनों की ज्योतियाँ प्रतिष्ठित हैं।

एक अन्य कथा के अनुसार इसी पर्वत के पास ''चन्द्रगुप्त'' नामक एक राजा की राजधानी थी। एक बार उसकी कन्या विपत्ति से बचने के लिए अपने पिता के महल से भागकर इस पर्वत पर गयी। वह वहीं ग्वालों के साथ कन्द–मूल एवं दूध आदि से अपना जीवन निर्वाह करने लगी। उस राजकुमारी के पास एक ''श्यामा गाय'' थी, जिसका दूध प्रतिदिन कोई दुष्ट लेता था। एक दिन उसने चोर को दूध दुहते देख लिया। जब वह क्रोध में उसे मारने दौड़ी तो गौ के निकट पहुंचने पर– ''शिवलिंग'' के अतिरिक्त उसे कुछ न मिला। पीछे राज कुमारी ने उस स्थान पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया और तबसे भगवान मल्लिकार्जुन वहीं प्रतिष्ठित हो गये। उस लिंग का जो दर्शन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और अपने परम अभीष्ट को सदा–सर्वदा के लिए प्राप्त कर लेता है। शिवरात्रि पर यहाँ विशाल मेला लगता है। भगवान शंकर का यह लिंग स्वरूप भक्तों के लिए परम कल्याण प्रद है।

श्री ''महाकालेश्वर'' ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा

3. सप्त मोक्ष दायिणी पुरियों में ''अवन्तिका'' (उज्जैन) भी एक पुरी है। यह उत्तर भारत का एक प्रमुख ''शैव क्षेत्र'' है। उज्जैन के महाकाल वन में शिप्रा नदी के तटपर भगवान महादेव का 'महाकालेश्वर' ज्योतिर्लिङ्ग प्रतिष्ठित है। 'अवन्ती या अवन्तिका' भगवान शिव को बहुत ही प्रिय है। यह परम पुण्यमय और लोकपावनी पुरी है।

''महाकालेश्वर लिंग की स्थापना'' के सम्बन्ध में पुराणों में अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं। एक कथा के अनुसार उज्जयिनि के राजा चन्द्रशेन की शिवार्चना को देखकर ''श्रीकर'' नामक एक पाँच वर्ष का गोप बालक बड़ा ही उत्कण्ति हुआ। वह एक सामान्य पत्थरों को घर में स्थापित कर उसकी शिवरूप में उपासना करने लगा, परिवार जनों ने बालक की इस क्रिया को साधारण खेल समझकर तथा इस आदत को मिटाने के लिए अनेक प्रकार के कठिन प्रयत्न किए, किंतु शिव भक्त श्रीकर की शिवभक्ति अनुदिन बढ़ती ही गयी। अन्त में अपने भक्त को दर्शन देने के लिए भगवान ''ज्योतिर्लिङ्ग'' रूप में महाकाल वन में प्रकट हुए और भक्त श्रीकर को निहाल कर वहीं स्थित हो गए।

एक दूसरा इतिहास यह भी है कि किसी समय इस अवन्तिका

पुरी में एक अग्निहोत्री वेदपाठी ब्राह्मण रहता था, जो अपने देव प्रिय, प्रिय मेधा, सुकृत और सुव्रत नामक चार पुत्रों के साथ शिव निष्ठा तथा धर्म निष्ठा की पताका फहरा रहा था। उसकी कीर्ति सुनकर ब्रह्मा जी से वर–प्राप्त एक महामदान्ध दूषण नामक असुर, जो रत्न माल पर्वत पर रहता था, अपने दल–बल सहित चढ़ आया। लोगों में त्राहि–त्राहि मच गयी। अन्ततः उस ब्राह्मण और ब्राह्मण पुत्रों की शिवभक्ति के प्रताप से भगवान भूत–भावन एक गर्त से प्रकट हो गए और उन्होंने "एक हुंकार मात्र से" उस असुर को सेना सहित विनष्ट कर डाला और फिर वे संसार के कल्याण के लिए वहीं वास करने का उस ब्राह्मण को वर देकर अन्तर्धान हो गए। तब से भगवान शंकर लिंग रूप से वहाँ स्थित हो गए।" चूंकि भगवान भयंकर हुंकार सहित वहाँ प्रकट हुए थे, इसलिए वे "महाकाल" नाम से प्रसिद्ध हुए।

भगवान महाकालेश्वर–मन्दिर का प्रांगण विशाल है। मन्दिर अत्यन्त भव्य एवं रमणीय है। भगवान का ज्योति रूप भूमि की सतह से नीचे एक गर्भगृह में स्थापित है। "लिंग मूर्ति विशाल है"। और चांदी की जलहरी में नाग परिवेष्टि हैं। इनके एक ओर गणेश, दूसरी ओर पार्वती तथा तीसरी ओर स्वामी कार्तिकेय की मूर्ति विराज मान है। द्वार के सामने विशाल नन्दी की प्रतिमा है। शिवरात्रि पर यहाँ बहुत भीड़ होती है। उज्जैन के शिप्रा के तट पर लगने वाला कुम्भ का मेला तो प्रसिद्ध ही है। श्रद्धालु भक्तगण भगवती शिप्रा में स्नान तथा महाकालेश्वर का दर्शन कर अपने को धन्य मानते हैं।

श्री "ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग" अवतार कथा

4. भगवान शिव का यह परम पवित्र विग्रह–"मालवा प्रान्त में" नर्मदा नदी के तट पर अवस्थित हैं। यहीं "मान्धाता"–पर्वत के उपर देवाधिदेव शिव "ओंकारेश्वर" रूप में विराजमान हैं।

शिव पुराण में–ओंकारेश्वर दर्शन का अत्यन्त माहात्म्य वर्णित है। प्रसिद्ध "सूर्यवंशी राजा मान्धाता"–ने जिनके पुत्र अम्बरीष और मुचुकुन्द दोनों प्रसिद्ध भगवद् भक्त हुए हैं तथा जो स्वयं बड़े तपस्वी और यज्ञों के कर्ता थे, इस स्थान पर घोर तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था। इसी से इस पर्वत का नाम–"मान्धाता पर्वत" पड़ गया।

मंदिर में प्रवेश करने से पूर्व दो कोठरियों में से होकर जाना पड़ता है। भीतर अंधेरा रहने के कारण सदैव दीप जलता रहता है। "ओंकारेश्वर लिंग" गढ़ा हुआ नहीं है–प्राकृतिक रूप में है। इसके चारों ओर सदा जल भरा रहता है। इस लिंग की एक विशेषता यह भी है कि वह मन्दिर के गुम्बज के नीचे नहीं है। शिखर पर ही भगवान

शिव की प्रतिमा विराजमान है। पर्वत से आवृत यह मंदिर साक्षात ओंकार स्वरूप ही दृष्टिगत होता है। कार्तिक पूर्णिमा को इस स्थान पर बड़ा भारी मेला लगता है।

श्री ''केदारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

5. ''केदारनाथ'' पर्वत राज हिमालय के केदार नामक पर अवस्थित हैं। शिखर के पूर्व अलकनंदा के सुरम्य तट पर ''बदरीनारायण'' अवस्थित हैं और पश्चिम में मन्दाकिनी के किनारे ''श्री केदारनाथ'' विराजमान हैं। यह स्थान ''हरिद्वार'' से लगभग–150 मील और ''ऋषिकेश'' से –132 मील उत्तर है। भगवान विष्णु के अवतार ''नर–नारायण''–ने भरतखण्ड के बदरिकाश्रम में तप किया था। वे नित्य ''पार्थिव शिवलिंग'' की पूजा किया करते थे और भगवान शिव नित्य ही उस ''अर्चालिंग'' में आते थे। कालान्तर में आशुतोष भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट हो गये।

उन्होंने नर–नारायण से कहा–''मैं आपकी आराधना से प्रसन्न हूँ, आप अपना वांछित वर मांग लें।'' नर–नारायण ने कहा–देवेश ! यदि आप प्रसन्न हैं और वर देना चाहते हैं तो आप अपने स्वरूप से यहीं प्रतिष्ठित हो जायें, पूजा–अर्चना को प्राप्त करते रहें एवं भक्तों के दुःखों को दूर करते रहें।'' उनके इस प्रकार कहने पर ज्योतिर्लिङ्ग रूप से भगवान शंकर केदार में स्वयं प्रतिष्ठित हो गए। तदनन्तर नर–नारायण ने उनकी पूजा अर्चना की। उसी समय से वे वहाँ–''केदारेश्वर''–नाम से विख्यात हो गये। ''केदारेश्वर'' के दर्शन–पूजन से भक्तों को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

श्री ''भीम शंकर ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

6. श्री ''भीम शंकरज्योतिर्लिङ्ग''–बम्बई से पूर्व एवं पूना से उत्तर भीमा नदी के तट पर ''सह्याद्रि पर'' स्थित है। यहाँ से भीमा नदी निकलती है।

कहा जाता है कि ''भीमक'' नामक–सूर्यवंशीय राजा की तपस्या से प्रसन्न हो कर यहाँ पर भगवान शंकर दिव्य ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में अवतरित हुए थे। तभी से वे ''भीमशंकर'' के नाम से प्रसिद्ध हो गये। किंतु ''शिवपुराण''–के अनुसार श्री भीमशंकर ज्योतिर्लिङ्ग ''आसन'' में कामरूप जिले में ब्रह्मपुर पहाड़ी में अवस्थित हैं। लोक कल्याण, भक्तों की रक्षा राक्षसों का विनाश करने के लिए भगवान शंकर ने वहाँ अवतार लिया था।

इस विषय में शिवपुराण की कथा है कि–''कामरूप'' देश में–''कामरूपेश्वर'' नामक एक महान शिवभक्त राजा रहते थे। वे सदा

भगवान शिव जी के पार्थिव पूजन में तल्लीन रहते थे। उन्हीं दिनों वहाँ भीम नामक एक भयंकर महाराक्षस प्रकट हुआ और देवभक्तों को पीड़ित करने लगा। राजा कामरूपेश्वर की शिव भक्ति ख्याति सुनकर वह उसके विनाश के लिए वहाँ आ पहुँचा और जैसे ही उसने ध्यान मग्न राजा पर प्रहार करना चाहा तो उसकी तलवार भक्त पर न पड़कर ''पार्थिवलिंग'' पर पड़ी, भला भगवान के भक्त का कोई अहित कर सकता है ? उसी क्षण भक्तवत्सल भगवान आशुतोष प्रकट हो गए और उन्होंने दुष्ट भीम तथा उसकी सेना को विनष्ट कर डाला। सर्वदा आनन्द छा गया। भक्त का उद्धार हो गया। ऋषियों तथा देवताओं की प्रार्थना पर भगवान ने उस स्थान पर–''भीमशंकर''–नाम से प्रतिष्ठित होना स्वीकार किया।

श्री ''विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

7. श्री विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग–काशी में ''श्री विश्वनाथ'' नाम से प्रतिष्ठित हैं। इस पवित्र नगरी की बड़ी महिमा है। भगवान शंकर का यह काशीपुरी अत्यन्त प्रिय हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि इस पुरी का प्रलय काल में भी लोप नहीं होता। भगवान विश्वनाथ इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं। यह ''अविमुक्त क्षेत्र'' कहलाता है। यहाँ जो कोई भी शरीर छोड़ता है, वह ''मुक्ति'' प्राप्त कर लेता है। काशी में भगवान विश्वनाथ मरने वालों के कानों में ''तारक मंत्र''–का दान देते हैं। काशी में भगवान शंकर विश्वेश्वर के रूप में अधिष्ठित रहकर प्राणियों को भोग और मोक्ष प्रदान करते हैं। विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा अर्चना, दर्शन एवं नाम स्मरण से सभी कामनाओं की सिद्धि होती है और अन्त में परमपुरुषार्थ मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है।

काशी में उत्तर की ओर ॐ कार दक्षिण में केदार खण्ड एवं मध्य में विश्वेश्वर खण्ड है, इसी विश्वेश्वर खण्ड के अन्तर्गत बाबा विश्वनाथ जी का प्रसिद्ध मंदिर है।

श्री ''त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

8. ''श्री त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग''–बम्बई प्रान्त के–''नासिक'' जिले में स्थित हैं। समीपवर्ती–ब्रह्मगिरि नामक पर्वत से पूतसलिला गोदावरी नदी निकलती है। उत्तर भारत में पाप विमोचिनी गंगा का जो माहात्म्य है वही दक्षिण में गोदावरी का है। जैसे–गंगा अवतरण का श्रेय महा तपस्वी भागीरथ जी को है, वैसे ही गोदावरी का प्रवाह ऋषिश्रेष्ठ गौतम जी की महान तपस्या का फल है, जो उन्हें भगवान आशुतोष प्राप्त हुआ था। भागीरथ के महान प्रयत्न से भूतल पर अवतरित

हुई माता जाह्नवी जैसे ''भागीरथी'' कहलाती है, वैसे ही गौतम ऋषि की तपस्या के फलस्वरूप आयी हुई गोदावरी का नाम–''गौतमी गंगा'' है।

''बृहस्पति'' के सिंह राशि में आने पर यहाँ बड़ा भारी कुम्भ का मेला लगता है और श्रद्धालु जन गौतमी गंगा में स्नान तथा भगवान त्र्यम्बकेश्वर का दर्शन कर अपने को कृतकृत्य मानते हैं। ''शिवपुराण'' में वर्णन आया है कि गौतम ऋषि तथा गोदावरी और सभी देवताओं की प्रार्थना पर भगवान शिव ने इस स्थान पर वास करने की कृपा की और ''त्र्यम्बकेश्वर'' नाम से विख्यात हुए। इस ज्योतिर्लिङ्ग के आविर्भाव की कथा सम्पूर्ण पापों का शमन करने वाली हैं जो संक्षेप में इस प्रकार है–

प्राचीन काल में गौतम नामक एक परमर्षि थे और अहल्या उनकी पत्नी थीं। दोनों परम धार्मिक तथा सदाचारी थे, तपस्या और लोकोपकार करना ही उनका सर्वस्व था। वे दक्षिण में ब्रह्मगिरी में रहते थे। वहाँ महर्षिगौतम ने दस हजार वर्ष तक घोर तपस्या की। एक समय उस क्षेत्र में सौ वर्ष तक एक बड़ा भयानक अवर्षण हो गया। अन्न आदि के अभाव में सर्वत्र अकाल की विभीषिका छा गई। उस समय सभी उस क्षेत्र से अन्यत्र जाकर बसने लगे। परोपकारी गौतम ऋषि ने वरूण देव को प्रसन्न कर एक गर्त को (विशालकाय गड्ढा) दिव्य जल से परिपूर्ण करा लिया और उन्होंने अखण्ड दिव्य जल के प्रभाव से भूमि में अन्न भी उपजा लिया। यह समाचार जानकर ऋषि–महर्षि तथा सभी प्राणी पुनः उस स्थान में आकर आनन्द से रहने लगे।

संयोग से एक बार ब्राह्मणों की स्त्रियों ने जल लेने के प्रसंग में ऋषि पत्नी अहल्या से द्वेश कर लिया और उन्होंने अपने पतिजनों को इस बात के लिए तैयार भी करा लिया कि जिस किसी उपाय से भी इस गौतम ऋषि तथा अहल्या को इस क्षेत्र से बाहर कर दिया जाय। उनके पतियों ने गणेश की आराधना की। भक्तपराधीन गणेश जी प्रकट हुए और उनके दुर्भाव को समझते हुए उन्हें इस दुष्कार्य के लिए रोका भी, किन्तु अन्त में वे–''तथास्तु''–कहकर अन्तर्धान हो गये।

इस कार्य की पूर्ति के निमित्त गणेश जी एक दुर्बल गौ का रूप धारण कर गौतम ऋषि के उस क्षेत्र में पहुंच गए, जहाँ जौ और धान उगे थे। वह गौ काँप रही थी। वह जौ और धान खाने लगी। देववश गौतम ऋषि वहाँ पहुंचे और तिनकों की मुट्ठी से उसे हटाने लगे। तृण के स्पर्श से गौ पृथ्वी पर गिर पड़ी और ऋषि के सामने ही मर गयी। उस समय छिपे हुए गौतम के विरोधी अन्य ऋषियों ने और उनकी पत्नियों ने कहा कि–''ऋषि गौतम ने अशुभ कर्म कर दिया है। इसके द्वारा गौ की हत्या हो गयी है। इसका मुँह देखना पाप है। अतः इसे इस

स्थान से बहिष्कृत कर दिया जाय।'' यह कहकर उन्होंने उसे वहाँ से बहिष्कृत कर दिया। ऋषि गौतम को अत्यन्त अपमानित होना पड़ा। गौतम ऋषि ने उन्हीं लोगों से इसका प्रायश्चित पूछा–''आप लोगों को मुझ पर कृपा करनी चाहिए। आप इस पाप को दूर करने का उपाय बतावें। मैं उसे करूँगा।'' उन्होंने बताया कि आप पूरी पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा करें, मास व्रत करें, इस ब्रह्मगिरी पर सौ बार घूमें, तब आपकी शुद्धि होगी अथवा आप गंगाजल लाकर स्नान करें, एक करोड़ पार्थिव शिवलिंग बनाकर शंकर की पूजा करें, पुनः गंगा स्नान करें और सौ घड़ों से पार्थिव लिंग को स्नान करावें–तो ''उद्धार'' होगा।

गौतम ऋषि ने इस प्रकार कठोर प्रायश्चित किया। भगवान शिव प्रकट हो गए। उन्होंने गौतम से कहा–''महामुने ! मैं आपकी भक्ति से प्रसन्न हूँ। आप वर मांगिए।'' गौतम ने भगवान शिव की स्तुति की और हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा–देव ! आप मुझे निष्पाप कीजिए।'' शिव जी ने कहा–मुने ! तुम धन्य हो। तुम सदा निष्पाप हो। तुम्हारे साथ तो दुष्टों ने छल किया था। जिन दुरात्मावों ने तुम्हारे साथ उपद्रव किया था, वे स्वयं दुराचारी, पाप एवं हत्यारे हैं। शिव जी की बात सुनकर गौतम आश्चर्य–चंकित हो गए। उन्होंने कहा कि–वे लोग मेरा बड़ा ही उपकार किये हैं। यदि वे ऐसा न करते तो कदाचित् आपका यह दुर्लभ दर्शन न हुआ होता। तदनन्तर गौतम ऋषि ने शिव जी से गंगा मांगी। शिव जी ने गंगा से कहा–''गंगे ! तुम गौतम ऋषि को पवित्र करो।'' गंगा ने कहा कि–''मैं गौतम एवं उनके परिवार को पवित्र करके अपने स्थान पर चली जाऊँगी, किन्तु भगवान शिव ने गंगा को लोकोपकारार्थ वैस्वत मनु के अट्ठाईसवें कलियुग तक रहने के लिए आदेश दिया। गंगा ने उनकी आज्ञा को स्वीकार किया और भगवान शिव को भी अपने सभी परिवार के साथ रहने के लिए प्रार्थना की। इसके बाद सभी ऋषिगण एवं देवगण गंगा, गौतम और शिव की जय–जयकार करने लगे। देवों के प्रार्थना करने पर भगवान शिव वहाँ गौतमी तट पर–''त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' के रूप में प्रतिष्ठित हो गये।

यह त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिङ्ग सभी कामनाओं को पूर्ण करता है। यह महापातकों का नाशक और मुक्ति प्रदायक है। जब सिंह राशि पर बृहस्पति आते हैं, तब इस गौतमी तट पर सकल तीर्थ, देवगण और नदियों में श्रेष्ठ गंगा जी पधारती हैं तथा ''महाकुम्भ'' पर्व होता है।

''श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

9. पटना–कलकत्ता रेल मार्ग पर ''किऊल स्टेशन'' से दक्षिण

पूर्व–100 किलोमीटर ''देवघर'' है, इसे ही ''वैद्यनाथ धाम'' कहते हैं। यहाँ पर ''वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' है। इसकी कथा इस प्रकार है–

''महारज रावण'' ने अतुल बल साम्र्थ्य की प्राप्ति की इच्छा से भगवान शिव की आराधना–प्रारम्भ की। वह ग्रीष्म काल में पञ्चाग्नि सेवन करता था, जाड़े में पानी में रहता था एवं वर्षा ऋतु में खुले मैदान में रहकर तप करता था। बहुत काल तक इस उग्र तप से भी जब शिव जी ने प्रत्यक्ष दर्शन नहीं दिया, तब उसने ''पार्थिव लिंग'' की स्थापना की और उसी के पास गड्ढा खोदकर अग्नि प्रज्जवलित की। वैदिक विधान से उस अग्नि के सामने उसने शिव जी की विधिवत् पूजा की। रावण अपने सिर को काट–काटकर चढ़ाने लगा। शिव जी की कृपा से उसका कटा हुआ सिर पुनः जुड़ जाता था। इस प्रकार उसने नौ बार सिर काटकर चढ़ाया। जब दसवीं बार वह सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ, तब भगवान शिव प्रकट हो गये।

भगवान शिव ने रावण से कहा–''मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ, तुम अपना अभीष्ट वर मांग लो।'' रावण ने उनसे अतुल बल–सामर्थ्य के लिए प्रार्थना की। भगवान शिव ने उसे अतुल बल दे दिया। तब रावण ने उनसे लंका चलने के लिए निवेदन किया। तब भगवान शिव ने उसके हाथों में एक ''शिवलिंग'' देते हुए कहा–रावण ! यदि तुम इसे मार्ग में कहीं भी पृथिवी पर रख दोगे तो वह वहीं अचल होकर स्थिर हो जायेगा। अतः इसे सावधानी से ले जाना।'' रावण शिवलिंग लेकर चलने लगा। शिव जी की माया से मार्ग में उसे ''लघुशंका'' की इच्छा हुई, जिसे वह रोक न सका। उसने पास में खड़े हुए एक गोप–कुमारों को देखा और निवेदन करके वह– ''शिवलिंग'' उसी के हाथ में दे दिया। वह गोप उस शिवलिंग के भार को सहन न कर सका और उसने वहीं पृथ्वी पर उसे रख दिया। धरती पर पड़ते ही वह शिवलिंग अचल हो गया। तत्पश्चात् रावण जब उसे उठाने लगा, तब वह शिवलिंग उठ न सका। हतास होकर रावण घर लौट गया। यही शिवलिंग ''वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' के नाम से जगत में प्रसिद्ध हो गया।

इस घटना को जानकर ब्रह्मा, इन्द्रारिक समस्त देवगण वहाँ उपस्थित हो गये। देवगण ने वहाँ भगवान शंकर का प्रत्यक्ष दर्शन किया। देवताओं ने उनकी प्रतिष्ठा की। अन्त में देवगण उन वैद्यनाथ महादेव की स्तुति करके अपने अपने भवन को चले गये। वैद्यनाथ महादेव की पूजा–अर्चना से समस्त दुःखों का शमन होता है और सुखों की प्राप्ति होती है। यह दिव्य शिवलिंग ''मुक्तिप्रदायक'' है।

यहाँ दूर–दूर से जल लाकर चढ़ाने का अत्यधिक माहात्म्य वर्णित है। श्रद्धालुजन कंधे पर कांवर लिए यहाँ की यात्रा सम्पन्न करते हैं।

भक्तों! ''वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग'' की अवतार कथा स्वयं मैंने ही ''गीतबद्ध'' किया हूँ, जो ''भगवान शिव भजन खण्ड'' में आगे वर्णित है। इन गीतों का ''ओडियो कैसेट'' शिघ्र ही बाजार में आने वाला है। इसके संगीत कार हैं–जसपाल बंसल और जितेन्द्र बंसल, एवं ''गायक'' हैं श्री राजकुमार सहगल जालंधर वाले, जिन्होंने अपने मधुर व सुरिली कंठों से पंजाब, हरियाणा और हिमाचल में धूम मचाये हुए हैं।

श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा

10. श्री नागेश्वर भगवान का स्थान गोमती ''द्वारका'' से – ''वेद द्वारका'' को जाते समय लगभग–12–13–मील पूर्वोत्तर मार्ग पर है।

इस महाज्योतिर्लिङ्ग की स्थापना के सम्बन्ध में ''शिवपुराण'' की कथा है कि प्राचीन काल में ''दारूका'' नाम की एक राक्षसी थी, जो पार्वती मैया के वरदान से सदा घमण्ड में भरी रहती थी। अत्यन्त बलवान राक्षस दारूक उसका पति था। उसने बहुत से राक्षसों को लेकर वहाँ सत्पुरुषों का संहार मचा रखा था। वह लोगों के यज्ञ और धर्म का नाश करता फिरता था। पश्चिम समुद्र के तट पर उसका एक वन था, जो सम्पूर्ण समृद्धियों से भरा रहता था। उस वन का विस्तार सब ओर से सोलह योजन था। दारूका अपने विलास के लिए जहाँ जाती थी, वहीं भूमि, वृक्ष तथा अन्य सभी उपकरणों से युक्त वह वन भी चला जाता था।

देवी पार्वती ने उस वन की देख–रेख का भार ''दारूक'' को सौंप दिया था। राक्षस दारूक अपनी पत्नी दारूका के साथ वहाँ रहकर सबको भय देता था। उससे पीड़ित हुई प्रजा ने ''महर्षि और्व'' की शरण में जाकर उनको अपना दुःख सुनाया। और्व ने शरणागतों की रक्षा के लिए राक्षसों को यह शाप दे दिया कि ''ये राक्षस यदि पृथ्वी पर प्राणियों की हिंसा या यज्ञों का विध्वंश करेंगे तो उसी समय अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे।''

इधर देवताओं ने जब यह बात सुनी, तब उन्होंने दुराचारी राक्षसों पर चढ़ाई कर दी। राक्षस बहुत घबराये। यदि वे लड़ाई में देवताओं को मारते तो मुनि के शाप से स्वयं ही मर जाते और नहीं मारते तो पराजित होकर भूखों मर जाते। इस अवस्था में दारूका ने कहा– ''भवानी के वरदान से मैं इस सारे वन को जहाँ चाहूँ, ले जा सकती हूँ।'' यों कहकर वह समस्त वन को ज्यों का त्यों लेकर समुद्र में जा बसी। अब राक्षस लोग पृथ्वी पर न रहकर जल में रहने लगे और वहाँ प्राणियों को पीड़ा देने लगे।

एक बार बहुत सी नावें उधर आ निकलीं, जो मनुष्यों से भरी थीं।

राक्षसों ने उनमें बैठे हुए सभी लोगों को पकड़ लिया और बेड़ियों में बांधकर कारागर में डाल दिया। वे अनेक प्रकार से उनको सताने लगे। उस दल का प्रधान ''सुप्रिय'' नामक एक वैश्य था। वह बड़ा सदाचारी भस्म–रूद्राक्ष धारी तथा भगवान शिव का परम भक्त था। सुप्रिय शिव की पूजा किए बिना भोजन भी नहीं करता था। उसने अपने बहुत से साथियों को भी शिव की पूजा सिखा दी थी। सब लोग–''नमः शिवाय''– मंत्र का जप और शंकर जी का ध्यान करने लगे थे। दारूक राक्षस को जब इस बात का पता चला तो उसने सुप्रिय की बड़ी भर्त्सना की और उसके साथ के राक्षस सुप्रिय को मारने दौड़े। उन राक्षसों को आता देख सुप्रिय भगवान शंकर को पुकारते हुए कहने लगा–

''महादेव ! मेरी रक्षा कीजिए। दुष्टहन्ता महाकाल ! हमें इन दुष्टों से बचाइये। भक्तवत्सल शिव ! अब मैं आपके ही अधीन हूँ और आप ही मेरे सर्वस्व हैं।''

सुप्रिय के इस प्रकार प्रार्थना करने पर भगवान शंकर एक ''विवर'' में से निकल पड़े। उनके साथ ही चार दरवाजों का एक उत्तम मंदिर भी प्रकट हो गया। उसके मध्य भाग में अद्भुत ज्योतिर्मय शिवलिंग प्रकाशित हो रहा था। उसके साथ शिव परिवार के सब लोग विद्यमान थे। सुप्रिय ने अपने साथियों के साथ उनका दर्शन करके पूजन किया। पूजित होने पर भगवान शम्भु ने प्रसन्न हो स्वयं ''पशुपात अस्त्र'' लेकर प्रधान–प्रधान राक्षसों, उनके सारे उपकरणों तथा सेवकों को भी तत्काल ही नष्ट कर दिया और उस दुष्टहन्ता शंकर ने अपने भक्त सुप्रिय की रक्षा की।

इधर राक्षसी दारूका ने दीन चित्त से ''पार्वती'' की स्तुति की और अपने वंश की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। इस पर प्रसन्न होकर महादेवी ने उसे अभय दान दिया।

इस प्रकार अपने भक्तों के पालन और उनकी रक्षा के लिए भगवान शंकर और माता पार्वती स्वयं वहाँ स्थित हो गये। ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप महादेव जी वहाँ नागेश्वर कहलाये और देवी ''शिवा'' नागेश्वरी के नाम से विख्यात हुई। इनके दर्शन का माहात्म्य अलौकिक है। शिवपुराण में कहा गया है कि जो आदरपूर्वक इनकी उत्पत्ति और माहात्म्य की सुनेगा, वह समस्त पापों से मुक्त होकर समस्त ऐहिक सुखों को भोगता हुआ अन्त में परम–पद को प्राप्त होगा।

श्री ''रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग'' अवतार कथा

11. श्री भगवान शिव का ''ग्यारहवाँ ज्योतिर्लिङ्ग'' सेतुबन्ध ''रामेश्वर'' हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के कर–कमलों से इसकी स्थापना हुई थी।

लंका पर चढ़ाई करने के लिए जाते हुए जब भगवान श्री राम यहाँ पहुँचे तो उन्होंने समुद्र तट पर बालुका (रेते का) से एक शिवलिंग का निर्माण कर उसका पूजन किया। यह भी कहा जाता है कि समुद्र तट पर भगवान श्री राम जल पी रहे थे कि एकाएक आकाशवाणी हुई–"मेरी पूजा किये ही जल पीते हो ?" इस वाणी को सुनकर भगवान ने वहाँ समुद्र तट पर बालुका की लिंग मूर्ति बनाकर शिव जी की पूजा की और रावण पर विजय प्राप्त करने का आर्शीवाद मांगा, जो भगवान शंकर ने उन्हें सहर्ष प्रदान किया। उन्होंने लोकोपकारार्थ ज्योतिर्लिङ्ग रूप में सदा के लिए वहां वास करने की प्रार्थना भी स्वीकार कर ली।

श्री रामेश्वर जी का मंदिर अत्यन्त भव्य एवं विशाल है। इस मंदिर में श्री शिव जी की प्रधानलिंग–मूर्ति के अतिरिक्त और भी अनेक शिव मूर्तियाँ तथा अन्य मूर्तियाँ हैं। नन्दी की एक बहुत बड़ी मूर्ति है। मंदिर के अन्दर अनेक कुँएं हैं, जो तीर्थ कहलाते हैं। गंगोतरी के गंगा जल को "श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग" पर चढ़ाने का बहुत बड़ा माहात्म्य है। श्री रामेश्वर से लगभग 20 मील की दूरी पर "धनुष्कोटि" नामक तीर्थ है तथा आस--पास भी अनेकों तीर्थ हैं।

श्री घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा

12. "श्री घुश्मेश्वर" नामक "ज्योतिर्लिङ्ग"– मध्य रेलवे की मनवाड–पूर्णा लाईन पर मनवाड से लगभग 100 किलो मीटर दूर, दौलता बाद स्टेशन से 20 किलो मीटर दूर–"वेरूल ग्राम"– के पास स्थित हैं। "शिवपुराण में"–इस लिंग के प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में एक रोचक कथा आयी है, जो संक्षेप में इस प्रकार है–

"दक्षिण दिशा में एक श्रेष्ठ पर्वत है, जिनका नाम है "देवगिरि"। वह देखने में अद्भुत तथा नित्य परम शोभा से सम्पन्न है। उसी के निकट भारद्वाज कुल में उत्पन्न "सुधर्मा" नाम के एक ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण रहते थे। उनकी प्रिय पत्नी का नामं "सुदेहा" था। दोनों भगवान शंकर के भक्त थे। सुदेहा घर के कार्यों में कुशल और पति की सेवा करने वाली थी। सुधर्मा भी वेद्वर्णित मार्ग पर चलते थे और नित्य अग्निहोत्र किया करते थे। वे वेद शास्त्र के मर्मज्ञ थे। और शिष्यों को पढ़ाया करते थे। धनवान होने के साथ ही बड़े दाता और सौजन्य आदि सद्गुणों के भाजन थे।

इतना होने पर भी उनके कोई पुत्र नहीं था। ब्राह्मण को तो कोई दुःख नहीं था, परन्तु उनकी पत्नी इससे बहुत दुखी रहती थी। वह पति से बार–बार पुत्र के लिए प्रार्थना करती। पति उसको ज्ञानोपदेश देकर समझाते, परन्तु उसका मन नहीं मानता था। अन्ततोगत्वा ब्राह्मण ने कुछ उपाय भी किया, परन्तु वह सफल नहीं हुआ। तब ब्राह्मणी ने

अत्यन्त दुखी हो हठ करके अपनी बहिन ''घुश्मा''—से पति का दूसरा विवाह करा दिया। विवाह से पहले सुधर्मा ने समझाया कि इस समय तो तुम बहिन से प्यार कर रही हो, परन्तु जब इसके पुत्र हो जायेगा तब इससे स्पर्धा करने लगेगी। उसने वचन दिया कि बहन से कभी डाह नहीं करूँगी। विवाह हो जाने पर ''घुश्मा'' दासी की भाँति बड़ी बहन की सेवा करने लगी। सुदेहा भी उसे बहुत प्यार करती रही। घुश्मा अपनी शिवभक्ता बहन की आज्ञा से नित्य एक सौ एक ''पार्थिव शिवलिंग'' बनाकर विधि पूर्वक पूजा करने लगी। पूजा करके वह निकटवर्ती तालाब में विसर्जन कर देती थी।

शंकर जी की कृपा से उसके एक सुन्दर सौभाग्यवान और सद्‌गुण सम्पन्न पुत्र हुआ। घुश्मा का कुछ मान बढ़ा। इससे सुदेहा के मन में डाह पैदा हो गयी, पुत्र बड़ा हुआ। समय पर उसका विवाह हुआ। पुत्रवधू घर में आ गयी। अब तो वह और भी जलने लगी। डाह ने उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया और एक दिन उसने रात में सोते हुए पुत्र को मार डाला और उसी तालाब में ले जाकर डाल दिया, जहाँ घुश्मा प्रतिदिन पार्थिव लिंग विसर्जित करती थी। घर लौटकर वह सुखपूर्वक सो गयी।

सबेरे घुश्मा उठकर नित्य की भाँति पूजनादि कर्म करने लगी। ब्राह्मण सुधर्मा भी अपने नित्य कर्म में व्यस्त हो गए। इसी समय उनकी ज्येष्ठ पत्नी सुदेहा भी उठी और बड़े आनन्द से घर के काम—काज करने लगी,—क्योंकि उसके हृदय में पहले जो ईर्ष्या की आग जलती थी, वह सब बुझ गयी थी। उधर जब बहु ने उठकर पति की शय्या को देखा तो वह खून से भीगी दिखाई दी और उस पर शरीर के काटे हुए कुछ अंग दिखायी पड़े, वह रोती हुई अपनी सास (घुश्मा) के पास गयी और बोली—''माता ! आपके पुत्र कहाँ हैं ? उनकी शय्या खून से भीगी हुई है और उस पर शरीर के कुछ टुकड़े दिखायी दे रहे हैं। हाय ! मैं मारी गयी। किसने यह दुष्ट कर्म किया है ? ऐसा कहती हुई वह भांति—भांति से करूण विलाप करती हुई रोने लगी।

सुधर्मा की बड़ी पत्नी सुदेहा भी उस समय हाय ! मैं मारी गयी ऐसा कहकर उपर से दुःखी होने का अभिनय करने लगी। किंतु यह सब सुनकर भी घुश्मा अपने नित्य पार्थिव—पूजन के व्रत से विचलित नहीं हुई। उसका मन बेटे को देखने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हुआ। उसके पति की भी ऐसी ही अवस्था थी। जब तक नित्य नियम पूरा नहीं होता, तब तक उन्हें दूसरी किसी बात की चिन्ता नहीं होती। पूजन समाप्त होने पर घुश्मा ने अपने पुत्र की शय्या पर दृष्टि पात किया तथापि उसने यह सोचकर दुःख न माना कि जिन्होंने यह बेटा दिया था, वे ही इसकी रक्षा करेंगे। एकमात्र वे प्रभु सर्वेश्वर शम्भु ही हमारे रक्षक हैं तो मुझे चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है ? यह

सोचकर उसने शिव के भरोसे धैर्य धारण किया और उस समय दुख का अनुभव नहीं किया। वह पूर्ववत् पार्थिव शिवलिंग को लेकर स्वस्थ चित्त से शिव के नामों का उच्चारण करती हुई उस तालाब के किनारे गयी। उन पार्थिव लिंग को तालाब में डालकर जब वह लौटने लगी तो उसे अपना पुत्र उसी तालाब के किनारे खड़ा दिखायी दिया। उस समय अपने पुत्र को सकुशल देखकर घुश्मा को न हर्ष हुआ न विषाद। वह पूर्ववत् स्वस्थ बनी रही। इसी समय उस पर संतुष्ट हुए ज्योतिः स्वरूप महेश्वर शिव उसके सामने प्रकट हो गये और बोले–सुमुखि ! मैं तुमपर प्रसन्न हूँ। वर मांगो। तेरी दुष्टा सौत ने इस बच्चे को मार डाला था। अतः मैं उसे त्रिशूल से मारूँगा।

तब घुश्मा ने शिव को प्रणाम किया और यही वर मांगा कि उसकी बड़ी बहन सुदेहा को भगवान क्षमा कर दें।

भगवान शिव बोले–"उसने तो बड़ा भारी अपकार किया है, तुम उस पर उपकार क्यों करती हो ? दुष्ट कर्म करने वाली सुदेहा तो दण्ड के योग्य है।"

घुश्मा ने कहा–"देव ! मैंने यह शास्त्र वचन सुन रखा है कि जो "अपकार" करने वालों पर भी "उपकार" करता है, उसके दर्शन मात्र से पाप बहुत दूर भाग जाता है। प्रभो ! मैं चाहती हूँ कि उसके भी पाप भस्म हो जायँ। फिर उसने कुकर्म किया है तो करे, मैं ऐसा क्यों करूँ।"

घुश्मा के ऐसा कहने पर दया सिन्धु भक्त वत्सल महेश्वर और भी प्रसन्न हुए और बोले–"घुश्मे ! तुम कोई और भी वर मांगो। मैं तुम्हारे लिए हितकर वर अवश्य दूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारी इस भक्ति से तथा विकार शून्य स्वभाव से बहुत प्रसन्न हूँ।"

भगवान शिव की बात सुनकर घुश्मा बोली–"प्रभो ! यदि आप वर देना चाहते हैं तो लोगों की रक्षा के लिए सदा यहाँ निवास कीजिए और मेरे नाम से ही आपकी ख्याति हो।"

तब भगवान शिव बड़ी प्रसन्नता से घुश्मा को अनेक वर देकर वहाँ "ज्योतिर्लिङ्ग" रूप में स्थित हो गये और घुश्मा के नाम पर ही "घुश्मेश्वर" कहलाये। उस सरोवर का नाम शिव जी के कथनानुसार ही–"शिवालय" हो गया।

उधर सुदेहा भी पुत्र को जीवित देखकर बहुत लज्जित हुई। उसने बहुत पश्चाताप् किया तथा पति और बहन के साथ उस शिव लिंग की एक सौ एक दक्षिणावर्त परिक्रमा की। पूजा करके परस्पर मन का मैल दूर हो गया और वे वहाँ सुख से रहने लगे।

(श्री द्वादस ज्योतिर्लिङ्ग कथा सम्पूर्णम)

भगवान शिव भजन खण्ड

श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग कथा

(भजन एवं गीत स्वरूप)

(वन्दना)

प्रथम करूँ मैं आज वन्दना, गणनायक श्री गणेश।
सुमिरौं मातु शारदा, ब्रह्मा-विष्णु-महेश।।
आदिशक्ति रणचण्डी दुर्गे, करो जगत कल्याण।
सर्वदेव वन्दना करूँ, है बारंबार प्रणाम।।

देवों के देव महादेव के भक्तों ! आज मैं डमरू धारी भोले भंडारी के ''श्री वैद्यनाथ अवतार की कथा'' सुनाने जा रहा हूँ, जिसे सुनकर प्राणी के सभी पाप कट जाते हैं, दुखदरिद्री, शोक सन्ताप मिट जाते हैं, दुख दरिद्री, शोक सन्ताप मिट जाते हैं और प्राणी सभी सुखों को भोगकर मोक्ष प्राप्त करता है।

वेदों और पुराणों में वर्णन है कि एक बार ''प्रयाग राज'' में ऋषियों मुनियों का एक बड़ा विशाल सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में ऋषि मुनियों ने महर्षि व्यास जी से निवेदन किए–

''हे ऋषि श्रेष्ठ ! आज हम सबको भगवान शिव के'' वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा ''सुनने की अभिलाषा है। अतः हे देव ! भोले नाथ की महिमा रूपी अमृत रस अपने मुख से बरसा कर हम सब ऋषियों को सराबोर कर डालें।''

ऋषियों की वाणी सुनकर प्रसन्न हो गद्–गद् हृदय से वेद्व्यास जी बोले–हे ऋषियों ! आप सभी वन्दना करने योग्य हैं, इसलिए कि आप सभी ने श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग अवतार कथा सुनने की इच्छा प्रकट की हैं। इस कथा का वर्णन भगवान शंकर ने अपने श्री मुख से

महर्षि सनत्कुमार जो को सुनाए थे और उनसे मैंने सुनी थी। भगवान शिव के चरणों की वन्दाना कर श्री ब्यास जी कथा प्रारम्भ करते हुए बोले–

(गीत)

श्री वैद्यनाथ अवतार की कथा, सुनते जो मन लाय।
तर जाए जो मुख से बोले, ॐ नमः शिवाय।।१।।
'वैद्यनाथ'' की महिमा सुनकर, सभी क्लेश मिट जाते।
लक्ष्मी उनके घर में बसती, सभी सफलता पाते।।
शिव की ये महिमा सुनने से, संकट कभी न आय।
तर जाए जो मुख से बोले, ॐ नमः शिवाय।।२।।
वैद्यनाथ की कथा को सुनकर, तर जाते हैं पापी।
अन्त में शिव के धाम गए हैं, बड़े–बड़े अभिशापी।।
परम कथा ये सुनने से ही, प्राणी सब सुख पाय।
तर जाए जो मुख से बोले, ॐ नमः शिवाय।।३।।
राजसूय कई यज्ञों का फल, कथा श्रवण से मिलता।
घोर अधर्मी भी तर जाए, पाए सभी सफलता।।
वैद्यनाथ की कथा श्रवण से, प्राणी मुक्ति पाय।
तर जाए जो मुख से बोले, ॐ नमः शिवाय।।४।।

त्रिलोकेश्वर भगवान शिव के भक्तों ! श्री वैद्यनाथ शिवलिंग अवतार की कथा सुनाते हुए श्री व्यास जी आगे बोले--हे ऋषियों !

लंकाधिपति महाराज रावण भगवान शिव के महान भक्त थे। उन्होंने त्रिशूल धारी भोलेभंडारी को प्रसन्न कर वरदान स्वरूप ऋद्धि सिद्धि, सभी ऐश्वर्य, इन्द्रलोक सहित मृत्यु पर भी अपना अधिकार जमा लिये थे।

एक दिन महाराज रावण ने अपनी माता जी को उदास बैठे हुए देखे। उदासी का कारण पूछने पर उनकी माता जी बोली--पुत्र रावण ! हमें भगवान शिव के दर्शन की लालसा है। वृद्धा होने के कारण कैलाश के शिखर पर चढ़ने में असमर्थ हूँ, कैसे उनका दर्शन करूँ ? यही चिन्ता तन–मन को खाए जा रही है।

कैलाशपति के दर्शन की कामना से अपनी माता को दुखी देखकर महाराज रावण बोले–

''माता श्री ! स्वर्गलोक विजयी महाशक्ति रावण जैसे पुत्र के रहते आप इतनी छोटी बातों से चिंतित न हों। मैं इसी वक्त कैलाश को जाता हूँ और शिव को मनाकर लंका ले आता हूँ।''

इतना कहकर लंकेश्वर कैलाश पर जा धमके और लगे कैलाश पति को मनाने। कठिन तप करने के बाद भी जब भोलेनाथ नहीं माने,

तब दशासीस रावण ने अपना एक सिर नित्य काटकर भगवान शिव के चरणों में चढ़ाने लगे। जब दसवां सीस काटने हेतु रावण ने खड़ग उठाया तो भोलेनाथ प्रत्यक्ष होकर बोले–''ठहरो रावण ! मैं तुम्हारी तपस्या से अति प्रसन्न हूँ, मांगो क्या वर मांगते हो? इस पर रावण बोले–हे भोलेनाथ ! पहले यह वचन दे कि मैं जो मांगू वह आप जरूर देंगे। भोलेनाथ बोले–''तथास्तु'' जो मांगोगे वही मिलेगा। तब रावण बोले–

(कव्वाली)

प्रभु दिए जो वचन वो, निभाना है।
इसी वक्त साथ लंका को, जाना है।।१।।
मानें भोलेनाथ अब, मेरा कहना है।
कैलाश में न अब तुझको, रहना है।।
अपने महलों में तुझको, बिठाऊँगा।
रोज पूजा व वन्दना, सुनाऊँगा।।
दानवों के बीच धुनि को, रमाना है।
इसी वक्त साथ लंका को जाना है।।२।।
तेरा दर्शन करेंगी, मेरी माता जी।
तेरे चरण धोयेंगे, मेरे भ्राता जी।।
प्रभु पूरी और हलुवा खिलाऊँगा।
भोले सोने के पलंग पे सुलाऊँगा।।
नृत्य करके वहीं डमरू बजाना है।
इसी वक्त साथ लंका को जाना है।।३।।

शिव भक्तों ! महाराज रावण के वचन को सुनकर जंगलों व पर्वतों पे रमण करने वाले योगेस्वराजशिव घबरा गए, परन्तु क्या करते? रावण को वचन दे दिया था, इसलिए बोले–रावण ! सुनो–

(कव्वाली)

जो दिए हैं वचन, वो निभाना है।
तेरे साथ अभी लंका को, जाना है।।१।।
''लिंगाकार रूप'' मैं, बन जाता हूँ।
पूर्ण अंश से मैं, उनमें समाता हूँ।।
मेरे लिंग को दसानन, उठा लेना।
अपनी नगरी तू लंका को, चल देना।।
राहों में न कहीं, हमें रखना है।
गर रखोगे धरा पे, नहीं उठना है।।
शर्त मानके रावण ने, लिंग उठाय लिए।
खुश होके लंका को, प्रस्थान किए।।२।।

(दोहा)

नंदी गण शिवगण रोए, रोयी गौरी बेजार।
हर लोकों में कुहराम मचा, शिव फंसे दसाननजाल।।
देव अप्सरा ऋषि मुनि चिन्तित, सब हो गए बेहाल।
सृष्टि चक्र को कौन चलाए, उठ गया एक सवाल।।

(गीत)

फंसे दशासनन जाल में शिव, हर लोक में हाहाकार हुआ।
रावण चक्र से शिव को निकालें, विष्णु लोक विचार हुआ।।
लगादो रावण को "लघुशंका", ड्युटी लगायी "माया" की।
राहों में रावण को रोको, श्री विष्णु फरमाया जी।।
"ज्योतिर्लिङ्ग" उठाए रावण, कैसे करेगा लघुशंका?।
राहगीर मिल जाए जंगल, ढूँढ रहे थे ये मौका।।
स्वयं ही विष्णु राहगीर बन, रावण आगे आ धमके।
लंकापति ने उनके हाथों, लिंग रख दिए "बम-बम" के।।

(दोहा)

"शिवलिंग" पकड़ हर्षित हुए, श्री विष्णु भगवान।
प्रसन्नता से खिल गए, सुन्दर कमल समान।।

उमापति महादेव के भक्तों ! श्री रावण कैलाश से शिवलिंग हाथों में उठाए लंका की ओर जाते हुए एक जंगल से गुजर रहे थे। माया ने उन्हें लघुशंका की जोर से बेचैन कर दिया। तभी रावण ने देखा कि गाय की झुंडों के साथ एक चरवाहा उनके पास से गुजर रहा था। महाराज रावण ने उनसे कहा–

"अरे भाई ! तुम्हारा क्या नाम है ? मेरा नाम–"बैजू" है मालिक, मैं आगे वाले गाँव में रहता हूँ।"

रावण ने कहा–"बैजू ! थोड़ी देर के लिए यह "शिवलिंग" अपने हाथों पर रखो, मुझे "लघुशंका" करना है।" यह कहकर चरवाहे के हाथ में शिवलिंग रखकर रावण लघुशंका का करने लगे। "माया" ने ऐसी चाल रची कि लंकेश्वर के लघुशंका का तेज कम होने के बजाय बढ़ता ही चला जा रहा था। बहुत देर होने के बाद चरवाहा वेषधारी "भगवान विष्णु" बोले–

(गीत)

देर हो रही बोले "बैजू", ले लो भाई ये "पत्थर"।
अशुद्ध दशा में कैसे बोलें, रावण पंडित थे कट्टर।।
बार-बार कहने पर भी, लंकेश्वर नहीं जवाब दिए।

लघुशंका करते-करते वे, मुख से न आवाज़ दिए।।
''शिवलिंग'' धरा पे रखकर के, फिर बैजू ने प्रस्थान किया।
बंद हो गई लघुशंका, रावण ने फिर स्नान किया।।
लंकापति खुश होकर आए, लगे उठाने शंकर को।
तीलमात्र न हिला सके, त्रिलोकी नाथ अभयकर को।।
शिवजी बोले सुन रावण, ये पहले मेरा कहना है।
कहीं रखोगे राहों में तो, मैं वहाँ से नहिं उठना है।।
राहों में रखकर के मुझको, तूने भारी भूल किया।
जंगल में रहने हेतु अब, तूने हमें मजबूर किया।।
हठ छोड़ो, हम नहीं उठेंगे, जाओ तुम वापस लंका।
हमको लंका ले जाने का, चूक गए हो तूं मौका।।
बोला रावण ! हे शंकर, तुझको लंका ले जाना है।
चलो प्रेम से वरना मैं, ताकत से ले जाना है।।
शिवजी बोले हे रावण, ना ताकत पे अभिमान करो।
जग में शौर्य दिखाना तो, ''शिव-शक्ति'' का सम्मान करो।।
न माने लंकेश्वर ने जी, भोलेनाथ की वाणी को।
''अभिशाप'' ने आ घेरा था, महाशक्ति अभिमानी को।।
सर्वशक्ति से लगे उठाने, फिर भी रावण हार गए।
गुस्से में शिवजी को रावण, पाँव से ठोकर मार दिए।।
लंकेश्वर पर फिर शिवजी ने, अपना क्रोध अपार किया।
''सर्वनाश'' अब होगा तेरा, रावण को ''अभिशाप'' दिया।।
''श्री राम'' के हाथों तेरा, खानदान मिट जायेगा।
महाशक्ति जो पाए हो, वो क्षण में लुट जायेगा।।
अभिशापित होकर के रावण, चले गए थे लंका को।
मृत्यु अब है निकट हमारा, पाल रहे मन शंका को।।

(दोहा)

अभिशापित होकर किए, रावण ने प्रस्थान।
वन में बैठे चिन्तित थे, गौरीपति भगवान।।
सोचें शिवजी रावण को हम, दिए यही वरदान।
अगर राह में कहीं रखोगे, उठना ना उस ठाँव।।

भोले भंडारी, त्रिशूल धारी के दीवाने भक्तों ! लंकेश्वर के जाने के बाद औघड़दानी भगवान शिव मन में सोचने लगे कि मैंने रावण को वरदान दिए हैं कि, ''कैलाश से लंका ले जाते समय हमें रास्ते में कहीं नहीं रखना है। यदि रख दोगे तो हम वहाँ से हिलेंगे नहीं, वहाँ से किसी कीमत पर भी नहीं उठेंगे, रावण को दिया हुआ ये वचन हमें निभाना ही पड़ेगा। अतः अब तो हमें यहीं धुनि रमाना है-यहीं रहना है। यह

सोचकर भोलेनाथ ने आवाहन पर, श्री विश्वकर्मा जी को वहीं पर बुलाए और आदेश किए–''

(गीत)

हे ''विश्कर्मा'' इसी जगह पे, ''भवन'' मेरा निर्माण करें।
लंकापति को वचन दिए हैं, अब यहीं बैठके ध्यान करें।।
शिव निर्णय से हर लोकों में, भारी हाहाकार मचा।
''देवलोक'' में सभा हुई, शिव निर्णय से कुहराम मचा।।
सभी देवता मिलकर पहुँचे, शंकर जी के पास में।
लगे मनाने महादेव को, चलें प्रभु कैलाश में।।
बोले शिवजी ''इक अंशों'' से, यहीं पे हमको रहना है।
रावण को वरदान दिए हैं, ''वर'' की इज्जत करना है।।
भोलेनाथ की वाणी सुनकर, अर्ज किए सब देवों ने।
इक–इक अंशों से रहने दें, हम सब को भी सेवा में।।
देवि–देवता के आवेदन, शिव जी ने स्वीकार किए।
जी भरके सब देवों को जी, औघड़दानी प्यार दिए।।
बोले शम्भु हे विश्वकर्मा, एक अनोखा काम करें।
एक रात में सब देवों का, भवन यहीं निर्माण करें।।

(दोहा)

आज्ञा पाकर विश्वकर्मा जी, भवन किए सब पूर्ण।
लगे बनाने अपना घर तो, ''छत'' रह गया अपूर्ण।।

बाबा के भक्तों! श्री विश्वकर्मा जी ने भोलेनाथ की आज्ञानुसार एक ही रात में प्रमुख देवी–देवताओं के 108 मंदिरों का निर्माण किया, जब अपना भवन विश्वकर्मा जी बनाने लगे तो 'सूर्योदय' हो गया। भगवान शिव की आज्ञानुसार सूर्योदय से पूर्व ही सभी मंदिरों का निर्माण विश्वकर्मा जी को करना था अतः सूर्योदय हो जाने के कारण उनके घर का छत अधूरा रह गया–जो आज तक है, उसे पूर्ण नहीं किया जा सकता, क्योंकि पत्थर के विशाल शिलाखण्डों को काटकर सभी मंदिर निर्माण हुए है।

(गीत)

जंगल में इक रात बनी, देवों की रमणीक नगरी।
पत्थर के हैं सभी भवन, सुन्दरता जिनकी गहरी।।
चारों तरफ मंदिर की शोभा, बीच शिवालय शान है।
विश्वकर्मा से बनी ये नगरी, बिल्कुल स्वर्ग समान है।।
बोले शिवजी ''ज्योतिर्लिङ्ग ये'', ''वैद्यनाथ'' कहलाएगा।
''बैजू'' नाम से शिव शंकर का, नाम अमर रह जायेगा।।

नंगे पाँव ही आकर जो, गंगाजल हमें चढ़ायेगा।
पूर्ण करेंगे सभी कामना, प्राणी वो तर जायेगा।।
''बिल्वपत्र'' जो हमें चढ़ाए सारे सुख वो पाएगा।
भांग-धतूरा अर्पण से, कष्ट कभी न आएगा।।
प्राणी गर सो जाएगा, कष्ट कभी न आएगा।।
''स्वप्न'' में हम दर्शन देंगे, उनके दिल के प्रांगन में।।
''वैद्यनाथ'' के दर्शन से ही, बांझ गोद भर जायेगा।
सभी रोग से मिलेगी मुक्ति, कोढ़ी कंचन काया पाएगा।।

(दोहा)

वैद्यनाथ शिवलिंग रचाके, शिव हुए अन्तर्धान।
सभी देवता चले गए, अपने-अपने धाम।।

औघड़दानी बाबा के भक्तों ! भगवान शिव का यह ''ज्योतिर्लिङ्ग'' प्रमुख बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक है। बाबा विश्वकर्मा की बनाई हुई स्वर्ग समान ये रमणीक ''देव-नगरी'' बिहार राज्य के देवघर जिला में स्थित है। यह स्थान -''वैजनाथ धाम'' के नाम से मशहूर है। चारों तरफ 108 देवि देवताओं के दो गगन-चुम्बी शिवालय है, जो भक्तगणों को पांचमील दूर से ही दिखाई पड़ती है। यहाँ पर रोज़ ही हजारों भक्तगण बाबा वैद्यनाथ को गंगाजल चढ़ाते हैं और मुंह मांगा मुराद पाते हैं।

मुराद पूरा करने में इस कलियुग में भी बाबा वैद्यनाथ सभी देवि-देवताओं से आगे हैं। इस समय भी जो भक्तगण अपने मन में प्रश्न रखकर रात्रि के समय यदि बाबा के अंगन में सो जाते हैं तो बाबा उनके प्रश्नों का उत्तर स्वप्न में जरूर देते हैं। कोढ़ियों को कंचन काया मिलती है, निपुत्रों को पुत्र मिलता है और दर्शन मात्र से ही सभी भक्तों की कामना अवश्य पूरी हो जाती है।

भक्तों ! पूर्व समय की कथा है-

वैद्यनाथ धाम से 105 किलो मीटर दूर ''गंगा नदी'' में प्रवेश कर, ''सुल्तान'' नामक एक शिव भक्त ने भगवान वैद्यनाथ की तपस्या की थी। उनकी तपस्या पर खुश होकर जब भोलेनाथ ने उन्हें वर मांगने को कहा तो सुल्तान ने निवेदन किया-''हे-भोलेनाथ ! इस स्थान का नाम सदैव के लिए ''सुल्तान गंज'' नाम से विख्यात हो जाय, और यहाँ का जल गगरी में भरकर, कांवर पर रखकर पीले वस्त्रों में नंगे पाँव जाकर जो भी भक्तगण आपको गंगा जल चढ़ावें, उनकी कामना आप अवश्य पूरी करें। भोलेनाथ ने कहा-''तथास्तु'', ऐसा ही होगा। कहा जाता है कि तब से ही भक्तगण सुल्तान गंज गंगा तट पर जल भरते हैं, कांवर पर गगरी रख, पीले वस्त्र धारण कर, नंगे पाँव बाबा

के दर पे जाते हैं और मुंह मांगा मुराद पाते हैं। भक्तों ! सुल्तान ने सावन महीने में बाबा की तपस्या की थी, इसलिए सावन के महीने में लाखों भक्तगण रोज ही, सुल्तान गंज में गगरी में गंगाजल भरकर कांवर पे रखके बाबा को जाकर चढ़ाते हैं।

विभिन्न प्रकार के सजे–संवरे कांवरों को कंधे पर रखकर, पीले व नांरगी रंग के वस्त्रों में जाते हुए भक्तगणों की अपार भीड़ व सौन्दर्य देखने को बनती है। उसकी अनुपम शोभा का वर्णन करते हुए ''राष्ट्रीय कवि'' वाई. एन. झा तूफान'' कहते हैं–

गीत - कांवर है अनमोल कांवरिया

काँवर है अनमोल ''कांवरिया'', कांवर है अनमोल।
दर्शन देने ''महादेव'' ने, द्वार दिए हैं खोल।
कांवरिया कांवर है अनमोल।।१ ।।

सात रंगों से रंगा है कांवर, रेशम डोर–लगाए।
गंगाजल की गगरी उसपे, भक्ति भाव बैठाए।।
कांवर त्रिशूल चांद सजे हैं, राह में करे इंजोर।
कांवरिया कांवर है अनमोल।।२ ।।

ग्रीष्म काल में ऋतु बसंत सा तन पे वस्त्र लहराए।
माँ बहनों के पाँव के पायल, छम–छम बजता जो।।
सबके मुख से हरदम निकले, हर हर बम बम बोल।
कांवरिया, कांवर है अनमोल।।३ ।।

मां गंगे कांवर पे बिराजें, शेषनाग का पहरा।
शिव दर्शन की अभिलाषा से, चमके सबका चेहरा।।
तन–मन को है उमंगित करता, राह में बजते ढोल।
कांवरिया, कांवर है अनमोल।।४ ।।

राह के पत्थर पाँवों चुभके, भक्तजनों को जाँचे।
फिर भी बांध के पांव में घुंघरू, सब नर–नारी नाचे।।
हर हर बम बम शिव शिव बोले, होके भाव विभोर।
कांवरिया, कांवर है अनमोल।।५।।

करलो शंकर जी की पूजा, कष्ट कभी न आय

करलो शंकर जी की पूजा, संकट कभी न आय।
तर जाओगे जपले भक्तो, ''ॐ नमः शिवाय''।।
''ॐ नमः शिवाय''।। ''ॐ नमः शिवाय''।।१।।
''वर देने में सबसे आगे, हैं भोले भंडारी।
भक्तों की खुद भक्ति करते, शम्भु – त्रिशूलधारी।।
बड़े–बड़े महापापी को भी, भोले हृदय लगाय।
तर जाओगे जपले भक्तो, ''ॐ नमः शिवाय''।।२।।
''वाणासुर'' व ''त्रिपुर'' जैसे असुरों को भी तारे।
''कामदेव'' को भस्म बनाके, फिर से जीवन धारे।।
शुक्राचार्य अधम को भी, दिए ''संजीविनी'' पिलाय।
तर जाओगे जपले भक्तो, ''ॐ नमः शिवाय''।।३।।
''पंचाक्षर'' शिव नाम जपन से, सभी सफलता मिलती।
लक्ष्मी–शारदा सदा के लिए, सेवक घर में बसती।।
जन्म–मरण से मुक्ति देते, शंकर जी – हर्षाय।
तर जाओगे जपले भक्तो, ''ॐ नमः शिवाय''।।४।।

नयन के पट खोल भोला

नयन के पट खोल, भोला– नयन के पट खोल।
प्रभु जी तेरो दर्शन पाने, दिल में उठे हिलोर।।
भोला, नयन के पट खोल।।१।।
मैंने सुना है भक्तों का तूं, भाग्य पिटारी खोले।
मैं आया जब तेरे दर तो, मुख से भी न बोले।।
अपने नैनों के गंगाजल, तुझपे रहा हूँ डोल।
भोला, नयन के पट खोल।।२।।
सुना हूँ शिव हो शरणागत को, दिल से गले लगाते।
मैं आया जब शरणों में तो, क्यों मुझको ठुकराते ?।।
मैं भी पुत्र तुम्हारा शिव हो, दो चरणों में ठौर।
भोला, नयन के पट खोल।।३।।
सबकी झोला भर देते हो, कहते सभी सवाली।
वाई. एन. झा तूफान की झोली, अब तक क्यों है खाली।।
त्रिशूलधारी तेरे हाथों, मेरा जीवन डोर।
भोला, नयन के पट खोल।।४।।

भगवान शिव की आरती

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धाङ्गिी गौरा।। ॐ जय।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंशानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।। ॐ जय।।
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे।। ॐ जय।।
अक्षमाला बनमाला, मुण्ड माला धारी।
चंदन मृगमद सोहै, भाल चन्द्र धारी।। ॐ जय।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाधम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।। ॐ जय।।
कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता जग संहार कर्ता।। ॐ जय।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों लोका।। ॐ जय।।
त्रिगुण शिवजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावै।। ॐ जय।।

(इति श्री शिवोपासना सम्पूर्णम)